844

PREM PAYONIDHI

१ ओ सतिगुरप्रसादि

।। अथ प्रेम पयोनिधि ग्रंथ लिख्यते कृत कवि साहब म्रिगिंदा।

सोरठा: प्रथम सकल स्तुति आदि,प्रणव प्रणव परमुद भवन ।।
सुमरत परमानादु,मंगल संग लगे फिरहि ।।१।।

छपया: अछंर अछल अछेद भेद जिहि बेद न पावत ।।
जग उतपति बिब हेत ।।
नेत नेत हि करि गावति ।।
सबद रूप द्वैअ बद आपु पूरन परवरियो ।।
ओतपोत परचुरियो खेल अपन महि करियो ।।
सुरनर गिरा गनाधिपति जाहि सुमर मंगल लह्त ।।
बंदति म्रिगिंद तिहिबंद कर प्रणव बरण बरणाधिपति ।।२।।

दोहा: बरण कोस की मुद्रका, प्रणव बोल मुख खोल ।।
बिघन हरन को बरन अब,करि कपोल स्रुत लोल ।।३।।

छपया: एक दंत दमकंत कंत गन बिघन अंत करि ।।
ससि दिपंति भालंत संत सुरमुनि सिवंतबर ।।
ललत क्रीट कुंडल कपोल लपटंत अलावलि ।।
रतनहार भुज़ चार कटक के यूर जटित भलि ।।
लंबोदर कटि पीतपट गौर बरन गौरासुवन ।।
बंदित म्रिगिंद गण ब्रिंद बर मंगल कर मंगल भुवन ।।४।।

सोरठा: प्रेरत परम सुजान, प्रेम पयोनिधि अपरमित ।।
तरन चह्त अग्यान, मो मति पतति पपीलका ।।५।।

कबितु: प्रेम पयोनिधि के परत पार पैर कौन मजनू से मौजी को मजे जगयौं मौंजसौं ।।
जिनकी कथान के प्रबंध बांध बांध बडे कबित कबिंद आज लगे बाहि रोजसो ।।
गुरु गोबिंदसिंघजू से खेवट की ओट गही जाके लौट लखे होत मो निधि हूं चोजसो।।
मया की वांकी मौजसो लख्यों है वाही रोजसो लै आछर को ओजयेक बाछर
के खोजुसो ।।६।।

सवैया: बरबानी महामुद मंगल दानी के छैप-दुकं जहियो धरहौ ।।
रज रंजत कै मन मंजत कै द्रिग अंजन अंजत से करहौ ।।
नहि मोहि म्रिगिंद इती मति है पत है तिह नाम तरी करहौ ।।
डरहौ नहि संक बिना बरहौ बड प्रेमसुधानिधि कौ तरहौ ।।७।।

दोहरा: भए जिआ गेहो हि गेज, अब है कबि समुदाय ।।
अभि बंदत कर सभन को, छैख द्रिसि छमवाय ।।८।।
प्रेम पयोनिधि ग्रंथ की, अदभुत कथा महान ।।
कौतक हित बरनन करौ, लख रीझ हि गुनवान ।।९।।
प्रेम प्रसंग प्रधान करि , बरनियो राज कुमार ।।
प्रेम पयोनिधि ग्रंथ कौ , याते नामु सुधार ।।१० ।।
सार बिचार जु देखीये, बडो प्रेम को नेम ।।
प्रेम हिते पावत सभै, जगत जोग अरु छेम ।।११।।
धरम अरथ अरु काम पुनु, मुकति पदारथ चार ।।
प्रेम हि करि साधित सकल, प्रेम सभन को सार ।।१२।।

कबितु: प्रेम की प्रपकता प्रगिट ब्रिज बनिता नअन बनता हूं भोग मोख छै बनालिये ।।
चारहूं पदारथ की भाजन ब्रिजराज जू सो मन भाए बाजन तौ कुबजा बजालिये।।
नीच जात भीली देखो प्रेम की रसीली रामचंदु सौ म्रिगिंद मीठे बेर जौ खवालिये ।।
छानीयो कवाए काहूं बाछरू चराए काहूं प्रेम्र कर पाहन ते परमेस्र पालिये ।।१३।।

कबितु: प्रेम की कहानी है नछानी गुर चारन मै ग्रंथ के हजारन मै निरधारनी को है।।
ऐपर अनोखौ है कलपतरु चोखौ सदा सींच सींच पोखौ भेल गरल अमीको है ।।
दुखु याको मूल डाल पलव धरन फूल आनंद को कंद हूं म्रिगिंद जिंद जी को है।।
प्रेमी जे खिलार याकी खेलवे की सार जानै सीस ते परै को खेल खेलबो इसी को है ।।१४।।

कबितु: भूल जैबो भ्रम जैबो चकित थकित ह्वैबो जक जैबो जौकन सौं मान कीओ मैंडामै ।।
लाज कौ लपेट जैबो सोच को समेट जैबो चौपन चपेट बो म्रिगिंद गेंद गैडामै ।।
बूड जैबो बह जैबो पावक मै दह जैबो भली बुरी सह जैबो छाड आनि अँडामै।।
ब्योम मै बिचर जैबो ब्याल बिल बर जैबो परबत सौं पर जैबो प्रेम जू कै पैंडामै।।१८।।

कबितु: जोग जग जपतप तीरथ बरत दानु आस्रम बरन बेख खेल सेख गेरहै ।।
सिंम्रित पुरान स्रुत मासत सकल सोध बोध लै प्रयोध परिपूरन पगेरहै ।।
मुंडित जटिल ब्रिंद नखी रिखी मुनि म्रिगिंद मारुत अहारी आठो जाम जे जगेरहै ।।
साधन के मौर सभै ठौर ठौर थोथुरु ह्वै दौर दौर प्रेम जू के पायन लगे रहे ।।१६।।

दोहरा: और जिते साधन सकल प्रेम सभन सिर मौर ।।
प्रेम सहित फल देत सभ बिना प्रेमु नहि ठौर ।।२० ।।

प्रमान हनूमान नाटके :

सोरठा: तब लग साधन पूर, जब लग परसन प्रेम को ।।
क्यों तमु भाजे दूर, बिना दीप बातै करै ।।२१।।

दोहरा: पैया प्रेम प्रयोध मै प्रठव प्रान प्रहेल ।।
रतन लहत मरजीव रे सीस परे को खेल ।।२२।।

यथा स्रीगुरु जे तुहि प्रेम खेलण को चाहु, सिर धर तली गली मेरी आओ।।
स्री मुख वाक: सिर दीजै काण न कीजै , तौ इसु मारग पाऊ धरी जै ।।२३।।

सवैया: याही ते प्रेम पयोनिधि को नित पैरबो पावन मानो प्रमानिव ।।
स्वारथ कै परमारथ ही यह आरथि की रुचि भेद समानिव ।।
भोग कै जोग प्रयोग भरे कोउ भान प्रकासिक तुल बखानिव ।।
जैसे करै मुख तैसे दिखावत क्यो दरपन मै दोख दिखानिव ।।२४ ।।

दोहरा: यातै प्रेम त्रिदोख सदरोख करो जिनिकोय ।।
निज निज रुचि अनुसार कर फल दायक सभहोय ।।२५।।

सरब ग्रंथ की सूची ।।

चौपाई: प्रेम पयोनिधि ग्रंथ रुचिरबर ।। प्रेम नीर गंभीर रह्यो भर ।।
जगत प्रभाकर राज कुमारा ।। सो याको अवगाहन हारा ।।
कीर कथा नव काजर जरी।। माझधार तज पारुन परी ।।
न्रिप सह्पा सुता बड ग्राही।। जाहि ग्रस्यो उबरत पुन नाही।।
सूरज प्रभा जुगज दुलारी ।। मध बरेती सुखद निहारी ।।
सभा ससि कला न्रिपति नंदिनी।। मुकता फल सम दुख निकंदनी।।
मंत्री सुत बड ग्राह भयंकर ।। निगल गयो सभ सुखन खयंकर ।।
पुन सहपाल सुता बड़ वागनि ।। दाहक सरब सुखन दुख दागनि ।।२६ ।।

सोरठा: बूडन सिंधु जहाज बूड जान या सिंधु महि ।।
पुनि जोगी मुनिराज भुजा पकर गह काढबे।।२७।।

चौपई: पुनि पसाच बड ब्याल कराला ।। गिल बैठयो सम सुखन सुखाला ।।
जछराज को मेल सुधाबर ।। परे प्रान पुन बिख बियाल हर ।।
और हि कथा जु दुह करनाना ।। ते बहु बीची लहर प्रमाना ।।
पुन सुक मेल उबर बोजल ते ।। प्रापति प्रिया प्रान तिहि बलते।।
पनु आनंद मन बजत बधावा।। मुक्ता फल मुक्ताबर पावा ।।
निज ग्रह गवन सु मिलन पिता प्रति ।। बनयो लाभ प्रापति मन हरखता।
पुान मंत्री सुत को बध करनो ।। मन हु सकल मग को स्रम हरनो ।।
राज सुता बर मोतन माला । पहरत सोभित परम बिसाला ।।२८।।

दोहरा: प्रेम पयोनिधि को सकल सतावत बिसतार ।।
सूची हित या ग्रंथ की करयो सखेप उचार ।।२९।।
स्री गुरु पद रज अंज द्रिग तम अग्यान निवार।।
ताकी क्रिपा प्रकास बल अब बरनव बिसतार ।।३०।।

अथ कथा प्रसंग ।।

कबितु: लेखक प्रवीन या कहानी पराचीन को नवीन करि खोलत है ऐसे बैन बंद को।।
लेखनि तुरंग या बखान के मैदान यों कुरंग कै दुरायो अदभुत छंद बंद को ।।
एक हो नगर सुर पुर से बगर घर धूपत अगर बासि बासिन पसंदिको ।।
भुवन बिसाल पुरनाम कै प्रदुर जग दुरत दिमाक देख भुवन पुरिंदको ।।३१।।

काबितु: चहुं ओर बाग बन सावन को जान घन बार बार चात्रक मयूर भ्रम बारहे।।
झर हरी डारन सो फूल फल भारन सों झारन बिहंग झनकार झरला रहे।।
बापी कूप तालन पै खिरे कंज जालन पै भ्रिंगन की माल गुंजरत छबि छा रहे ।।
गा रहे बजा रहे कहूं गुनी रिझा रहे कहूं कबित काब्य कबि पुंगव सुना रहे।।३२।।
महल सुरंग तापै उनत अटा उतंग तापै रंग रंग धुजा तुंग फहरा रही ।।
चामीकर चित्र-तर-चित मनि मानिक हूं बानिक की बेली कहूं लता लहरा रही।।
छजा छात छावन अतर छिरकावन की जग्य धूम पावन की गंध गहरा रही ।।
छात छित मंडल सुगंध सुरमंडल अखंडल उलंघ रवि मंडल में छा रही ।।३३ ।।
चौप खा बजार धनवंत न अगारन मै धन के बिपार चाट सार कहूं देवरो।।
आछी स्वछ बीथिका मै सुमन बिखेर राखे गेर राखे गंधत गुलाब नीर केवरो।।
नागरि नवेली अलबेली पुंज डोलती मैं बिबिधि कलोलत मै झनकार जेवरो।।
तोरन बितान कहूं न्रित गीत गान कहूं तारि दै दै नारि रस गारिन को बेवरो
।।३४।।

ऊचै राज मंदर ते मंदर से मंद होत झमक दुचंद होत रवि की रसम सो।।
तोरन बिताने तनी झालरै मुक्तमनी दामनी सी कौंधि चौंधि चाहत चसम सो।।
परिखा प्रकारि द्रिड़ दौहरे दुरग दीह द्वारन किवार रचे अगम असम सो।।
पूरन बिभूत गजसाज सौंजसौं अभूत देख परहूतमाने हस मन समसौ ।।३५।।

दोहरा: राज सिंघासन बैठतह राज करत बड भाग ।।
भाग प्रभाकर नाम न्रिप पूजापाल अनुराग ।।३६।।

चौपई: भागवंति बड भाग प्रभाकर ।। तेजवंत जनु दुतिया दिवाकर ।।
नीति धरम बित धरमराज सौ । पूरन सुख संपति समाज सो ।।
मंत्री मंत्र निपुन सुर गुर सो ।। सैन कोस गढ देस प्रचुरसो ।।
देस देस मंडल पतिआवहि ।। सिंघ पौल पर मौल झुकावहि ।।
उदधि उदारत वा न्रिप वर ते ।। दानु तरंग अपार उछर ते।।
मंगत दारिद ताप त्रिखातुर ।। त्रिपति होत प्रापति ढिग सातर।।
क्रोध धांक जिहि झार अनल की ।। अरि हिय दुसट जार बिआकुल की।।
न्यांव प्रब ताकी चरचा ते ।। बिमन होत सभ सुमन हियाते ।। ३७।।

दोहरा: तसकुत कराईं करत पंथी परत असार ।।
रछा टौह बटोहि के बिचरत है बटपार ।।३८ ।।

चौपई: देस अपार सैन अगनत जिहि ।। कोस अनंत सदा पूरन तिहि ।।
मंत्री सैनप धरम अचल बर ।। होत छत्र पति जाहि द्रिष्टि तर ।।
दुखी दीन दारिद बस नर को ।। नही नगर महि नाम अबर को।।
अनघ उसास उरघन हि को जन।। दुखित पुकार न सोन प्रयोजन ।।
प्रजा आनंद सैन सुख प्रानद ।। सत्र दुस्ट मन सदा भयानद ।।
नेह चुराय दीप बन तस्कर ।। सभामध कांपत है थरहर ।।
तसकर नाम मात्र न्रिप भय ते ।। कोऊ दुराव न करन सकयते ।।
करत अमीर जु महल प्रवेसा ।। प्रगट प्रचा घर कहत असेसा ।। ३९।।

दोहरा: महदी तस्कर रंग की रंग जमततिहि नाहि ।।
कर लाए कर बांध कर रंग दे छूट न ताहि ।।
द्रिगन चोर ते चौध कुनामी ।। लोग धरत ता पुर बदनामी ।।
सेव सनेह कि गुनन रिझाईं।। लेत कोऊ किहिं चितु चुराईं।।

चित चौर तिहि नाम परत है ।। प्रगट भयो पुन दुर न सकता है।।
याबिधि को प्रभावतिहि राजा ।। पै ताको इक परम अकाजा ।।
संत तिहि हीन भवन तिहि खाली।। जा करि सम बिभूत बिकराली।।
याहि बिथा सो बिआकुल निसिदिनि ।। होत बिदीरन छतीया छिनछिन।।
प्रभ सन बिनति कर दिन राता ।। जो त्रिभवन जीवन कहि दाता ।।
घटि घटि के अंतरि की जानता। भले बुरे की पीर पछानत ।।
जगदान बहु पुंन महोतसव ।। हरि सेवन कीय बिबिध मनोतसव ।।
कही क्रिपा प्रभ दीन दयाला ।। ताके ग्रहसुत दीय नंद लाला ।।४२।।

दोहरा: ब्रिधि अवसथा सुत भयो करी क्रिया घनश्याम ।।
जग प्रकास ते तिहि धरयो जगत प्रभाकर नाम ।।४३।।

चौपई: सुंदतरा ऐसी प्रभ दीनी ।। सगल स्रिसटि जाके रसभीनी ।।
बदन प्रभा लख संक प्रभाकर।। कांपत थरक चतुरथ गगन पर ।।
यदगि दीस्ति दाग सहित ससि।। तदपि न बदन बिलोक सकत हस।।
सकति बचित्र सहित हरिमाया ।। तिन नख सिख वहि चित्र बनया ।।
मानी से लख लाख चितेरे।। चकित चित्र सम होत चितेरे ।।
गढन हार आजु रसे मूरति।। लजत होत जिहि चितवत सूरति।।
धाइ बिलोक जनम अवसर तिहि ।। कहत बाल अदभुत जनम्यो यिहि।।
मनहु चंद निज ते दुबंद लख।। फटयो चहित हिय बंद मंद लख ।।४३।।

दोहरा: राज सिंघासन गगन को रवि जब राजकुमार ।।
उदर उदयाचल ते प्रगट प्रभा कीन संसार ।।४४।।

चौपई: छबि दायक जब मात उछंगा ।। भयो प्रभाकर दायिन अंगा।।
दीए खोल तब कोस किवारा।। दिजन दान दीय न्रिपनिह पारा।।
कारागृह किवासु खुलवाए ।। बंधन पग नर को नरहाए ।।
दासी दास जि कृय क्रित लीने।। मुकति पत्र लिख लिख तज दीने।।
दीन देस महि मिलत न भारे।। धनी भए धन लहि न्रिप द्वारे ।।
तब न्रिप कंचन रजत अपारा।। भर भर कर मसकट नहि पारा ।।
सुरि सरि आदि क्षेत्र जे पावन ।। पठे जात्र वन हित मन भावन ।।
एक बरख कर सकाल प्रजा को ।। दयो छोर सज धरम धुजा को ।।४५।।

दोहरा: राज कवर के नाव को दयो कोस इकठांया ।।
देव भवन चट साल बहु धरम साल बनवाया ।। ४६।।

चौपई:- नागर सकल आनंद भए मन।। मंगल जए होत नित अनगन।।
पंडित निपुन जोतसी सुभ मति।। त्रिकाल ग्यहस तामल वत गति।।
निपुन नजूमी सुघर रामली।। ग्रह ग्यानी मति कंत आमली।।
सभ मिल राज भवन ते आए।। त्रिप सादर निज निकटि बिठाए।।
बिनय सहित पोखन सभ कीने ।। दान मान कर बस करि लीने।।
बिनती करी दोऊ कर जोरे ।। लखहु लगन ग्रह बहुत निहोरे।।
सासत्र द्रिस्टि करि तुम सभ जानहु।। सत बचन बिन संक बखानहु।।
याबिधि सुन भूपति के बयना।। अंक सासत्र कविलोक्यो नयना ।। ४७।।

दोहरा:: कर बिचार बहु भात गन आदि अंत कविरेख।।
ग्रह नछत्र बल लगन पल जनम पत्र रचि लेख ।। ४८।।

चौपई: कर बिचार भूपति प्रति बोले।। लछन सकल सुभा सुभ खोले ।।
सुनहु त्रिपत तुमरी कलयाना ।। बिभय बिभूति अचल सदनाना।।
पुसतक महि यहि देति दिखाई ।। सत सकल हम देत सुनाई ।।
क्रिपा करी बड स्री भगवाना।। पर चंद्रमा प्रबल असथाना ।।
और सगल ग्रह सुभ सभ ठवरहि ।। देग तेग जय दायक कव रहि।।
तेज वंत मूरति सुधरम की ।। प्रजा पाल सीमा सुकरम की ।।
सीघ्र सिंघासन राज बिराजे।। अनद बधाई सभ जग साजे ।।
मित्र निरख मन आनंद पावहि।। दुसट देख दूर हि दब जावहि।। ४६।।

दोहरा: बरख पंच दस मे बिखे है छिक बिघन जरूर ।।
पै प्रणाम ता के कुसल ह्वै है मनसा पूर ।। ५०।।

चौपई: द्वादस मो सुर गुर तब आवै ।। सनी दसा चरनन पर जावै ।।
खग छिक कीर मिलै तहि अवसर ।। कवर प्रीत कर तिहि राख्य घर।।
कछु खटपट तिहि कवर नारि सो।। बनया अचानक कछु बिगार सो।।
तब सुक बचन कछुक प्रगटावै ।। त्रिप कन्या की बात सुनावै ।।
तब यहि राज पाट तजि निकरै ।। प्रेम बिबस पुरदेसन बिचरै ।।
मग मै बिआकुल राजकुमारा ।। सकल भटकत फिरहि बिचारा ।।
संगी तहा एक रघुनाथा।। डांवाडाल बिचरहि बिन साथा।।

तहि इक संत अचानक मिलईं ।। क्रिपा द्रिस्टि करि दुख निर दलईं।।५१।।

दोहरा: कोऊ कलंक न नारि तहि मिले कपट की खाना।
कसट पाय छूटय तहां क्रिपा करहि भगवान ।।५२।।

चौपई: पुन रानी इक मिलहि परम दुति।। करहि प्रीति चितते अति अदभुति।।
इक तखती ऐसी तिहि देवै ।। जाते अनिक दुस्ट हन लेवै ।।
बडे बडे कारज वहि करईं ।। अनिक कष्ट निवारन धरईं ।।
पुनि पहुचे तेहि नगर मझारा ।। जाह्ति तज्यो राज परवारा।।
तहा लाभ बह बनय अपारू ।। भूखन बस्न नारि सुचि चारू ।।
पुन इक दुस्ट कपट रच भारी ।। करहि खुटाईं परम खुवारी।।
पुन कछु इक तहि परय लराईं।। नर नारी मिल रार मचाईं।।
पुन जल ते कछु हल चल पावै ।। भीत बंध सम जुदा करावैं।। ५३।।

दोहरा: नगर नगर खोजत बहुर मिलहि सकल वहि साथ ।।
पुन माता पित चरन पर आन टिकावै माथ ।। ५४।।

चौपई: तीनि नारि बिआहै सुंदर बर।। दो की बात प्रमान रहै वर ।।
एक हीन ह्वै सेव कमावै ।। पुनि निचिंत ह्वै राज रमावै ।।
दया धरम के कारज करईं ।। जगत प्रभाकर समरुच धरईं।।
क्रिसनि क्रिपा कर प्रान बचहिगे।। देस बिदेस बिचर पर चहिगे।।
याबिधि पुस्तक देत सुसारा।। प्रभ की गति है अगम अपारा।।
हम जो लखी बिनति करि दीनी।। हरि की गति नहि परतु सुचीनी।।
यहि सुनि न्रिपति पंडितन बानी।। कांप उट्यो मन ते भयमानी।।
पुन बिचार धीरज मन धरकै।। करन हारु पर दिस्टि निहरकै ।।५५।।

दोहरा: जांहि क्रिपा ते होत है मुसकल सकल असान ।।
नैन मूद मन दीन ह्वै धरयो हृदय हरि ध्यान ।।५६।।

चौपई: यथा उचित पूजन सब की कर।। दान मान दै न्रिपति कीर बर।।
भूखन बस्न रतन बहु दीने।। सुखी रिदा करि बिदा सु कीनै ।।
करी असीस दिजन हरखत मन ।। चिरजीवहु न्रिप कवर सत्र हन।।
बिघन बिदारन स्री भगवानां ।। कर हिरकै निस दिन कुलयाना ।।
दै असीस दिज भवन गवन किया।। न्रिप त्रिभवन पति सुमरन धर ह्यिा।।
निसि दिनि रछ्करत निज नंदन।। देव मनावत बिघन निकंदन ।।

लग्यो बघन बालक वहि छिन छिन।। बिरवान यो राज के उपवन मैं।
कछुक दिवस महि प्रभु क्रिपाबल।। भये सकल अंगन महि प्राबल ।।५७।।

दोहरा: बीत बरख जब दस गए कर पग सबिस विधान ।।
पकरत स्रिंगु कुरंग के चीर देत बलरान ।।५८।।

चौपई: भुज प्रचंड बलवंड असंडल।। मतंग छिंद कुंभ बिदरत दल।।
जुवा रंग अंगन आ दमक्यो ।। चंचल चखन लखन मुख दमक्यो ।।
रुसतम से उसदम बलवाना।। गरब छाड पायन लपटाना ।।
जो ताको कवि बदन बिलोकत।। रचत छंद छिह भांति निजोकत।।
निरख कुवर गति मुकर बदन की।। प्रभा सहित रावरे बदन की।।
प्रथम प्रभाकरु प्रभवित्त बल।। लख हुत तव मुख द्रिगन जोर पल।।
चित्रकार कोऊ चतुर चित्र तव।। रचय बचित्र सुचित आवत कवि।।
चित्र धनी कर चतुरानन को ।। रचहु प्रथम तव सम आननको।।५६।।

यथा बिहारी।।

दोहरा: लिखन बैठ जाकी सबीह गह गह गह गरब गरूर।।
भयनकेते जगत के चतुर चितेरे कूर ।। ६०।।

चौपई। जिती कबिदना जग सुघराई ।।, बिदत भयो जग समजथ पाई ।।
सस्त्र अस्त्र महि निपुनि सुघर मति।। अस्व हुनर महि अधिक प्रीतिचित।।
चौदह बिद्या चौसठ कला।। सकल हुनर कर पर पर मला।।
पिता तुल पित को परिचारिक।। जननी जनिक हिदय को हारिकु।।
मात पिता को प्रिय अति भयो।। यूसफ यथा दुतिय निरमयो।।
राज गगन को दुतिय चंद सो।। पूरन भयो जबहि आनंद सो।।
बरख चतुर दस बय जोबन भरा।। निज बय तुल तब नीम जलस बरा।।
मंत्री हित्तू जि राज प्रधाना।। राज थंम धरम ग्य सुजाना।।
तिन संग मंत्र करत न्रिप नित प्रति।। राज कवर को बियाह करिय कित।।
यहि उतसव देखहु भर लोचन।। हीय सीय गवन सोच बिमोचन।।६७।।

दोहरा: पै दुलह अनुरूप ही दुलहिनि बनय बनाओ।।
देख जुडा वहु नैन जुग पूरन हुवै चित चाऊ ।।

चौपई: कर बहु यतन पठे नेगी दिज ।। दान मान दै हितकारी निज।।
सुता सुनी छिक भवन भुवाला।। परी पदमनी सी सुठ बाला।।

सुभग सुभाव सुहावनि सूरति ।। तनया हूर सुपन सी मूरति।।
तन अविलोक सूर सरमावत ।। बदन सोम लख जौन लजावत ।।
चंद्र प्रभातिहि नाम कुमारी ।। चंद्र लई जाते उजियारी।।
भल बय रूप परीति अनुरूपा ।। कर्यो सबंध आनंद त भूपा।।
वहि जो रीति नरेसन की जग ।। छत्र पतिन की चाल सुभग मग।।
कर्यो बयाह बड धूम धाम सो ।। धाक परी ले रूप सामसो ।।६३।।

दोहरा: जोरी जुगल अनूप लख, बड्यो न्रिपति आनंद ।।
बरस मान का मनि मिली, यथा चांदनी चंद ।।६४।।
जगत प्रभाकर कुवर की चंद्र प्रभा बरनारि ।।
अधिक नेह दुह दिस बिध्यो रति पति रूप सिंगार ।।६५।।

कबित्: सुखद समाज राज बिभुता बिभूत सूत अज परहूत के समान को समान है।।
मीतन सो मेल राग रंग हस खेल सदा कौतुक कलोल केल काहू कीन कान है।।
समान म्रिगिंद ये समान रहै येक सम दामिनि को ब्रिंद छिंद जाल को दिखान है।।
छिन मै सुरंग छिन छावत कुरंग गैन छिन रस खान छिन छौरत पखान है।।६६।।

दोहरा: गगन चक्र को फेर यहि, अदुभुत याको दौरु।।
पलक फोर महि और ही, और होत या तौर।।६७।।
जगत प्रभाकर कुवर को बरनियो जनम प्रसंग ।
अब आगै कछु और ही औंर खिरै गौरंग ।। ६८।।
प्रेम पयोनिधि ग्रंथ यहि गह रंग भीर अथाहा।
उछरत अमित प्रवाह मै मुकता बेपरवाह ।। ६९।।
प्रेम प्रसंग तरंग बहु उम गेत या को अंग ।।
या अवसर पूरन भयो पावन प्रथम तरंग ।।७०।।

इति स्री मत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति निरूपत प्रीत प्रसंगे कवि साहिब म्रिगिंदिन बिरचते मंगलाचरन राजकुमार जनम बिवाह बरननाम प्रथमो तरंगु :

कबितु: गुरु गोबिंद सिंघ जू के पावन पदार बिंद मनि चिंद दायक ह्रिदै मै आन राखे जब।।
तिनके बल प्रेम निधि के अगम जल पैठ पैठ भाव मुकतावल से लाखे सब ।।
गुन के अगार कवि पुंगव उदारन के हारन के हेत मनुहारुन मिलाते तब ।।
पावन पराखे हे गुपत परेराखे तिनै चाहत सुजाखे कै पूगत कर भाखे अब।।१।।

दोहरा: कोकिल मधुरी बानि की, किलक बाग को बरन।।
लेखनि सुक सुंदर बदन, लगी लेख यों करन।।२।।

चौपई: तब न्रिप कवर सखा कछु संगा ।। आखेट कहित धार उमंगा।।
बिनय सहित आ इस न्रिप पाईं ।। मन भावन तब कीन बधाई ।।
कबहू कसज पुन सांझ प्रभाता ।। चढत सिकार सैर न्रिप ताता।।
दैव योग इक दिवस सवारी।। गुदरी लगत नहा बढभारी।।
सभ प्रकारु के आन सुदागर ।। सौदा करत तहा बड नागर ।।
होत तहा बड जन की भीरा।। जन हरि दुवार सुर सरि तीरा।।
प्रापति मईं चित की उमंग सो।। कौतक हित चितवत सुरंग सो।।
तहि इक लखी भीर बहु जन की।। वाह वाह मुखु बोलि सभन की।।३।।

दोहरा: जगत प्रभाकर झुक तहा, देखन लग्यो जुभीर।।
सभ लोगन के मध महि, देखियो इक फकीर ।।४।।

चौपई: सतर बरख कि असी को जन।। कुबरो कुरयो ब्रिध अति क्रिसतन ।।
इक पिंजरा पकरे कर मह ।। खग इक कीर सुभग बरता महि।।
सबज बसन जनुसुर पुर बासी ।। ग्रहहि बंध निज घरे बिलासी ।।
रकत चिंचु कि सुकसमु सुंदर ।। गुन बिद्या निधि नीति समुंदर।।
कथा पुरान बिबिधि इतिहासा ।। बहु प्रसंग अदभुत रसहासा ।।
कबित काबय बहु छंद प्रबंदा ।। कबित सुनित मन जनित आनंदा ।।
याही ते बहु जन ढिग ठाढे ।। सुनहि चकित जन चित्रन काढे ।।
राजकुमार सुनत लख पायो।। तब सुक या बिधि बचन अलायो ।।५।।

दोहरा: निज माल कि प्रति यौ कह्यो, झुक कर करहु प्रणाम ।।
भग जगे तव भाल के, सुर सरि आईं धामु ।।६।।

चौपई: दारिद को ग्रहत जनि छत्र तव ।। भयो प्रकासित कमला ग्रह अब ।।
अंक लिलाट मित्रतव भए ।। समो सुभग चाहत फल दए ।।
जगत प्रभाकर राज कुमारा ।। दानी करन समान उदारा ।।
क्रिपा द्रिस मुझ मूट पंख पर ।। हीन जाति खग कछु नस कति करि।।
कुमति कमीन ग्रास मंजारा ।। कौन जगत सम मुहि खरिदारा ।।
पै जौ क्रिपा द्रिस्टि यहि करि है ।। तव घरि बार सकल घन भरहै ।।
राज कुमारि मनोहर बचना ।। सुने कीक के अदभुत रचना ।।
दय उडाय कीर निज मति को ।। पकर पिंजरा मूलि बिपति को ।।७।।

दोहरा: सुक सरबग्य खगेस के, बरन मोहनी मंत ।।
सुन प्रसंन ह्वै मोल हित, प्रेरयो सुक को कंत ।।८।।

सुकोवाच: कब कोऊ कर सकति है, दारिद घन को मोल ।।
सम गरीब को तोरही, देत मोल अर तोल ।।९।।

चौपई: जो देहो लख निज उदारता ।। वहै एक छिक कोह जारता।।
यह सुनि राज कवर हरखत मन ।। दयो मोल सुक लछ रजत पन।।
ताको दारद सकल बिदारयो ।। सुक प्रधान लै धाम सिधारयो ।।
चंद्र प्रभा प्रति आद दिखायो।। जा बिधि बच मुख ते प्रगटायो ।।
आज बजार गए हम रानी ।। [illegible] चेट खरीद हाथ निज आनी ।।
यौ कहि पिंजरा दयो दिखाई ।।निज मुख सुक की कीन बढाई ।।
लग्यो रहन सुक राज कवर घर ।। कहत बैन बहु मधुर मनोहर ।।
अदभुत कथा कहानि पुरानी ।। छंदु प्रबंध रसु भरी बनी ।।१०।।

दोहरा: नया वनीत कीरीति कहि, नेह प्रीति रस बीच ।।
मोहति करि मन कवर को, कीयो पिंजरा बीच ।।११।।

चौपई: अधिक प्रीति सुकि सोति हिलागी।। निसि दिनि रहत द्रिसटि टकलागी ।।
बैठत उठत चलत सोवत घर ।। कीर कवर की रहत द्रिसट तर ।।
पै जब राज सभा पग धारत।। चंद्र प्रभा प्रति सौंपि सिधारत।।
पै तहि हूं छिन नाहि बिसारत ।। सीघ्र हि आय निरख संभारत।।
बीतियो कछुक काल या बिधि जब ।। भयो ख्याल छिक नयो आन तब।।
छिक दिन कवर गयो दरबारा।। हुतो कीर जिहि भवन मझारा।।
चंद्र प्रभा मंजन तहि कीनो।। केस पास रचि सुभग नवीनो ।।

अंग अंग अभिरन बर धारि ।। बसन अमोल सुरंग सवारे ।।१२।।

दोहरा: बाल बाल मुकता बरे बंदी मांग सिंधूर।।
मुख तंबोल अंजन द्रिग अतर तरा तर पूर ।।१३।।

चौपई: कर सिंगार नख सिख अलबेली ।। मनहु प्रफुल्त चमन चंबेली।।
कुरसी कनि कजरे मनि माकि ।। बैठी सकल बनाए बानिक ।।
चंद्र प्रभा जनु प्रभा चंद की ।। प्रभा चंद की मनहु मंद की ।।
दरपन निज सन मुख धरवायो ।। निज सरूप नख सिखु निरखायो ।।
देखत रही एक टक लागी ।। चकित तब करही असु अनुरागी ।।
रुप गरब के गहर समुदर ।। बूड गई नख सिख वहि सुंदर ।।
गरबित निज सखीयन प्रति बोली ।। गुपत गांठ हिय की जन खोली।।
साच कहो भय संका बिहाई ।। मोसम औरु जवनि कोऊ जाई ।।१४।।

दोहरा: नरी किनरी जछनी परी पदमनी नारि।।
मोसम लखी सुनी कहूं, साच कहो निरधार ।।१५।।

चौपई: यहि सुन सम सखीयन निरधारा ।। कीय बरनन निज मति अनुसारा ।।
काहू कहि इंद ससकला ।। दरसनीय मुख तह ते भला ।।
काहू कह्यो न देखी सुनी ।। त्रिय त्रिभवन महि तुव सी गुनी ।।
काहू कहयो प्रभ करन हारने ।। सगल स्रिसट के रचन हारने ।।
सकल जगत सुंदरता सकेली रची रावरी देह अकेली ।।
रची बराबर सुरी न नरी ।। नाग सुता किंनरी न परी ।।
या सरूप तन परी न पाया ।। सुरि नारि के करन हि आया ।।
या बिधि सबहन कीन बडाई ।। बरनन करी रूप सुघराई ।।
चंद्र प्रभा निज प्रभा निहारी ।। गरब सिंध महि मगन सुसारी।।
कीर पिंजरा ढिग अवि रेख्यो ।। निज मन महि हिहि माति परेख्यो ।।१६।।

दोहरा: कीर सुधर खग राज यहि देसन बिचरन हार ।।
प्रछ देखीए हिस हिते लखी मोहि अनुहारु ।।१७।।

यथा चौपई : जब नर को आस मय गिरासै ।। प्रथमै ताकी बुधि बिनासै ।।
द्रिसटि और की और ही आवै ।। मारग छोड कुमारगि जावै ।।
यहि न सुनी जिहि नामु निरंजन ।। है वह सरब गरब को गंजन ।।
भावी बिबस सुमति बवराई ।। चाहत सूती कला जगाई ।।

ओछी मति सद नारि सुभावा ।। करि बिगार पाछय पछुतावा ।।
जो कीजत है बिना बिचारे ।। सदा दुख ह्वै ह्रिदै बिदारे ।।
पै भावी सभ पर बलवाना ।। भलो बुरो नहि परत पछाना ।।
बन्यो चहित सो बनत बनावा ।। पहुच न सकति [redacted]सु-मति को दावा।।१८।।

दोहरा: दुरयोधन को प्रेर कर किय कौरव कुल नास ।।
प्रेर कैकई को दयो, रघुबर पति बनबासा। १६।।

चौपई: भावीप्रेरति चंद्र प्रभा बर ।। प्रछत भई सु कहि तब हर बर।।
अहो कीर खग सुभग सुभावा ।। गगन गवन को जिह बडदावा ।।
तापर पठित सुघर मति सुंदरि ।। नीति निपुत सभ ग्यान समुंदर ।।
साच कहहु या सज धज की तिया।। तवि मति ख्याल खिगिंदन जह किया।।
मम समान सुंदर बरु नारी ।। लखी सुनी कोऊ राज दुलारी ।।
भावी बस तब कीर बिमन मन ।। बैठो हुतो सोक मूरति बन ।।
सुन करि बचन मस्ट मुखु रहयो ।। ता प्रति उतरि कछू वन कहयो ।।
चंद्र प्रभा पुनि पूछत भई ।। [redacted] मूक उत्र समझत नहीं भई ।।२०।।

दोहरा: [redacted]: तब सुक साधारन कहयो मो ऐसे ही साच ।।
राज कवर की नारि की बात कहै को काचु ।। २१।।

चौपई: जगत प्रभाकर की पट रानी ।। जाकी सकल आज रजधानी ।।
चंद्र प्रभा पुन नाम सुजाको ।। तासंग रूप मिलै कहु काको ।।
नगन होहि तौहूं जु सुहानी ।। कवन कहय परदा करि रानी ।।
यहि सुन प्रभा वती रिस भरी ।। रकत नैन मन ते अति जरी ।।
क्रोधि युकति अस बचन ऊचारे ।। कयो खग पत ति प्रान नहि प्यारे ।।
अदब छाड रौबरू ह्मारी ।। चब चबात कटु बात उचारी ।।
कीर कही सुन राज दुलारी ।। प्रसन उत्र की रीति नियारी ।।
डाटन तारन ह्कमु जितावन ।। क्रोधि सहित करि द्रिस्टि दिखावन ।।२२।।

दोहरा: यहि पूछन की रीति नहि मनहि समझ करि देख ।।
उरझत कयो किया जातीये साची तुही बिसेख ।।२३।।

चौपई: यहि सुनि अधिक हियो तिहि जर्यो ।। मनोहु हुतास्न महि घ्रित पर्यो।।
जनहीय घाव लोन तिहि दीनो ।। कुपति होहि बोली दुख जीनो ।।
कयो खग दुस्ट बिचार बिहीना ।। कुटल कुमति कमजात कमीना ।।
भ्रित आन तिहि दीन दिखाई ।। कत बिअर्थ बहुजीव चलाई ।।
निंदा करत दुस्ट दुखदाई ।। नहि जानत हमरी बडिआई ।।
तबु सुकु कही सुनहु पटरानी ।। मै न निंद की रंच बखानी ।।
तुम कत कुपित भए मम ऊपर ।। तुम सम नही नारि या भू पर।।
मुकर बिलो कहु निज आनन को ।। कहु हु कि सुंदरु तव सानन को ।।२४।।

दोहरा: मेरो कवन बिगार है, मन बिचार करि देख ।।
जीत हार कछु है बदी, सुंदरि तुही बिसेखु ।। २५।।

चौपई: तिहि अवसर बर राज कुमारा ।। प्रापति भयो आन निज द्वारा ।।
अदभुत गति आवत अविरेखी ।। चंद्र प्रभा युतु क्रोधि बिसेखी ।।
मन करि दगध अ नैन जल पूरत ।। थर थरात कांपत रिस मूरति ।।
करत कीर सन बहु बकवादा ।। बोलत बचन रहित मिरजादा ।।
लख बिसमय राजकुमारा ।। कह्यो कुसल है आज तुमारा ।।
(मन)
कीर कही अब कुसल कहा है ।। या बिध की मन समझ जहां है ।।
कुछक जीवनो या खग को जग ।। हुतो अंन ओदक कछु दिन लग ।।
तत छिन आन भए हो प्रापति ।। आई हुती अधिक मुहि आपति ।।२६।।

दोहरा: जौ छिक छिन आवत न तुमु प्रान पखेरू मोर ।। [illegible]
रानी कोपम जारू मुखु परतो तोर मरोरू ।।२७।।

चौपई: खाली पर्यो पिंजरो पेखत ।। दुखित होत तुम यहि गति देखत ।।
कहत सोक भर मुख यहि बानी ।। गयो कीर कथा कहत कहानी ।।
चंद्र प्रभा यहि सुनि करि बचना ।। भरी अधिक रिस लख तिहि रचना ।।
राज कवर प्रति रिस कै बैना ।। कहे कुपित पूरत जब नैना ।।
जौ यहि कीर कुमति कमजाता ।। सुधा ऊत्रन दे मुहि बाता ।।
तौ गरदन अब तोड़ दुस्ट की ।। काढ जुगल द्रिग पापु पुस्ट की ।।
निज पग तले डार मल डारौ ।। तब अंनोदक निज मुखु धारौ ।।
जगत प्रभाकर सुनत ऊचारी ।। बात कौन कहु प्रगट पिआरी ।।२८।।

दोहरा: कीर कही मुझ से सुनो जापर परयो बिगार ।।
नशीव नीति निरधारु कर लीजय आपु बीचारु ।।२९।।

चौपई: तुम जब गए राज दरबारा ।। रानी निज तन कीन सिंगारा ।।
अपन जान नख सिख असबनी ।। रची न दूसरि जनु जग धनी ।।
मुकरि बिलोक आपनी मूरति ।। कह्यो अहो मम सम नहि सूरति ।।
पुन मुझ प्रति कहि सुक सुरग्याना ।। लखी सुनी कोऊ मोहि समाना ।।
काल ग्रसति मुहि मुख ते निकरी ।। प्रभू न करै ऐसी अन करी ।।
या कसूर पर बध को दंडा ।। रानी के मति उचित प्रचंडा ।।
पावक डारन गलो मरोरन ।। पग तर मसर दोऊ द्रिग फोरनि ।।
यथा किसू कवि को यहि बचना ।। है प्रमाण सुंदरि बड रचना ।।३०।।

दोहरा: बे कसूर ही असित रे धरयो हुतो सिर आन ।।
भली भई मुख ते कछू कठन निकि- निकसी [redacted] बानि ।।३१ ।।

चौपई१: यहि सुन बोलयो जगत प्रभाकर।। तुम ही बडी सुघरता की घरु ।।
मति की ठौर मूढता भरी ।। खग बानी जिनि स्रवनन धरी ।।
तुम तौ नख सिख रूप भरी हो ।। फूल छरी हो सुघर परी हो ।।
पंखी के बच पर छितनो दुख ।। ऊचित न या बिधि म[redacted] करहु रुख ।।
यदपि पठत तऊ खग जाती ।। छिन बातन की समझ कहाती ।।
यहि क्रिया जानय सार तिहारी ।। रोस तजहु द्रिग पोछ पिआरी ।।
या बिधि बहु धीरज तिह दीनो ।। रानी क्रोध सांत कछु कीनो ।।
पै यहि कीर भली नहि [redacted] मानी ।। नैन बदल कर बदन मलानी ।।३२।।

दोहरा: टीटी करि मुख से कह्यो सुन अनदाता राज ।।
साच
जो है कूर [redacted] सु कूर है साच बिन लाज ।।३३।।

चौपई: रानी सो कछु बैरन मेरो ।। पै छिनसाफ न कर ते गेरो ।।
यहि जु कही मुहि सम नहि कोऊ ।। कहहु कवन मन आवत सोऊ ।।
बिन सरीक छिकि करनै हारा ।। है वहु रूप सभन ते नियारा ।।
असन भयो कोऊ भव महि प्रानी ।। जा सम होहि न आन प्रधानी ।।
जिति स्रिसटि प्रभु ने जु रची है ।। छिक तै छेक सु अधिक सची है ।।
निज स्री मुख प्रभु को यहि बचना ।। बड किय तुम किहु परबड रचना ।।
बे सरीक मो बिन नहि कोऊ ।। छिक ते छेक अधिक सम जोऊ ।।
मत कोऊ गरब करत मन माही ।। मो समान दुतियो जगु नाही।।३५।।

दोहरा: इक समय बिध गरब किय मो सम और न कोहि ।।
अस्ट मुखा ब्रह्म लखयो पुनखोड़ सु मुख जोहि ।।३५।।
चौपई: ज्यो ज्यो गरब करत ते भइे ।। अधिक अधिक अविलोकत भइे ।।
सहस मुखे बिधि ना परयंता ।। महा दुखित ह्वै फिरे भ्रमंता ।।
तिन तिहि गरब मिमंजन कीनो ।। प्रम बिअंत कहि ग्यान सुदीनो ।।
तब ते फिरे भरमते सारे ।। सांत पाय निज धाम सिधारे ।।
ताते प्रभ माया बलवाना ।। को कहि सकय न मोहि समाना ।।
बिधि से फिरे भ्रमति दुखियारे ।। आन जीव किया कीट बिचारे ।।
रानी कहा गरब अस कीनो ।। करत न अस कोऊ कुमति कमीनो ।।
बग महि य अस अस राज दुलारी।। सकति न रवि ससि जिनहि निहारी।।३६।।
दोहरा: जौ उन के गुन रूप की बरनन करि इहि बेरि ।।
चंद्र प्रभा तब निक रहै तिन चेरिन की चेरि ।।३७।।
चौपई: ताते साच झूठ ते बच करि ।। करी हुती बिनती मै रुचिकरि ।।
जो कदाचित बसाच ऊचरतो ।। बिन आई तत छिन पल मरतो ।।
या बिधि कीर कहे जब बयाना ।। चंद्र प्रभा भई अधिक बिचखना ।।
यथा प्रगट जग कहित प्रवीना ।। राज त्रिया बालक हठ क पीना ।।
चंद्र प्रभा तब यहि हठ ठाना ।। साच कहे बिन तजहु प्राना ।।
जगत प्रभाकर कही कीर प्रति ।। कह दे साच जु तुमरे है चित ।।
भली बुरी की तज मन संका ।। ज्यौ है त्यो अब कहुहु निसंका ।।
कीर कही मति साच कहावहु ।। मति मेरो मुखु को खुलवावहु ।।३८।।
दोहरा: यथा कहिऊ वहि कूर मल मिलयो भलाई संग ।।
वा सच ते जाते ऊठय और ऊपद्रव रंग ।।३९।।
चौपई: ताते उचित न साच बोलनो ।। मसट भलि नहि बदन खोलनो ।।
ना तर तव बैरिन को राजन ।। अस न होय कछु बनय इलाजन ।।
बन बेहर झारन में फिरनो ।। परय पहारन बीच बिचरनो ।।
तज निज देसि बिदेसनि माही ।। इबिनय बीथिका मग अवगाही ।।
यहि सुनि राज कुंवरु बिस मानयो ।। नयो चुटकला कीर बखानियो ।।
तब तौ कहयो तु कहनो है कहु ।। बहु बातन महि अब न गहुर गहु ।।
कीर करी बहु बिनय बनाई ।। राज कवर हठ अधिक गहाई ।।

जान अवसर्क सुक तब बोलयो ।। मुख जनु बिपति किवार सु खोलयो।।४०।।

दोहरा: मै बहु बिधि चाहियो मनहि मग दुखु सह हिं न आपु ।।
नगर नगर के फिरन की फिरनि खरीद हि पापु ।।४१।।

चौपई: मारग औरो रुव इिक गतिते ।। बचनो मलो सु बडी बिपतते ।।
पै मो मति अस किय अनुमाना ।। परारबध कछु कीयो बहाना ।।
कहि की कहां बात यहि गईं ।। चाहत अबहि और कछु मईं ।।
मेरो कछु कसूर नहि राईं ।। चंद्र प्रभा सिर चड़िहि बुराईं ।।
सूती कलह जगाय खरी कर ।। अब पछतैहै सीस हाथ धर ।।
यथा किसी कवि को यहि बचना ।। भावी प्रबल करत बड कर रचना ।।
भाग बसन को फटयो जु फारा ।। सींवन सकति न को बुधि वारा ।।
सू ईं युकति लीइे करि माही ।। सींवत रहहु जनम भर ताही ।।४२।।

दोहरा: अब हिय बार थकत हौं सुनहु स्रवन करि धियान ।।
यहि जु कहत कोऊ जगत महि दुतिय न मोहि समान ।।४३।।

चौपई: इित ते मग है बरख दिवस को ।। दे सु सुहावन ऊत्र दिस को ।।
रंगु भूमि अदुभुत मंडल वहि ।। दुतियन मंडल महि मंडल महि ।।
मति मानी कर गहि पुकारा ।। चित्र न सकिति दुतिय तिहि सारा।।
बिध किसान जु समय सनातन ।। खेत्र जगत महि लख्यो न आपन ।।
ता महि इिक है नगरु सुहावन ।। ग्रह बजार बीथी पर पावन।।
सुंदर सकल बसत नर नारा ।। नर मनोज तिय रति अनुहारा ।।
रचित फटक की महल अटारी ।। निरख जौंन ससि जिहि हिय हारी ।।
कनिक दुवारु खचित मनि मानिक ।। इिंद्र भवनि लाजित लख बानिक ।।४४।।

दोहरा: मति मति मानन की जिनहि देख चकित रहि जाय ।।
बसत सघन अस घसत जहि मन संकलप संमराय ।।४५।।

चौपई: नित प्रभात करि रवि तिहि दुवारा ।। लखित जात असताचल पारा ।।
ससि पूरन पहुचति तिह पौरा ।। घटत घटत ह्वै जात सुहौरा ।।
वहि तहि की है राज दुलारी ।। सभा ससि कला नामु ऊजारी ।।
बरनन करय रूप रुचि ताकी ।। कवन जगत महि मति असकांकी ।।
मम रस ना की कवन बात है।। कहा बदन बल बुधि गात है ।।

जो वा रूप सिंधू को इक कन ।। चंद्र बदन त्रिय राज मुकटि मनि।।
चीन फिरंग सिंघला की घर ।। तह जनमी जे नाहि सुघर बरु ।।
जाकी पग अंगुरी के नख पर ।। बार बार सभ जात सुलख बर ।।४६।।

दोहरा: जाकी रचना जौ लखय ऐक बार करतार ।।
अपनी क्रिति पर चकित ह्वै इक टक रहत निहार ।। ४७।।

चौपई: रोम रोम रस ना जौ धारौ ।। कौन सकत तिहि कनहि ऊचारौ ।।
पैता कीजे है प्रचारिका ।। सपत सतक संख्या प्रवारिका ।।
कनक किनारी दार सुकट पत ।। मन हर वे के धरे सिर मुकट ।।
चंद्र बदन सुंद्र अलिकावलि ।। जग नारिन सिर मौर बिदति मलि ।।
प्रीतम के प्रानन सुख दावनि ।। सेवा महि निस दिन मन भावन ।।
सेज सौ जतन हारु सिंगारा ।। रचित रहत छित सेव प्रकारा ।।
चंद्र प्रभा जौ तिनहि बिलोकय ।। नयाव नयन करि मन निज रोकय ।।
पैजौ अनख भरी मन धरई ।। चुलि कनीर महि बूड सुमरई ।।४८।।

दोहरा: सुनति सुंन रानी रहि अति [illegible] लजाय सिरनाय।। जगत प्रभाकर
जगत प्रभाकर चल परयो पिंजरा लियो ऊठाय ।। ४६।।

चौपई: दुतिय महल जह करत निवासा ।। तहा ग्यो चित ऊचट उदासा।।
सने सने तह को सभु हाला ।। सुनयौ कीरते अदुभुत स्याला ।।
ता बिन औरन कछु सुहाई ।। निस दिनि यहै चिंता चित छाई ।।
चित ऊचाट मन रहत ऊदासा ।। छिन छिन छोरत ऊरध ऊसासा ।।
यथा कोऊ कवि की यहि बानी ।। कहत प्रेम की अकथ्य कहानी ।।
नहि निहार वेते यहि कैवल ।। ऊठत स्रवण हूं ते यहि अतिबल ।।
स्रवण दुवार हिय रूप प्रकासित ।। सुख प्राणन अरु बुधि गिरासत।।५०।।

दोहरा: स्रवन निहारन महि कछू अंतराय मति मानु ।।करत प्रेम बस गुपत हूं
करत प्रेम बस गुपत हूं कहूं प्रेम बखान ।।५१।।

चौपई: तब सुक देख्यौ राज क्वर मुख ।। बोल चाल पुन रंग ढंग रुख ।।
मुसक अधर लोचन जल पूरत ।। मन बेकल सो असल दुख सूरति ।।
बिन चरचा उस राज दुलारी।। कछु न सुहात सकल सुध हारी ।।
खान पान सोवन सो गयो ।। ऊरध ऊसास पाहरू भयो ।।

यहि गति लख सुक मन बिसमानियो ।। बहु धिकारु निज मन प्रति ठानयो।।
कत मुख ते तिहि कीन बडाई ।। अनहक सूती कलह जगाई ।।
चंद्र प्रभा की करत बडाई ।। जिम सभ सखियन कही सुनाई ।।
तब काहे यहि ऊठत बिकारा ।। धिक मन तेरो सकल बिगारा ।।५२।।

दोहरा: अब याके हिय परविस्यो प्रेम पडयो सुपिसाच ।।
जंत्र मंत्र मानय नही बैद चिकितसा काच ।।५३।।

चौपई: कीर अधिक चित करु पछतापा।। मान मनय मन बहुत संतापा।।
जगत प्रभाकर हेत हटावन ।। भय दिखाय बुहु बिधि समझावन।।
लखी प्रेम की प्रगट निसानी।। बिआकुलता सुध बुध बिसरानी।।
टूक टूक मन मति बौराई ।। सभा सखिकला ह्रिदय बसाई ।।
मिलन हेत बहु यतन बनावे ।। बुन ऊधेर ऊरझत सुरझावे ।।
गगन कुसम की चहित सुबासा ।। अति आतुर लख कीर प्रकासा।।
यथा प्रिथम पावक देतूला ।। पुन तिहि करयो चहित निरमूला ।।
बीत गई फिर हाथ न आवया। प्रेम प्रगट भयो कवन छिपावे ।।५४।।

यथा ब्रिंद ।। दोहरा:
प्रेम लगत बरज्यो न क्यो अब बरजत बेकाज ।।
रोम रोम बिखरम गयो नाहन बनत इलाज ।।५५।।

सुकोवाच।। स्वैया: हेहो अजान प्रहारक प्रान ये कौन सेठान अठानक रैतूं ।।
प्रेम के पंथ मै पाऊ धरे अपने रुकतापने हाथ मरै तूं ।।
हाहा मले निज राम को मान लैं नेह को नाम ना हा न मरै तूं।।
याकेन फेहू मै है नुकसान सोजान किसान को अंक सरैतू।।५६।।

स्वैया: याको बखान महान बडो पर तुछ से तोहि निसान कहूं मै ।।
आदि मैतो मति होत है दूर लगै जीय दूर ऊद्यान कहूं मै।।
सूकयो रहै मुख गले रहै द्रिग प्रीत हुवै अंग अचानक हूं मै ।।
खान खाजात है पान पी जात है नीद को बीद निदान कहूं मै।।५७।।

स्वैया: प्रान सुधा से हलाहल होत पिरात हि यों मति होत है बावरी।।
खावै ह्रिदो रुकताचै तिसी को फसै जोऊ प्रेम पिसाच की बावरी।।
जीवनो है मरबै मरबै बदनामिन के मरबै दुख तावरी।।
बैनहि तन के तन केतीर दुसार परै छिद छात को तावरी।।५८।।

स्वैया: बावरो ह्वै जग बालन की डरी ढीम सो मूंड रंगावनो ह्वै ।।
दिन को दुखिया निस को अखिया अवसेरत तारे गिनावनो ह्वै।।
बिकली कल है खल है औ खराब है आखै सभो की लखावनो ह्वै।।
जी लगै तौ लगै कहूं जंगलो मै लख दंगलो मै चरपावनो ह्वै ।। ५६।।

स्वैया: दिन तौ बितै डोलत द्वारन द्वार पहार निसा ह्वै क्यों हूं नादरै।।
हियरो दहजा बहजा द्रिग द्वारन दीन दबारन के रुनरै ।।
बिन पलव पान तरोवर सो मन साको रहै नहि फूलै फरै ।।
घुन जोबन ते लै जरा लौ यहै ऊघरै बुनतें बुनतें ऊघरै ।।६०।।

स्वैया: अुख मूक ह्वै कू कनकान सुनै चित चौकरी चूकत चोट परै ।।
अबी आप तौ प्रेम पयोनिधि के तट ही पै खरे लोट पोट परै।।
भरे ऊचे उसास कराह की आह बिनाही लखे खरे खोट परे ।।
हिय ओटबो माले की चोट को ये कई कोट लपेट सै लोट परे ।।६१।।

स्वैया: निज आनन तौ अविलोक ये जू कहरि गहै मेरी सौ आई बोलै ।।
वहि प्यारो ह्वै पार सुपावै कहाये पहार ऊचाई निचाई नोलै ।।
मिलै माटी मै माटी के छान तेही न पछान परयो को ऊमाई नोलै।।
है निदान न ढायों जहान कहै जफा जोर मै प्रान सफाई नोलै ।।६२।।

स्वैया: यहि प्रेम पिसाच बे पीर बडो याके पेच कुपेचन तै बचिये ।।
न सुनी फरहाद पहारन मै प्यारे प्रान कहां दुख सो पचियै।।
हित यूसफ के न जलेखां सुनी किते कूपन झाकती ही बचिये ।।
मजनू मतवारे झिसी बन के कछू लेली को सोच हूं ना सचिये ।।६३।।

स्वैया: परवेज के प्रान परे पल मै पर सीरी ने तो कछु सीम करी।।
अपसोस बडो बडे होस के मालक पै झितनी हूं न सूझ परी ।।
यहि सोक निफोक है सूचि कानोकसी प्रान की नारी निबेध करी।।
कबहूं पर हो तन ह्वै कबहूं यहि प्रेम की तौलग तात झरी ।।६४।।

स्वैया: जे तो कलेस बिसेस तासो देख देस को नाम अराम हमेसको ।।
टूट परै या खिचा खिची मै मन भीम मियानो भजै लख लेस को।।
याके सितंम के पेचन मै रुसतंम से पेचन चूकत वे सको ।।
जो झिस फंद परे झिस फंद डरै तन मै ज्यो देख दिनेस को ।।६५।।

स्वैया: इस पंथ मै आगे अनेकन हूं धरयो सीस पै रंज उठावनो ही।।
दुख लाखो हजारो खराबी सही पै बनयो फिर मूढ कहावनो ही।।
वहि काम बुरो बदनाम हेये सुत पाटी औ राटी ठगावनो ही ।।
नहि आदि है याको न अंत कहूं इक अंत परै पछतावनो ही ।।६६।।

स्वैया: यहि प्रेम की पीर के पाले परो जिन प्यारे हमारो पुकारे कहो ।।
अब प्यारो तो प्यारो पै बैरी हूं कै यहि बैरी बरो जिन हारे कहो।।
बज मारयो बुरोबरवागनि है कितने कल हेद हमारे कहो ।।
टरु रे करयो चाहत काकहरी करै कारै कहो कि अखारे कहो ।।६७।।

स्वैया: प्रेम अहि छौना को खिलौना मति मानी ये जू लागत सलौना पै हलाहल को दौना है।
छेरो ना कुहौंना कुहि जैहै तो कुटोना फेर पीयो करै पापी प्रेमीयों के प्रान पौनाहै।
घूम्यो करै भौना रहजात मुख मौना हरे हरे मतवारो करडारत डरौना है ।।
खौनत खवौना नर खौनत अचौना रहै धरम की सुधो ना कछू बोध की बुधो ना है।।
६८।।

कबित: जाके यहि जालम परत पाले मालम ह्वै आलम मै आंगुरी ऊठत चारयों उरकै ।।
याही के कहर तै नहर नारे नदी आ ह्वै द्रिगन तै दरीया बहत बडे जोर कै।।
कबहूं पहार कहू कानन दिखावै भार कहीं निरधार कहा कहा भकभोर कै।।
द्वारो द्वार मूंड छार डार कै बसन पार प्रान परि हारै पै परिंद पर तोरकै ।।
-६९।।

कबित: येही जर जहरी जुलेखा जलावत नीको नीको नल दमयंती को जवाला जी को है।।
फेर फरहाद को फसायो कै कुदाल पानी प्रेम तौ कहानी कोप पावक हरी को है।।
जैसी कैसी सीरी कों असीरी कर डारयो इन पारयो परदान कौन कान कुल हीकोहै।
मजनू से माने मति हाने कै दीवाने कीए निज मग आने ते बिगाने संबही को है।।७०।

कबित: यद पिया प्रेम के पखाने जग जाने तऊ जाने वही दाने जिनौं सीस पै बिहानी है।।
कबहूं तो प्यारे के कुपित पैठ परदे मै कहूं प्रेमीयों के चड सीस प्रगटानी है।।
लैली कै अकेली बनी कारखानी छूटनी तौं ऊटनी कौं बाको बनयो येही कारखानी है।
गिर मैन जदके दिखावन मै हदके मदद कर मजनू से आगे अबवानी है।।७१।।

कबित: यूसफ से रूप वारे कूप मै ऊतारे पुन ऊपर ह्वै पाहरू रहयो है आप कहरी।।
प्रान सब प्रेमी पुंडरीक प्रहार वे को प्रेम यहि सघन सरों की बनी गहरी।।
हार कहूं बार कहूं सुर कहूं तार कहूं रूप कों बनावै कछू औरै भांत लहरी।।

फरहाद सीरी ज्यौं अनेकनतगीरी दिलगीरी दैके प्रान पीये प्रेम जहरी।।७२।।

कबित: जंत्र हूं न मंत्र फुरे तंत्र हूं धनंत्र कौंन कानन मौं मौना बचै मौन कौंन कौंना मै।।
हाय यहि टौना भये जाहि कौ भि टौना ताहि दुखही दिवौना कैधौं मिहनत-
-मिलौना मै।।
कहूं गिर तूर को जरायो पूर पावक तै पावक तै कीनी फुलवारि जो तिजौना मै।।
छाडे नही प्रान जहा पायो प्रान वारो छिन खेलन खिलायो नाना ख्यान के -
खिलौना मै।।७३।

कबित: प्रान बिन प्रानी छिनै प्रेर परिचारे कै निकारे प्रान वारे वैसो ऊलट खिलारी है।।
दुख ही को नाम सुख राख्यो है कुटल याकी जग मै कहानी ना बखानी जात मारी है।
जाको बनयो मीत ताकी जग ते प्रतीत खोई बिन ऊपचारी होत याही की बीमारी
है।।
दुंदभि दै ऊचै जैसे याके मनखै करि कूचै कूचै ख्वार करै कूच की तयारी है।।७४।।

कबित: दुख औ कलेस के सिवाय सुख लेस कहूं देत न बिसेस कै हमेस याकी बान है।।
नैसक संजोग की निस मै ये बिसासी बेग बिबित बियोग को दिखावै प्रातमान है।।
येही तो दुरयो है संग सौ सौ सुंद्रता सुगंध फुलवाईयो मै सुघराई को निधान है।।
कुहूं कुहूं कूकत ही कारी करी केली याये केवल क्रिपा के प्रेम ही कौतो निसान है।।७५।

कबित: बिना ही बिगार देर देख्यो जग नरि नारिन के आंसुन की धार गुलानार सी बहावतो
याकी चितवन की जो तीखी तखार ता पै रंच न बिलोकयो कबहूं तो मैल आवतो।।
थोरो सो लिख्यो मै याको हाल ये पिसाच प्रेम जापै नैक आपनों जौं छायो सो
छवावतो।।
दीनता के बन मै फिरावत तो लख्यो है मीत बंधु सौं तुरावतो औंदिसन छुरावतो।७६।

कबित: जाके येह जूर भयो दीनु दुनीया ते दूर कौंन वहि सूर जाको चूर चित ना करयो।।
बिरहा बिथा मै या मै कितने बिथित मिल दिल पै दरद सह फेर चित न करयो।।
याके फेर घेर मै घटत ससि पूरन से ऊरन ह्वै कूर कला द्वैज चित न कुरयो।।
काकी कलाकारी है फिलक मै जु लिखै काहू रीतो सिंधु अंजुलि सौं ऊलीचित न करयो
।।७७।।

दोहरा: बिरह बिथा सह सह जिटल रह रह राखत नेम ।।
प्रान देख खिर खिर हसत हाय बुरो यहि प्रेम ।।७८।।

स्वैया: होवो सिरे सुख सार संयोग मै पैयो बियोग बिगारत जीवनो ।।
केते कूहे परे भाकने ताकने वो दुख है जो लिजावत जीवनो ।।

आदि ही ते हिस मै दुख दाह्कराह रही मुख आसुन पीवनो।।
छारमली मुअडार बसंन रहयो सदही-यौ ही फारनो सीम्नो।।७६।।

स्वैया: यदपि प्रेमन की परतीत परी कहूं प्रीत के पूरनिवाह मै ।।
ताके समान तिहूं पुर मै रस औ जस नाहि लख्यो काहू राह मै।।
है जौ कहूं कहूं पारखू याके पछानत प्रेम के पूर प्रवाह मै ।।
औ पै कवाहै मिलै महाराज बरो जिनि प्रेम के सिंधु अथाह मै ।।८०।।

स्वैया: मै जु कही तुम सो वहि बात सो चंद्र प्रभा जू की बात पै बात है ।।
औसी अनेक बनाय कहयो कहै जा मै बिबाद कछू पछपात है ।।
ना तर कंचन को कहूं दस सुनयो निरख्यौ मन कौन के आत है ।।
सोचत को सुपने लख संपति राज सुता कहा कौन की जात है ।।८१।।

दोहरा: या बिधि सुन सुक के बचन बिहस्यो राज कुमार ।।
सुक सुघराई समझ मन स्वास भरयो बिसंभार ।। ८२।।

राजकुमारो वाच ।। चौपई:
प्रम बस सिंद पतत क्रित पावन ।। सुकतव बचन रचन मन भावन ।।
जौ तब तैं वहि कूर ऊचारी ।। कहा कनक पुर राज दुलारी ।।
तब यहि हूं काके मनआवै ।। कूर कबित हित मन परचावै ।।
जौं वाकों बरनन सच नाही ।। तबनाही मन आवत नाही ।।
प्रम की सपथ करहु तव आगे ।। अब सिख मत तव मन नही लागे ।।
प्रेम पेच कर अब कब छूटे ।। तब छूटय जब प्रान निखुटया ।।
या बिधि कह भर ऊरघ उसासा ।। तजी तुरत मन जीवन आसा ।।
दिल पर दरद जरदइ ता मुख पर ।। अधरन आह सरद स्वासन भर ।।८३।।

दोहरा: ताव तेज गहि प्रेम के गह गह बजे निसान ।।
धीर मधुघ पट पटयो जब भाव लाज कुलकान ।।८४।।

चौपई: आह कराह ऊठत मुख बानी ।। मति वारी मति के निकटानी।।
बुधि बेसुध हुवै बिकल बिचारी।। फसी नेह सांकुर दुरवारी।।
यथा किसू कवि कीयहि बानी ।। सुवै रहयो भाग कहूं पटतानी ।।
प्रगट करी मति ने बवराई ।। असूवता रंग लालाई पाई ।।
करी बेकली ने कुटलाई ।। बल पौरख ने की बिफलाई ।।

यहि गति निरख कीर बिसमानयो ।। बार बार निज मन पछतान्यो ।।
नारी कुटिल भागन के पग ते ।। याको सुख बिग्रयो अब जग ते ।।
पर्यो अचानक कठिन कलेसा ।। मम सिर चरहै पाप बिसेसा ।।८५।।

दोहरा: अब याको समझावनो रोकन हितु जु ऊपाय ।।
लगन अगन त्रिन तूल दै दुगन करन मरझाय ।।८६।।

चौपई: याते हुवै बिआकुल अति कीरा ।। लगयो अनिक बिधि बैन सुधीरा ।।
प्रेम खरग को घाऊ सुधारन ।। खबर मिलन की करि ऊपचारन ।।
निज मति को थिसथिर रख बीरा ।। रहु सविधान न होहु अधीरा ।।
जों मुझ को साचों निज जाना ।। कूर कथन मुझ साच प्रमाना ।।
तौं छिक बचन देहु अब मुझ प्रति ।। मेरो कहयो मानीहे नित प्रति ।।
तब तुम कों ले संग सिधारों ।। सभा ससि कला द्रिगन दिखारों ।।
अर जौ कहयो न करिहौ मेरौ ।। दुख देखहु गे परम घनेरो ।।
पुन मो कौ जीवत नहि लह हहौ ।। कर मल मल पछुतावत रहहो ।।८७।।

दोहरा: कुवर कही सुन कीर तूं परम सहायक पंथ ।।
दरद निवारन सुख करन करहु कान्त तव संथ ।।८८।।

चौपई: तव ऊपदिस्टन मग ते टल हौं ।। बिन तव कहे न मग डल चलहौं ।।
जो तूं कहहि वहै सिर धरहौं ।। यहि बच जानन या ते टरहौं ।।
पै अब सीघ्र हाल कहु ताको ।। किती दूर अर तरफ कहां को ।।
पूरन परपक देहु निसानी ।। ना तर प्रान होत मम हानी ।।
मन बियाकुल तन होत अधीरा ।। पार दवत है प्रान सरीरा ।।
तरफत कहूं नैन मारग ते ।। निकल पड़हगे चल पारद ते ।।
फिर केवल पछता पर है गो ।। सिर धुन धुन तव देह दहै गो ।।
यथा कोऊ कवि कहि निज हाला ।। तरफत परयो प्रेम के जाला।।८९।।

दोहरा: बधयो बधक जयो प्रेम सर बिधयो परेवा प्रान ।।
तरफत है थल मीन गत मन मौरे निकटान ।।९०।।

चौपई: कीर कही मन धीरज धरीये ।। बिन बिचार तावल मति करीये ।।
आज निसा हित ही निवास कर ।। प्रात सुमर [redacted] हरि चलहु गमन कर।।

साच प्रेम जौ करय सहाई ।। भाग जाग क पर है सुख दाई ।।
प्रम की पाय क्रिपा बरतेबल ।। पहुच हि जाय करहि कारज मल ।।
यतन करव धीरज मन धरकै ।। मीत सदन तट दुवारन गरकै ।।
यहि सुन राज कुवर सुख मानी ।। धरयो धीर बच कीर प्रमानी ।।
यथा किसू कवि कोयहि बयना ।। कह्यो ब्रिहनि समान अचयना ।।
सुभग संदेस मिलन को पायो ।। ऊमग्यो परतन ह्रिदै समायो ।।६१।।

दोहरा: काल निसा को मित्र निज बद राख्यो संकेत ।।
आज निसा कै साल की रची बिधाता नेत ।। ६२।।

चौपई: किऊ कर कटय कलप की रतीयां ।। छिन छिन होत बिदीरन छतीया ।।
भाग बिपरजय कुटिल हमारे ।। कीयो यतन कहूं ऊलट न डारे ।।
वा निस की बेकली कुवर की ।। रुदन बिलाप द्रिगन के झरकी ।।
ऊडगन गनन बरख पल मानन।। कहा कहऊ मै निज छिक आनन ।।
छिन छिन बिकल गगनं दिस जोवत ।। रोवत ऊटत प्रात किम रोवत ।।
कबहु प्रात होवहि ततकाला ।। परहु प्रिया के मग तत हाला ।।
बिआकुल कहत आज की रयना ।। नौबत प्रातन बजत अचयना ।।
मनहु प्रान नहि रची बिधाता ।। बिरह निसा नहि राख प्रमाता ।।६३।।

दोहरा: या बिधि तरफत बिलपते प्रम सन करत पुकार ।।
अरध निसा के कूकने बिनती प्रात अपार ।। ६४।।

चौपई: भयो प्रात मिटयो अंधिआरा ।। लगी स्रिस्टि निज निंज बिवहारा ।।
राज कुवर निज मंत्री को सुत ।। बाल सखाई मित्र हुतोऊत ।।
यद्दपि याद न आपन तन की ।। याद कीयो तामहि रुचि मन की।।
आन चरन तिन कीन प्रणामा ।। राज प्रताप अटल सुख धामा ।।
आग्या कीय तिह राज कुवर बर ।। लयावहु अस्व जुगम छिह अवसर ।।
मारुत गमन चपल दामनि ते ।।गवन ऊतंग तरंग सुमन ते।।
जिन की झपट पवन मलडारे ।। पवन गवन लख पवन निकारे ।।
करि तयार लयावहु दुवै बाजा।। गहुर न करहु सीघ्र है काजा ।।६५।।

दोहरा: सुनत सीघ्र ह्य सारते बाज जुग दियआन ।। और कछु
और कछुक मगहेत को लीनो सुखद समान ।। ६६।।

चौपई: दुहूं बाज परु ह्वै असवारा ।। कुतो दुहुन को अति बड प्यारा ।।
कीयो पयान मनाय गजानन ।। बार बार सुमरत हरि आनन ।।
गृह सुख राज संपता सारी ।। पल महि प्रेम पंथ खरवारी ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। कही प्रेम की अकथ कहानी ।।
मंगल को मंगल न बीचारी ।। कछु सुध बुध की न संमारी ।।
प्रेम पुरख को कर अगवाना ।। तज घर बन दिस कीन पयाना ।।
गृह कुटंब तिय कुछु न संमाला ।। यही प्रेम के सदा हवाला ।।
जाके तन यहि करत प्रकासा ।। करत सकल जग ते सुऊ दासा ।।६७।।

कबित: लागत ही तन मै तनक तूल तिनगा सो मन मै धंधक धाम धूम धार भरगो ।।
आह की कराह सों फरत फार फरस्त सीसील कुल कानहूं के कानन मै बरगो ।।
देह गेह बांधव कुटंब को सनेह नेह लाज साज काज लेह देह कर जरगो ।।
नीकै जो निहर गोंं तो मरे जाने बिधि को मूलाक मै पाक को नाम प्रेम परगो।।६८।।

दोहरा: जगत प्रभाकर प्रेम के परयो पंथ या भाय ।।
मात पिता तिय गेह को नेह छिनक छिटकाय ।।६६।।
अब आगे सब बरन हो जे जे मह्रे प्रसंग ।।
या अवसर पूरन मयो दुती तरल तरंग ।।१००।।

हिती श्री मत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति निरूपत प्रीति प्रसंगे कवि साहब सिरिंगदिन बिरचिते राज कुमार प्रेम उपजन प्रकार प्रस्थान करन बरनंन नाम दुतीयो तरंग ।।२।।

कबित: प्रेम पयोनिधि के वगाह वेको थाह वेको आहै औ ऊमा है सो बडो ई बेप्रवाह है।।
बडे बडे मति के जहाज जाकी घूमन धै घूमत परे है पै न पाई कछू राह है ।।
मोरी मति नावरी निकारी प्री म्रिगिंद जाकों निंदत निकारे नदी नारे ई अथाह है।।
मैरे ऊमाह के निवाह के मलाह वेई गरू जी गोबिंद सिंघ साचे पातिसाह है।।१।।

दोहरा: निरजन नेह उजार के बन अवगाहन हार ।।
निधरक बिचरत जे सदा हित बन बेहर झार ।।२।।
पंथ हि चलत पछान जे बरे प्रेम उद्यान ।।
बन बियोग के हसद घसत मरद गहन मगमान ।।३।।
घर सि कंध भर अफार यहि सफार करत जे लोक ।।
बिन मग बीथी प्रीत महि बिसरत लोक प्रलोक ।।४।।
प्रेम कर मझा रूढ नित पै निज पयादे पाव ।।
जीवन सो जी भर रह्यो सदा मरन मन चाव ।।५।।

चौपई: ते या बिधि यहि लिखत कहानी ।। जब वहि कुवर तिलक रजधानी ।।
बाजी खेल जीव पर चलयो ।। राज ऊछंग लाड सो पलयो ।।
ग्रिहि तज बाहर द्वार नगर के ।। जा कर देख्यो ओर सहर के।।
धवल महल नीकी रजधानी ।। नगर बास सम छुटत पछानी ।।
देखत लीनो ऊरघ ऊसासा ।। तज्यो देस द्रिढ़ कर मर वासा।।
कट पटफस सुभ मित्र याद कर ।। रुदन कियो तिन के बियोग भर ।।
पुन कछु पढ प्रभ नाम ऊचारी ।। परयो पंथक छुब ढयो अगारी।।
दयो पिंजरा खोल कीर को ।। चल्यो छु संग सुत लै वजीर को ।।६।।

दोहरा: राज कुवर मंत्री सुवन दोऊ अस्व सवार ।।
पवन अस्व असवार सुक चले सुमर करतार ।।७।।

चौपई: नित नौ तन जल अंन अवतवे ।। नहे नहे देसन बिचरतवे ।।
बन बेहरन दगह्न गिरोवर ।। गहे ऊलंघत बहु माग घर ।।
नहे नहे बहु नगर निहारे ।। पसु पंछी नग नाग अपारे ।।
कहूं सुखद सेहजा पर सोहे ।। कहूं सिंघ सापन गन जोहे ।।
कहूं मिल्यो जल अंन अहारा ।। साक पत्र फल कहूं गुजारा ।।
धूप छांह जग ऊच निचाईं ।। गरम सरद मारुत पतियाईं ।।

मेह घाम तन कस्ट सहारे ।। सहे प्रेम के अनिक हुलारे ।।
पैती नहु निस को मिल बैठत ।। कछुक पंथ को कस्ट अमैठत।।८।।

दोहरा: इतनो हूं सुख समय को सहन परयो अवरेखा ।।
रच मान औं रहि कछू चाहत कौतक देख ।।९।।

चौपई: बहु माग बिचरन पसचाता ।। बनयो आन या बिधि बिरतांता ।।
देख्यो इक अपूरब कानना। जो कानन कहूं सुन्यो न कानन ।।
जो जो वा जंगल मैदाना ।। मनहुर वस ऊपबन की नाना ।।
सुंदर सुमन सरस फल सारे ।। मनहि अनंद बढावन हारे ।।
तन को सबल करत माधुर फल ।। सुमन सुगंध फैल रहि जल थल।।
जह लग जात द्रिस्टि इरिदारा ।। सुमन सिवायन सकति निहारा।।
कहूं खेह प्रफुलित चंबेली ।। गुंजत मधुप फरहरी वेली ।।
राज कवर लख मयो मुदितामन ।। जात बिलोकत चकित सुमन गिन ।।
प्रभू माया बिचित्र बनवारी ।। जिन यहि रची सकल फुलवारी ।।
• चलत चलत चित चकित अचानक ।। लख्यो इक अदभुत तहि बानिक।।१०।।

दोहरा: द्वै कुरंग दामिनि सद्रिस पवन गवन अगवान ।।
कूदत फांदत चकित चित सनमुख बिचरत आन ।।११।।

चौपई: जर दोजी बसनन स्रिंगारे ।। सुवन स्रिंगन जगटित निहारे ।।
कंठ अमूख परे कनन केक ।। मनहु कोऊ काम निहर मन के ।।
करत कटाछ सहत पग धरनी ।। पग नूपर धुनि जातन बरनी ।।
छम छम करत चौंकरी मरही ।। लख ससि म्रिग चौकरी बिसरहि।।
राज कवर मन लुभित अचयना ।। निज मंत्री सुत प्रति कहि बयना।।
किहि बिधि [illegible] जीयत हाथ ये परही ।। तब मन को परचाकन करही।।
लख्यो न यहि कुरंग छल रूपा ।। जिनहु छले राघव कुल भूपा ।।
नहि जान्यो तिन को कछु ढंगा ।। हो हि कुरंग न बडे कुरंगा ।।१२।।

दोहरा: यहि तरंग मन धार करि ऊचे कीये तुरंग ।।
लख कुरंग वहि चकित चित तबही भई कुरंग ।।१३।।

चौपई: चल तहु ते निज सहज सुभावा ।। लख्यो तुरंगन कों जब धावा ।।
प्रवन बदल निज आप संभाला ।। फांदत चले ऊछरते छाला ।।
छिनहु तेज तब करे तुरंगा ।। ऊत वेच लेऊ तंग कुरंगा ।।
यहि लख कीर मनहि बिसमाना ।। ग्यो चौकड़ी चूक निदाना ।।
टीं टीं कर बहु करी पुकारा ।। नारे नारे राजकुमारा ।।
नहि कुरंग ये बडे कुरंगा ।। नहि बन मंत्र सकति को ढंगा ।।
कत अनरथ आपन हित करहो ।। तज मरजाद न छिक पगम धरहो ।।
रह्यो पुकार पटक निज सीसा ।। मिट न सकति रचना जगदीसा ।।१४।।

दोहरा: तुलसी तो भव तबय तैसी बनत बहाय ।।
आप न आवत ताहि पै ताहि तहा लैजाय ।।१५।।

चौपई: अस्व पगन को सबद सुघोरा ।। कीर सबद नहि सुनयो सुथोरा ।।
ऊडत पुकारत थक गिर पर्यो ।। बिहबल रुदित प्रान धर हर्यो ।।
छिक तरवर पर बैठ रह्यो थका ।। बिआकुल बिसुध निरा समयो बक ।।
चले गहे वहि म्रिगन पिछारी ।। छिक जो जन लग सुघन संभारी ।।
पुन कुरंग वहि निज बिल गाने ।। ह्वै दुराह दोऊ भगे मियाने ।।
छिक संग भयो सु राज कुमारा ।। मंत्र सुकन दुती ये की सारा ।।
[illegible]
बिछर गहे दोऊ हे गह बरबन ।। या बिधि छिछा हुती स्यामघन ।।१६।।

दोहरा: जो छिछा जगदीस की सोऊ बनत बनाऊ ।।
बन बन बिचरन को कहा होत पांडव नचाऊ ।।१७।।

चौपई: बहुर दूर तग राज कवर बर ।। गयो अस्व द्वै म्रिग आगे धर ।।
असताचल चल गया प्रभाकर ।। छित यहि पहुचयो जगत प्रभाकर ।।
जब यहि अधि निकट तिहि आयो ।। तब कुरंग ततकाल छिपायो ।।
तब तिन अस्व रोक निज लीनो ।। भयो बाज तन सकल पसीनो ।।
निज तन बूडयो [illegible] सगल स्वेद कर।। मन पछतायो बयरथ सेदकर ।।
चहु दिस लखयो निकट नहि कोऊ ।। साथी हुते बिछरगे सोऊ ।।
बिआकुल चकित थकित लजत मन ।। हेकाकी गह बरबन निरजन ।।
कहूं कीर कहूं मंत्री सुत बर ।। छिकलो आप फिर्यो बन गहबर ।।१८।।

दोहरा: पस पंछी खग म्रिगनं नर जीव मात्र की गंध ।।
नहि आई किहु ओरते महासूंन बन अंध ।।१९।।

चौपई?: जीव मात्र जब कोऊ न देखा ।। तब बहिबल मयो अधिक बिसेखा ।।
बहु बिआकुल ह्वै करत बिलापा ।। करत भयो या बिधि पछतापा ।।
अहो प्रेम सागर यहि दुस्तर ।। जाबहि ऊठत तरंग जुबन बर ।।
जिन मुझ को इिह भ्रांत भ्रमायो ।। राज पाद सह क्तन छुडायो ।।
मयो हुतो कत याते आगया ।। अस सराब घर बार तियागया।।
कबहुं जु सुमरत सुक मंत्री सुत ।। तब यहि पढत किसू कवि ऊकता ।।
कहीयो पवन संदेस हमारा ।। जो बिछुरे हमसो हम यारा ।।
मिलतन मगन कहूं सुध पाई ।। जो असबन महि जात भूलाई ।।२०।।

दोहरा: या बिधि पढ आगे बढयो सरवर लख्यो अनूप ।।
उतर अस्व ते तद गयो देख अमल जल रूप ।। २१।।

चौपई। कर पखार मुख कर्यो पखारन ।। रुदन कीयो इेकल भय मारन ।।
तिसी दसा महि रुदित बिहाला ।। प्रभू सन बिनति करी ततकला ।।
कर प्रणाम अंजुल करि धारी ।। बार बार इिम बिनति ऊचारी ।।
हे प्रभू जाको कोऊ न जग मै ।। ताको तूं रछक सम मग मै ।।
जे नर भूू परे बनझारा ।। तिन तूं मग दिखरावन हारा ।।
मै बिहाल बिआकुल दुखियारी ।। निज मीतन सौं दूर पधारी ।।
अब तूं करि सहाय इिह बेरी ।। मै प्रम सरन गही अब तेरी ।।
तोहि मरोसै राज माग तज ।। घर से निकर परयो तज सभ लज ।।२२।।

दोहरा: बनयो मुसाफर बनन मै दुख दरद सिर धार ।।
संग न साथी मित्र को नहि दोसत नहि यार ।।२३।।

चौपई: कासों कहो हाल दिन अपनो ।। अदभुत दुख महि परयो तड़पनो ।।
तूं है यहां कि यहि गहबर बन ।। महां भयानक लख कांपत मन ।।
जीव मात्र की गंध न या महि ।। तुझ बिन मेरो कोऊ न महि महि।।
या बिधि कहि बहु कीन बिलापा ।। नैन प्रबल जल चलयो अमापा ।।
बिनति सहित तिहि रुदन प्रकारा ।। सुनी गई प्रभ के दरबारा ।।

या पर श्री गुर बचन प्रमाना ।। श्री अकाल ऊ सतत जहि माना ।।
गज पुकार ते चीटि चिंघारा ।। सुनीयत प्रथम ताहि दरबारा ।।
बिनति बान मनजूर लक्ष पर ।। मिलयो अघर जिम पिय पियारी बर।।२४।।

दोहरा: इक पुरख अति ब्रिघ बरसेत के समुख नूर ।।
हरि तब सन आसन सिंघ तेज वैत जन सूर ।।२५।।

चौपई: कर महि छरी सुहावन मूरति ।। साधु सुबेख सिंघ की सूरति ।।
आन अचानक कह्यो पुकारा ।। जय जीव हु जू राजकुमारा ।।
नौतन तरु वर राज बाग के ।। गह्यो कस्ट द्रिड़ नेह राग के ।।
सुनत आंसु वन पोछ कुमारा ।। प्रति ऊतर कर आदर धारा ।।
ब्रिघ पुरख तब बोलयो बचना ।। सुधा सरस सुंदर बढ रचना ।।
कु पियारे किया मनसा तेरी ।। बांछित सिधि माख बिन टेरी ।।
यहि सुन राज कवर हरखत मन ।। हनहु तपत थल मीन बरख घन ।।
भूल गयो दुख मग भूलन को ।। याद न किया मित सुख मूल को ।।२६।।

दोहरा: नहि सुमरन सुक को कीओ नहि मंत्री को तात ।।
मगन मनै मन अधिक ह्वै बचन कह्यो बिख्यात ।। २७।।

चौपई : सपथ तुमह तिस ही प्रमकेरी ।। जिन यहि करी सहायता मेरी ।।
मग दिखरावन तुमहि पठायो ।। जिनहु ग्राह्ते गज हि छुटायो ।।
सीघ्र निसानी कनक नगर की ।। देहु क्रिपा करि राह ऊघर की।।
दुवार प्रिया के देहु पुचाई ।। दीन जान कर करु [redacted] सहाई ।।
यहि सुनकर वे योग प्रसंसा ।। हसयो साधु वहि गुनि अवतंसा ।।
हरे राम रे रह्त निजातम ।। यहि जो महा भयानक बनतम ।।
पर्यो अचानक तहां भुलाई ।। मनहु काल क्रित आफत आई ।।
अबहु आपता महि फस रह्यो ।। छूटन मग अब लग नहि लह्यो ।।२८।।

दोहरा: प्रान बचन को पतो नहि प्रिया यादकत कौन ।।
सीस परे को खेल यहि साच कह्त परबीन ।। २९।।

चौपई: यहि सुन बोलयो जगत प्रभाकर।। आफत कस्टन को या ऊपर ।।
प्रिया बियोग कस्ट बढभारी ।। प्रान सह्ति आफत समवारी ।।

यथा किसू कवि की यहि बानी ।। सुनहु बिरहु दुख सन जन सानी ।।
दुख बियोग की करहि सराबर ।। कहा प्रलय दुख करत बराबर ।।
दिन न्याव को रवि सुत सुन मुख ।। मति मिलाव मो बिरह निसा दुख।।
यहि सुन अमल ह्रिदै वहि नर वर ।। कह्यो सुनहु हे राज कवर बर ।।
यहि बन परम भयानक कानन ।। मनहु सिंघ सरपन को आनन ।।३०।।

दोहरा: जिती धरनि रमनीक यहि नजर परत तव बीर ।।
महा कस्ट को जाल सो बिछ्यो जान मति धीर ।। ३१।।

चौपई: जिते तहो वर अर फुलवारी ।। कंटक कस्ट पुंज यहि सारी ।।
या महि ऊरफ फस्यो जो नर है ।। छूटन प्रल्य लग सुरफ ऊबर है।।
यहि सभ मंत्र सकति की रचना ।। कठिन परै या महि पर बचना ।।
यहि सुन राज कवर कहि बयना ।। प्रेम पुलक भर जल जुग नयना ।।
हम है प्रेम जाल के मीना ।। फसे तरफते तन मन खीना ।।
मुहि जीवन ते मरन अधिक भला ।। छूट परै नित की यहि कल कल ।।
दिल को हाल दुतीय रंगपर ।। यथा किसू कवि को यहि बचवर ।।
पाव कफव निकलत नित हियते ।। मरन भलो प्रभू सुस हो जियते।।३२।।

दोहरा: दरद भरे बच कुवर के सरद स्वास सुबिसेख ।।
सुन क्रिपालु वा साध को क्रिपा परी तिहि पेख ।।३३।।

चौपई: कह्यो कवर धीरज मन धरुरे ।। करन हार पर द्रिस्टि सु करुरे ।।
यतन कार वहि निर यतनन कौ ।। प्रथिक प्रथिक पोखत समतन को ।।
स्री मुख बचन करत गुरु स्वामी ।। वहि सभ घट को अंतर जामी ।।
जाको मुसकल बनै अपारा ।। ढोई को छिन देत निहारा ।।
लागू होए दुसमन सारे ।। साक मिमज ले सु किनारे ।।
भजे सभ आस रासु जाको ।। चुकै सभ आसरा ऊसु ताको ।।
ताको प्रार ब्रह्मा चित आवै ।। ताती वाऊ लग नही पावै ।।३४।।

दोहरा: राज कवर यहि बचन सुन सिर धर कीन प्रणाम ।।
वैसो ही है पार ब्रह्म करत सभन के काम ।।३५।।

चौपई: बहुर साधु प्रति करी दीनता ।। ता प्रभू के हित सुन अधीनता ।।
इक द्रिस्टि वहि देस कनक पुर ।। पुन वहि राज कुमार प्रिया मुर ।।
नजर परै तौ सफल जीविनौ ।। ता बिनि रुचत न नीर पीवनौ ।।
या तन को नहि कछु इतबारा ।। सदा म्रित जिह सास निहारा ।।
भला द्रिगन तौ सफल करौ मै ।। पुन पाछे जीवहु कि मरौ मै ।।
यहि सुन वहि हरि सेवक संता ।। क्रिपा करी हरि जान बिवंता ।।
कह्यो जरा जुग नयन मिलावहु ।। प्रभु चाहै मन बाँछित पावहु ।।
यहि सुन कुवर नैन जुत मीले ।। मनहु भ्रिंग जुग कंजन लीले ।।३६।।

दोहरा: लख्यो कनक पुर राज घर पुनि वहि राजदुलारि ।।
देखत आह कराह करि धरन परयो बिसंभार ।।३७।।

चौपई: ब्रिध पुरख तक किय समझावन ।। ऊचित नथा बिधि प्रानगवावना।।
जीवत लग आसा बन आवै ।। इक दिन प्रभ वहि मित्र मिलावै ।।
प्रान गए पुन कौन काम कौ ।। बन कौ भयो न भयो धाम कौ ।।
यहि सुन कछुक धीर मन धारी ।। राज कुवर बर पलक ऊघारी ।।
निस पर गई हुती तिह अवसर ।। कछुक खवायो ब्रिध पुरखबर ।।
ता सरवर तट सैन करायो ।। सोय रह्यो कछु मन सुख पायो ।।
जब ही गगन गहन बन गमते ।। पथ भूला य पंथी पस चमते ।।
प्राची पुरख ब्रिध जब पायो ।। रवि राही कौ राह दिखायौ ।।३८।।

दोहरा: ता प्रताप कर प्रभाकर प्रभ करी इक जाम ।।
जगत प्रभाकर जगयो तब सुमरत मुख हरिनाम ।।३९।।

चौपई: जागत लखी सुभग वहि ठौरा ।। जहि ते म्रिगन पिछा री दौरा ।।
न हि वहि पुरख न लखयो सरोवर ।। न हि बन बाग न सुमन तरोवर ।।
बार बार करि प्रभू हि प्रणामा ।। चलौ बहुत जित मित को धामा ।।
ब्रिध पुरख मग दीन निसानी ।। तिहि अनुसार चलयो सुख मानी ।।
चलत चलत बहु दिन निरवाहे ।। बन बेहर कानन गिर गाहें ।।
इक दिवस यहि लखयो कलेसा ।। ग्रीखम रुति किया आन प्रवेसा ।।
चलत चलत मध्यान भयो रवि ।। अति आतप को बर न सकय कवि ।।
भयो त्रिखा तर राज कवर बर।। जल मुकता मुकता अल्लमरतर ।।४०।।

दोहरा: त्रिपति बरन जौ जायत हि जलकि करहि तलास ।।
नहि पावय वा बनहि तेल है त्रि खा कर त्रासा ।।४१।।

चौपई: कंटक वती भई रस ना सुख ।। तपत रेत पग जरत महादुख ।।
छिक डग मग नहि परत अगारी ।। तपत लुवैं जन छुवत अंगारी ।।
ह्रिदै दाह या बिधि तन तावन ।। पत्रि लगै तन पत्र दुराक्न ।।
कई कोस जौ दिस्ट चलावै ।। खग म्रिग छेक नजर नहि आवै ।।
बन वह बनियो मनहु लोहारा ।। चहुं ओर पावक सुदवारा ।।
मारू रवि मरीचि चमकावत ।। नद तरंग मानहु छबि छावत ।।
भ्रमत त्रिखा तुरत हि बिलोकर ।। रहत निरारथ परम यतन कर ।।
बोलत सबद भयंकर काका ।। कहूं ग्रिघ बहु रटत कुबाका ।। ४२।।

दोहरा: छिक दिस तिन के बोल कटु दुतिय कटुकर विघाम ।।
तपे पखान अंगारसम खग म्रिग बिगति अराम ।।४३।।

चौपई: या बिधि तपत तेज रवि भारी ।। जा करि होत भ्रिस्ट म्रिग कारी ।।
जो ताको बखान कवि करई ।। तब रस ना पर फालक परही ।।
तपत पवन को गवन भयावन ।। सम बन म्रिग मुख स्याम लखावन ।।
कहों कहा तप लुवै प्रवल कौ ।। ह्रिदै बिदीरन होत घवल कौ ।।
मत सीमरत नीर महि भूंन कर ।। जरत किनार लगत सिर धुन कर ।।
करकट गगन जरत तपत पकर ।। जलकर कट जल जात ऊबल कर ।।
अस रितु पंथी चलहि कवन बिधि ।। अंजुल जलहुं भयो सुपन सिधि ।।
सरखरात बिबि सुसक तरोवर ।। पंख खोल फफरात पंखबर ।।४४।।

दोहरा: चार चरन हौंकत परे कंपत तपत अचयन ।।
मित्र तपत ते जीय तपत कह्यो परत नही बयन ।।४५।।

चौपई: पंथी मन संकलप के चरना ।। मगन लहत ऐसी वहि घरना ।।
प्रलय काल वत तपत प्रभाकर ।। प्रलय ठौरवत वहि बन गह्वर ।।
ऐस दसा महि बयाकुल मन अति ।। त्रिखत बिकल आतप कर तापति।।
छिक दिस सघन तरोवर देखे ।। चल्यो सीघ्र तहि छाव परेखे ।।
तहां जाय छक लख्यो सरोवर ।। भर्यो अमल जल सुभग तरोवर ।।
नीर निरखतन परे पराना ।। नयो जनम अपनो कर जाना ।।

नीर गंभीर तरंगति सीतल ।। सीतल मद्दे नयन पुनहीं तल ।।
उतर अस्व ते निकट गयो चल ।। महां त्रिखा तु रहित अचवन जल ।।४६।।

दोहरा: लख्यो न सब फिर जात है परय समय के फेर ।।
अमीह लाहल देत फल माटी बनत सुमेग ।। ४७।।

चौपई: समय आन जब मति बवराई ।। अदभुत कौतक परयो लखाई ।।
झुकयो जबहि जल हित सरउरी ।। ता महि लखी प्रिया वहि गोरी ।।
जाके प्रेम प्रबल परवाहा ।। बूड रहयो नहि लहत सुथाहा ।।
अनिक कलेस दुख बड लहरी ।। ता महि बहु तुजयो त्रिण नदि गहरी ।।
चित महि नेह चुभो जाको मन ।। लखी ताल महि तब वहि कामति ।।
द्रिगसम द्रिग जु मिले वहि बोली ।। गुपत गाठ जनु हिय की खोली ।।
हेहो सख प्रेम दरीयाके ।। नावन हार नेह नहरां के ।।
बडी देर की तुहि अवसेरत ।। धन वहि प्रभू आनयो जिनि प्रेरत ।।४८।।

दोहरा: गहुर न कर अब आन बर सीघ्र सरोवर महि ।।
तव मनसा पूरन भई मिल कर के लक राहि ।।४९।।

चौपई: छिन की यहि मूरति द्रिगछाई ।। जब ते द्रिग मुंदाय दिखराई ।।
आठुह जाम रहत नयन महि ।। छितऊत होत न छिन छिक वां महि ।।
यदिपि हुतो मति वंत सुजाना ।। बहुर कीर कर सिखक्त नाना ।।
पै प्रेमिन की यही कहानी ।। रहत सदा सुध बुध बिसरानी ।।
बिन बिचार मुख बिपति बिआला ।। कूद परयो सर महि ततकाला ।।
जीवन सो जाको जी मरयो ।। यहि बच कहत कूद वहि परयो ।।
तव सनेह मै कोऊ ऊछलयो ।। परयो ल हुवै है गहरे जलयो ।।
जो यहि काम बनयो हैहमसो ।। कबहूं बन न सकय रुसतम सो ।।५०।।

दोहरा: परते ही पीरत भयो सिर तल ऊपर पाओ ।।
गयो रसातल को लुटत परत न पग ठहराओ ।।५१।।

चौपई: घटिका इक भ्रमत यौ गयो ।। पुन कहुं पाऊ टिकति तिहि भयो ।।
चरन टिकयो तब आंख ऊघरी ।। नहि तहि ताल नहि वहि सुंदरी ।।
लख्यो इक सुनो मैदाना ।। नहि त्रिण तरु खग म्रिगन पखाना ।।
परम भयानक सून परी घर ।। रुसतम लखयोत जाय तुरत डर ।।

जौ छिस फंद परय छिस फंदा ।। रंग जरद ह्वै गलित अनंदा ।।
तब पछतायौ राज कुमारा ।। दुतिय बार जक कीन खुवारा ।।
कीर कही सुमरन मन कीनी ।। निज मन प्रति घिघिकारन दीनी ।।
घिक मुझ मति बड दुख अपसोसा ।। चलयौ कहित हरि राख भरोसा ।।५२।।

दोहरा: चलत चलत छिक दूरते दिस्टि परयौ असथान ।।
निकट जाहि देख्यौ तहा छिक है बाग महान ।।५३।।

चौपई: चहुं ओर तिहि चार दिवारा ।। कनक रचत नग मीना कारा ।।
कनक महल मंदर मंदरसे ।। जगमगात नग जट सुंदरसे ।।
सघन तरोवर मिलत आप महि ।। मनहु मिलत प्रिय प्रिय प्रेम महि ।।
सीतल मंद सुगंध समीरा ।। म्रिग बिहंग भ्रिंगन की भीरा ।।
त्रिखत तपत हो राजकुमारा ।। सुखत जान भीतर पगु धारा ।।
अदभुत लखी बाग की रचना ।। रव सकि दार रचित मनि खचना ।।
सरस सुगंध खिरी फुलवारी ।। मत्त भ्रमर गन करत गुंजारी ।।
नहरै निरमल नीर सुहावन ।। सरवर भरे अमल जल पावन ।।
नौतन रचना सकल बाग की ।। मनहु अवध सम सुख सुभाग की ।।
कूंजत बिबिध बिहंगन स्रेनी ।। मनहु स्रमत मग सम हर लेनी ।। ५४।।

दोहरा: फल दल फूल लता नजो सघन यथा घन स्यामा।
बिच बिच मालनि बिचरती थकित लखय सुरबाम ।।५५।।

चौपई: रवस रवस बिहरत गज गामनि ।। परम मनोहर सुंदर कामनि ।।
बोलत मधुर बुलबुले बानी ।। मनहु कामनी कथित कहानी ।।
मध्य बाग छिक बारह दरी ।। कनक रचित मनि मानक जरी ।।
ताके ढिग छिक सुभग सथंडल ।। जाहि निरखच करहि त अखंडल ।।
तापर छिक सम तनी बिताना ।। मुकता की झालक बहुनाना ।।
तातक मसनद बिछी सुहावनि ।। चहुं ओर मुकता रच पावन ।।
ता पर छेक त्रिया बड सुंदर ।। आनी जनु मथ छीर समुंदर ।।
सोड़ सब रस बहि क्रम दारा ।। बैठी नख सिख रचित सिंगारा ।। ५६।।

दोहरा: सजित सखी बहु दासी आ चहुं ओर परवार ।।
रूप भरी रति ते खरी फूल छरी सी नारि ।।५७।।

चौपई: रूप जु बन मद मैन खुमारी ।। बैठी तुलित गरब महि भारी ।।
निकट गयो जब राजकुमारा ।। इक त्रिया तब कह्यो पुकारा ।।
है जू तुम हो कवन दिवाने ।। बरे निधर कहि भवन बिगाने ।।
बिन पहिचान पराहि भवन मै ।। बरेन चाहित प्रान सुतन मै ।।
ये इति सदा बिमन प्रानन ते ।। मागत म्रित फिरत कानन ते ।।
ता प्रति ऊत्तर कछु न ऊचारयो ।। ह्वै निसंक आगे पगु धारयो ।।
बैठ्यो जाय तही मसनद पर ।। यहि बच कह्यो सु बैठ बराबर ।।
बीरासन अति ढिग इक ढबके ।। हमहि न आवत दाव अदब के ।।५८।।
दोहरा: वहि तो याके बिरह मै ब्याकुल थी दिन रात ।।
म्रिद मुस्काय सुर ही चुप समझ आपनी घात ।।५६।।
चौपई: आपहि प्रसन करी पुन कामनि ।। करि क्रिपा कित ते भयो आमन ।।
राज कवर चक्रित ता अवसर ।। रह्यो बाग की ओर खियाल कर ।।
जिते तरोवर तहा निहारे ।। फल की ठौर लगे खग सारे ।।
खिरे सुमन निरखे तहि जेते ।। बोलहि मधुर आप महि तेते ।।
जिस फलको संकलप मन करियै ।। तात रुते खग चलत निहरियै ।।
प्रथम आय खग निरत दिखावै ।। पुन फल आप हिते मुख आवै ।।
जितो खाहु वहु साबत फल है ।। पूरन रहत न रंच कटल है ।।
जबहि त्रिपति ह्वै निज मन रोकहु ।। तही डार पुन लग्यो बिलोकहु ।।६०।।
दोहरा: यहि कौतिक तिह दासीआं करत मंत्र को जोग ।।
न्रिप सुत को डर पाकन हित बिरमावन चित चोर ।।६१।।
चौपई: यहि कौतक लख राजकुमारा ।। कीयो मन हि मन नीक बिचारा ।।
यहि सभ मंत्र सकति की रचना ।। जा बिधि कह्यो साधु ऊन बचना ।।
बुरी बांस महि फसे हाय बिधि ।। अब छूटन बिधि करहि कवन सिधि ।।
या चिंता करि ब्याकुल मनहि ।। ध्यान रह्यो नहि प्रसन बचन महि ।।
पुन पूछ्यो तब ऊत्र दीनो ।। हमरो आव न सभ तुम चीनो ।।
हम री गति तुम ही भल जानहु ।। हैं अनजान पर तुम पहिचानहुं ।।
यहि सुन त्रिया मंद मुस्कानी ।। पाहु न जान अधिक सनमानी ।।

सखेन्यन प्रति सैनी प्रगटाई ।। करहु पाहुने हित पहुनाई ।।
तिनहु सुनत कीनी कछु सैनी ।। मंत्र सकति आग्या बड पैनी ।।
कनक थार बहु बिधि पकवाना ।। मेवे बिबिध सुगंधत नाना ।।६२।।

दोहरा: कन सुराही मद भरी पान पात्र नगकार ।।
आई सकल समग्री आपहि होय तयार ।।६३।।

चौपई: प्रथम सुराही निकट जु आई ।। निरत करत यहि बचन सुनाई ।।
पान करहु जू यहि मद मोरा ।। डारहु धरनि बचहि जो थोरा ।।
जहि अघते औरन सुख बनई ।। ऊपकारी नर भय नहि मनई ।।
पान पात्र पुन आप हि भरयो ।। निकट जाहि तिन बचन ऊचरयो ।।
पीवहु जू मद राज कवर बर ।। दुख के दिवस दूर चाहत कर ।।
कछु संकलप बिकलप जु तेरे ।। चाहत अबह कूच कर डेरे ।।
राज कवर लख अति भयमाना ।। नाह करनन सलाह पछाना ।।
जौ अब करहु रंच तकरारा ।। कंठ तरै ऊतरै यहि सारा ।।६४।।

दोहरा: तब कछु बनय ऊपाय नहि सकल होय रसहान ।। मै हौ
मै हौ छिन की फास महि कठिन बनय छुटकान ।।६५।।

चौपई: ताते छिक के ह्वै अनुसारा ।। यतन करे बनहै छुटकारा ।।
नीति निपुन छिम करि बिचार मन ।। पान पात्र कर लीयौ बचन भन ।।
याको रस प्रीतम गरबहीयां ।। बडो कस्ट यहि ह्वै वहि नहीया ।।
कहाअयोग संजोग परयो यहि ।। यति तौ ह्वै नहि होय कहोवहि ।।
यौं कहि पीयौ रुकत घूंटत से ।। घूटत कंठ प्रान छूटत से ।।
लेत देत सांभांत परसपर ।। छिक दो चार पीऐ प्याले भर ।।
तब वहि भली त्रिया मदमाती ।। मति के पात्र ते मति रही जाती ।।
लगी करन रस भाव मजासै ।। नोक चोक लख कुटिल कनासै ।।६६।।

दोहरा: राजकवर वर रस भाव वे जानत भाग हिरान ।।
समय बिबिस अति दुखित मनहां हूं करत बखान ।।६७।।

चौपई: है यहि साच सकल बिवहारा ।। जासो निज मन होत पियारा ।।
ताकी गार सहित रस भावा ।। आलिंगन रुचि रस ऊपजावा ।।
या चरचा महि अरध निसातौ ।। भई बितीत कर तर सबातौ ।।

तबहि थाल की भई तयारी ।। भोजन बिबिध समग्री सारी ।।
रुचित अरुचित कछुक तह खायो ।। जल कर कंठ तरे ढरकायो ।।
तिन तिय रुच करि भोजन कीनो ।। पुन तहि कर कुमार गहलीनो ।।
भीतर भवन ताहि ले गई ।। कनक न जटत दिखरावत भई ।।
कनक सिंघासन आन बिटारयो ।। सुखद सेज पर चहित सवारयो ।।६८।।

दोहरा: जोबन मद पुन मदहि मद तरुन छिक गर पाया ।।
लपट गई तज लाज पट मद नत वार नखाया ।।६६।।

चऊपई: ह्वै अधीन बोली तब बानी ।। प्रगट करत भई बात पछानी ।।
न्रिप सहपाल सुनयो ह्वै है तुम ।। मंत्र सकति महि निपुन प्रगट मुमा।
जिते किया बिद्या अधिकारी ।। तिन पर सम ताकी सिकदारी ।।
मै हौ ताकी राज दुलारी ।। तौको अति प्रानन ते पियारी ।।
यहि सभ बाग मंत्र मम रचना ।। सभ अस्थान सहित मन रचना ।।
बहु बरखन को तुम सन प्रेमा ।। बांध रही मै ने हस नेमा ।।
तुम बियोग थस बिथित जीवनो ।।करत सदा निज रकत पीवनो ।।
बडे भाग अब तुम मझ प्रापति ।। मै अब भई मनोरथ आपत ।।७०।।

दोहरा: अब जो किछु मन छिकत वतीन भवन महि होय ।।
नयन सयन करि दी जिये तत छिन प्रापति होय ।।७१।।

चौपई: सकल भांत सैन्यातव करियो ।। चेरी होय सीस जल भरहौ ।।
तीन भुवन की मम बिभूत घर ।। तुम सम के पति मम समेत कर ।।
छिक जो सभा सस्कला नारी ।। ताको तत छिन मन ते डारी ।।
मुहि सन केल करहु मन भावत ।। रहहु सदा या घर सुख पावत ।।
या बिधि बच सुन जगत प्रभाकर ।। प्रथम सुनत ही अधकगयो डर ।।
यहि बड दुस्ट मंत्र बल ठानै ।। हमरी बिथा सकल यहि जानै ।।
पुन धीरज धर बचन ऊचारे ।। बच बियोग नहि परत सहारे ।।
कह्यो साच सब सुंदर नयना ।। जो तव कहे रस भरे बयना ।।७२।।

दोहरा: पै तव बचनन ते कछू यहि भी परत पछाना।
प्रेम पंथ के पंथ मै हैं तूं सुघर सुजान ।। ७३।।

चौपई: मित मिलाप रस दुख बियोग को ।। जान है तूं दुहूं भोग को ।।
पै जौ न्याव नीति निरधारै ।। तज पक्षपात जु बात बिचारै ।।
तु हूं माख मति राख संक को ।। छाड छिद्र छल बाक बंक को ।।
जाके हित मै तज घर बारा ।। भ्रमत फिरत बन गहन ऊजारा ।।
तूं हैं सत्रु तिसी के नाम की ।। तव मितता मुहि कवन काम की ।।
जग महि तीन तरहि के अरिहै ।। इक जो प्रगट सत्रुता करिहै ।।
ता सम अपनो परयो बिगारा ।। ताको नहि कीजित इतबारा ।।
दुतीय सत्र सो जाहि मिताई ।। तान ऊको बिसास नहि हाई ।।७४।।

दोहरा: त्रितीइ अपने मित्र सो कह्य सत्रुता रीति ।।
सत्रु सिरोमन जानतिहि भूल न करय प्रतीति ।। ७५।।

चौपई: अथवा यही प्रेम की पथ है ।। यही नेह की नीक सपथ है ।।
नाम खराब किसू को करनौ ।। तज घरबार नेह मन धरनौ ।।
पुन जहि मिलय अराम बदन को ।। तही बैठ रहि दास मदन को ।।
धन बिभूत सुख राज पाट को ।। नहि ढूंढत हो बिरत बाट को ।।
नहि कछु चाह जु बनवति नारी ।। जो लुभाऊं लख छबहि तिहारी ।।
राज पाट धन रूपवती घन ।। बिज घर की सम तफनी समफाकन ।।
तुम पर सकल हाल यहि रोसन ।। धन बिभूति तिय की मन होसन ।।
तव बिभूति लख जौं ललचावौ ।। कत अपनी सम छोड गवावहु ।। ७६।।

दोहरा: हमरौ तौ यहि हाल है सुनहु कमल दल नयन ।।
यथा प्रेम के पंथ पर कह्यो किसू कवि बयन ।। ७७।

चौपई: बहुत काल कर चरन चिनारा ।। तप तकियो मग इक मठियारा ।।
बरख बीतीत भहे तज घर कौ ।। प्रेम बिगार दीयो घर दर कौ ।।
यहि सुन भई अधिक खिसियानी ।। रिस करि जरी भभकि जिम स्वानी ।।
कह्यो क्रोध करि रकत बिलोचन ।। स्वास नास करि धूम बिमोचन ।।
मंत्र सकति तुम मोहि न जानी ।। जाते या बिधि करत बखानी ।।
पसचम ते प्राचीलग बिचरन ।। है मम इक पलक को फरकन ।।
कहा कनक पुर तुछ बिचारा ।। द्रिस्टि करत ही गमन हमारा ।।
जौ मुहि ते तुम चित ऊदासा ।। अबहि करत हौं ताको नासा ।।७८।।

दोहरा: सभा ससिकला को पकर तव सन मुख दिखराहि ।।
निज तन मन सीतल करौ ताकौ अगनि जराहि ।।७६।।

चौपई: यहि सुन राजकवर बिसमानियो ।। छुटयो धीर तन मन कंपानयो ।।
त्रिय को कोप अधिक भय दायका ।। यहि पिसाचनी क्रुधित सुभायक ।।
पुन यहि मंत्र सकति बहु जानै ।। अनिक छिद्र व छलमाया ठानै ।।
नाह करौ तौ प्रिया मरत है ।। हा भरहौ धरमहु बिगरत है ।।
ऊभय पास महि कटिन फसयो अब ।। जौ प्रभ क्रिपा करहि ऊबरौ तब ।।
जामहि होय अंत फल सुखको ।। सो बिचार कर तब हरि दुख को ।।
लग्यौ बिचारन अधर दसनगह ।। निसचै यहि क्रित सही सौच ग्रह ।।
जा पर बीतत सो यहि जानै ।। सुवन पीर बंधया कस जानै ।।८०।।

दोहरा: चित जित लग्यो लग्यो तितै फिरयो फिरयो तज ओर ।।
अन मिल मिलनो करिन दुख मिल बिछरनो कठोर ।।८१।।

चौपई: पुन यहि राज कवर मन आई ।। बिन हा करे न बच नऊ पाई ।।
अनिक भांत मन धीरज दीनो ।। या प्रकार समझावन कीनो ।।
जौ यासो अब रस ऊपजावौ ।। प्रान प्रिया के प्रान बचावौ ।।
पुन अपने जीअ को छुट कारा ।। और भांत नहि होत निहारा ।।
प्रभू क्रिपाल कछु बयोंत बनावै ।। सम घट भीतर हाट चलावै ।।
बनत बनत कछु बनहै मारग ।। या बलाय से वहु फारग ।।
प्रिया द्वार लग पहुच परौगौ ।। किया फल अब जु बिसरथ मरौगो ।।
यहि बिचार मन गुपत बिचर कै ।। कह्यो मधुर बच छल मन धर कै ।।८२।।

दोहरा: यदपि कूर बचन सरम नहितदपि अवस कठौर ।।
पुन त्रिय ढिग कछु दौन नहि सासत्र द्रिस्टि करि गौर ।।८३।।

चौपई: ससि बदनी सुन राजदुलारी ।। तोहि परखहित हमहु ऊचारी ।।
हमहु प्रथम ये बचन सुनौही ।। कूर साच निरधार गुनौही ।।
प्रेमी निज प्रेमिन के मन कौ ।। राखत है सह दुख मन तन कौ ।।
पै यहि कूर हि परी लखाई ।। ऊलट पलट जाते लखपाई ।।
किंतु तार त्रसकारत ढांटत ।। बचन सखा प्रेमिन मन काटत ।।
स्रवन सुनी किहु नेहु सासना ।। हम निज नयन लखी हासना ।।

छिती समझतव मन नहि कीनी ।। कौन पुरुख तव तज रस भीनी ।।
तुझ सी मियल क्रिपा करि कामन ।। तजय मूढ पाछय लग दामनि।।८४।।

दोहरा: यहि अबिनासी राज तव तजय मूढ मति कौन ।।
फसी छोड ऊडती चटक परय पाछ मति मौन ।।८५।।

चौपई: तो सी त्रिया पाय रस बारी ।। सुनी बात कै परय पिछारी ।।
ढूंढत फिरय गहन बन भारी ।। पारस तज पखान बिवहारी ।।
या बिधि माख भूजा गर मेली ।। लई अंक भर छल अटखेली ।।
वहितौ छुली मदन मदमाती ।। नीवी मुकत परी तरफाती ।।
लपट गई ताके हिय संगा ।। रति क्रीड़ा हित अधिक ऊमंगा ।।
राजकवर फस गयो बिचारा ।। ज्यो त्यो किय ताको मुखकारा ।।
पुन जल लैकर मुख पखरायो ।। परयो तास ढिग ताहि सुवायो ।।
वहि दुस्टा परतें प्रयंक पर ।। गई निरय रौरुव सुनीदखर ।।८६।।

दोहरा: छिनहि नींद नयनन कहा बिघयो प्रेम के बान ।।
ऊरघ ऊसास दुखित भरत द्रिग प्रवाह नद जान ।।८७।।

चौपई: रुदन कराह दुगन दुख मन को ।। तपत बियोग दवार अगनिको ।।
प्रगट होत वहि आ अधरन ते ।। जान परत या बचऊ चरन ते ।।
काहू को निस कटी संयोगिन ।। कहुं कटत दुख रुदित बियोगनि ।।
हमहु निसा किहि भांत बिगोवत ।। सोवत कटत न बितवत रोवत ।।
पै जब लेत करौं टचुरेली ।। याके प्रानन बन तदु हेली ।।
स्वास सैंच चुप होव तरोवत ।। बिन सोवत ही लखिय सोवत ।।
या बिधि सह कस्ट दुख भर कै ।। निसा बिताई हर हर करकै ।।
भयो प्रात वहि ऊठी छिनारा ।। ले गई भवन सिनान कुमारा ।।८८।।

दोहरा: तहा जाय बहु मंत्र के कौतक चरित दिखाय ।।
कर सिनान तन सुचि कीयो अंग सुगंघ रमाय ।।८९।।

चौपई: बाहर आन थाल मंगवायो ।। भोजन बिबित्र यथा रुचि पायो ।।
तिन पाछै तिन बचन ऊचारे ।। सुनहु कवर वर प्रान पयारे ।।
अब मै जैहों पित दरबारा ।। नित प्रति मेरो यहि बिवहारा ।।
चतुरथ जाम दिवस के आवहु ।। अब तुमरी आग्या यहि पावहु ।।

जगत प्रभाकर मनहि ऊचारी ।। करी क्रिपा जगदीस मुरारी ।।
जो पल बिते बिना तन देखे ।। सो पल सफल जनम मम लेखे ।।
पै तासो यहि प्रगट ऊचारी ।। तब बियोग हमो को पलभारी ।।
पै अवस लख जान कहतहौ ।। सीघ्र आऊ अवसेर रहतहौ ।।६०।।

दोहरा: यहि सुन वहि मन मुदित ह्वै गई पिता अस्थान ।।
पाछे वहि ऊपबन सकल भयो सूंन ऊद्यान ।। ६१।।

चौपई: राज कवर तहि रह्यो पिछारी ।। याद परी तब राजदुलारी ।।
प्रेम उमग भर तज मन संका ।। रुदन करत सुर ऊच निसंका ।।
दिल को दरद सुरसना द्वारा ।। प्रगट करयो यह बचन ऊचारा ।।
महा कस्ट प्रानन पर धरकै ।। कह्यो कराह आह मुख भरकै ।।
मो समान को दुतिय अभारी ।। नहि ह्वै है जग अस अनुरागी ।।
जाको मित न सहायक कोऊ ।। जास न कहुहु सुनय दुख सोऊ ।।
संगति मिलीसु यहि मई प्रापति ।। जिनसौं कहन उचित नहीं आपति ।।
जाकर ऊन सन प्रेम प्रगटहो ।। फिर तौं जीवन कठिन निपटहो ।।६२।।

दोहरा: इक हुतो खग कीर सो या बिधि गयो ऊडाय ।।
बाल सखा मंत्री सुकन यौं कर गयो छुडाय ।। ६३।।

चौपई: बिना दरद दुख बयाकुलता डर ।। हमहू.न पायो आन जगत पर ।।
धरे सिरंघ सफर को भारा ।। या तेतो वहि भलो हमारा ।।
छिसी सटक महि सट घटि काटिन ।। रहयोत आवतलखी दुस्ट छिन ।।
लखत रूप तिहि आवत रुदना ।। रुदन रोक हसमुख किय बदना ।।
राजकवर तिहि अति भय पावा ।। बास पकंठ तरे ढरकावा ।।
पूरब वत पुन सभा बनाई ।। अरध निसा छिस भांत बिताई ।।
निंद्रित करत मई वहि सयना ।। छिनहि प्रेम बस वही अचयना ।।
ऊडग नग नत प्रेम की रचना ।। पढयो किसू कवि यहि बचना ।।६४।।

दोहरा: अहो बियोगनि रजनि तूं साखी रहो हमारा ।।
इक पलक द्रिग पलक पर ढलकी होय निहारा ।। ६५।।

चौपई: इस ही विधि बीते द्वै मासा ।। राजकंवर नित रहत ऊदासा ।।
महा कस्ट कर क्रिस तन भयो ।। असथि मात्र ही तन रहि गयो ।। ९६।।

स्वैया: घटते घटते तन ऐसो बनयो जु लखै कहै हां दुख याहै सही ।।
न बनै ऊपचार सु जाको कछू सु अजार कहैं यहि प्रेम वही ।।
न मिलौं जब लौं नहि लौं घरते क्रिस ताहै यही औत यारी यही ।।
प्रति मासी रहयो चुप देखै कहै नह लीन चली पुतली ये कही ।।९७।।

चौपई: इक दिन ऐसो बनयो संयोगा ।। प्रभू माया कर करत नियोगा ।।
चलन समय पित भवन ओर वहि ।। कहे बचन दोऊ द्रिगन छोर तहि ।।
राजकंवर प्रानन ते पियारे ।। इक संसय हिंय रहित हमारे ।।
जब मैं जांऊ राज दरबारा ।। रहुहु इकले तु मतिहि बारा ।।
तब तुम रहतौं हुगे बिआकुल ।। सूनौ रहत बाग मंदर कुल ।।
सूनो भवन खान अवतु हुवै ।। लख ऊदास मन कुमलावत हुवै ।।
या चिंता करि हियो जरत है ।। कछु ऊपाय तिहि बन न परत है ।।
जो कोऊ तजो तोहि ढिग तियकौ ।। कर चरचा परचावह जियकौ ।।९८।।

दोहरा: ये सभ कुमति कमीनी यां मानकता नहि रंच ।।
पुघि नहि बैठन ऊन की नख सिख भरी प्रपंच ।। ९९।।

चौपई: कहि जान हिय हि रीति तुमारी ।। बिकल होहु गे इनहि निहारी ।।
यहि चितवन निस दिन मन मेरे ।। देत रहत दुख सुख हित तेरे ।।
यहि सुन राजकवर कहि बयना ।। हम बियाकुल कत होत बिचयना ।।
जनम धरयो इकल जग आई ।। इकाकी सभ ऊमर बिहाई ।।
दुतियो लिखयो न भाग हमारे ।। जो हित चित संग तिह्मधारे ।।
बिधना रचयो न भव महि प्रानी ।। जो हम संग रहे सुखदानी ।।
पै इक संसय सदा रहत चित ।। जो कोऊ प्रान हरे हमरे हित ।।
तौ सभ दिवस सरीर हमारा ।। परयो रहे गौ निपट ऊघारा ।।१००।।

दोहरा: कवन जाय तुमसी कहय निपट हसी कीं ठौर ।।
रुक्न हार हम पर यहा कोऊ नही कर गौर ।।१०१।।

चौपई: यह सुन कहयो अमय असथाना ।। है सभ मंत्र सकति को ठाना ।।
तातो प्रवन न पाव प्रवेसा ।। यह अयु कुतकत करत अंदेसा ।।
राजकंवर बोलयो तब बचना ।। गूढ अभि संध धार मन रचना ।।

जौ कोउ मंत्र सकत वारी तिया ।। करय यतन तब कत छोडय जिय ।।
कहुहु कवन रोकय तिहि जाईं ।। प्रान गहे निसफल सुऊ पाईं ।।
वहि थीत नमनदोइे कवर प्रति ।। समझन परी गूढ ता की मति ।।
मन महि यहि बिचार ठहराही ।। जौ कदाचित कोउ तिय बिरमाईं ।।
मुहि पसचात पहू चय आईं ।। प्रान हत यह लेय ऊडाईं ।।१०२।।

दोहरा: मंत्र सकति करि कामनी करय लेय ग्रह गऊन ।।
तब पावनु फिर कठिन ह्वै यतन करय कहु कऊना। १०३।।

चौपई: बयरथ परै मम सम पुरखारथ ।। पुन पाछे सम यतन अकारथ ।।
पेम बिबस समझत नहि भई ।। तत छिन भीतर भवन सुगई ।।
खोल संदूक यंत्र इक लयाईं ।। दयो आन तिहि भुजा बंधाईं ।।
औ अब कुछ प्रवान मति राखया। रहहु निसंक अभय रस चाखय ।।
मंत्र यंत्र कृत देव परीकौ ।। बलन कर सकय तुमहि जरीकौ ।।
ह्वै निधरक बिचरहु भव माही ।। यंत्र मंत्र ते तव भय नाही ।।
यहि कहि वहि तौ गवन करत भई ।। छिनहि तृफना बहुत लगत भई ।।
बिल बिलाप कर ऊच पुकारन ।। मनहु ऊठाय बिग सिर धारन ।।१०४।।

दोहरा: कबहु सभा ससि कला को सुमरन कर मनधार ।।
रुदन करत या बिधि बचन बिआकुल करत ऊचार ।।१०५।।

स्वैया: बिधि आन बनायो संयोग वहै जोऊ भाल हमारे लिखायो हुतौ ।।
जुर चीत सवीर सरीर कीये दुख औ दिलगीर मिलायो हुतौ ।।
झकझोर हजार सहे न कहे जु मिलयो मित जीभ न लयायो हुतो ।।
न हमै कलपाईं प्रिथी तल मै थल पायो वहै जु बनायो हुतो ।।१०६।।
अब तेरी तलास मै ह्वै कै ऊदास दरो दर हाय फिरै भटकै ।।
जब तूं न मिलयो मिले और हजार पजार से हैं जग के लटकै ।।
न कहो तुम स्रिसटि सभै कहहै मिलयो तोहि खाक हियो फटकै ।।
भटके जग मै पतझार मिली न बहार मिली न मिटे खटकै ।।१०७।।

चौपई: या बिधि ईकल करत बिलापा ।। पावत कसट सहत संतापा ।।
इक दिन मन मै कीन बिचारा ।। वहि जु मंत्र मुहि दयो मकारा ।।
ऊसतति कर तहु ती बहु जाकी ।। देख हुतौ काग तिहै ताकी ।।

खोलहुं तौ जौ बनय बनावा ।। खुलै गांठ कारज सिधि पावा ।।
खोल भूजा ते करयो बिलोकन ।। है बड जंत्र सकल दुख रोकन ।।
कोठे अनि कच क्रमहि पाइै ।। जुदे जुदे कारज पर लाइै ।।
लिखन पड़न की युकति समेता ।। प्रभू के नाम लिखे फल देता ।।
मंत्र जपन की रीति लिखन की ।। चक्र बनावन अंक मरन की ।।१०८।।

दोहरा: सकल बिस्व को बस करन पुन जिम कुट नऊ पायइ ।।
सभ लिख राखी तामि मै इंद्र जाल के भाय ।।१०६।।

चौपई: देखत देखत सकल कोठरी ।। बिब कराज पर द्रिस्टि जु करी ।।
तहा लिखयो जो कोउ अचानक ।। बंद परै मंत्रि के बानक ।।
याको पढै कुटै ततकाला ।। मंत्र कोट टूट पद रहाला ।।
याकोऊ मंत्र रचित ग्रह्माही ।। फसै जाय कुटय बिधि याही ।।
याको पढत चहै जित जावै ।। मंत्र सकति नह सकल हटावै ।।
जो कोऊ मंत्र जंत्र कुछ भागै ।। पलट ताह को तन परि जारै ।।
यहि बिचित्र लखी लुता महि ।। अति अनंद भयो कवर हियो मै ।।
ऊमग ह्यिो जनु फटन लगयो है ।। या बिधि ऊग्र अनंद जगयो है।।११०।।

दोहरा: बिधि संयुकत वहि मंत्र सभ कंठ करे कर घ्यान ।।
निसचय कर पुन भुजा पर बांध लीयो सुखमान ।।१११।। च

चौपई: तिसी समय दुस्टा भई प्रापति ।। लखी कुद्रिस्टि कुवर की कापति ।।
कह्यो आज कया रंग तुमारा ।। कवर कही प्रभू क्रिपा अपारा ।।
बहुत देर अवसे तिहारी ।। आज करी तुम बहुत अवारी ।।
सौंप तुम हि सैतान हवाले ।। जिसहि कहहिला व्रत गुनवाले ।।
हमरो रछक गिरवर धारी ।। जान हमारी बनी तयारी ।।
यहि सुन भई सुंन पिसतासी ।। लखी पेंच यहि परी अकासी ।।
जगत प्रभाकर चलयो तहाते ।। रोकन लगी मंत्र जंत्र ते ।।
ता पर असर हेक म नहि करई ।। कोट कस्ट सिर पटकन मरई ।।११२।।

दोहरा: कहियो असन कोउ मोहि सौं सर बिदया पढताक ।।
अंत वही मोहीह यको फियन निसानो ताक ।।११३।।

चौपई: अस कहि स्त्री फल धर पटकायो ।। फटत हि फनीयर पुंज जगायो ।।
चहुं ओर फुंकारत धाइे ।। गरल अगनि दस दिस बरसाइे ।।
राजकवर कछु मंत्र ऊचारे ।। नस्ट नीर हुवै बह गइे सारे ।।
हुवै निरास चरनन लपटानी ।। बिनित करी बहुते घिघियानी ।।
औरहु सभय लगी समझावन ।। अनिक भांत बातन बहि रावन ।।
जो निज करत न मन कुरबाना ।। ऊचित न तिस हि त्याग कर जाना ।।
यहि सुन राजकवर बचभाखे ।। गिरेवान निज करहु पराखे ।।
किसी खस के झमहु दिवाने ।। तज घरु बंधु मीत निकराने ।।११४।।

दोहरा: बन बेहर गिरझार मग गाहत गहन अनंत ।।
बरख भइे बिआकुल फिरत अजहु न पायो अंत ।।११५।।

चौपई: बीचहि तमहु डार टथ फासी ।। दयो कलेस बिरह की गांसी ।।
यहि ऊपकार कीयो तुम भारी ।। ताकर बंधयो नरहु तुम जारी ।।
तब समझी वहि रहत नहि यहि ।। प्रेम पंथ महि बन बन ले चलत लहि।।
जो बलकर कहु नेहु लगावै ।। वहि नहिर हय अंत पछुतावै ।।
यथा बुद बुदा छिन कसु हवन ।। तथा जोर के नेहु नसावन ।।
काग रनावत रहि कस सागर ।। ब्रिथा कथित कहितरत ऊजागर ।।
कालपाय कहूं बनयो बनावा ।। सदा न रहन सकल कवि गावा ।।
मिलत सदा कहूं दिवस ईदको ।। नित पुलाव पावत प्रसीदको ।।११६।।

दोहरा: कबहुं कबहुं अैसि हु बनय बनय समय को फेर ।।
प्रीतम प्रेमी के परय पर बस पेच कुफेर ।।११७।।

चौपई: पै बिचार देखहु मनमाही ।। सुख अराम लख बिधि जह आई ।।
अपनी चित न लगै तिहि ठौरा ।। कवन काम कौ लख कर गौरा ।।
तीन भवन को धनहूं प्रापति ।। पद प्रहार पर होत सुआपत ।।
जहते होत ऊचाट जु मनकौ ।। पुन नहि लगत भगत तज धनकौ ।।
वहि सिर पीट रही झखमारी ।। कवरत जीतरफ तही सारी ।।
बल प्रताप प्रभु नाम मंत्र ते ।। मुकत भयो वा जाल जंत्र ते ।।
निज मग लिय बहु दिवस बिताइे ।। तही ताल पर फिर तह आइे ।।

अस्व तरफ सिर मार पश्चानन ।। परयो लख्यो निज तजे परानन ।।
म्रित अस्व लख बहु बिधि रोयो ।। यहि इक मीत हा बसे खोयो ।।
अब औं रहि दुख परयो नयो यहि ।। चलनो परयो पियादे महि महि।।११८।।

दोहरा: अहो धंनमाया प्रबल करनहार करतार ।।
राव रंक छिन महि करत करत न लावत बार ।। ११६ ।।

स्वैया: वहि राजदुलारी कहा जग की दुलरायौ जु दौंलत दायिनकौ ।।
सुकहा यहि आतप तापत मै परयो पंथ पिया देहि पायिनकौ ।।
इकलौ दुख देस कलेस सहै पग पेसल कंटक घायिनकौ ।।
तदू प्रेम के पंथ मै पायिनकौ अगवायिन कौ नपछायनकौ ।।१२०।।

दोहरा: प्रान प्रिया के प्रेम महि, बरखत असुवन धार ।। सौ सौ टुक हिय आह
सौ सौ टुक हिय आय सौ, यहि बच कहत पुकार ।।१२१।।

स्वैया: न मनै करईं बन कौ फिरनौ कछु पीर पिरात से पायिनकी ।।
दहलावत है दिल को दुख दै यहि टूटन कंटक घायिनकी ।।
खटकौं न क्यों नभ कौ निस इयो समै दीन दसा दुख दायिनकी ।।
वहि फालकफूल हौं सूल की सूरति सूल बनी छिन भायिनकी ।।१२२।।

दोहरा: सेत बदन दिल दुख सदन, पग फाल कहिय घाय ।।
बिरह बिथा की कथा कह, कहत कबित यौं जाय ।।१२३।।

यथा स्वैया: घटकौं पटकौं औ पिया लेहूं कौ चटकौं चटदै औ चलौं मटकौ ।।
घटकौ दुख भाख परयो खटकौ मुनि संतन के मन कौ भटकौ ।।
मुख दीप प्रभा मै प्रिया की सभा न सहौ मै पतंगन कौ फटकौं ।।
कहा कोट कंकाल हूं ते घट हौं जरहौं पुन पंख नही पटकौ ।।१२४।।

स्वैया: सुख दयो सनकौं सुमरौं जबही तब चौंक परौ जनु साप ने मै ।।
करौ घयान बिहानी बिथा अपनी परौ का पहौ आप ही आपने मै ।।
तिहि जा परछानत खाक परे परवाने हूं के पर प्राप ने मै ।।१२५।।

स्वैया: असवांगुल नार के नीर बिना न निसान पता कछु पायो हमे ।।
जु निहार तौ हौं पतझार समै निज प्याले कौ पार न पायो हमे ।।
न बिगार कछू निज फंधन मै फंधीय को लखयो जु फसायो हमे ।।
पिंजरे की बंकाईं रुवायो हमे जल पायो न चोग चुगायो हमे ।।१२६।।

स्वैया:

स्वैया: अलि कै जु प्रिया मुख पै ढल कै जल कै जग गा सिंगई बलिकै ।।
बलिकै पर पेच परयो गलिकै अहि छौन नसी छतीये छलिकै ।।
छलिकै हर इे चलिकै ढिग जा सरफावन को जु छुहुं हलकै ।।
हलकैं चलकै अरफै भिलकैं सरफै कहायो अवली अलिकै ।।१२७।।

दोहरा: प्रक्त नयन रंग सेत तन, ऊरघ ऊसास बिहाल ।।
दुखित चित पग धरत जहि, परत न ठौंर संभाल ।। १२८।।

चौपई: फालक परे पग न तरवा महि ।।धरयो जात नहि पग धरवा महि ।।
पै मन साफ प्रेम के मग पर ।। कहत कि पहुवहु आज प्रिया घर ।।
चलीहे आज प्रिया के दुवारे ।। फालक परे पगन मरि भारे ।।
तिनको अधिक अैस अरफावा ।। कहितकि रहिय आज छिहटावा ।।
खिचा खिची महि होत जु बिआकुल ।। तब यहि कहत बचन मुख आकुल ।।
बदलत दिहु या दिल के बदले ।। तूं समरथ प्रभु बदले सदले ।।
प्रान सहित हों देउं तिसी को ।। जो बिन दुख दिल मिलय किसी को ।।
पुन जब प्रेम अगनि बहि माखत ।। सीस पकर रोकत यहि माखत ।।१२९।।

यथा स्वैया: अब प्यारे तिहारे बिना निहरैं हहरैं कब प्रान भला ठहरे ।।
दुगुनी दुख दैं दिल की लहरैं न सही परै पीरन की गहरै ।।
जिनकी मिहरै को घमंड हुतो सब त्याग भगे दुख के पहरै ।।
बिन तोमति धीर संतोख बिसास बिसार चले चरहैं बहरैं ।।१३०।।

दोहरा: प्रेम बधे जिहि घर परे, सो घर करत बखान ।।
दयोस निसा दुख मय रथा, तुफ बिन करत बिहान ।।१३१।।
छिसी हाल बयाकुल दुखित, निस दिन करत पियान ।।
सदा द्रिगन आगे रहत, प्रिय मूरति को घयान ।।१३२।।

कबित: अतिही बिखम दुरगम मग प्रेम जूको पग डगमगै पग सीस करबो परै ।।
ह्वै कै मनसूर चडे सूरी मनसूर जैसे प्रेमिन के ईसन की रीस करबो परै।।
दुवारो दुवार मांगबो भ्रिगिंद ये दसह दुख अकर छती सबिसै बीस करबो परै।।
आगे धर सीस लै अधर धंत पीस सहै क्रोरक कसीस पै असीस करबो परै।।१३३।।

दोहरा: ऊलट पंथ यहि प्रेम को, सिर तल ऊपर पाऊ ।।
ज्यो ज्यो गाढ परै प्रबल, चढत चौप चित चाऊ ।।१३४।।

स्री गुर चरन प्रताप बल,बरनयो प्रेम परसंग ।।
या अवसर पूरन भयो त्रितीयों तरल तरंग ।।१३५ ।।

इती स्री मत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीति प्रसंगे कवि साहब स्रिगिंदेन बिरचिते राज कुवर अभिचार जारमै अरफनो पुन सरफनो बरनंन नाम त्रितियो तरंग।।३।।

कबित:: आदि मै धरन जो अधार सभ धारना की नीकै निरधारौ वहि आपै निराधारकै।।
पावक पवन नीर गगन ऊडग सूरससि लौं बिचारेतें बिचित्र ही प्रकार कै ।।
मानव म्रिगिंद ब्रिंद जीव जड़ जंगम को बिवहार देखौ तौ बडोई इंद्रजार कै।।
अैसे अभिचार जार अरुझैं पै सरुझैहौं गुरु गुबिंदसिंघ नाम जंत्र भुज धारकै।।१।।

दोहरा: वाहि गुरुमुख मंत्र जप परम बंत्र जीय जान ।।
द्रिजार संसार ब्रित बिघन होत सभ हान ।।२।।

चौपई: है यहि प्रेम सदा नौतन ब्रित ।। नइे नइे कौतक रच नित प्रति।।
ठौर ठौर पर और बाल है ।। नई अनूठी तरहि ढाल है ।।
कहूं कथा यहि अस्रू पात की ।। कहूं रक्त के स्रवत बात की ।।
कहूं लवन हिय घाव मलायो ।। कहूं प्रदीप चिंगारा पायो ।।
कहूं आप इछा करि डोलयो ।। कहूं परि ब्रित नीर बिरोलयो ।।
दोनहु दसा बिचित्र सुयाकी ।। सकल अदा अदभुत है बांकी ।।
अब ब्रित ते बन बचन बिहारी।। दगध ह्रिदय दुख मार गचारी।।
घायल हियों गडे कंटक पग ।। टूक टूक दिल बियाकुल कंटक लग ।।३।।

दोहरा: कहत भइे तहि ते चलियो आगहि राजकुमार ।।
पंथी दुख बन बिकल मन बिना खरच कर भार ।।४।।

चौपई: नित प्रति प्रेम पंथ को धावक ।। अंतर तपत बिरह के पावक ।।
दुखित कराहत गमन करत बन ।। नहि जीवत नहि त्याग परत तन ।।
इेक दिवस काहू दिस माही ।। प्रापति भयो बहुत बन गाही ।।
देख्यो इिक बन सुखद सुहावन ।। खित को अति अनंद बढावन ।।
प्रभू माया बिचित्र मालिन करि ।। रच्यो मुदित मन वहि ऊपबनवर ।।
जिती भूमि बन की वहि सारी ।। नाना रंग फुलित फुलवारी ।।
परम मनोहरता अपनी कर ।। निरजित करत सुरग सपतम घर ।।
सबज धरन बिरवा पवल दल ।। त्रिण मणीक पुसपंग खित फल ।।५।।

दोहरा: नंदन बन लज्जित रहत जौ निरखै इिक बार ।।
चंपा वेल खेल कर दसहु दिसन महिकार ।।६।।

चौपई: चहूं ओर बन के सुख दावन ।। नदी प्रवाह अमल जल पावन ।।
सुभग सरोवर फुलित सरोजा ।। मलित मान रुको बड ओजा ।।
छिरक नहार जलद निज आवा ।। कर राख्यो बन महि छिरकावा ।।
त्रि बिधि समीर गिरी फुलवारी ।। लज्जित करत सुरग घर सारी ।।
ऊडत न कहूं रंच मरि घूरा ।। जलद क्रिपा कर सम जल पूरा ।।
तरवर सबज सुहावन फले ।। नौतन अंग जु बनक्त भले ।।
पत्रन पर प्रतिबिंब परत रवि ।। दमकत मनहु अनिक रवि जानव ।।
फूलित लखिय सुमन फुलवारी ।। बन वहि ऊपबन परत बिचारी ।।७।।

दोहरा: यहि तौ बिआकुल अति अतो थकित पंथ क्रित चूर ।।
रंम्य भूमि वहि हरख भयो मन पूर ।। ८।।

चौपई: यहि मनठ नि रजनी सु आज की ।। इतिहि बिताऊ सुख के समाज की।।
प्रभू माया के रंग अपारा ।। अदभुत लखहु सु कौतक सारा ।।
छिक दिस घर रमणीक निहारी ।। सघन तरोवर छाय सुखारी ।।
सुभग सरोवर निरमल नीरा ।। बैठत भयो जाय तिहि तीरा ।।
बनकी सुखद सुगंधत मारुत ।। बिरही मन बिआकुल कर डारत ।।
कूंजत बिबिध बिहंगम स्रेनी ।। मोर चकोर न्रित सुखदेनी ।।
चर चहान पंछिन चहु ओरा ।। म्रिगन पात बिचरत चित चोरा ।।
सरस सुगंधित फूल पान दल ।। बदत मधुर धुन बहु बिधि खग दल ।।९।।

दोहरा: सुंदरता बिरवान की सप रस सर दस मीर ।।
स्याम सघन घन ऊमड कहु गहरावत हतधीर ।।१०।।

चौपई: भतै सिय समय साझ सुख दावन ।। अरुन सितासित घन दरसावन ।।
घटा स्याम सावन भादव की ।। मधुर मधुर घहरन जादवकी ।।
मनहु कहत मदिरा पानन को ।। आज अनंद करहु प्रानन को ।।
कियो बंद मग चित्र गुपत को ।। घन हरछायो सकल जगत को ।।
मन बाछित करीये बिलास को ।। छाड धरम राज हतरास को ।।
जो कछु करहु आज सुभस भहै ।। भोगिन को यहि समय अलभ है।।
नदी या नारे ऊछर चले है ।। बडे बडे नद ऊमग चले हैं ।।
पूरन भहे भील थल सरवर ।। लहरावत पूरत जल डावर ।।११।।

दोहरा: पी पी रटत पपीहरे प्रीर हे प्रोखत प्रान ।।
कुहूं कुहूं कर कोकिला कढत करे जो आन ।। १२।।

चौपाई: छिक दिस मोर सोर मन भामन ।। दुगुनी दमक दिखावत दामनि ।।
सीतल पवन मेघ की गरजन ।। बिथित बियोगिन केहियरा रजन ।।
रवि अस्ताचल निकट गयो चल ।। सायं समय खगन की कल कल ।।
धर लहरावत सबज बिछावन ।। संध्या खिरी गगन मन भावन ।।
स्याम घटा की छब बिसरावत ।। छिक दिस इंद्र धनुख छबि पावत ।।
अरुन सबज पुन पीत अंगूरी ।। देख परहु रेखा नभ पूरी ।।
चहचहात बुलबुल म्रिदु बानी ।। लहलहात तरवर सुखदानी ।।
सबज धरनि परयंत जोजनं ।। फुलित फूल लै सुखद सौजनं ।।१३।।

दोहरा: बिचरत कहूं कुरंग बन कहूं बिहंग बिहार ।।
निरतत कहूं मयूर गन प्रफुलित पंख खिलार ।।१४।।

चौपई: सुभग ताल तट नीर बिहंगा ।। करत केलनिरमय बहुरंगा ।।
ऊतमै ऊदित निसा कर सोहत ।। चलत चकोर चाह चित मोहत ।।
दोनहु बखत मिलत संधया सम ।। जिहि बिलोक मन बढत बिथा गम ।।
यहि बहार निरखी जु कवरबर ।। बढयो अधिक दुख ब्रिह बिथाकर ।।
बिन प्रीतम जु लखय सुख अवसर ।। क्यों न होय टुक टुक छतीयातर ।।
चिनगारी को काम करत है ।। प्रिया बिना जे बूंद परत है ।।
अदभुत नहि जु डह डहे होवहि ।। दाग ह्रिदय के पावस रितु महि ।।
या बिधि सबको सदा सुभावा ।। जब नर को सुख समय जुपावा ।।१५।।

दोहरा: जा महि मन को प्रेम ह्वै वही परत है याद ।।
सुखद समग्री सकल वहि दुख दायक प्रतिपाद ।।१६।।

चौपई: बहुत काल महि राज कवर को ।। प्रापति भयो सुखद बनवर को ।।
तबहि प्रिया निज चितवन कीनी ।। जाके बिरह बिथा मति भीनी ।।
दुखित होय यहि कीन प्रलापा ।। कर बिलाप तन बढयो संतापा ।।
हौ नहि वहि बिन प्रिया तिहारे ।। बिचर बिलोकहु बाग बहारे ।।
जौ सुर पुर बन सनमुख पाऊ ।। तऊ न बन माली तहि जाऊ ।।
करत प्रलाप आप महि बिआकुल ।। बिरह बिथा करपत सु आकुल ।।
या बिधि बैठयो हुतो बिहाला ।। कौतक और लख्यो तिहि काला ।।

इक दिस वा बन मधि अचानक ।। अद्भुत भयो निहारत बानक ।।१७।।

दोहरा: कामनि गज गामनि त्रिया मन भामनि अलि पुंज ।।
प्रगट भई इक और ते आवत बिचरत कुंज ।।१७।।

चौपई: यहि आगे खा चुक्यो खुटाई ।। चकित चित नीके ठहिराई ।।
यहि भी मंत्र रचित है कानन ।। येहै त्रिया वैसी ये मानन ।।
नातर अस गह्वर बन माही ।। परम धीर मति नर भय खाही ।।
अबला कहा जु इहि बन आवत ।। सिंघ बियाघ्र जहि फिरत लखावत ।।
निकट नगर नहि परत निहारा ।। बन ऊघान भयंकर सारा ।।
ताते यहि सब मंत्र सकति है ।। निसचै कीन यहै द्रिढ़ मति है।।
ज्यो कोऊ जरयो दुगध [illegible] मुख निसको ।। फूकत फूक छाछ की दिसको ।।
जिम कोऊ लहत अंगार अगन भय ।। जुगनू चमकत चमक ऊठत हय ।।१८।।

दोहरा: तैस हि राजकुमार तब हुवै बैठ्यो सविधान ।।
मंत्र बिदारन जंत्र वहि पढन लाग भयमान ।।१९।।

चौपई: या महि कछु वहि भई अगारी ।। राजकवर तिन रह्यो निहारी ।।
चार पाँच सत संख्यत कामति ।। परी पदमनी जनु सुर भामनि।।
जरीदार कट पट कस बाधे ।। परम कुमार नैन सर साधे ।।
कनक बरन चंचल सब अंगनि ।। खोड़ सब रस बहि कृम अंगनि ।।
खेलत कूद करत लंगराई ।। हास बिलास करत मनभाई ।।
पिया दह पाय फूंड यहि सारी ।। तिन महि इक सुख पाल निहारी ।।
कनिक रचित मुक्ता झालर बर ।। चार त्रियन के वहि सिंकध पर ।।
ता महि चढी इक बर कामनि ।। चकित प्रभाकर लखत प्रभामनि ।।२१।।

दोहरा: कनक मुकट सिर पर धरें राज चिंन चमकंत ।।
गिरद गिरद सखीयां सकल दामनि सी दमकंत ।।२२।।

चौपई: रतन जटित इक खड़ग लीहे कर ।। मनहु त्रिभुवन सु लीन बिजयकर ।।
अंग अंग चंचल पारद वत ।। इक बंदूक अमोल तड़ित वत ।।
जो कदा चकर धर जु चलावै ।। मन बिहंग को धरन गिरावै ।।
धरी बराबर पर त्यार कर ।। आवत चली अखेट ब्रित कर ।।
रूप अनूप दयो करतारा ।। घटयो करय लख चंद बिचारा ।।
पंद्रह किधों बरस खोड़ सकी ।। जोबन निसा प्रभात दिवस की।।

जगमग भाल भाग बलकारी ।। कुटिल कटाछन की फुलवारी ।।
हाव भाव तन प्रभा कहर की ।। जनु बट पार प्रेमि मन हर की ।।२३।।

दोहरा: यहि अदभुत लख राज सुत लीनो ऊरध ऊसास ।।
दरद भरे दिल सो कियो यहि बच ऊच प्रकास ।।२४।।

चौपई: अहो अनूपम तन कुमारता ।। जिसहि कठिन मन प्रान धारता ।।
अहो बरन कुंदन सम तन पर ।। जाके नहि अस रंग बसन पर ।।
यहि धुन मधुर जु राजकुवर की ।। अग्र भाग जे त्रिया कवर की।।
रछा करत चलत अगवानी ।। क्रूर द्रिस्टि नहि परहि बिगानी ।।
तिनके स्रवन परी चक परी ।। चहूं ओर निरखत हुवे खरी ।।
द्रिस्टि परयो पुन राजकुमारा ।। चक्रित भईं लखत सभ दारा ।।
घूमर खाय टटक सम गईंयां ।। भईं सहम चुप तज चंचलईयां ।।
केतक मस्ट कितो कछु बोली ।। संसय गाठ परस पर खोली ।।२५।।

दोहरा: किनहु कह्यो इन तरहु मै खिरयो चांदनी बयार ।।
किनहु कह्यो री रवि छपत यहि ताकी ऊजियार ।।२६।।

चौपई: किनहु कह्यो री देख समझकर ।। ऊदित होत है सुध निसाकर ।।
इक झांक झुक समझ निहारयो ।। कह्यो ठीक ससि ही निरधारयो ।।
इक कटाछ सहित इम बच भन ।। जौ ऊडपति नही तौ है ऊडगन ।।
चुटित कार कर दुतिय पुकारी ।। तूं ऊछाल बडि छको छिनारी ।।
यहि तौ प्रगट खाम पारद है ।। मनहु बिसारद निस सारद है ।।
दुतिय आंगुरी धरि कपोल पर ।। या बिधि बोली बच अमोलवर ।।
यहि तौ सुभग सरू को तरुवर ।। कै स्रमसा-दम ऊपबन बर ।।
दुतिय त्रिया थी कछु गुनमाना ।। तिन या बिधि बच कीन बखाना ।।२७।।

दोहरा: तोहिस पथरी प्रान प्रिया परी सुवन यहि कोहिं ।।
किनहु कह्यो प्रीतम सखी परम मनोहर सोहि ।। २८।।

चौपाई: कोऊ त्रिया जु तनक भर सियानी ।। कह्यो चुप रहो अरी दिवानी ।।
प्रभू जानय यहि अस गहबर बन ।। जंत्र मंत्र टौना कछु का मन ।।
किनहु कह्यो री चलहु निकट अलि ।। नयन सेक कर करहि सरद दिल ।।
कोऊ जु तिन महि प्रेम खिलारन ।। तिन या बिधि किय बचन ऊचारन ।।

दूर रहौ री भईं बावरी ।। अस न होय फस प्रेम बावरी ।।
ब्रिहौ अगनि जग परय तावरी ।। खरय जनम भर जरन तावरी ।।
छिय तिक झाक ताक निरझारयो ।। सबहन प्रति अस बचन ऊचारयो ।।
प्रभू जानय तुम समन द्रिगन पर ।। कत चरबी फिर गईं द्रिस्टि हर ।।२९।।

दोहरा: यहि तौ सुंदर सुघर नर है कोऊ राज कुमार ।।
नयन खोल निरखहु अरी बहुत कुरहु कतरार ।। ३०।।

चौपईं: या चरचा महि रुकी सवारी ।। तब बोली वहि राज दुलारी ।।
अरी कुसल है खरी भईं कत ।। सभ कर जोर करत भईं बेनति ।।
हम बलिहार जाहि चरनन पर ।। प्रान दान हो देहि बिनित कर ।।
सदा सवारी सहज आप की ।। यहि मग जावत रवि प्रताप की ।।
आज अचानक छिन तरुवन महि ।। द्रिस्टि परत सुंदर नर बन महि ।।
स्रवन कीयो यूसफ सुंदर बर ।। आंखन अनिक लखे सुंदर नर ।।
याहि सरूप अनूप तरहि को ।। लख्यो न सुन्यो द्रिस्टि परहि को ।।
यहि अदभुत सुन राजदुलारी ।। पूछत भईं सु किधर कहारी ।। ३१।।

दोहरा: छेक तिया बिनती करी वहिं जू समुख हजूर ।।
अंगुरि कर दिखरात भी सघन लता कर दूर ।। ३२।।

चौपईं: जबहि द्रिस्टि किय राज दुलारी ।। बदन अनूप रूप की बारी ।।
सकल मनोहर जगत प्रभाकर ।। राजकवर बर परयो द्रिस्टि तर ।।
देखत कहा छेक सुंदर नर ।। जोबन वंत जन पूर सुधाकर ।।
चंचल चतुर मनोहर मूरत ।। रूप समुद्र सरू की सूरत ।।
गुन मुकतावलि को छिक मोती ।। प्रगटत भाल राज की जोती ।।
बदन मनोहरता मद पूरन ।। जगत बिजय ऊतसाहस पूरन ।।
नव जोबन सब अंगन झलकत ।। मस भीजत मुख मदकर बलकत ।।
भ्रिकुटि कुटिल जनु घनु अनंग को ।। किधौं हिंद्र घन स्याम रंग को ।।३३।।

दोहरा: अंजन कर रंजन करे सिसु कुरंग से नैन ।।
जाहि निरख म्रिग चीन के चंचल होत अचैन ।।३४।।

चौपईं: द्रिस्टि प्रगट मन बट पारित ।। प्रेम सुधारक रमद मति वारिन ।।
स्याम सताईं द्रिग मन भावत ।। दिवस निसा को आंख दिखावत ।।

अदभुत लख कर द्रिगन गुलाई ।। पुंज परी दिल बलि बलि जाई ।।
चखु गोलक महि ऊगल परत से ।। पुतली सहित नैनामद मुतसे ।।
प्रभू माया निज करि अभिलाखे ।। जनु मुकता कुट कुट भर राखे ।।
नोक दारु बरुनी बर सर ते ।। भ्रिकुटि कुटिल अैचित धनुवर ते ।।
लगित ह्रिदय नटसाल करते है ।। लैस तुल्ल लग नहि निस्तरत है ।।
लाज देत लैली के मन को ।। मूरछत कर मजनू के तन को ।।३५।।

दोहरा: गगन चरम लग ओट नहि द्रिग नावक के तीर ।।
बिन बिगार मन बेधनो नहि निज मति तकसीर ।।३६।।

चौपई: ललित सुभाल कनक की पाटी ।। प्रगट जोति की जनु उदघाटी ।।
किधौं प्रभात बाल रवि जोती ।। किधौं तूर गिर जग मग होती ।।
म्रिग मद रचित रही अलि कैंढर ।। बिथित होत लख अलिक बाल छर ।।
सहिज सुगंधित अंग सुहावन ।। खुतन बासीयम मन बिरमावन ।।
स्याम सिरो रुह संदल भीने ।। बिकल सुके सिनि के मन कीने ।।
कुंडल कर लट रहे कपोलन ।। ससि ढिग सरप सुधा की टोलन ।।
ता महि दमकत बदन दमकधर ।।अंधकार महि मनहु सुधासर ।।
निज पंखन कों लीहे मौर छर ।। तेज पूंज जाके प्रताप कर ।।३७।।

दोहरा: जाकी छाया तरे नर आवत होत नरेस ।।
मौर मजाक्त ढिग सरे याके अलल बिसेस ।। ३८।।

चौपई: मुख प्रभात करि प्रभा निरख करि ।। जनु प्रभात करि कांपत थरहर ।।
सुमन गुलाब दलन ओठन पर ।। मसु भीजत रोमावलि छबिधर ।।
मनहु लख नहारे प्रेमिन को ।। धूम धार यहि ऊठयो सुमन को ।।
द्रिस्टि स्पर्सपरसन करई ।। लख प्रक्रित प्रभू ऊरफ सु परई ।।
जुलफ कुंडल कुंचित घुंघरारे ।। सहज सुगंधित बिसी यर कारे ।।
किधौं पास हैं मन पासन की ।। कुटिल सुगास ग्रीव गासन की ।।
पै अरभे कच लख प्रगटत है ।। बदन बिलोकित यही घटत है ।।
जुलफ कुंडल पर पेच किसी के ।। बंद परयो है फंद तिसि के ।।३९।।

दोहरा: म्रिद मुसिकन अधरान ते छबि के ऊठत तरंग ।।
लाल अमोल करंग को रंग होत बेढंग ।। ४०।।

चौपई?: बिसद बिकासी नर दनावलि की ।। प्रभा मंद करि मुकतावल की ।।
प्रेमी चर चाकर तद सन की ।। करत वारनी प्रान हसन की ।।
तनक द्रिस्टि ते ऊत छित होवत ।। कूका मार प्रान निज खोवत ।।
मधुर बचन बिहसत कपोल कर ।। मुख मुकता मंजूस खोल बर ।।
झरत सुमन की झर लावत है ।। स्रोता मुकत माल पावत है ।।
बचन बिनीति बिनय रस साने ।। बिरह बिथित हित सुधा समाने ।।
ललित भुजा जुग सुभग कलाई ।। लता प्रेम तरु जन लहराई ।।
कर पलव पलव सर साने ।। देत कलप तरु फल मन भाने ।।४१।।

स्वैया: प्रेमिन के मन हाथ करै वे कौ हाथ दोऊ जग नाथ बनाइे ।।
पावैं धनेस की संपति जौ नहि कंपत हुवै ततकाल लुटाइे ।।
रेख नही जनु लेखन हार के हाथ ते नेह के लेख लिखाइे ।।
कैद है काहू के नेह की संकर अंकन ते ये निसंक लिखाइे ।।४२।।

स्वैया: वहि कोउ निसाकर बिंब मुखी प्रति बिंबत है हिय आयिने मै ।।
तिस हीकी तलास मै ये कटि झीन सुपीन कस्यो मग धायिने मै ।।
समयो सो निहार परै पै बियार ते बेग है बाटक टायिने मे ।।
पग प्रान पियारी के पैडे परे पुरकार है पंथ के पायने मै ।।४३।।

स्वैया: पग के तलवे बन के चलवे मै दुखाले परे पुन छाले परे ।।
कछु ताले हमारे ऊजाले दई यहि जाल हमारे मै पाले परे ।।
हुमा है ये यहि राज के आसमा को सरछाई छिती सुखिताले परे ।।
यहि ख्याल बुरे जु फुरे दिल मै तब प्रेम के आन हवाले परे ।। ४४।।

स्वैया: मद्दे आन हजूर प्रधान समै न्रिप नेह निसान बजे गहरे ।।
द्रिगने गीले रूप रुजोबन को संग आगे बढे मद के लहरे ।।
धन तोखम तीमन प्रान औ ग्यान बिचार भ्रिती बलकी बहरे ।।
यहि तौ दीये राजकुमार जू की दिखरावनी ही मुख कौ ठहरे ।। ४५।।

स्वैया: बल बुद्धि बिचार गई बहकै मुख मूक हुवै कानन तै बहरी ।।
जब प्रेम की आन दुहाई फिरी तब रंट बलाय समै ठहरी ।।
ऊमगी मन मीत मिलाप लीयै जियते मतवार ताकी लहरी ।।
छिक बार ही कौन ते कौन करी अरी हाय ये नेह बुरो कहरी।।४६।।

यथा
स्वैया: यहि ढीठ है री कैंकु डीठ कोउू देख भाल कै जीको जलाव है री।।
लगतै ही बिदातौ दई बल कौ तरफै परी बुद्धि बिहाल है री ।।
मई तोख की मोख तौ आह कहे दिल दाह दवागनि ज्वाल है री।।
मुख रंग बिहंग ऊडाई बे को ये तुफंग तड़ाखे की चाल है री।।४७।।
स्वैया: यहि ख्याल ही मै वहि राजदुलारी बिहाल मई थहराय गई ।।
वही खासे मै कंघ खवासन के भर स्वास परी मूरछाय गई ।।
अंग अंग अनंग दमामे बजे न्रिप नेह की छाकनी छाय गई ।।
यहि देख दई करि हाय दई सखीयां सबरी घबराय गई ।।४८।।
स्वैया: कोउू दौर सिताब गुलाब लिये हर बार किये छिर काने लगी ।।
सुसक बेद मै केवरा मेल कोउू मुख खोल के बूंद चुवाने लगी ।।
पढने लगी नादली मंत्र कोउू बढ आगे कोउू दम लाने लगी ।।
भुज डंड पै कोउू रुमाल लिहे कस कांपत बंद लगाने लगी ।।४६।।
स्वैया: कोउू पायन के तरवायन कौ कर लैके सनेह सहरावती है ।।
म्रितककाकी डरी अतरै तरकैं ढिग नासकाआन सुंघावती है।।
कोउू केवरा कौल बिलौर मै लैकर औ मुख कौ पखरावती है।।
कोउू बार ही बार बलैया लहे रोहि रोहि के जान गवावती है।।५०।।
स्वैया: तिय काहूं कह्यो छल कंजी कोछेरी कटोरा तौ दौर के लाईयो री ।।
पुन काहूं कह्यो तखती वहि सेककी धोहि कै नीर पिलाईयो री ।।
लख काहू कह्यो बिन संक अरी परी देव है याते बचाईयो री ।।
यहि हिंदु अलौकिक है री दई जाके देखे ते तोख गवाईयो री ।।५१।।
दोहरा: किनहु [illegible] समझकर अस कह्यो नहि मानव यहि देव ।।
किनहु कह्यो बाल पने से है मूरछा को मेव ।। ५२।।
चौपई१: याबिधि किये बहुत उपचारा ।। तबहि कुवरि कछु आप संभारा ।।
पै मन तपयो बिरह के तावन ।। चाह जगी देखहुं मन भावन ।।
गर महि परी प्रेम की डोरी ।। मई बिबस जनु चंद चकोरी ।।
जनु चुंबक लख लोह सुक सों ।। लखत कपूर मनहु त्रिन ग्रसों ।।
बरन बदन को ऊड्यो पंखकर ।। अंचल अैच तोख धीरज डर ।।

सब सखीयन मिल मंत्र बिचार्यो ।। पलट चलन नीको निरधार्यो ।।
याके निकट न चहीयत जाना ।। का जानहि सखि कवन बहाना ।।
यों कहि टेर सवारी फेरी ।। राजकुमारी चहूं दिस घेरी ।। ५३।।

दोहरा: पै वाको कल छिन न थी आग्या दीन पुकार ।।
री बौरी हो तुम सभी निपट गवारन नारि ।।५४।।

चौपई: यहि कोउ पंथी बिथित बिचारा ।। दूर रह्यो जाको घर बारा ।।
बिआकुल भयो पगन बहु मग कर ।। थकित बैठ रह्यो निरख छाय सर ।।
कत मयानि तुम भई सु सारी ।। साच कह्यो कायर मन नारी ।।
चलहु निकट ह्वै चलहि निहारत ।। मगहि चलत नाही कोउ मारत।।
यहि सुन सकल अवस्स जान कर ।। चलत भई आग्या प्रमान कर ।।
पै चल चित्त चकित झझकत सी ।। तकत परसपर अर ठठकत सी ।।
जिम जिम निकट होत असवारी ।। धरकत छतीयां राजदुलारी ।।
होत अधिक चित महि तर फरनो ।। करत मछ कर आप संभरनो ।। ५५।।

दोहरा: यदपि रूप सूरज प्रभा मूरति छिक अभिचार ।।
दुगुन प्रभाकर ते प्रभा ससि ते चौगुन वार ।।५६।।

चौपई: मुनि मन को बर ध्यान कुटावन ।। रिखी महंततपी तन तावन ।।
जगत प्रभाकर लख दिमाक तिष्हि ।। तरफ गयो जनु मीन तपत महि ।।
तदपि धीर अंचल द्रिड़ धरते ।। तज्यो अचल ताके नहि करते ।।
रहयो मछ करि द्रिड़ निज आसन ।। अचल जुगी सरजनु जोगासन ।।
हल्यो न चल्यो मलिन कर्यो मुख ।। छिसथित रह्यो अडोल सनंमुख ।।
तब छिक सखी कदम आगे धर ।। राज सुता की रमज धारकर ।।
पूछत भई बचन रचना करि ।। क्यु जी तुम हो कवन मुसाफर ।।
कित जावहुगे कित ते आइे ।। कहा तुमारे भवन सुहाइे ।।
यहि बिपता को हेतु कवन है ।। गवन छिके लोगह वरबन है ।।
बिना इक प्रभू जो सम संगी ।। नही साथ कोउ अंग प्रसंगी ।।५७।।

दोहरा: ऊतरे हो निरजन बन हि सिंघ भयाघ्र भयावन ।।
आन गह्यो तबकहो जू कवन कुडावैवानक ।। ५८।।

चौपई: यहि बच सुन कर जगत प्रभाकर ।। बोलत भयो मंद मुसकाकर ।।
बिपति रहु तुझ पर बदकारा ।। अर यहि हमहु अबहु निरधारा ।।
या अवसर या बनहि मझारे ।। आवत हो हि बिपति के मारे ।।
कहु हु सकल तुम कवन बिपति करि ।। बंक दिनहु की फिरन कु मतिकरि ।।
उलट परे तुम भाग भाल के ।। फिरहु बिकल संग अैस हाल के ।।
सांय समय ऊदान छिकैली ।। फिरहु अकारथ मनहु चैरैली ।।
यहि सुन राज सुता सुन सानी ।। बोल ऊठी आप हि मुख बानी ।।
वाह वाह तुम अजब सुभावा ।। तनक माहि तामस ऊपजावा ।।५९।।

दोहरा: सार पूछ बे मै करयो छितनो कोप महान ।।
कठिन बचन या बिधि कह्यो सह्यो परत नहीं कान ।। ६०।।

चौपई: धिक्क धिक्क अैस मूढ की संगति ।। जिन या बिधि बच कहे असंगति।।
मो थिन मोहि सखी समुदाई ।। सकल बनाई जिन पुठ पाई ।।
राजकवर सुन उत्र सुनावा ।। प्रथिम तुम अपनो असन सुभावा ।।
कबहु किसहुसन बनया निज घर ।। करह परसपर प्रस्नोत्र वर ।।
दुतिय मूढ सन बचन बिलासा ।। परम अपावन जग ऊपहासा ।।
पै अनंद मन चतुर मुलाहे ।।प्रस्न तुल तिहि बात अलाहे ।।
अब तुम मेरे मुख मूढ स्रवन कर ।। चुप हुवै रहे समझ निज मन घर ।।
यहि सुन राजकवर मुसकानी ।। रमज समझ छिम कीन बखानी ।।६१।।

दोहरा: छिकन मई यहि दुवै मई मुख निज रखहुं संभाल ।।
अैसे अनुचित कठिन बच साहिब फिर न निकाल ।।६२।।

चौपई: हमरे अरि चरिचित जर हिजू ।। कहा मूढ वति प्रसन कर हिजू ।।
रहहु प्रस्न ऊन को मल दूरी ।। सुन्यो उत्र तिन मनसा पूरी ।।
अब हम तुम सों प्रस्न करत हैं। उत्र स्रुवन की पियास धरत है ।।
आप हजूर सु कवन देस ते ।। रंम्य भूमि किय पग प्रवेसते ।।
मंगल सौंज मौंज चरनन कर ।। कंटक युत बन कियो सुमन वर ।।
जगत प्रभाकर सुन यहि बानी ।। या बिधि ऊत्र कीन बखानी ।।
वाह जी यहि किया अदभुत बचना ।। पलट रंग परदे की रचना।।
प्रथम करयो छिहि भाल बिगारा ।। अब कृपाय तिहि करत सवारा ।।६३।।

दोहरा: हम हजूर है काहि को देखहु रिदय बिचार ।।
तुम जीने जी खड़ी हो चड़ी सिंधहि चार ।।६४।।

चौपई: या करिनी कै परत पछानी ।। तुम हजूर हो निज पटरानी ।।
यहि सुन बोली निकट सहेली ।। राज सुता तुम बड अलबेली ।।
कासन बचन बिलास रचायो ।। बोल चाल चायक भल पायो ।।
यहि नर है कोउ निपट गवारा ।। मुख कठोर बच समफन सारा ।।
कहा आपकी गति यहि जानय ।। कत बिबाद यासों निज ठानय ।।
कुवर कही मुख मस्ट दिवानी ।। बीच परहु जिनि बिना बुलानी ।।
असन होय अनरस यहि परईं ।। और कठिन कछु बचन ऊचरईं ।।
कुमित देख वहि हटी पिछारी ।। सने आप महि करत बिचारी ।।६५।।

दोहरा: कुसल करहि री आज प्रभु नयो याहि बन फूल ।।
खिरयो चहित सु परयो चहित परदेसी पथ भूल ।।६६।।

चौपई: पुन बोली तब राजदुलारी ।। महाराज बड कीन अबारी ।।
बोलहु बदन सीस कछु खेलहु ।। प्रसन हमार ब्रिथा जिनि रेलहु ।।
तब बोल्यो सुन जगत प्रभाकर ।। फंधी जाल अपने महि पाकर ।।
बहुत अमीरत प्रगट न करिये ।। नीचय ऊतर चरन निज धरीये ।।
जान परी तुम राजदुलारी ।। अरपुन निज ग्रह की अवसारी ।।
सखीआं हूं सबन हन बिरानी ।। तुम परिचारिक मांगन आनी ।।
भूमि आसनो ढिग भूमासन ।। ह्वै समेट राखहु बड सासन ।।
मन सनमुख जु भयो बैठतते ।। अदभुत नहि कछु कहि बैठनते ।।६७।।

दोहरा: आप पवन के अस्व पर खासे पर असवार ।।
हम भू मास न भूमि पर छाया के अनुहार ।।६८।।
देख पंथ कहते कहां फरक जिमी असमान ।।
ब्रिखम करम के साथ को करतन लोक प्रमान ।।६६।।

चौपई: यहि सुन बोली राजकुमारी ।। छिती ऊमर यहि भई हमारी ।।
या बिधि को पंथी सुहिकारा ।। तुम बिन लख्यो न को मुखफारा ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। राव रसम पर कीन बखानी ।।
रसना संभल छितीं मुहजोरी ।। करहु अवर पर कुटिल ठटोरी ।।
प्रभू की सपथ न तुम सम कोऊ ।। लख्यो न बद लगाम हुवै जोऊ ।।

हो कछु अद्भुत बस्त अकेले ।। लखे न तुम सम को अलबेले ।।
अस्व कहा कोउ संग न टट्टू ।। गठरी कहा न सिर पर पट्टू ।।
यथा किसू कवि को बच सूचो ।। नांगो लूचो सब तें ऊचो ।।
त्रिण झोपरि महि निस पर सोवत ।। सपने रंग महल सुख जोवत ।।
सीतल गरम नरम कट बोली ।। बात बात महि रचित ठठोली ।।७०।।

दोहरा: लेहु जु मरजी छिसी बिधि यों कहि राजदुलारी ।।
ऊतर विकट जा धरन पर बैठत मीतिहि बार ।। ७१।।

चौपई: यहि लख सकल सखी बिसमानी ।। सने परसपर निज बतरानी ।।
धरें आंगुरी अधर कपोलन ।। बिसमित भीत भई कहि बोलन ।।
अहो लखहु सजनी यहि कौतुक ।। यहि कोटा मन मतु है मौतुक ।।
बचन जंत्र कर मंत्र कहानी ।। कठिन ठठोरी गार बखानी ।।
परी तुलित यहि राजदुलारी ।। सीसे महि करि बंद ऊतारी ।।
घर बैठे नव निधि छिन पाई ।। बिना यतन जग बिजय कराई ।।
तिन महि तनक जु हुती सियानी ।। प्रति उत्र करि बात बखानी ।।
सपथ अरी तुहि निज नैनन की ।। सच कहु लख गति मम बैनन की।।७२।।

दोहरा: अस जवान रस रंग भरयो सजि लो छैल ठठोल ।।
चपल कहरि जग ते जु दो ध्रिस्ट अटपटे बोल ।।७३।।

चौपई: तुमहु कबहु तव राजदुलारी ।। लख्यो सुन्यो कहूं सच बतलारी ।।
अरी बावरी सुन अनजानी ।। बडो चीज यहि रूप जवानी ।।
ज रूपवंत जिहि चहि छिक बारा ।। अरि हुं दौंर पग करहि जुहारा ।।
सुंद्र रूप सबहि मनभावन ।। सगल स्रिस्टि प्रिय सुख उपजावन ।।
याके मत खियाल तुम परीये ।। करनहार के चरित्त निहरीये ।।
या बिधि करत परसपर बचना ।। चुप ह्वै लगी बिलोकन रचना ।।
जब ढिग बैठी राजदुलारी ।। सरद स्वास भरयो कुमारा ।।
सुमरन भइे तबहि दुख सारे ।। दरद भरे अस बचन ऊचारे।।७४।।

स्वैया: कैसे कहौं निज हाल सभै छिक आयु है मोअरफनें अलि कैं ।।
हिय बियाकुल फेर सभे के परयो घर कंघ धरयो औंपरयो चलिकै ।।
दिल दूखतो है मुख सूखतो है कहो औंर कछू छिस ते टलिकैं ।।
घरकौ घरखौ छिन तैं छिनतैं न पता कछू पूछिये जू बलतैं ।।७५।।

स्वैया: दुख डोर बंधयो सुख दूर तज्यो अरझयो गम मै गम ना कहीं मै ।।
बिन यार सहायक मीत न पायक बंधु किसू कौंन साक हौमै।।
बिपता करि बयाप तिहौं नितहौं ग्रह ठौर मकान ते पाक हौ मै ।।
तन सारो निरास हवास गहे हौं ऊदास परयो घर खाक हौं मै ।।७६।।

स्वैया: दुख प्रानन कौं दिन रात बिना ढिग और नही मग कौं खरचा।।
दिल ब्याकुलता बिरलाप बिना कोउ संगि नही मग की परचा ।।
बल होवों न पाय नया मग मै झिडीयां रगरौंतु नही चरचा ।।
अरचा इस हाल की ना मय है बन भू धरठामन की सरचा ।।७७।।

स्वैया: यहि बाक कहे जु किसू कवि के सब हाल हमारे पै लागते है ।।
पहिचाने परैं काहू पीर पिराने के पूरन प्रेम सौं पागते है ।।
सु कहा भयो जौं हम लोगन मै कछु बैठे से जाहरी जागते है ।।
पर सार नही हम कौं जु कहां हैंरु कौंन है और ये कागते हैं ।।७८।।

स्वैया: इज गबासी निसा इक बास निवास तौं देहु अजान हौमै ।।
बिछुरयो निज मीतन ते मग चूक कतार चुक्यो कारवान हौमै ।।
सुनियों होस भाजनो आवों कहौं पर इक बिथा ये बखान हौमै ।।
इकलौं मति मानियौ मोहि भयासंग आह के सोर समान हौमै ।।७९।।
छतीया मै हैं छेद हजारैं दरार तौ दागन की गिनती है कहां ।।
दिल तौ गुललालकी है फुलवार बनयो पतझार सौ हौ तूं कहां ।।
[illegible] बदनाम कियो इस नाम ने हौ तन छूटये नाम छूटे तौ कहा ।।
वहि टेरत घायक घाय वे कौं चुप बैठों हैं क्यु कछू तौ हूं नहा ।।८०।।

दोहरा: या बिधि पढ दिल दरद बढ कढ कराह मुख आह ।।
चुप हुवै सिर नीचो करयो बुरी प्रेम की दाह ।।८१।।

चौपई: सूरज प्रभा सुघर समझी तब ।। यहि है राजकवर निसचै अब ।।
पै काहू के प्रेम जाल मै ।। फसयो तरफतो ऊसी ख्याल मै ।।
बचन माहि कछु असता सीरा ।। हिय बेधक नावक के तीरा ।।
मन महि यही बिचार बिचारै।। किसी भांत ग्रिह चलहि हमारे ।।
तब सब बात प्रगट हवै जावै ।। कहा तलग दिल लाग दुरावै ।।
बिनती करी दोउ कर जोरे ।। प्रीतम सुनहु बचन यहि मोरे ।।

यहि घर राज भूमि हमरी महि ।। समय संयोग अहे अुत या महि।।
हमहि ऊचित तुमरी पहुनाईं ।। धरम द्रिस्टि देखहु मन लाईं ।।८२।।

दोहरा: कछुक चरन आगे धरहु निकट हि भवन हमार ।।
आज निसा तहि बास करि कीजय क्रिपा अपार ।।८३।।

चौपईं: यथा सकति सेवा हम करहै ।। खानपान आगे कछु धरहै ।।
निस बिताइि पुन भइे प्रभाता ।। निज इिछा बिचरहु बिख्याता ।।
जगत प्रभाकर सुन मुसकाईं ।। कहयो अमीरी पुन फलकाईं ।।
कहयो कि हम छित पति है हयाके ।। छुधित त्रिखत पंथी हम ताके ।।
यहि बच कहहु किसू फकीर प्रति ।। धन बिभूति खिराहु कीर प्रति ।।
बडो बचन निज कंठहि रोकहु ।। बिअरथ बाद महि हमहि न टोकहु ।।
अपन सुभावन अपने बस मै ।। अस अवकास न पंथ अवस मै ।।
पर ग्रह गवन ग्रहन पहुनाईं ।। कवन राहुया मग धर पाईं ।।८४।।

दोहरा: राजसुता सुन पुन कहयो पहुनाईं परिहार ।।
किसहु धरम महि ऊचित नहि आगे तुम मुखतियार ।।८५।।

चौपईं: नहि या महि हमरो बसवारा ।। मुरभित मन अस जबहि ऊचारा ।।
जगत प्रभा तब मनहि बिचारी ।। परम सुघर यहि राजदुलारी ।।
बहु बरख न बीते अति आपति ।। निज सजाति संगति भईं प्रापति।।
पुन यहि राज सुता बड माननि ।। ऊचित न मान भंग ससि आननि ।।
पुन मन तन करि प्रीति करत है ।। लोक लाज कुल कान हरत है ।।
सखीयन निदर करयो मम आदर ।। तिन सनमुख हौं करयो अनादर ।।
बडी लाज की बात निकारी ।। मानवता ते दूर बिचारी ।।
ऊचित न छितनो अति गरबावन ।। वहि प्रभू है सब गरबन सावन।।८६।।

दोहरा: या बिधि मनहि बिचार करि कीनो प्रगट ऊचार ।।
छुधा त्रिखा सोक ऊठन उठ गइे तह जम दुवार ।।८७।।

दोहरा?: पै इिक कठिन बनी अब आईं ।। वहि जाको जग औंर ऊपाईं ।।
मान भंग काहू को करनो ।। ऊचित न बनय आप किन मरनो ।।
पुन हमरे मत अस अप करमा ।। दुतियन ही जानत प्रभू मरमा ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। मान भंग पर कही कहानी ।।
मीत न भगन करहु मन काहू ।। फल याको लख कठिन निबाहू ।।

मन यहि मुकर फोर जब डारहु ।। न्याव सभा कस उत्र उचारहु ।।
फूटौं मुकर जुरत नहि कैसे ।। मनहूं भगन जान गति अैसे ।।
या पर स्री गुरु ऊकति प्रमाना ।। भगत फरीद बचन जह आना ।।८८।।
यथा सोरठा: इक फिका नागा लाहि सभ नाम हि सवाधणी ।।
हिआ ऊन कै ही ठाहि माणक सभ अमोलवे ।।८९।।
सभ नाम नमाण कक ठाहणं मूल मचांगवां ।।
जे तऊ पिरी आदी सिकहि आऊ नठाहे कहीदा ।।९०।।
दोहरा: मन माणक अर दूध को ओको कति इक माय ।।
फूटे फाटे नहि जुरहि कीजहि कोटि ऊपाहिं ।।९१।।
चौपई: जो कही पहिले क्यो न बिचारी ।। कत कठिनाईं बहु प्रगटारी ।।
जानबूझ अवगुन कत करीये ।। हाथ दीप लै कूप न परीये ।।
याको यहि अभिप्राय जानीये ।। साच कहत परतीति मानिये ।।
यथा किसू कवि को यहि बचना ।। कहयो हिसो पर कर बड रचना ।।
बीच सभा अपनी दुखियारी ।। देहु थान मति यहि मन धारी ।।
तूं निज दुखी पुकारत आरत ।। कत औंरन हूं करत दुखारत ।।
यहि बो दरद मंद की संगति ।। दुखित सभाको करत यही गति ।।
दुखित संग ते होत दुखित मन ।। बिरह बिकल को संगी धरखन।।९२।।
दोहरा: तुमरो भी सुख बिगर मति होय ऊलट दुखदान ।।
दरद मित्र को सभा महि याद करहु जिनि आन ।।९३।।
चौपई: या कारन हम कीन बलावा ।। तुमरे सुख हित मन बिरमावा ।।
अबै अर जौं इछा यही तुमारी ।। चलहु सुमर हरि गिरवर धारी।।
यहि कहि ऊठयो सु राजकुमारा ।। संग संग वहि राजदुलारा ।।
धरें हाथ महि हाथ प्रेम करि ।। सने सने बच करत परसपर ।।
पिया दह पाय मत गज गामनि ।। चली लिवाय भवन कहि भामनि।।
जगत प्रभाकर सुधर निपुनि अति ।। गुन बिद्‌या महिं चतुर बिसद मति।।
कबित काब्रय कछु कथा कहानी ।। बयंग सहित माधुर रसमानी ।।
नोक चोक कछु रमज किसैनी ।। या बिन कहत न बच मति पैनी ।।९४।।

दोहरा: राज सुता के चित को पंचल वत वत मैन ।।
यथा म्रिगी सुन सुन सबद छिन छिन होत अचैन ।।६५।।

चौपई: प्र मन सो कहि राजकुमारी ।। अरे मूढ कछु देख बिचारी ।।
बिना काम अनजान कार तूं ।। परत कूप कत बिन बिचार तूं ।।
अस न होय जग लाज कान ते ।। हाथ धोइ बैठ हि जहान ते ।।
ग्रिह बैठे दुख बिहैरे बिथाको ।। लेय मोल मग चलत बलाको ।।
रो रो परहि प्रान पुन खोवन ।। प्रेम लहर सुख ते कर धोवन ।।
यहि प्रेमी है प्रगट किसी को ।। देख प्रथम अब हाल छिसी को ।।
मस्त फिरत है पियें प्रेम मंद ।। तज घर बार समाज सभासद ।।
बहुर नही अपनो यहि देसी ।। बहु दुख दायक प्रीति बिदेसी ।।६६।।

दोहरा: देख मुसाफिर सो कोऊ करते बावरे प्रीति ।।
जगत कहत सब ही हूवे जोगी किस के मीत ।।६७।।

चौपई: पै ह्यि तपत बढत थी छिन छिन ।। घटत चाह मै प्रान पलक बिन ।।
बिआकुलता मन पर थी छाई ।। प्रभू माया न चलत चतुराई ।।
प्रेम लहर मन महि जब चढी ।। यहि बानी जी अते तब कढी ।।
अरी जान जु छिन मिलाप को ।। वही जान भागन प्रताप को ।।
प्रेम लगन के आदि काल मै ।। आगम लखनो चूक चाल मै ।।
या महि धरम दंड हूं भारी ।। माढ कीयो लख बेद बिचारी ।।
जान परम धन निज संयोग कों ।। अरी बावरी माण भोग कों ।।
दुती रंग हुवैं जाति समय कों ।। छिन महि मन निज राख जमय को।।६८।।

दोहरा: या बिधि करत बिचार मन ऊतरत चढत अपार ।।
सनै सनै पहुचे दोऊ निज ऊपबन के द्वार ।।६९।।

चौपई: खुल्यो द्वार भीतर पगु धारियो ।। तहि अद्भुत छिक बाग निहारियो।।
पूरब बरनन किय जिहि बनकों ।। बरन हु कहां ताहि उपबन कों ।।
छिक दसते की प्रभा सुनावहु ।। दसते कई सह प्र लिखावहु ।।
जिहि जहि लिखहु अंक फुलवारा ।। कागद पर लगहै गुलजारा ।।
लिखत होत लेखन डह डही।। निकलहि सुमन लता लह लही ।।
नम्र होत फल पुसपन भारा ।। कठन परत लिखनो तिहि बारा ।।

पत्र पिसट पर सुमन जु फूलत ।। यहि अद्भुत लखे कर पग फूलत ।।
कंटक रहित धरन वहि पावन ।। सतुन के हिय कंटक छावन ।।१००।।

दोहरा: बनयौ ठनयौ लख परत यौ चहूं कौन छिक सारि ।।
कोन कोन बंगले बने चहु दिस घर हरि यारि ।।१०१।।

चौपई: अधिक ऊतंग दुवार छबि पावत ।। रंम्य ठौर लख मदन लजावत ।।
चहूं ओर परकार बिसद अति ।। परिखा तिहि चहु फेर गहर मति।।
तिहि तट चहूं ओर बन केला।। नहि केवल केला ही अकेला।।
सुमन बाटिका रचित कियारी ।। तिन महि खिरी अनिक फुलवारी ।।
रचित बिचित्र रंवस की पाटी ।। महिदी छ्रित मीना की टाटी ।।
गुलमहदी के सुमन सुहाइे ।। अरुन पीत रंग जनु छिरकाइे ।।
सुमन अबासी रंग खिरे हैं ।। प्रभू माया जनु द्रिस्टि परहै ।।
नरगस सुमन निरख मन आवत ।। ऊत कंठित तिय द्रिग छबि पावत।।१०२।।

दोहरा: गुल समोके सुमन ते बहि बचि चलत सुबास ।।
फले तरुन फल भर झुके नम तल ताधर पास ।।१०३।।

चौपई: सघन तरौवर मिले परसपर ।। फल सम मधुर रुचिर तन बलकर ।।
सुमन कुमार ललित पर फूलत।। गुंजत मधुप मत रस भूलत ।।
रवसै फटक रचित गुलकारी ।। नहरै बिमल बहित सुखसारी ।।
कहूं कहूं सुम ताल सवारे ।। तिन महि ऊछरत अनि कफुहारे ।।
रित बसंतु लहि सुमन फूलना।। गुंछ अंगूरन मत्त झूलना ।।
अखिल कली पर पवन घूमना ।। मनहु ताक तक बदन चूमना ।।
गुछ अंगूर सरस रस पूरन ।। दिल पग फालक सम कछु कूरन ।।
कछ जरीदास पट चड़ी थैलीआं ।। रछिकु मालिक फिरत फंलीआ ।।१०४।।

दोहरा: हरी मरवी कियारी सकल पटरी रवस त्यार ।।
आल बाल चीनी रचित तिन महि कछु फुलवार ।।१०५।।

चौपई: सरस सुगंधित सम फुलवारी ।। बोला कहूं चंबेली क्यारी ।।
कहूं मोतीया कहूं भोगरा ।। जुही केतकी कहूं केवरा ।।
मदन बान कहूं जरद चंबेली ।। कहूं निराली फुलित रवेली ।।
छिक दिस फूलत सुमन गुलाली।। चुहचुहात मुख गूढ़ी लाली ।।
अजब रंग जोबन की लहरै ।। भर गुमान झूमत तन थहरै ।।

हिये सियाम ता लख मन आवत ।। मनहु सिसर रितु ते भय पावत।।
बहुरंग यहि रहय किनाही ।। दाग परयो याते हिय माही ।।
यथा किसू कवि को बच भावन ।। यहि दुनीया दिन चार सुहावन।।१०६।।

दोहरा: गुड़ी लालगि देख के फूल गुमान भइे ।।
कैते बाग जहान मै लग लग सू कर गइे ।। १०७।।

चौपई: चहूं ओर तो छब पावत ।। ना फरमान खिरयो दिख रावत ।।
सरू सु पैदा न हर किनारे ।। बिबिधि बिहंग न कीफ नकारे ।।
मत सुमन के प्रेम मलानी ।। बोलत मधुर बुलबुलै बानी ।।
मधुर मधुर घन गरजावत ।। नाचत मोर पायलै पावत ।।
बिहसत कहूं चकोर निरत कर ।। चुगत चिंगारी चंदद निरख कर ।।
नहरे निकट नीर खगनाना ।। करत मधर धनि कर कलगाना ।।
फल करन मत तरोवर सारे ।। मधुर सुधा सम फल निरधारे ।।
सेव नासपाती सुबिही पुन ।। सुमन मुखी के चिबक सर सगुन ।।१०८।।

दोहरा: कुटिल बाल छर की अलिक ऊरफन अस दरसाया।
ससि बदनकी अलिक जनु रही कुंडली खाय ।।१०९।।

चौपई: सरस अरुनता गुल सोसनकी ।। जनु छबि प्रया अधर कोसनकी ।।
सुमन दुहूं दीकी लख खचना ।। प्रगटत प्रभू माया की रचना ।।
लख सत बरगसुमन माइे ।। रंग सहस निज पाहु दुराइे ।।
सरस रसाल सुहावन तरुवर ।। मौलसिरी छाया सीतलवर ।।
गजि गामनि सुंदर बनवारिनि ।। फिरत सवार तबिवाकियारिनी ।।
महल सेव महि जे अधिकारिन ।। आग्या कार तर चहु फुल वारिनि।।
परी पदमनी सी सम कामनि।। निरखत लजित किंनरी कामनि ।।
कनक बेल चेर तन जड़ाइे ।। खुरपे खचित करन मन माइे ।।११०।।

दोहरा: देख भाल बिरवान की कव सकि यार फुलवार ।।
कंटक त्रिण पतफर परण सोधत देत निकार ।।१११।।

कबित: चारयों ओर चिरयान कि चुह चुह मचाई कहूं कुहूं कुहूं कोकिला कलित कंठ गा रही ।।
लहरात नहरै हूं फहरै फुहारन की छूटै जल चादर की छीटै छहरा रही।।
सांय समय की रवि रसमी म्रिगिंद आयमीनेके महल मिल जोत जग मग रही।।
ब्रिछन मै जाय छन छन छहराय तने छावन छवाय कै बिछावन लौं छा रही।।
।। ११२।।

दोहरा: श्री गुर चरन प्रताप बल बरनयो बाग प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो चतुरथ चारत रंग ।। ११३ ।।

इति श्री मत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति तिरूपति प्रीति प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदिन बिरचिते राज कवर को बन बिहार बरनंन नाम चतुरथो तरंग ।।४।।

कबित१: हीयो तल भूमि ता मै बिबिधि तरंग वेई रंग रंग फूलन की फूली फुलवारहै।।
कंटक कलेस़ राग दुवेस से बिसेसै ब्रिछ मदनादि म्रिगरी छरोफ औफसारहै।।
मन सो म्रिगिंद मेरी दूकतम वासता मैतुमै हौबतावों नाथनी कोही सिकारहै।।
गुरूजीगुबिंदसिंघ बाजके सवार आज बाजकरघारकीजै या बनबिहार है।।१।।

दोहरा: प्रेम पयोनिधि अगम अति करन धार गुरुनाम ।।
ता प्रताप मति मम तरी करत तरी को काम ।।२।।

चौपई: आगे गयो राजकुमारा ।। मधि बाग छिक महल निहारा ।
कनिक रचित मानक नग मोती।। दुवादस दुवार ऊच बढजोती।।
राज भवन सुंदर बिस्तारा ।। मक्त पुरंद्र कवन बिचारा ।।
रचियो बिस्व करमा प्रभू माया ।। छिंद्र भवन ते दुगुन बनाया।।
फरस फनूस बितान समेता ।। बनयो ठनयो सम घर तिहि जेता।।
फटकस थंडल रचित अगारी।। ऊछरत हौंज अमल जलभारी।।
फरस पखान रचित रंगमीना।। समियाना छिक तन्यो नवीना।।
पटकी ठौर तमामी ताके ।। झालर कनक गुंछ मुक्ताके ।।
सेत बादले की छिक झालर ।। झलमिलात लग पवन बराबर ।।
जरीदार डोरै कस राखी ।। कनकचोबन गजटित परखी ।।३।।

दोहरा: ऊत पूरन ससि निसरयो स्याम घटा कहु फा ग ।।
छित ये महल रु चांदनी सजे सेत स्रिंगार ।।४।।

चौपई: पावस निसा चंद ऊजियारी।। छिते चांदनी की सुत्यारी।।
धंन पूभू वहि रचनेहारा ।। भयो चौगुनो तहि ऊजीयारा।।
नीर यंत्र के नीर धाम महि।। कतर बादरे मे लेता महि ।।
जड़े हजारे के बरफ रवे ।। तिन मग लगे फुहार फहरने ।।
ऊछरन बीच चमकन मुकेसकी ।। ससि प्रकास महि प्रभा बेसकी ।।
घर पर प्रभा गगन की छाई ।। तै सम ऊडगन परत लिखाई ।।
चमकत कनक तार जल मग हुवै ।। परत धरन पर कर जग मग वै ।।
राजसुता छित रचयो समाना ।। लखहि चांदनी छबि यहि नाना।।५।।

दोहरा: जगत प्रभाकर कवर की छुती कवन को सार ।।
दैव योग या बिधि भयो सम ही सेत सिंगार ।।६।।

चौपई: तहा जाय वहि राजदुलारी।। जगत प्रभाकर पर कर धारी।।
तरे चांदनी कनक सिंघासन ।। आन बिठायो कर अस्वासन ।।
अरुन रंग मद पुन किसरानी ।। सीसे भरे आन निज कानी।।
ससि बदनी वहि जे प्रचारिका।। सभा हेल भई सभ सवारिका।।
सीस सीसे झुके पान पात्रन दिस ।। पूरत लखे डकाडक द्रिगतिस ।।
लोकलाज कुल कान कानकरि ।। औंधें मुख अति मन लज्जाधर ।।
बोतल मुख पर बैठ अगारी।। बूड गई जनु ताल मझारी ।।
यहि लख गाय निसाज मिलाइे ।। ससि मुखि मंगल तान ऊठाइे।।७।।

दोहरा: सभके सेत सिंगार तन सित हीरन के हार ।।
नख सिख भूखनसेत सभ हीरा जटित अपार ।।८।।

चौपई: दुहूं ओर रचि पात बनाईं।। नाच गान की धूम मचाईं ।।
सारंगी की सुर जु सहारी।। गगन सुक्र स्रवनन लग डारी ।।
थाप म्रिगिंद मधुर गिटकड़ी।। बे नगमक की तार चटकड़ी ।।
मुनि समाध की कुतक बानी ।। म्रितकहु ऊठत समाधि तजानी।।
तान उपज करि गान जु लयावत।। तानसैन पर तैन दिखावत।।
बार बुदह औनु कीसा दोऊ ।। गंध्रब बडे प्रगट जग जोऊ ।।
तिन की मति सुन सुन पचगईं ।। पची आप पर उपज न अईं ।।
छज्जू आप मूरछा पड़े ।। गंध्रब बडे चकित चित खड़े ।।९।।

दोहरा: परन गिटकड़ी स्रवन पड़ि सोची करि बड सोग।।
सिर धुनि धुनि चित चक्ति हुवै थकिर हयो हाथ मरोर ।।१०।।

चौपई: गति अनेक असनिरतति कामनि।। अचल होत चंचल पगदामनि।।
निरत करत पायल जु बजाईं ।। लल्लू देख मूरछा खाईं ।।
त्रितकार कत्थक बडगुनी।। देख देख मुंडी निजधुनी।।
पग टोकर या बिधि कछु लावै ।। म्रितक परे को टोक जवागै ।।
गत पर असकर भाव दिखावन।। लखत परय कर मल पछतावन।।
बढत बिरह कर ऊरघ ऊसासा ।। जो छिक छिन तिल लखय त मासा।।
जब वहि समय प्रेम की संगति।। पहुची अधिक नेह की रंगति।।
जग आनंद लगे सभ फीके।। सुरग समाज लगे प्रिय जीके ।।११।।

दोहरा: राजसुता भर कौंल इक निज कर सने ऊठाय ।।
इ कह्यो कवर प्रति पीजीये मग स्रम जाहि बिलाय।।१२।।

चौपई: सुध मुकर सम रावर मन जो।। मग स्रम छाई छाय मल्न सौ ।।
यहि तामल को अस निर वारै।। जिम असि सिकली सिकल सवारै।।
सूझ परहि तब मुख दरपन वहि।।सकल बितेत मई जो हालति।।
मोमन निसचय यहि अभिलाखा।। सुनहु तुमारि सुपूरब साखा।।
जगत प्रभाकर सुन असमाखी ।। याते हमहु माफ चहिराखी।।
यहि तौ सब सुख के समाज है ।। ~~[illegible]~~
हम ही हलाहल तुल्ल आज है ।।
जब बि प्रीति समय यहि होई।। सुखद सकल दुखदायक जोई ।।
दुखदहु सकल होत सुखदायक ।। समय जु बहि यहि होत सहायक।।१३।।

यथा दोहरा:

जाहि भाम प्रिया धाम महि घाम चांदनी तांहि।।
जाहि बाम प्रिया धाम नहि घाम चांदनी तांहि।।१४।।

चौपई: यहि सुन रज प्रभा ऊचारी।। राजकवर सुन बात हमारी।।
वहि जो प्रथम आप कहि आइ ।। मानभंग महि दोख दिखाइ।।
हमरे मति मन मुकर किसीको।। भगन करन नहि ऊचित सुनीको।।
बिसर गइ अबही वहि छिन मै।। नहि बिसरे तब यहि कहु किनमै।।
जब तुम यहि न कीयौ मुहि माफन।। मो मन तन आनंद बढाफन।।
बिना दुख मो मन कहि पावै।। टूक सहस छिन महि हुवै जावै ।।
यहि सुन राजकवर मुसकानो।। करते लै यहि बचन बखानो।।
जौ तुमरे मन या बिधि सुख है।। तुमरे सुख हम सौ गुन सुख है।।१५।।

दोहरा: मीत दयो मद प्रीति करि पीवत कौन अनीति ।।
दिज नहि हौं मुनि रिखी नहि जुगति जोगनहि रीति।।१६।।

चौपई: अस कहि रुचि करि पान सुकीनो।। बहुर आप निज कर भर लीनो।।
राजसुता प्रति दयो पिलाई।। प्रीति रीति की नीति चलाई।।
तब निसचिंत परसपर दोउ ।। रस मस पान करते मइ जोउ ।।
नयो फेर जिम होत गगनको ।। नइ रंग प्रगटात मगनको ।।

जब दो चार पियार युत पियारे।। लीहे द्रिगन महि रवे तरारे।।
जोबन मद की लहर जु छाई ।। मद की दुतिय सहायत पाई।।
कछु अनंद की ऊमग दुहुं दिस ।। ऊछरत भई छाहि करि दस दिस।।
छिन को प्रम मग पग चूरन कौ।। चूरन भयौ सकल तूरन सौ ।।१७।।

दोहरा: ऊत ते सके बिचार मति लोक लाज कुलकान।।
जलकाईवत ऊतर कर लगी किनारे आन ।।१८।।

चौपई: जगत प्रभाकर हुवै मतवारा।। सब या बिधि मुख बचन ऊचारा।।
रही चल चला अब तक पिआरे।। जब तक दहे न मद भरपियोरे ।।
अब जह लग बस चले सु चले।। चले दौर पियाले का मले।।
यहि सुन वहि जु सखी गुन खानी।। जिन पहिले बढ प्रसन बखानी।।
बन महि पहिले गिरा ऊचारी।। राजसुता की वहि अति पियारी।।
तिन या बिधि कछु रमज चलाई।। राज सुता प्रति कह्यो सुनाई।।
रस या ससि ऊजियारी निसको ।। प्रापति हुवै प्यारी तब छिसको।।
छिक मयंक निज अंक लीयो हुवै।। दुतिय मयंक समुख ठाडो हुवै।।१६।।

दोहरा: राज सुता सुन स्वास भर असमुख कीन ऊचार।।
समभत रमज मजाख तुहि छेर छार छि नार।। २०।।

चौपई: कहा करहुं री लख करि गौरा ।। पछुतावन की है यहि ठौरा।।
यथा किसू कवि की यहि बानी।। आपन हाल पर परत पछानी।।
जो वहि मिल्यो चिकत सिक अपना।। तिहि मन बन लगि औंर हि तपना।।
लेहु बधाई काल हमारो।। भयो धनंतुर निज दुखियारो ।।
जगत प्रभाकर यहि सुन बानी।। अटपट लपट प्रेम रस सानी।।
तिहि चेरी प्रति कहित सुनाई।। काहू कवि की रचन बनाई।।
मै पंथी हौ बिथित बिदेसी।। मो संग प्रीति न करह सुकेसी।।
कहु हु मोहि भरवासो कहा। छिन भर कहूं रहा नहि रहा।।२१।।

दोहरा: राज सुता यहि ऊत्र सुन तहि ते हाल प्रसंग ।।
रस बातन बिस्माय कछु रचयो औंर ही रंग।। २२।।

चौपई: चलत चलत यहि बात चलाई।। जहि चाह तही बिथा पुछाई।।
तुमहि सपथ जगदीस मुरारा।। जो सभ घट की जानन हारा।।

कहहु निसंक साच सभ हाला। ।या महि रंच न करीयहि टाला।।
तुम हो कवन कहा ते आइे। ।काके प्रेम ऊपज दुख पाइे। ।
काकी जोह जुटी है मन मै।। बिआकुल फिरहु त्याग घर बन मैं।।
यहि सुन राज सुता की बानी।। लग्यो साच निज कहन कहानी।।
और ऊपाय न तहा निहार्यो।। सपथ दई लख साच ऊचार्यो।।
सुनो स्रवन करि राजदुलारी।। दुख दायक दुख ब्रिथा हमारी।।२३।।

दोहरा: भाग प्रभाकर न्रिपति को प्रान पियारो तात ।।
जगत प्रभाकर नाम मुहि माख जग बिख्यात ।।२४।।

चौपई: खतन देस है वतन हमारो ।। भुवन बिसाल पुरी ऊजीयारो ।।
ताहि नगर महि है रजधानी।। परगट भवन चतुर दसजानी।।
मै छिक कीर मोल कहूं आनो।। चंचल पठित मंत्र क्रित मानो।।
ता मुख सुनी रूप की सागर ।। सभा ससि कला जगत ऊजागर।।
स्रवन सुनत ही भयो दिवानो।। तज घरबार बनहि निकरानो ।।
अनिक कलेस अजाब ऊठाइे ।। हियो फटत नहि जात सुनाइे ।।
बहुर कीर को बनहि बिछरनो ।। मंत्री सुत की सार न फिरनो।।
पुन अपनो बन फिरन बिहाला ।। तरफन पर्यो मंत्र के जाला।। २५।।

दोहरा: जंत्र दंनता त्रिया को अपनो रखतो नैन ।।
तुम सो भेट भई बहुर कहे सकल यहि बैन ।।२६।।

चौपई: बिना लखिबे कंचन को देसा ।। तहा कनक पुर नगर बिसेसा ।।
चित को चैन न मनहि अचलता।। जीवन ब्रिथा छीन अरबलता।।
यों कहि लै कर ऊरध ऊसासा ।। पढ़े किसू कवि बचन प्रकासा ।।
वादीपक मुखी की दी पति महि।। हौं पतंग पर तपत हिये महि।।
होत होत पुन अनद निदाना ।। सीयरो दीप बनो तज प्राना ।।
किधों प्रातमा रुत हौं सीतक ।। कै सुगंध कै सुमन की दीपक।।
मै हां जवन रंग महि पियारी।। पै छिन भर की पाहुनचारी ।।
याते अधिक न मोहि निहारो ।। छिक छिन को मिहमान बिचारो ।।२७।।

स्वैया : पछतावनो है तन ताव बिना तरु लाय कछू फल पायो नही ।।
छिक माली हौंमैं अफली तरु कौं फल फूल को भाग लिखायो नही।।
अब वाही गली मैं भली बिधि प्रान तजौं कछु औ र तौं भायो नही ।।
कुल कान जहान ऊधार को मै तौ ऊधारे तजौं मन लायो नही ।।२८।।

स्वैया : पर.प्रेम के पंथ मै प्यारी सुनौं मरतैं मरतैं मुख मोर्यो नही ।।
किस भांत सही सखती सिर लौं पै सचाई को तार मै भर्यो नही ।।
तन राखी है चादर सेत सदा मै समाध पै भेद तौं फेर्यो नही ।।
न लखै सब चंद मुखी को बंध्यो ये पर्यो है लखाय बोलो र्यो नही।।२९।।

दोहरा : दुख देखे को कंपत ह्रिदय प्रलय काल की बार ।।
तुहीं तरावन मोहि प्रभू बख्ति अगुन जलधार ।।३०।।

चौपई: सुन यहि ब्रिथा सु राजदुलारी।। लख्यो कि फसयो प्रेम की जारी।।
समाससि कला रूप सुहावन ।। परी पदमनी तुलि मन भावन ।।
आह भरी बेधन मन प्राना ।। तपत स्वास भरतन तपताना ।।
ऊमग आसूवन चलयो प्रवाहा ।। बहयो मिलन को सब ऊतसाहा ।।
यहि लख जगत प्रभा सु ऊचारी।। कुसल तोहि तन राजदुलारी।।
छिसी हेत तुहि प्रथम हटायो ।। दुखी संग देख्यो दुख पायो ।।
यहि सुन सूरज प्रभा कुवर बर ।। बोलत बचन नैन लग झर ।।
यथा किसू कवि के यहि बचना ।। निज प्रसंग पर कहि बह रचना ।।३१।।

स्वैया : कियो माय लहाय दया मुझ कौं जु जहान कौं हेक छूटों ठग हैं।।
ऊस ही अनियाई की ओर या सम के कुफेर ढुर्यो पग है ।।
बवराछिन के करते पर दौ पट आयोहु तौं दिल ही तग है ।।
यहि आज खुलयो पट तौ पढतौ गिरेबना ते आयो गरे लग है।।३२।।

सोरठा: हेहो राजकुमार बाट पार दिल देस के ।।
प्रेमिन के मनहार तनक हाल मोरा सुनहु ।। ३३।

चौपई: डछिक अदभुत है हाल हमारो ।। अजब तरहि को यहि बिवहारो ।।
मेरो पिता भूपत बडभागी ।।
मेरो पिता भूप बडभारी ।। बहुत छत्रपति आवत दुवारी ।।
सिंध पौर पर सीस झुकावहि ।। भेट राख पद कमल मनावहि ।।
बडो राजघर बिबिधि समाजा ।। सैना को सबाज गजराजा ।।

पै संतन को संग सदाई ।। पठन सुनन चरचा फरलाई ।।
परम भगत हरि के रस लीना ।। प्रगन प्रेम ऊदधिको मीना ।।
कथा प्रवण मंत सासत्र बिचारा ।। संध्या बंदन बिबिधि प्रकारा ।।
चरनाम्रित लै तिलक चढावत ।। हरि पूजा करि भोग लगावत ।।३४।।

दोहरा: हरि बासर ऊपवास करि निस जाग्रन सविधान ।।
गुन गुबिंद कीरतन कथन प्रेम सहित करगान ।।३५।।

चौपई: प्रभ की भगत बिना नहि छिक छिन ।। ब्रुयरथ जान पावहि नहि निसदिन।।
जिनहु प्रेम रस लागत नीका।। सकल आन रस होवत फीका ।।
जान लयो जग धुंघ पसारा ।। सार भजन सभ आन असारा।।
राज माल फूटी सभ माया।। बिनसजात जस बादर छाया ।।
अंत न काहू संग सिधाई ।। सकल भार करजात तजाई ।।
या पर स्री गुरु बचन प्रमाना ।। बारबार मुख करत बखाना ।।
धनदारा संपति ग्रेह ।। कछु संग न चालै समझ लेह ।
छिक भगत नारायण होय संग ।। कहु नानक भज तिहि छेक रंग ।।३६।।

दोहरा: पूछ चुके जब जगत को तन धन ब्रिथा समाज ।।
ब्रिथा बसस कसबो ब्रिथा ब्रिथा सोच दुखसाज ।।३७।।

चौपई: मनहि धार द्रिड़ तर बैरागा ।। राज हुकम सभ करयो त्यागा ।।
सब ब्रुयबधान भगत महि जाना ।। तज्यौ सकल सुख सौ जस माना ।।
कस्मसा व्यरथ बिना सी साज जहाना।। धरमसाल वत लख गुजराना ।।
त्यो ऊठाय हाथ सभ जगते ।। चरन हटाय राज के मग ते ।।
नगर निवास तज्यो रणवासा ।। रच्यौ आन या बन महि बासा ।।
मो प्रति आपकह्यो बहु बारा ।। करहु बिवाहु सुता बरधारा ।।
मै बियोग दुख लख मनमाहि ।। द्रिड़ ब्रत ठान करी तहि नाही ।।
यहि अब काल चक्र के प्रेरे ।। आन बनयो जोऊ चित न चितेरे ।।३८।।

दोहरा: कहि जानो छिक बार ही बीज परी गरजाय ।।
छेक द्रिस्टि के लगत ही जगी लगन की लाया ।।३९।।

चौपई: औ चक परी प्रेम की जाली ।। भई दिवानी सुधि न संभाली।।
तोहि प्रेम पर भई दिवानी ।। बुधि बिचार ते भई बिगानी ।।

बिआकुल बिकल भई बदनामा ।। द्रिस्ट लगत भयो नस्ट अरामा ।।
का जानहु यहि का गति भाई ।। इक द्रिस्टि सम सुधिबुधि सम गई ।।
तुम ऊस के पर प्रेम पंथ मै ।। ढूंढत बन बेहर सुपंथ मै ।।
जाके सम जग औं र न कामनि ।। पा मन कठिन गहन जस दामनि।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। प्रेमि अवघ मजनू जु बखानी ।।
चड़ी कजावे कैत कनारी ।। प्रभू की सपथ न छिन महि पियारी ।।४०।।

दोहरा: लै लीकी ऊटनी जहा सो वहि कवन कतार ।।
वा बिनहमरी द्रिस्टि महि सम संसार असार ।। ४१।।

चौपई: अब मुति बिना प्रान तिया गनते ।।और कहा फल द्रिग लागन ते ।।
~~अनैन्त्क~~ लोक लाज कुल कान तजाई ।। भई कलंकिन अपजस पाई ।।
सील धरम को मूल गवायो ।। बडे बैंस को प्रगट लजायो ।।
करन हार भई कुल हि कलंकित ।। बिगरी जातिपांति की पंकति ।।
मात पिता को नाम बिगार्यो ।। जस ससि कीचक लंक लिवार्यो ।।
यधपि मम कछु भयो बिगारन ।। तधपि नाम पर्यो बिभचारिनि ।।
नारि धरम की कठिन रीति है ।। पर नर परछाही अनीति है ।।
मन करि चित्त्ये पुरख बिगाना ।। तबहि पति ब्रत लखहु पराना ।।४२।।

दोहरा: मै तौ तुम को संग लै कर सौं करि पकराय ।।
रस बस हुवै निज सेज पर लीनो बिथस बिठाय ।।४३।।

चौपई: मैथुक के सम अस्ट प्रकारा ।। लिखे सासत्र त्रिय प्रिय बिवहारा ।।
मै कर चुकी सकत प्रकारा ।। रह्यो इक वहि कवन बिचारा ।।
अब तुम तज नर औंर निहोरौ ।। धरम हान ते नरक सिधारौ ।।
याते मन बच क्रम पति मेरौ ।। तुम बिन और न जग महि हेरौ ।।
तुमहि बरौ कि मरौं बिखु खाई ।। मै निज मति निसचै ठहिराई ।।
अपनी तो यहि दसा सुनाई ।। तुमरे मन वहि मूरति छाई ।।
बुरी प्रेम की लगन बखानी ।। निज मन ते सब परत पछानी ।।
भोर भइे ऊत गवन तुमारा ।। भोर होहि गो भवन हमारा।।४४।।

यथा दोहरा:

सजन सकारे जाहि गे नैन मरहिं गे रोहि ।।
बिधना अैसी रैन करि मोर कमि ना होहि ।।४५।।
आज सखी मै यौ सुन्यो पहा फाटत पिय गौन ।।
पह हिय रे फगरा पायौ पहिले फट है कौन ।।४६।।

चौपई: यहि सभ समय सुपन हुवै जैहे ।। सूनो भवन पार कर लैहे ।।
ब्रिह दिवस को प्रात प्रमावा ।। काल रात्र सम होहि लखावा।।
फाटत ही पहको पट प्राता ।। फटहितो सपट मुहि बिख्याता ।।
परहि बिथा जब सीस खुवारी ।। न्याव करहु जूह्रिदय बिचारी ।।
कासन कहि हो बिथा हियाकी ।। बिरहु सतावत मोहि पिया की ।।
कौन पियावहि जगत प्रमाकर ।। इक निसा बस गयो जु तब कर ।।
यहि दुख दायक ताहि जुदाई ।। जुदा करत तन प्रान तजाई ।।
हसहै या बिधि सकल सहेली ।। कहहि बात जो परहि न झेली ।।४७।।

दोहरा: छेर छार कर बयंग बच करहि बिदीरन प्रान ।।
अपनी अपनी बात बच तज अरजन के बान ।। ४८।।

चौपई: जौं रिस करौं कहूं दासी प्रति ।। बररावहिगी सकल दुस्ट मति ।।
करहि परस्पर अब बत रावन ।। पीठ पिछारी मिल मन भावन ।।
राज सुता निज बिथित बियोगा ।। हम पर टारत रोस प्रयोगा ।।
राजकवर तौं त्याग सिधायो ।। रुकयो न ता पर कछु न बसायो ।।
वहि मन रिस की झाफल सारी ।। चाहत है हम सीस निकारी।।
या बिधि तिन के बैन कठोरा ।। सहे कवन बिधि कहु हिय मोरा।।
पुन जौ पिता सुनय यहि हाला ।। परम लाज को बनय कसाला ।।
कहहै जब हम कह्यो बिआह कौ ।। कुटिला तब तौ करी नाह कौं ।।
अब आप हि निज छिछाचारी ।। सब फरस केत कहा फखमारी ।।
मात सुनय सनमुख कस जैहौ ।। कवन भांत कर मुख दिख रै हौ ।।४९।।

दोहरा: प्रगट होत के डरन सौं करन सकौं बिरलाप ।।
अपजस डर निज प्रान कौंह तन सकोगी आप ।। ५० ।।

चौपई: बिरह बिथा जब मन अकुलावै ।। कहहु कवन तब धीर धरावै ।।
अर पुन समझावै कोउ काकहा। परयो अटपटो पेच अधिक यह।।
भट्ट प्रात निज ऊतहि जाहिगे ।। इत घट हम प्रान जाहिगे।।
अहो भाग हमरे बलकारी।। रुदन करन के युक्त निहारी।।
हाल हमारो अति भय दायक ।। बिथा हमारी अदभुत भायक ।।
बहुत बार बिधि सो बुधि वंता ।। जा समान नहि को मति वंता ।।
छीर नीर को करि निरधारा ।। करत न्याव सभ जगत मझारा ।।
सभ कछु पडों लिख्यो बहु भांती ।। लघु दीरघ क्रित करम क्रितांती।।५१।।

दोहरा: पैंपछीआ मुहि भाल की लिखत न सक्यो पछान ।।
कहा कहा या पर बिथा बनहै अनबन बान ।। ५२।।

स्वैया: यहि अैसे कछू ऊलटे पुलटे लिख अंक लिखारी कहाइ येरी।।
अब रोस करो अफसोस करो कया कौन को दोस लगाइयेरी ।।
असठहै है म्रिगिंद कोऊ जगमै जगतै जिन चाह पुराइयेरी ।।
हम आपनै तौ दुख आंच बिना चित कदाचिन पाइयरी ।।५३।।

स्वैया: यहि बोल ब्यथा करि व्याकुल ह्वै हिय हाथ धरयो कह्यो हायदई ।।
द्रिग नीर बह्यो अंगिया ऊर चीरस रीर औ सेज बहाय दई ।।
द्रिड़ प्रीति नीति की रीति सभै निज मीत के चीत जमाय दई ।।
परखाय दई निरखाय दई समझाय दई झरलाय दई ।।५४।।

स्वैया: यहि प्रेम की पीर को पारखू हो निज पीर ते पीर पछान गयो ।।
रस प्रेम को चाख चुक्यो रसना बस नाहि रह्यो मन जान ग्यो ।।
बिरहा की बियार की वे झकझोर सहार चुक्यो सब मान गयो ।।
बिन चैन भ्यो तन मै न रह्यो दुख बैन सुनै अवसान गयो ।। ५५।।

स्वैया: यहि प्रेम को पंथ कुपंथ बुरो बरे पंथ वे पंथ पछानते है ।।
बिरहानल की झलकी झले झालवे झालवे को झलठानते है ।।
करो कोर म्रिगिंद कोऊ दुखियान की बेद न भेद न मानते है ।।
इस दाह की दाधि को दाधे बिना दधिबो नहि दाध बो जानते है।।५६।।

स्वैया : घर धीर तबै द्रिढ़ राजकुमार वे धीर कै बैन सुनायौ लगे ।।
अजू ख्याल तुमारो कहा है गयौं इतनो भला क्यौं दुख पायौ लगे ।।
निज मोल लयौ हमे जानिये जू निज दास परयौ जिम पायौ लगे ।।
जिम भाख हो सौ सिर राख हो मैं तुम क्यो भला सीस खपायौं लगे।।५७।।

स्वैया : इक थोरे से द्यौसन कौं इस दास को काम परै परवानगी कौं ।।
लख लीजीये जाउ जों ऊसपे न पता कछू जान रवानगी कौं ।।
पुन प्रेम हूं कौ परितारि कहौं निज लोगन हूं ते बिगानगी कौं ।।
मुख स्याही हुवै नेह निवाही बिना मैसु लागती है मरदानगी कौं।।५८।।

स्वैया : कछु अैसौ ही पेंच कुपेंच बनयो इक बार हमे तहा जावनो है ।।
यहि नेह की पंथ खरी बिखरी सिर लौ तज नेह निभावनो है ।।
घट प्रान रहे तब काल हौआ हमरावरी सेज सुहावनो है ।।
तुम सौ कत जो बू बलाय लवों द्रिग नाहक नीर बहावनो है ।।५६।।

स्वैया : धन है पूमू आप बिअंत बडो कहूं अैसे हूं ठाट ठटायो करै ।।
निज प्रेमिन के वहि प्रान प्रिया मनुहार कै धीर धरायो करै ।।
अपनी अनुसारिता प्रेमिन के मन नीठ कै ठीक बिठायो करै ।।
हित प्रेमिन के गम खायो करै कहूं भाग भाग भले मिल जायो करै।।६०।।

स्वैया : धरवास न दे असुवासन कै समझाय भले दिल दारी करै।।
यहि देखत ही बहु लोग जरैं रिस कै चरचा करि चारी करै ।।
अरी देखिये राजकुमारि दई किती नारि कीयो मनुहारी करै ।।
नहि जानत नेह की नीति नई पछुताय ब्रिथा सिरमारी करै ।। ६१।।

स्वैया : इनबातन ते बछु राज सुता घर धीर मनै सु अनंद भई ।।
द्रिग पोछ कपोछ अंगोछन सौ मुख चंद ते चार दु चंद भई ।।
बहुबार निहार चुके हम है जिन कै मरि प्रेम के फंद भई ।।
तिहि बाच हुवै कूर कैसाच किधौं सुत बाचते साच की कंद भई ।।६२।।

स्वैया : कह्यो आपही न्याव बिचारिये जू भला प्रेम मै तौख की कौंन कथा ।।
कियो कोटि ऊपाव सुनयौ है कहूं बचै नीर ते न्यारि ये मीन यथा ।।
वहि काम करायौ रहो हम ते जु न आवे हमैं करवै मै तथा ।।
सु बियोग के सेल को झेलवो है हसी खेल नही यहि प्रेम पथा ।।६३।।

स्वैया : पै कहा करिये इन नारिन की कछु रीति अनोंखी रची है दई ।।
पति आइि समेट जु पाइि घरैं परैं जाइि रसातल पाप मई ।।
तिहि ते जु कहै करबोई बने दुख ह्वै सुख हुवै पराधीन भई ।।
इिक औंर ही सोच नई हैं अजू तिहि ताप ते जात हौं आपतई ।।६४।।

स्वैया : जु भलाये बियोग दसा दुख को सिर से लहिये घर फेल हौं मै ।।
सब औंर तौं खेलन खेल चुकी यहि इेक अखेल हूं खेल हौ मै ।।
पुन जौं तुम जाइि रचे तहही मुहि भूलतौं कयौ दुख हेल हौ मै ।।
तब तेरी ये चाह चुरेल तपी तव प्रेम कटाह की तेल हौ मै ।।६५।।

स्वैया : तब राजकुमार कही तिन सौं नहीं तेरी सौं साच करौं सब ही ।।
निज तात की मात की प्रात की सौं जग तात की सौह करौं अब ही ।।
धर तेग पै हाथ कहौं तुम सौं नलवार हौ कूर कहौ कब ही ।।
नहि अंतर रोम बराबर को पर है निज जानहु गेतथ ही ।।६६।।

दोहरा : या बिधि बहु समझाय करि धीर दयो करतोख ।।
द्रिढ़ मिलबे की आस पर कछुक परयो मन पोख ।।६७ ।।

चौपई : बिरह बिथा को सुमरन मनते ।। दूर कीयो रच बडे यतन ते ।।
कह्यौ कि अब वहि ख्याल तजायौ ।। हसी खुसी की बात चलायौ ।।
दूर करयो यहि सकल कलेसा ।। सिर पर खड़े बियोग संदेसा ।।
बिसा थोरी अर कथा घनेरी ।। समय घात महि दुस्ट अहेरी ।।
याको यही सुभाव हमेसा ।। प्रेमिन महि कर कूर अंदेसा ।।
यथा किसू कवि के यहि बचना ।। या पर है प्रमान बड रचना ।।
निसा संयोगनि को अरमाना ।। करत रहयो है सकल जहाना ।।
निसा छोट पुन बडी कहानी ।। निसा किधौ अंजुलि क्रित पानी ।।६८।।

दोहरा : पै यहि रजनि संयोग की सदा रही तुछ सार ।।
प्रभू साची है कथित ही होन लगी भून सार ।।६९।।

चौपई : इिक दो बतीयां हसी खेल की ।। चलीहु ती कछु इिसी मेल की ।।
अजहु समापति होन न पाई ।। तऊ समय को नीकन भई ।।
ताम्र चूड़ करि ऊट्यौ पुकारा ।। जागहु रे मति सौ संसारा ।।
जाग ऊठे भजनीक भगत जन ।। लगे भजन बानी पढ बोलन ।।

गही मोगरी ऊत घरीयारे ।। गजल बजाहि अवल के मारे ।।
परयो जु सबद दुहूं के कानन ।। गे कुमलाय कुमुद से आनन ।।
राजभवन दुवारे बंदीजन ।। बिरदावलि पढ देत आसिखन ।।
घूम मिची सुन राजकुमारा ।। ब्याकुल ह्वै अस कीन ऊचारा ।।७०।।

दोहरा: निस संयोग की प्रात हम ऊठ सुन सबद अवाज ।।
ह्यां तो हमरे प्रान ही छुटे छुधा तुर बाज ।।७१।।

चौपई: भजन बंदगी वारे प्रानी ।। पढहि प्रात ऊठ जे गुरबानी ।।
योगिन को यहि अंम्रित वेला ।। भोग संयोगनि को बिखु बेला ।।
यहि भी त्रिती सत्रु भोगिनि को ।। सबद ऊच सुर जो जोगिनि को ।।
यद्यपि प्रान पुन अरुन सिखाजो ।। ऊभय सत्रु संयोग निसाको ।।
तद्यपि त्रिती यो वहै बखाना ।। बिरह संदेसि कति हूं न समाना ।।
भयो प्रात लख जगत प्रभाकर ।। करिख सौच क्रित पुन मज्जन कर ।।
नित्य करम करि संध्या कीनी ।। हरि चरनन महि मन कर लीनी ।।
इस्ट देव गुर चरन धियाई ।। गनपति गिरजा देव मनाई ।।७२।।

दोहरा: सुमर भगवती बंद कर कटिसौं क करवार ।।
सस्त्र बस्त्र सविधान करि भयौ चलन कहु त्यार ।।७३।।

चौपई: सहम गई लख राजकुमारा ।। स्रवत नैन अस बैन ऊचारा ।।
कुटिल काल ते क्रिया बनि आई ।। बनिआई तु यहै इक आई ।।
निस संयोग को बन्यो घटावन ।। दिन बियोग को अधिक बढावन ।।
चलत लख्यो जब जगत प्रभाकर ।। सूरज प्रभा कह्यो बच हित घर ।।
जो मानहु नहि पंथु अविरोधा ।। तौ मम बचन करहु करि बोधा ।।
मोहि जनिक सो मिलत जाहिये ।। राम रमईया कर त जाइये ।।
प्रभू चाहै तौ अफल न पर है ।। संग बढन को बड फल धर है।।
यहि सुन राजकुवर भलमानी ।। संग दई इक सखी सियानी ।। ७४।।

दोहरा: तहा जाय देख्यौ कहा बिछी चटाई एक ।।
तापर म्रिगछाला बिछी बिठ्यो इक नर नेक ।।७५।।

चौपई: हरि सुमरन महि ध्यान लगाइे ।। जग जंजार असेस तजाइे ।।
परम बिरकत भजन की मूरति ।। ब्रिध अवसथा रिख की सूरति।।
निकट जाइ इिन कीन प्रणामा ।। हाथ जोर सिर धर बुधि धामा।।
सबद सुनत ऊन नैन ऊघारे ।। आसिख दैसा दर बैठारे ।।
करसों कर गहि कर असुवासन ।। अपने निकट भयो तिह आसन ।।
हिय सो मिलयो सीस कर धार्यो ।। ढिग बिठार अस बचन उचार्यो।।
निस की कुटिल कीकरित सारी ।। राजसुता की बिपति असारी ।।
प्रगट सकल है इिस फकीर प्रति।। देखहु बिधि लेखनि लकीर प्रति ।।७६।।

दोहरा: मंदभाग या सम कोउू भई नति या भव माहि।।
हमहु कही बहु बिआह हित करत रही तब नाहि ।। ७७।।

चौपई: बडे बोल को न्यौ सीस है ।। गरब प्रहारी जगत ईस है ।।
अब आपहि पछुताय निकारी ।। करी आपकी कितन कदारी ।।
जो तुम करत न इितो दिलासा ।। हुतो न तिहि जीवन भरवासा ।।
इिसी तरह की हुती बिकलता ।। निसचै प्रान छाड तन चलता ।।
अब जो बचन करहु गे पूरना। प्रभु सभु करहैं मनसा पूरन ।।
ना तरत फत प्रान तजैगी ।। कबहु न धीरज सांति भजैगी ।।
मन बिआकुल लख धीरजु धरनी ।। प्रेम रुजित की दवा दु करनी ।।
ऊचित सदा नर सार दूल प्रति ।। बोलनि वाहन सत पुरखन प्रति।।७८।।

यथा:दोहरा:

सिंघ रवन सा पुरस बचकदली फल इिकवार ।।
त्रिया ते लह मीरहट होत न दूजी वार ।।७६।।

चौपई?: पुन यहि समझ राखु मन माहि।। पंथी चल्यो जु मारग माही ।।
कंटक त्रिन बन की गहवाईं ।। ऊचित लही मन रंच गनाईं ।।
यथा सुमन जो सहज सुहावन ।। कंटक युत ही होत लखावन ।।
पै कछु सुघर छाड नहि देही ।। सह कंटक दुख सुमन सु लेंही ।।
यहि सुन कुवर बिलज्जित लोचन ।। बिनत करी करि जोर संकोचन।।
सुनहु तात असकत प्रगटावहु ।। किह कारन मुहि मनहि लजावहु ।।

बन्यो अवस कही यहि कारन ।। तज न ऊचित नहि पंथ पधारन ।।
मीत बंधु घर नगर त्याग करि ।। परयो पंथ ह्यि प्रेम लाग करि।।८०।।

दोहरा: अब जुटरौं सबक हैगे कायल अबल सुकूर ।।
बैठ रह्यौ मग सुख हि लख परत प्रेम पर धूर ।।८१।।

चौपई: भय कर पहुंच न सक्यौ भियानक ।। कूरहि बंध्यो प्रेम को बानक ।।
याते अवस हि जान उचित है।। लखहु न्याव करि अवरन गति है।।
यहि सुन ब्रिधि पुरखु कहि बयना ।। सही ऊचित इसही बिधि अयना ।।
सतपुरखन की यहि बडाईं ।। सीस जाय पर सिररु न जाईं ।।
हमरे हूं निसचै अस आईं ।। पूरन करहौ बचन कराईं ।।
वहै मरद जो हो इस खनवर ।। नहि मन दिगनै रे मुख पर दिगर ।।
अस कहि इक तखती कर लीनी ।। राजकवर प्रति रुचि करि दीनी।।
कह्यो कठिन कछु आन परै जब ।। करहि सुखारस कलतत छिनतब ।।८२।।

दोहरा: प्रीछेवत यहि देखनी दैहै भेद बताय ।।
तिसी भांत क्रित कीजी इक रिहै प्रभू सहाय ।।८३।।

चौपई: बिदा करयो बर बचन असीसा ।। अंग संग तुमरे जगदीसा ।।
मग सुमसफल करहु प्रभ तेरा ।। परहुं पंथ मति करहु अवेरा ।।
प्रभू क्रिपा तमन बंछत पावहु ।। कुसल सहित पुन दरस दिखवहु ।।
राजकवर तब सीस झुकाईं ।। बिदा भयो बरवा सिख पाईं ।।
राजसुता ढिग पुन तब आयो ।। समाचार वहि सकल सुनायौ ।।
बहुर कह्यौ अब गवन हमारो ।। प्रभूं रच्छक अब होय तुमारो ।।
राजसुता यहि सुन कर बानी ।। तरफ गईं मछली बिन पानी ।।
बिलख बदन ह्यि कल मल आईं ।। हियों संभल यहि बच मुख ल्याईं ।। ८४।।

काबित: प्रीतम पिया न कीजू पूछी धुनि परी कान प्रानबिन पूछैही पियानौकरवेचले।।
आदि ही लखौ है अबीअंत कौपतौन कछू सुख की सफर मै सफालपेटले चलें।।
अब तौ चले हैठाढे मग मै म्रिगिंद कछू मांगनौ तौ मागौ जौमयाकैदान दे चलें।।
हूं जौं मगबंद जौन अपनी पसंद कैतौ रहीइे अनंद सौंचलौ तो संग ले चले।।८५।।

कबित: जानौं ना निकारी है पियारे संगले चलौं जूकरती चलौंगी काम पंथ के तिहारे मैं।
जौन मन छ्वे तौन कूच की चलावौं बात छूकर जैहै प्रान कूच के निहारे मै।।
संग की सलाह कछू ठहरी न आहदईहै नाह नही होत राहनाह के हमारे मै।।
आइ दुख दयोसदोस कौंन कौं लगाई ये जूबाचीयेगी सोउ लिखी भालकै किनारेमैं।।
८६।।

दोहरा: कर बिलाप पछुताप मन असमय मन लखपाय ।।
देत बिदा सुख संग दछे असूवा द्रिगन दुराय ।।८७।।

चौपई: चलहु संग तव गिरवधारी ।। जिन द्रुपदा की बिपद निवारी।।
जनप्रहालाद प्रगट जिन राखो।। वहि नरसिंह परहु तवपाखा ।।
चंद्र कास को राख्यो चंदन ।। करहु तोहि रच्छानंद नंदन ।।
जल महि राद लयौगजराजा ।। वहि प्रभू करहु सफल तव काजा ।।
चले प्रिस्टि जिहि भांत दिखाई ।। देहु दरस ससि मुख को आई ।।
दुख दूरी को दूर करहु गे ।। तब मनसा हम पूर करहुगे ।।
यहि सभ सुन कर जगत प्रभाकर।। असमय जानि कठिन अति मनकर ।।
हरि सुमरन कर मग पग धार्यो ।। चल्यो पिछारी फिर न निहार्यो।।८८।।

दोहरा: राजसुता की प्रति अति मनहि सराहत जात ।।
छिन छिन को ताही समय भई दिवस ते रात ।।८९।।

चौपई: द्रिग दरी याव अरुन परवारा ।। भयो तरंगति ऊछर अथाहा ।।
बिरह सिंधु की अगह घुमरमहि ।। बूड गहे तन प्रान ऊछरतहि ।।
यहि लख दसा जिस सीसियानी ।। बोली बिनय धीर युत बानी ।।
राजसुता तुम भई दिवानी ।। प्रान तजहुगी अब हम जानी ।।
छिसी तरह नित बलक बलक कर ।। रुदन करहुगी जीअहि कलक कर ।।
अरपुन पंथी गवन मिछारी ।। रुदन अनुचित लखहु किन पियारी ।।
कुसल मांगीये सगन मनाछिये ।। किधों अपसगुन रुदन मचाछिये ।।
वहि दिन भी कबहूं करि करहि ।। कुसल खेम पंथी घर बरिहै ।। ९०।।

दोहरा: अब तुमरी यहि मरदमी दरद बिरह को जीत ।।
दैत जीभ दै दिवस यहि क्योहूं करहु बितीत ।।९१।।

यहि सुन समझावत तिनहि थमत स्रवत नहि नैन ।।
यथा किसू कवि के बचन हम पर लागत अैन ।।६२।।

कबित: इरी अखियान कौ अनौखौ ही सुभाव सखी आपहि जाइजौंरे बिछुरेतेनी रढौरेरी।।
कैसी असगुन प्रीत सौगुनो सगुन कोहै सीच प्रेमतरु को फुलाय फल लोरैरी।।
हाय दई बेदरद समझैं नइेती कोऊ दुखीया दुहाई दैन कैसे कान फोरे री।।
प्रेम जूकी झौरे जाके तनकौ हिलौरे वेई जानै झकझौरें क्यों मचायो करे सौरे री ।। ६३।।

कबित: रोकीये न रोकन दै आंसू ऊरघोवन देखोवन दै जानजदुबीर की दुहाई री।।
रोवत ही बौरी काहे देख तौरी सोवत हौ दिल पै गरद ब्रिहो दरद जमाई री।।
आंसू रुक जात तब जीसो रिसखात मुख अैसे बतरात है बिरह तन ताई री।।
येरी हियतायन सुदाय ह्वै सहाय कर बरुनी न जाय हिय टूकते रिताई री।। ६४।।

कबित: प्रीतम पियान समै सुनो बिलखान मेरी फेरो तौ न मुख इेकबार इितै आलीरी।।
तौही लियो जान मेरी रोवन औ बिलपान निपट निकारो कूरसा रहूं ते खालीरी।
लावौ नाजू लगन म्रिगिंद मेरौ कह्यो मानये भी कछू रीति सारे जग सौं निराली री।।
प्रेम की लगनि ये अगनि हीये बनकी है खाली कहूं होत भला जारवे ते ज्वाली री। ।।६५।।

दोहरा: याबिधि जिम जिम बढत ही बिरह बिथा की पीर ।।
राजसुता तिम तिम दुखित घटत जात तज धीर ।।६६।।

चौपई: भयो दुवैज को ससि मुख पूरन ।। बिरह ताप सम तपत तंदूरन ।।
कबहु कहित अदभुत यहि खियाला ।। किहि बिधि कहहु हिये के हाला।।
बोलत लागत लाज घनेरी।। जान जात अनबोलत मेरी ।।
कहत होहिगी सकल सहेली ।। राजसुता बी बडि अलबेली ।।
पंथ चलत सो प्रेम लगावत ।। आप रुकत पुन हमहि रुवावत ।।
अस दरद न अब कतते ल्यावहु ।। जिस हि खोल हिय दरद सुनावहु ।।
जीवन यहै जु जीवर हैना ।। है अस कवन जु पोछ हि नैना ।।
रुदन निवारक रहि घरवासू ।। कवन ऊसम लै ऊरध ऊसासू ।।६७।।

दोहरा: है कहु कवन जु पियार करि लाय हिय सो सीस ।।
करहि दिलासा प्रेम करि हित करि बिसवे बीस ।।६८।।

चौपई: याबिधि करत मनै मन बतीया।। जिह लख होत बिदीरन छतीया।।
यहि लख सखी होत बिआकुल अति।। ग्रह के लोक मात सम अविछि्त ।।
करुणा करि कर सीस फिरावत ।। बारबार पूछत दुख पावत ।।
अहे अपन बैरनि प्रानन की ।। कहु कछु हाल बिकल आनन की ।।
तिन प्रति कहत न जानहु आना ।। कछु अदभुत यहि परत पछाना ।।
सनसनात है कर पुन पावर ।। आपहि आप परत तन तावर ।।
बिआकुल बंद हिये महि स्वासा ।। मच्छन आवत सकल अवासा ।।
ऊपबन लगत भयंकर बन सो ।। सम फुलवारी कंटक गन सो ।।६६।।

दोहरा: बुरो लगत है बोलतो भयो भाकसी भौंन ।।
अटपटात हैं प्रान अति यहि अटपटि गति कौंन ।।१००।।

चौपई: बंद बंद सब तन तूटत है ।। तोख धीर करि पट छूटत है ।।
मन पसंद है बन ऊदियाना ।। तहा जाऊ जन जहि वीराना ।।
सां सां करत लगत बन पियारो ।। मनहि दुखावत खग फनकारो ।।
प्रभू जानय मन किहि अवसेरी ।। प्रिय लागत कुमरी की टेरी ।।
निरजन रोर सुहावन जी की।। जन संगति बियाकुलता ही की ।।
अति आतप करि हिय जलत है ।। मन मसोस जनु कोऊ मलत है ।।
प्रगट नैन जनु मिले जाते है ।। पै न नींद छिन छिनक आत है ।।
कर चंचल कपरे पारन को ।। पग चलहै कानन भारन को ।।१०१।।

दोहरा: नल दमियंती की कथा लगत सुधा सी कान ।।
लैली मजनू बिथा पर परयो पठन को ध्यान ।।१०२।।

चौपई: यहि बवरा पन मन पसंद है।। ऊमड स्रव हि द्रिग तब अनंद है।।
जितीक जग की कथा कहानी ।। अति अकुलात स्रवन सुन बानी ।।
पै कछु चलय जु बैस बिचारा ।। जगत प्रभाकर को बिवहारा ।।
वहि तो स्रवन सुधाकर मानहु ।। सुनत परत नहि मनहु अघानो ।।
जब कोऊ लगत कछू समझावन ।। ऊमडत नैन घटा जनु सावन ।।
सूस घुनत हो मन पछुतावत ।। जनम अकारथ परत लखावत ।।
मुहि बियाकुल की मनहि बिकलता ।। सरबसफलता यही अफलता ।।
आह कराह न मुख हर बारा ।। यही समाज सो ज मुहि सारा ।।१०३।।

दोहरा: गईं अरुनता बदन की रही पीतता छाय ।।
रितू बसंत तन रूप पर परी सिसर रितु आय ।।१०४।।

चौपई: बार बार मुख ऊरघ ऊसासा ।। छिक दिल पर दुख सहस प्रकासा ।।
नहि बिसवास जाहि जो पाना ।। नहि गुरु लाज न कछु कुल काना ।।
अभरन सांकर कै पग बेरी ।। बसन सिंगार अरुचि सभ मेरी ।।
गहरो घाय यहि पुन मन मै ।। लखहु बनावन सभ बिगरन मै ।।
कोमल सेज लगत कंटक वत ।। समझ न परत असि यहि कागति ।।
परत सभन ते आख चुरावन ।। सखी सहेली निते सरमावन ।।
अब नहि सकति सहन झकझोरे ।। छुटत न कल कल बिन म्रित मोरे ।।
अस अदभुत कछु है यहि हाला ।। अति करि ऊठत ऐस मन ख्याला ।।१०५।।

दोहरा: अस ब्याकुलता जग लखय इक यहै अपसोस ।।
जगत प्रभाकर नहि लखय हाय दई को दास ।।१०६।।

चौपई: जौ इस ही को नाम प्रेम है।। यही प्रेम ताको जु नेम है ।।
बाज अईं हौं अस कहूर ते ।। अभिबादन मोरी सु दूर ते ।।
जे वहि प्रेमी प्रेम करत है ।। कहहु तु क्यु म कर प्रान धरत है ।।
कहा खान पुन पान जिनहु का ।। कैसंयन गुजरान तिहु का ।।
बहु दिन भइे न मै कछु खायो ।। मनहु ऊदर है अधिक अघायो ।।
ठाढी हौं पर बुडत जीव है ।। सभ रोगन की प्रेम सीव है ।।
हाय हाय मुहि खबर न कीनी ।। अस बलाय ते बरज न लीनी ।।
बैरनि हमरी तुम हु भईं री ।। बरज लईं किन हाय दईं री ।।१०७।।

दोहरा: मरजी हरि की किसू को क्या बिगरो की बीर ।।
जु कछु भईं आछी भईं लिखी जु बिधि तकदीर ।।१०८।।

चौपई: यहि सुन सुन इक सखी खिलारन ।। जानत हुती प्रेम की सारन ।।
बहु झकझोर प्रेम की खाईं ।। निसर सखिन ते तहि नियराईं ।।
कह्यो किसदके जाऊ तिहारे ।। लाख लाख बर मै बलिहारे ।।
वारी जाऊं अब ही मुख सेती ।। नईं लगन है बनी न भेती ।।
ताते इतनो है संतापा ।। रुदन बिकलता अरु परलापा ।।
सहत सहत जब परह सुभावा ।। धीर धरहि गी तज पछुतावा ।।
यहि सुन ऊमग चली अति छतीया।। हिये करत मिल असुवां रतीया।।
उमगे द्रिग दरसन अभिलासी ।। सागर लहर निदर कर रासी।।१०९।।

दोहरा : छंद बंद महि हाल दिल लगी कहन या भाय ।।
हियौ फटत सुन सठन कौ पुन पखान पंचराय ।।११०।।

स्वैया : यहि प्रेम नहि री पिसाच कोऊ चपला है किधौ घन सावन की ।।
दिल बेकल को कलकान करयो गति कौन कहौ तड़पावन की ।।
गड़े फूट वे फालक जेंते हुते छतीयां केत छेतन तावन की ।।
न रही कछु कंटक की बिनती मिनतैं करि ता मै गडावन की ।।१११।।

स्वैया : मन तौ अपनो यहि जान परी जरबोई करै तन त्यागहुं तै ।।
सुभ लैं नहि आस किसू की रही जु समाधि के दीप चराग हूं तै ।।
वहि औंघ की रात प्रभात लौ ये अखीआं जु बची पल लागहूं तै ।।
ऊतकंठिता की ऊपमा न भई हौ कहै गे कवि अनुराग हूं तै ।।११२।।

दोहरा : याबिधि करत बिलाप यहि करती काल बितीत ।।
साच प्रीति की रीति मै यहि प्रेम की रीति ।। ११३।।

कबित : खाडै की सी धार हूं पै धार पग धावनो है है न हासी खेल ब्याल बाल को खिलावनो।
गाजत गइंद कौ गहाय छरी हाथ निज हाथ बल कौन के जौ सक है छुरावनो ।।
मुख मै म्रिगिंद के जो मेल कर दाढन को मास कौं सुवाद पै सुखारौ है नखावनो।।
पावक कौ भुज भर भेटवो है प्रेम जू के यु हूं इक ऊस त्रुन की माला गल पावनो।।११४।

दोहरा : यहि प्रसंग इत छाड अब ऊत को कथत ऊमंग ।।
या अवसर पूरन भयो पंचम चपल तरंग ।।११५।।

इति श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रंथेनह नीति निरूपत प्रेम प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदिन बिरचिते राज कुवर को बिदा होय सिधारबो बरनंन नाम पंचमो तरंग ।।५।।

कबित: भ्रमत भ्रमत याहि संक्रित गहन बन भ्रमित भयो हौं नाथ हाथ जोर भाखौ मैं।।
लघुता बडाईं बडे भूधर चढाईं जो संकट बिकट घाटी कईं बार नाखी मैं।।
श्री गुरु गोबिंद सिंघ रावरे पदार बिंद मन मधुकर प्रेम प्रीति अभिलाखी मैं।।
कीजै जू सनाथ अब जानकैं अनाथ नाथ भाखं हौं तबैही लाज बिरद राखी मैं।।१।।

दोहरा: गुरु पद पदम पराग बर द्रिग अंजन कर धार ।।
प्रेम कथा बरनन करहु पुन अब राजकुमार ।। २।।

चौपई: इति प्रसंग तज बिरहा कुल की ।। सुनहु कथा ऊस प्रेमा कुलकी ।।
खोलन हार जंत्र के तारे ।। या बिधा महि अति ऊजीयारे ।।
छोर किवार बचन की निधि के ।। परम पुनीत निपुन अस बिधि के ।।
चलन हार मग देस कथा के ।। कथा पुरातन लखत अथा के ।।
अभ्यास क अभिचार खेल के ।। मग ऊपदेसिक इस हि मेल के ।।
जे अति कस्ट सहारक प्रेमी ।। कीरत यतन द्रिड़ तर अति नेमी ।।
अभिचारिक बच के तुल धारी ।। आठ दिवस ग्रहि यहि संसारी ।।
अस जग महि सुख मुख नहि देख्यौ ।। प्रेम जनित दुख सुख कर लेख्यौ ।।३।।

दोहरा: बतसा बचन सु जगत महि जो पुरान ऊद्यान ।।
सबद करन वारो करत या बिधि करत बखान ।।४।।

चौपई: सूरज प्रभाकुवर के बागते ।। चालिस दिन के परे भाग ते ।।
हुतो देस वहि कनक नगरकेको ।। दुखदायक जो राजकुवर को ।।
इक अदभुत वहि देस जगत मै ।। नहि न सुरग हूं जाहि लगत मै ।।
राजकुवर धर कर पर प्राना ।। इकाकी मग कर तपयाना ।।
कठिन कलेस पंथ के पावत ।। पग न माहि फालक छलकावत ।।
मुख ते आह कराह करत है ।। गिरत परत ऊठ पंथ परत है ।।
कितक मास इस भांत बिताइे ।। भवन देस ढिग जानिय राइे ।।
रम्य भूमि बड देस सुहावन ।। पहुचत भयो तहा मन भावन ।।५।।

दोहरा: कीर कथित लच्छन लेखे तिहि मंडल महि आन ।।
निसचै अदभुत देस वहि प्रफुलत प्रमुद प्रमान ।।६।।

चौपई: चहूं हौर बन बाग सरोवर ।। हरित घरन बहु सुमन खिरेवर ।।
फूलित फलत तरोवर सारे ।। इक अदभुत बिधि हाथ सवारे ।।

त्रि बिधि समीर बहत मन भावन ।। पसर सुगंध सुरुचि उपजावन ।।
मत्त मधुब्रित करत गुंजारा ।। खग झनकार करत मतवारा ।।
अस बहार लख जगत प्रभाकर ।। भयौ मुदित मन जदिप दुखित वर ।।
सप दिस पदि पद धरत ऊठावत ।। जातहुतो छबि बनहि लखावत।।
इेक दिवस अदभुत अस देख्यौ ।। घटिका चार दिवस रहि सेखयौ ।।
देखत कहा ऊत्र दिस माही ।। कछु अदभुत सो परत लखाही ।।७।।

दोहरा: प्रभा प्रभाकर तुलित तिह जगमगात बहताब ।।
ऊत्र दिस महि जनु चढ्यो चमक दमक महिताब ।।८।।

चौपई: सनमुख द्रिस्टि न देख सकत है।। बुधि बिआकुल है चौंध परत है।।
तिह लख मन महि करत बिचारा ।। प्रलै काल को रवि ऊजियारा ।।
निसचै प्रलय होय गो जग सब ।। मोहि मनोरथ बिफल भइे अब ।।
बड मसोस बिन दरस प्रिया के ।। बयरथ भइे मुख ग्रास बलाके ।।
तज प्राची पुन सतम छोरी ।। ऊदयोमान कस ऊत्र ओरी ।।
बढ पछातावस हस अरमाना ।। मम कारज कछु बनत न बाना ।।
अस बिकलप मन करत अपारा ।। पहुचयो जाइि निकट तिहि बारा।।
देख्यौ वहि इिक दुवार बिसाला ।। मिलयौ ऊतंग गगन की साला।।९।।

दोहरा: द्रिस्टि स्रिस्टि की द्रिस्टि मै सकल स्रिस्टि महि और ।।
परयौ न हुवै है अस कहूं सिंध पौर सुर पौर ।।१०।।

चौपई: कंचन रचित खचित मन मानक ।। लाल जटित हीरन की बानक ।।
अस बिधि अनिक जवाहर जड़े ।। मन जौहरी चकित से खड़े ।।
रवि प्रतिबिंब नगन महि पड़े।। चमकत मनहु कोटि रवि चड़े ।।
जगमगान रवि की प्रापति है।। सनमुख ससि पूरन का पति है।।
यहि गति लखी जु नगर दुवार की ।। तब निसचै मन या प्रकार की।।
निज कारज के दरवाजा पर ।। पहुचयो अबमन निसचै कर ।।
वही दुवार है यह सुभ दायक ।। मम कारज को द्वार खुलायक ।।
जिहि बखान मुख अरुन खगेसा ।। सबज बसन घर कीर बिसेसा ।।११।।

दोहरा: कहत हु तो मुहि संग सदा कनक पुरी यहि ठीक ।।
करन हार प्रभू द्वार पर कर प्रणाम तब नीक ।।१२।।

चौपई: जो प्रभू है पहुचावन वारो ।। मग भूलयो मग बावन हारो ।।
ता पग कर प्रणाम बहुबारा ।। मन अनंद आगहि पगुधारा ।।
जब वहि अवध निकट आवत है।। तपत प्रेम अति तन तावत है ।।
गिरत परत ऊठ कर धावत है ।। हरख मनहि मन नहि मावत है ।।
नगर द्वार ढिग पहुचयो जाई ।। नगन जटित क्रित देख्यो आई ।।
अति ऊतंग ता गगन दिखावत ।। द्वार प्रकार सु जगमग पावत ।।
ईटैं फटंक जटित नग सारी ।। तिन महि अनिक चित्र परकारी ।।
कंचन क्रित बहु क्रितम सुबेली ।। खग पिकि मोर रवेल चबेली ।।
सुरग द्वार वत सुंदर द्वारा ।। तेजवंत बड दमक अपारा ।।
ठौर ठौर बड बुरज बनाइे ।। अस्ट धातु कहु मेल ढलाइे ।।१३।।

दोहरा: तिन पर तो पैंच ढरही तोपकची सविधान ।।
सयाम बाद ले के दगल जोबन वंत सुजान ।।१४।।

चौपई: गुलानार पटके सिर बाधे ।। खरे सघ बद्ध सर साधे ।।
दच्छान बांम भाग तोपनके ।। कारन बड बड गढ लोपनके ।।
गरब भरे छित ऊतकछु टहलता ।। धरन गगन जिन भयकर दहलता ।।
पावन बीथी अमल द्वारा ।। त्रिबान धूर तहि स्वछ निहारा ।।
पाचसहस बर बाज सवारा ।। इेक लच्छ पैदल दलभारा ।।
गढर छाह्ति परे चुफेरा ।। जुध समाज सह्ति तिन डेरा ।।
द्वार जायत ब जगत प्रभाकर ।। दरवानन प्रति यहै प्रस्न कर ।।
याहि नगर को कवन नाम है ।। पुन का को यहि राज धाम है ।।
सुभग नच्छत्र वंत भूपाला ।। कवन यहां को जो महिपाला ।।
तिनहु लख्यो इिक अदभुत नर है ।। पूरन ससि नहि मुख सम सर है ।।१५।।

दोहरा: प्यादे पा पथ महि खरो मुख लपटत मग धूर ।।
तेज पुंज बड भागता प्रगट भाल के नूर ।।१६ ।।

चौपई: यहि लख आप प्रसंन तिन कीना ।। आप कहा ते आइे प्रवीना ।।
पद पंकज परसत कर पावन ।। करी किधर ते यहि धिर भावन ।।

राजकुवर तब बचन ऊचारे ।। प्रस्न कछू ऊत्र कछु धारे ।।
तब तिन मंहि छिक सुमति प्रवीना ।। या बिधि बोल उत्र तिन दीना ।।
महाराज या पुर को नामा ।। कहत कनक पुर बिधि अभिरामा ।।
सुनतहि कनक नगर मुख बानी ।। भयो कनक मुख बारह बानी ।।
जो मग रज कन मुख पर छाइे ।। दमक ऊठे जनु रंग छिरकाइे ।।
मन महि कह्यो सुपन यहि माईं ।। किधौ परत जाग्रत दिखराईं ।।१७।।

दोहरा: भाग प्रभावन हार सौं हुती न छिननी आस ।।
करम रेख आस नहि परी लखहुं जु यहि सुख रास ।।१८।।

चौपई: पु कछु नहि पूछो तिन पाही ।। याबिधि कहत चलयो मन माही ।।
धंन प्रभू वहि करने हारा ।। लग्यो ठिकाने यतन हमारा ।।
कटी मजल मम आज मजल ते ।। बच्यो लख्यो अब पंथ अजल ते ।।
दुवार प्रवेस कर्यौ सुख मानी ।। आगे बढयो अंग पुलकानी ।।
अदभुत लखी नगर की रचना ।। रचना नहि कहि आक्त बचना ।।
छिक म्रिजाद युत सम छिक सारा ।। रचित अलौकिक सुभग बजारा ।।
कटि प्रमाण बरहाट ऊचाईं ।। छिक ते अधिक छेक सुंदराईं ।।
मधि नहर निरमल बर नीरा ।। ठौर ठौर जल जंत्रन भीरा ।।१९।।

दोहरा: सम महलायत कनक की जटित जवाहर लाल ।।
कर रचना नहि जान पर मनहुं साँच क्रित ढाल ।। २०।।

चौपई: कहूं नहि नतहि उच निचाईं ।। छेक सूत धरमनहु बनाईं ।।
छिक को ऊत्र संनमुख दूजी ।। फगरत मनहु बराबर पूजी ।।
छित बजाज तौ ऊतहि बजाजी ।। सनमुख सराफ सराफन साजी ।।
मधि बजार चौक बड पावन ।। सुछ ठौर नीकी मन भावन ।।
छित जौहरी तौ ऊतहि जौहरी ।। हाट जवाहर सो तिन भरी ।।
कनक रजत मानक बरमुकता ।। लगे अंबार परे बर मुकता ।।
थापित भइे धनिक बनिकावलि ।। सरब तरहि की तहि बसतावलि ।।
असन पधारथ को भव माही ।। तिहि बजार जो पाय त नाही ।। २१।।

दोहरा: पूरब पच्छम के तहा लग रहे बसत अंबार ।।
उत्र दखण के धनी खरीदार बाजार ।।२२।।

चौपई: इक दिस सुघर हाट हलवाई ।। ससि समान ऊजल मिठियाई ।।
इक दिस मालिन पांत सवारी।। अनिक भांत बेचन तरकारी।।
मधुर पुकारत मेवे वाली ।। इक दिस करत दलाल दलाली ।।
सकल जगत के तहां पदारथ ।। बिकत बजार सरब सित्थारथ ।।
इक दिस नहर सुहावन नीरा ।। पुरख प्रमाण नीर गंभीरा ।।
सहज सुगंधत चलत फुहारे ।। भरे गुलाब केवरा डारे ।।
तिन कर छुटत सुगंधि जु दहकत ।। बीथी मुन बजार सभ महकता।।
चहूं ओर बहु जन की भीरा ।। अनिक तरहि कौतक ततबीरा ।।२३।।

दोहरा: बिचरन हारन के बसन मसल जात निध माहि ।।
मन संकल पहूं कठन करि लहिर ठौर बर जाहि ।। २४।।

चौपई: जगत प्रभाकर राजकुमारा ।। प्रभू माया कौतक लख सारा ।।
चलयो जात बिसमित अनबोलें । मति नर ही थिर अति थर बोले ।।
मन महि कहत धंन जगदीसा ।। जाको अंत न लहत मुनीसा ।।
कसबर देस कसी रजधानी ।। कैसो नगर बजार दुकानी ।।
कैसो बनज कैस बिवहारा ।। कैसे कैसे बड खरिदारा ।।
सभ नर कुसल अनंदित मन है।। नीति नियंत्रत धनी अघन है ।।
राज दंड आग्या अदभुत अस ।। कोऊ दुखाय सकति नहि किर कस ।।
निरखत निरखत राजकुमारा ।। चौक बजार जबहि पग धारा ।।२५।।

दोहरा: नागर सो पूछत भयो ज राजभवन की सार ।।
किहि दिस है पुन पंथ तिहि जावत कौन बजार ।।२६।।

चौपई: काहू नर तब दीयो दिखाई ।। दाहन ओर पंथ बतराई ।।
पहुच्यो जब बजार के छोरा ।। जग मगात निरखयो इक ओरा ।।
मति कछु काम करत नही जाकर ।। राजभवन बरनो अब का कर ।।
जाको नगर सुहावन ऐसो ।। राजभवन बरनो अब कैसो ।।
लखऊतंग लाजत गिर मंदर ।। तु छलगत जहि भवन पुरंदर ।।
बुरज ऊतंग चढयो जौ कोऊ ।। सकल प्रिस्टि पग तर लख सोऊ ।।
रवि मंडल की दमक जु परे ।। रवि मंडल महि चमकत खरे ।।
पै तहि राजदुवार ते आवत ।। सेवक अधिकारी लख पावत ।।२७।।

दोहरा: अस्ति बसन सब तन धरे मुख ऊदास पुन स्वास ।।
दुख्ख मद घर ते मद पिये दुखित तरंग प्रकास ।। २८।।

चौपई: याको भाल लख तही ठनको ।। इक इक चरन भयो सौ मनको ।।
सभ लोगन के मुख तन ताकत ।। रही न चरन भयो सौ मन को ।।
सभ लोगन के मुख तन ताकत ।। रही न चरन उटावन ताकत ।।
कहयो कि कुसल करै प्रभू स्वामी ।। भयो असगुन मोहि बिन कामी ।।
मन को बढी अधिक बिआकुलता ।। सनमुख अवत लखी सवारी ।।
बडो बचो की धूम सु भारी ।।
देख्यो इक महली सरदारा ।। ब्रिथा अवसथा अति मतिवारा ।।
बल्लभ लाल नाम गुनमाना ।। क्रित रणवास महि परधाना ।।
राजभवन जे तक रणवासा ।। सभ राखत इस ही की आसा ।।२६।।

दोहरा: राज महल की टहल जो सब याके आधीन ।।
धरम वंत साचो बचन क्रित महि परम प्रबीन ।। ३०।।

चौपई: पै वहि भी बिआकुल दुखियारो ।। स्याम बसन मन जू पक हारयो ।।
दरद वंद कछु मति बिसरी सी ।। बिआकुलता निज अंक लई सी ।।
ताहि निरख बढ जगत प्रभाकर ।। करयो प्रणाम सीस निज कर पर ।।
तिन आगे हरिनाम ऊचारयो ।। बहुर कुवर की ओर निहारयो ।।
चकित रहयो लख पलक न लगी ।। मति अदभुतता रस पगी ।।
ठाढो भयो रोक असवारी ।। नख सिख तिह तसवीर निहारयो ।।
कहयो धंन वहि रचने हारा ।। कस तव माया अलख अपारा ।।
नर तन महि कस कस बर मूरति ।। रची सची सी सुंदर सूरति ।।३१।।

दोहरा: देख न सकति न द्रिस्टि को बरनन सकति जबान ।।
अति आदर कर कुवर प्रति पूछत भयो निदान ।।३२।।

चौपइ: अहे सरू नौतन सुभाग के ।। राजभाग के सुभग बागके ।।
नौतन बिरवा फुलवारन के ।। देसे स्वर आग्या वारन के ।।
कवन देस ते आप पधारे ।। नहस नगर हमरे पग धारे ।।
राजकवर सुन कहयो बचन मै ।। अजू कुसल है तुमरे तन मै ।।
हम केवल या नगर निहारन ।। पुनय न्रिप के निकट सिधारन ।।
याही हित घर नगर आपनौ ।। तज्यो प्रेम महि सहत ताप नौ ।।

मन बेकल तन बयाकुल कीनो ।। चिन बेचैन प्रान दुख दीनो ।।
बडो जतन करि पहुचे आईं ।। आगे यहि कहा सुनाईं ।। ३३।।

दोहरा: हरि हित मो परम या करि यहि कलेस को हेत ।।
बरनन कीजै आप पुन कत किय बसन असेत ।।३४।।

चौपई: यहि सुन तिल लिय ऊरघ ऊसासा ।। रुदित अचैन सु बचन प्रकासा ।।
अस हे सु घर चंचल तन ज़्वाना ।। तुमहु सुन्यो हुवै कहूं बखाना ।।
जीवन मूरति राज महल की ।। प्रभा सिंह आसन चंद घवल की ।।
सोभ सुहावन सकल नगर की ।। दीप प्रभा घर दगर बगर की ।।
मालक घन बिभूति प्रभू ताकी ।। पालक लाज कान कुल ताकी ।।
सभा ससि कला राजदुलारी ।। हुती न्रिपति प्रानन ते पियारी ।।
रूप अनूप बिदति जग जाको ।। सुची सची सम तुलि तन ताको ।।
पूरब ते पच्छम लग धरनी ।। दखन ते ऊत्र लग बरनी ।।३५।।

दोहरा: देव दनुज नग नाग नर सकल भवन दसचार ।।
जाके रूप अनूप की चरचा सम संसार ।। ३६।।

चौपईं: जिती स्रिस्टि प्रभू आप बनाईं ।। हुती समन महि प्रगट बडाईं ।।
सुन सुन ताकी रूप कहानी ।। बिन देखि हु इक स्रिस्टि दिवानी ।।
यहि जो काल कुटिल जिहि चाला ।। आज दिवस लग फिरत बिसाला ।।
दिवस रैन लोचन है याके ।। बहुत बहुत सुंदर इन ताके ।। पै
पै अब तक अस राजकुमारा ।। परी न हुवै है द्रिस्टि मफारा ।।
द्रिस्टि परन तौ बहुत बात है ।। स्रवन परी हू नहि लखात है ।।
अनिक अनिक बड राजकुमारा ।। ताकि प्रेम बन महि पगधारा ।।
कछुक काल महि हुवै बयाकुल मन ।। निकल गइे तज घर बिपता बन ।।३७।।

दोहरा: रोवत बिथित बिहाल हुवै सिर पखान पर मार ।।
पंथी भइे प्रलोक के बिरह अगनित तन जाग ।।३८।।

चौपईं: सो अब पांचक चार दिवस ते ।। गइे हमारे ऊलट न विसते ।।
जागत जागत करम हमारे ।। गइे सोहि इक बार असारे ।।
इक अभिचारी दुस्ट कुचारी ।। मंत्र जंत्र की रच करि जारी ।।
राजभवन ते राजकुमारी ।। लईं ऊठाइ दुस्ट बलकारी ।।

यहि लग पहुंची जबहि कहानी ।। पूरन भई न अजहु बखानी ।।
याको पूरन काम गई कर ।। गहे दुसार बेध हिय बचसर ।।
इकहि बार स्वास भर भारी ।। ऊलट गिरयो धर सुरति बिसारी ।।
तरफराय पल अजल मीन वत ।। भयो म्रितक वत बिन संभार सत ।।३६।।

दोहरा: ह्वै निरास मुख स्वास भर याबिधि ऊठयो पुकार ।।
अति बयाकुल सुध बुधि रह्त स्रवत नैन जल धार ।।४०।।

स्वैया: कहयो हाय दई अरे हाय दई यहि कौन भई दुख की गतिया ।।
मन की मन ही मै रही कर कै इक बार हूं मै न लई बतिया ।।
अपसोस रे दोस दई को बडो अब होत बिदीरन यों छतिया ।।
बतियां तो रही इक बार निहार सिराई नही अखियां ततिया ।।४१।।

स्वैया: अरे हाय रे काल बडो अन्यायी तूं कैसि ये लौटनी लोट गयो ।।
नटि कै पल इक बटान टज्यो पलही मै कला करि कोट गयो ।।
यहि कौनसी टेव कु टेव गही दुख ते ही पै तूं कर तोट गयो ।।
बिन ओट मै आप ही पोट परयो हुतो ताहूं पै तूं करि खोट गयो ।।४२।।

स्वैया: सुख के घरहू वे हजारों यहां रह्यो हियो हमारो तो रोवनो ही ।।
वहै रोवनों हूं निहसार खरों सबै आह कराह कै खोवनों ही ।।
इस आस मै यौं ही पचयो मै म्रिगिंद कहा चहै हियो लखो वनो ही।।
बिन प्रानी प्रिया जूके प्रेम ते या मैन नेम कै दूसरों जोवनों ही ।।४३।।

स्वैया: यहि भाख तो हीय हतो धरपै सिर राख तांही मुरछाय गयो ।।
मुरछाय गयो कि लखै जो कहै तन छाड प्रलोक सिधाय गयो ।।
यहि देखते बल्लभ लाल तबै बिसमाय गयो सहमाय गयो ।।
यहि भी कोऊ वाहू के प्रेम की पीर पिरानो हुतो मन पाय गयो ।।४४।।

दोहरा: बडी बिअकली मै करी बिन समझे यहि बात ।।
तत छिन अैसी सार कहि करयो किसू की घात ।।४५।।

चौपई: ऊचित नथी यहि सार सुनावन ।। बिपति जान करि जी पर त्यापन ।।
छिरक्यो नीर गुलाब कैवरा ।। रंचन फरकताहि कोपरा ।।
बियाकुल हुवै तिहि तन तज तत काला ।। गयो दौर न्रिपती रबि हाला ।।
रुदन करत बिनती अस कीनी ।। गद गद गिरा परत नहि चीनी ।।
सभा ससिकला को दुख सोका ।। नौतन भयो आज अविलोका ।।

सुनत त्रिपति अरु लख तिहि हालहि ।। कह्यो कहा यहि कहुततकालहि ।।
तब तिन प्रवत नैन करि जोरे ।। बिनती करहु सुनहु प्रभ मोरे ।।
किसहि देस को राजकुमारा ।। मनहु चंद अव नीतन धारा ।।४६।।

दोहरा: राजसुता के रूप की कथा सुनी कहूं आन ।।
राज भाग ग्रह देस तज तजे सकल सुख प्रान ।।४७।।

चौपई: अति बिरक्त तन भेस मलीना ।। मनहु फकीर परत असचीना ।।
आज इहावहि पहुचौ आई ।। दैव योग मुहि मगहि मिलाई ।।
मुझ सन सुन अभिचारिक बानी ।। राजसुता की गवन कहानी ।।
तड़फ गयो मछली बिन नीरा ।। भर ऊसास गिर धरनि अधीरा ।।
मुरछित परयो न अजहुं संभारा ।। मै बहु भांत कीइे ऊपचारा ।।
अदभुत मोर मन हि फर गयो ।। अब तक जियत किधों मर गयो ।।
कहा बिनति यहि दास सुनावै ।। अदभुत रूप कहन नही आवै ।।४८।।

दोहरा: इती ऊमर भई दास की मोहि द्रिस्टि लग आज ।।
याबिधि को नर तन धरे परयो न को बड भाग ।। ४६ ।।

चौपई: देव दनुज को ऊजल कुमारा ।। अब लग सुन्योननैन निहारा ।।
जो ऊन दोनो की वहि मूरति ।। नैन मुकर इकटी पर सूरति ।।
छबि धुवाछ ऊडगन जुग मानो ।। प्रभा गगन महि दमकत जानो ।।
जौ इक बार आपतिह देखहु ।। राजसुता बिसरहि असलेखहु ।।
त्रिप को हुतों दुख अतिभारी ।। सुता हुती प्रानन ते पियारी ।।
सुनत हि आग्या कीन नरेसा ।। निकट हुते परधान बिसेसा ।।
सीघ्र जाहु तिहि दसा निहारहु ।। जिहि किहि बिधि मुहि आन दिखारहु ।।
यहि सुन दौर परे दस बीसा ।। ष्ह्यो जाइ तिहि पद अरु सीसा ।।५०।।

दोहरा: म्रितक तुल ही परयो हो लीनो बेग ऊठाय ।।
त्रिपति तीर ततकाल हो राख्यो आन बठाय ।।५१।।

चौपई: असताचल ऊत गयो प्रभाकर ।। अस्त भयो इत जगत प्रभाकर ।।
त्रिप निज करति हि मुख पखरायो ।। बेद मुस्क सीसा छिरकायो ।।
मुख महि बूंद केवरा पावत ।। बार बार कुल देव मनावत ।।
कीजहि क्रिपा आप भगवाना ।। हत न हो ख्रिया के अब प्राना ।।

बिबिधि सुगंध घ्रान करि राखी ।। किय ऊपचार जु कछु किहु भाखी।।
इेक महूरत रहयौ अचयना ।। मूरछा छूटी ऊघारे नयना ।।
देख निकट बहु जन की भीरा ।। ऊठ बैठ्यौ अकुलाय अधीरा ।।
देखत कहा इेक कोउू नर है ।। सिर पर फूलत राज छतर है ।।५२।।

दोहरा: कनक क्रीट माथे लसत ब्रिध अवस्था राऊ ।।
बहुत दिवस निस लखे जिन सकल समै के भाऊ ।।५३।।

चौपई: तेज पुंज बर बैठ सिंघासन।। लाजत लेखत सचीपति आसन ।।
चार सहस सेवक दरबारी ।। जरीदार कटि पट बरधारी ।।
ससत्रन संग जटित बड सूरे ।। चहूं ओर ठाढे बलपूरे ।।
कर जोरे सेवा सविधाना ।। आग्या ताकत खरे रजाना ।।
और अमीर किते प्रधान बर ।। चहूं ओर सै नप स्रिदार मर ।।
बडे बडे बलवंत बीरनर ।। गगन अंडकत फोर डरहिधर ।।
निज निज सेव सकल सविधाना ।। सोभा देखत लखत रजाना ।।
निज चुफेर बहु जनकी भीरा ।। देखी राजकवर बरबीरा ।।५४।।

दोहरा: जगतप्रभाकर ऊठत बहि राज सुतन की रीति ।।
नीति निपुन त्रिप तीर चल करी प्रणाम सप्रीति ।।५५।।

चौपई: यथा म्रिजा दम ही पन की ऊतक ।। कर सतकार मिलहि जिम निज सुता।
तिम त्रिप गति तिहि कंठ लगायौ ।। अस्वासन करि ढिग बैटायौ ।।
जबते द्रिग अलि बदन कमल पर ।। गहे त्रिपत के त्रिप सुत मुख पर ।।
घूंमत रहे लपट मधमाते ।। फिरन हि फिरे रूप रसराते ।।
बदन चंद द्रिग भइे चकोरा ।। छिक टक रहे न ऊत मुख मोरा ।।
भई अधिक छबि बदन सलौंना ।। मनहु कमल लपटे अलिछौना ।।
सकल समालख चित्र सुयाको ।। भई चित्र सम तन मन थाको ।।
मन ही मन सम करि पछतावा ।। करन हार पर दैख लगावा ।।५६।।

दोहरा: या बिधि को सुंदर बदन आवहि राजकुमार ।।
राजसुता के मिले बिन बियरथ जाय करिफार ।। ५७।।

चौपई: यहि बिधि ऊलट पलट गति तैरी ।।अति निरधंन दसा तव हेरी ।।
नयी कलेस सभा जन पायो ।। पै मन ही मन मूक दुरायो ।।

तिहि छिन को दुख राजकुवर को ।। जानहि बिधियो बिरह के सर को ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। बिरह बिबस पर परत प्रमानी ।।
वा पंथी के पछुतावन पर ।। रुदन कर्यो चह्यित अस्कन भर ।।
जो निज ठौंर पहुंच करि जाई ।। थकित पर्यो निज आस चुकाई ।।
पै तिहि अवसर राजकुमारा ।। लाज संक कर ते नहि डारा ।।
मन ही मन हि मूक पछतापा ।। करत भयो हिय अधिक बिलापा ।।५८।।

दोहरा: तब वहि न्रिप पूछत भयो देस पिता कुल नाम ।।
अति क्रिपाल हुवै धीर दै समझायो बुधिधाम ।।५९।।

चौपई: छिन को कंठ भयो गद गद अति ।। नही सकति जो ऊत्र करहि प्रति ।।
तदपि गाढ मन धीर धराई ।। नाम ठाम कुल दयो सुनाई ।।
बहुर प्रणाम चरन पर कीनो ।। राजसुता पूछव मग लीनो ।।
यहि सुन न्रिपति रुदन अति कीनो ।। प्रकत नैन ऊत्र अस दीनो ।।
अहो न खत बड राज गगन के ।। अहो मुकटि मनि बड प्रेमिन के ।।
बहुत काल ते इक कोऊ मंत्री ।। अभिचारिक बढ दुस्ट कु जंत्री ।।
रात दिवस इस यतन महाना ।। लग्यो रहत बहुत कत बहाना ।।
पै इत हुती अधिक सविधानी ।। ताकी घात न परत पछानी ।।६०।।

दोहरा: इक दिन अंतर पाय कछु हर ले गयो ऊठाय ।।
यग्य हवन जिम स्वान सठ लेत सु अंतर पाय ।।६१।।

चौपई: ता छिन तेहो निज रणवासा ।। गयो नहि लखि दुखित ऊदासा ।।
जिन ठौंर नम नोज मद जातो ।। वहि सम दुखित लखत बिलमातो ।।
रुदन बिलाप सबद चहुंओरा ।। परत पुकार महल महि घोरा ।।
खान पान तन सुरत बिसारी ।। रोवत लघु दीर घर नर नारी ।।
बिलख बदन सुन जगत प्रभाकर ।। पुन पूछयो बिधि या बिचार कर ।।
कछु खोज तिहि है भवमाही ।। कित ले गयो दुस्ट हर ताही ।।
न्रिपति कह्यो प्राची दिस ओरा ।। पांच कोस तक मग तिहि चोरा ।।
आगे अगमं ठौंर तिहि केरी ।। रची मंत्र क्रित सक्ति घनेरी ।।६२।।

दोहरा: अगम दुगम इक देखियत गगन मिलयो परकार ।।
अस्टधातु को रचित सो बुधि सकति न निहार ।।६३।।

चौपईं: चहुं ओर तिहि अगनि दिवारा ।। बल्त प्रचंड परत निहारा ।।
मिलयो गगन लग लपट कराला ।। मनहु अगनि पुट की बडफाला ।।
तहि की खबर न पुन कछु पाई।। राजसुता लै कहा बिठाई ।।
पै यहि अनुमित होत प्रमाना ।। है सम मंत्र सकति क्रित बाना ।।
यहि सुन राजसुवन हरखाईं ।। ऊठयो इस्ट कुल देव मनाईं ।।
जौ जीवन मम रची बिधाता ।। प्रभू सहायकर है बिख्यता ।।
इक छिनक महि तिहि गहि लिआवौ ।। दुस्ट अभिचारी मार ऊडावौ ।।
ना तर प्रान तजौं तहि जाईं ।। धरमराज तग लेहु छुडाईं ।।
प्रभू सहाय महि तुमहित जाउं ।। चलहुं सीघ्र आयस अब पाउं ।।
यहि लख न्रिपति लपटि तिहि गयो ।। बहुत भात समझावत भयो ।।६४।।

दोहरा: हरि के हेत क्रिपा करहु देहु मोहि जीअ दान ।।
अस बिअरथ बचय तन तेह तन करहु निज प्रान ।।६५।।

चौपईं: मन पंखी तहि करय प्रवेसा ।। जरबर पर तिह परया असेसा ।।
मारत गमन करय तिहि जाईं ।। ताकें पग फालक परजाईं ।।
अह पुन तुम इक राजदुलारा ।। मोहि भयो प्रानन ते प्यारा ।।
तब वियोगनहि सकति सहारन ।। जानबूझ निज प्रान बिदारन ।।
इक वहि सुता हुती ग्रिह मेरे ।। छली गईं दुस्टन के घेरे ।।
अब तुह पठ वहु अगनि दवारे ।। जग अपजस कस लेहु पियारे ।।
अब यहि तुम हि ऊचित सुन ताता ।। ब्रिधा अवसथा मुहि बिख्याता ।।
राज भाग सम लेहु संभारी ।। पालन करहु प्रजा सुखकारी ।।६६।।

दोहरा: धरम पुत्र मम तुम भयो करीये राज संभार ।।
सैन कोस मंत्री सजन पालहु सम परवार ।।६७।।

चौपईं: कछुक काल मुहि आऊ जु सेसा ।। भजहु ईस तज सकल कलेसा ।।
अस सुन राजकुवर भर स्वासा ।। याबिधि कीने बचन प्रकासा ।।
राजभाग पुन तखत सुहावन ।। सदा रहहु तुम प्रति मन भावन ।।
यहि जो दास देस निज तज कर ।। राज भाग परवार बरज कर ।।
लोक लाज कुल कान मिटाईं ।। मीत बंधु सेवक तजवाईं ।।
ग्रिह धन भूमि मात पित छोरा ।। प्रीतम लोकन ते मुख मोरा ।।

मग कठिनाईं अनिक ऊठाईं ।। सही अगम गिर की गहनाईं ।।
बयाकुल बिथित गहन बन डगरे ।। गाहन किय बन बेहर सगरे ।।६८।।

दोहरा: दुवार दुवार डोलत दुखित देख आगलो दुवार ।।
दुवार परे बहु ह्रिदे महि पहुच्यो तुमरे द्वार ।।६६।।

चौपईं: अब आगे यहि सुनी कहानी ।। जौ अब तक नहि किनहुं लखानी ।।
अब जौं प्रान जान ते डरऊ ।। कोटि कस्ट दुख किहि बिधि मरऊ ।।
लोगन के बच स्रवन करन को ।। प्रान धरहु नित हेतु मरन को ।।
अजब दीवाना यहि नर कोईं ।। अपनो राज भाग सभ खोईं ।।
प्रेमी नाम धराय बावरो ।। नहि जानयो तिहि दुख ताको ।।
तज घर बार बन्यो बैरागी ।। अब जब आय प्रान पर लागी ।।
तज्यो प्रेम को नाम न लीनो ।। राज बिगानो पाय प्रवीनो ।।
राजसुता हरली अभिचारी ।। यहि अलज अजहूं तन धारी ।।७०।।

दोहरा: धिक धिक याकी चातुरी धिक धिक याको प्रेम ।।
राज बिगानो करन हित तज्यो अपनो नेम ।।७१ ।।

चौपईं: याबिधि के बच बान प्रयारा ।। पुन साचे कछु नही असारा ।।
कहहु बिचार कवन बलप्राक्रमा ।। कहा प्रेम को नेम रहत समा ।।
याते ऊचित यहै प्रेमिन को ।। प्रान परै न तजहि नेमन को ।।
प्रेमिन को प्रानन पर प्रेमा ।। राखन है अनियुकत अनेमा ।।
सूरमता ते दूर बात है ।। प्रान देन ही सुख बिख्यात है ।।
यथा किसू कवि के यहि बचना ।। प्रगट करत प्रेमिन की रचना ।।
जब लग सीस न देहु बलीते ।। पग न फेर हौं प्रेम गली ते ।।
बीरमता कायरता दोऊ ।। इक पग ही को भेद रख सोऊ ।।७२।।

दोहरा: इक पग आगे पत रहै पाछे पतिजाय ।।
प्रेमिन को बलबीर को पग आगे सुखदाय ।।७३।।

चौपईं: जिन प्रभ रछा करी हमारी ।। अनिक कस्ट मग महि निरवारी ।।
जीवत आन चरन दिखरायो ।। अनिक कलेस लगन नहीं पाइे ।।
सो प्रभ करन हार बड स्वामी ।। सगल घटन को अंतरजामी ।।
यहि भी कस्ट करहि निरवारन ।। तिहि आगे कछु नहि दुरवारन ।।

गजगनि का द्रुपता पति राखी ।। जन रच्छक स्रुत सिंम्रिति साखी ।।
अनिक कस्ट प्रह्लाद बचाइे ।। हरनाकस से बिफल कराइे ।।
जौं पूरब वत करी सहाईं ।। तौ यहि बिजय होय सुख दाईं ।।
तुम निज धीर तनक द्रिढ राखो ।। बिजय सहित मुह आवत लाखो ।।७४।।

दोहरा: नातर यहि मुख जगत को ऊचित न फेर दिखाऊ ।।
यदपि न बस कछु तदपि हूं बिनआईं मरजाऊ ।। ७५।।

चौपई: प्रथम प्रेम ऊतपति के अवसर ।। मति अर प्रेम बिबाद परस्पर ।।
इिन आपस की अटक परीथी ।। मन मेरे महि खटक परीथी ।।
मति ने कही न मात पित तब ।। राजभाग ते ऊपरित ना भज ।।
प्रेम कही किस के पित माता ।। यह तन धन कछु संग न जाता ।।
राजभाग धन धुंध पसारा ।। अंतन काहूं संग सिधारा ।।
काची प्रीति तजहु धन घर की ।। प्रेम गली भिच्छा अति बर की ।।
सरब जगत के राज समाना ।। प्रेम गली भिच्छा हित जाना ।।
जो प्रापति हौ प्रभू क्रिपा ते ।। बिन मित दरस नैन पर हाते ।।७६।।

दोहरा: बहुर बिधि बोली करहु लोक लाज कुल कान ।।
देस तजन बन बन अटन परम अनरथ नखान ।।७७।।

चौपई: प्रेम कही यहि मिलन मीत को ।। दुहु जग जस दायक पुनीत को ।।
बढ सुख दायक बनहि बिचरनो ।। प्रीतम हित सिर ही पग करनो ।।
पग फालक पुन अधर त्रिखा तुर ।। कंटक सुमन गनत मन चातुर ।।
बुद्धि कही बुधि वंत जु नर हैं ।। राज बस्त्र पट दूर न कर हैं ।।
यहि दुरलभ है राज लिबासा ।। ऊचित न बियरथ तजन सुख रासा ।।
जे जग महि मति वंत सुजाना ।। नीति ऊलंघ पग धरत न माना ।।
ताते तुमहु नीति मति छोरहु ।। राजबस्त्र सौभा कहि लोरहु ।।
प्रैमि कही सुन मत बौरानी ।। प्रेम पुसाकन स्रुति पछानी ।।७८।।

दोहरा: प्रेम बस्त्र यहि अमल सद नहि धोवन की कान ।।
खिचा खिची बहु बिधि सहै फटै न रंच प्रमान ।।७९।।

चौपई: कबहु अपावन होन न पावत ।। दरजी रफू कार नहि भावत ।।
मार बाह मग चाहन याको ।। ठग पट बारह रतन हिता को ।।
नीर भिगोवन अगनि प्रजारै ।। नहि म्रित काया को पुन गारै ।।
गरते कबहु न होत निवारन ।। लह न सकति कोउ आप उतारन ।।
बनझारन करतारन परईं ।। नहि कंटक या संग उर झरईं ।।
नहि तन पर कछु भार होत है ।। ऊसन सीत रितु सम उदोत है ।।
सद नौतन यहि प्रेम बसन है ।। प्रेम पथिक के संग बसन है ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। कही प्रेम रस कर सरसानी ।। ८०।।

दोहरा: प्रेम बसन सोभा सुतन नहि त्रिलोक या तूल ।
ऊलटो सीधो होत नहि सदा सुखन को मूल ।।८१।।

चौपई: याबिधि बहु बिबाद पसचाता ।। अपजय मति की हुवै बिख्याता ।।
बजे प्रेम के बिजय निसाना ।। मीत गली को कीयो पियाना ।।
लोक लाज ते लाज लगी मन ।। कान करी कुल कान रंच कन ।।
जग अपबाद मूल ते टारियो ।। बवराई मारग पग धारयो ।।
मन गर डौर नेह की डारी ।। प्रेम हाथ करि दीन सवारी ।।
म्रिगवत भई अवसथा तबते ।। बनबन बिचर बचावन सबते ।।
पट गयो पट जु हुती कलकाना ।। लोक लाज को राज बिलाना ।।
जग ऊपिहार हि रास बिखेड़ा ।। नीत निगम को गमन निबेड़ा ।।८२।।

दोहरा: इक गगन चर कीर बर आगू कीयो प्रमान ।।
इक मंत्री सुत संग लै बन दिस कीन पियान ।। ८३।।

चौपई: देस राज पिता मानत छोरा ।।मीत बंधु सम ते मुख मोरा ।।
जे इक देसी मीत पियारे ।। नेह सबंध तोर कर न्यारे ।।
मग अवगाहन हार बिपति बन ।। भयो दुसह धर पाद घसावन ।।
पै ऊन को जो संग सुहावन ।। भयो न अंत और पहुचावन ।।
प्रथम कीर ही रह्यो निमाना ।। ताकी कही धरी नहि काना ।।
पुन मंत्री सुत म्रिग के पाछे ।। यहि कछु बसतु हुती मन भावन ।
सो इक बार।। मन अपरच की कछु परचावन ।।
सो इक बार अचक छुट गईं ।। सकल सौंज जनमम लुट गईं ।।८४।।

दोहरा: इकाकी संगि न भईं प्रीतमी ऊरध ऊसास ।।
कछु दिन बीते मंत्र की परी जन गल फास ।।८५।।

चौपईं: मुझ प्रति रुदिन कराइओ भारी ।। सतु हसाइ दै करतारी ।।
कछुक कस्ट लहि छुटौ तहाते ।। मिलयौ मित्र मग खोज वहां ते ।।
पै नसंग कहूं झूलत निसाना ।। नहन लख्यो यौ जन परमाना ।।
नहि करवान कतार करम की ।। नहन सबद भंटा कहु झिमकी ।।
नहि आगून नकीब पुराकत ।। कूटौं अस्व पिआदे पाआरत ।।
रह्यो न रंचक आन अंदेसा ।। इक मित्र को देस बिसेसा ।।
या मग हि जब प्रेम रजाना ।। अचल पाऊं द्रिड़ मन ठहराना ।।
पग फालक कंटक बन गाहन ।। पै पग अचल बिचल लख नांहन ।।८६।।

दोहरा: दुती पंथ पतियान को रचयो अपूरब भाऊ ।।
जिहल खच तुर जहान के चूक चौकरी जाऊ ।। ८७।।

चौपईं: अपसरान की संगत पाईं ।। जिन लख मुनि समाध छुट जाईं ।।
तिन महि इक ससि बदनि सियानी ।। सब हन मधि सिरोमनि रानी ।।
वहै दास पर अटकत भईं ।। रंग राग की सौज बनईं ।। जा
जोबन वंत अपसरा कामनि ।। अंग दमक लख दबकत दामनि ।।
अैसो कोन दु थनी जायो ।। जोबन वत नर नहि बिरमायो ।।
प्रभू क्रिपा बल जा पर होईं ।। ताहि ऊलंघ सकति नर सोईं ।।
मोपर क्रिपा करी भगवाना ।। धरम रंच भर भयो न हाना ।।
ध्यान मीत को टरयो न मन ते ।। बंदा भयो साबत निज पन ते ।।८८।।

दोहरा: ब्रिधा बाल की बात पर कछु न कीनो ध्यान ।।
साबत पग पथ प्रेम के कीनो तुरत पयान ।।८९।।

चौपईं: अनिक कस्ट मग माहि सहायरे ।। प्रमक्रिपात अब लगे किनारे ।।
अब यहि समै चूक रह जाना ।। जानबूझ कर कूप पराना ।।
किसू पंथ महि तुलत न यहि पन।। समझ बूझ दे सहु अपने मन ।।
प्रेम पंथ की यही कहानी ।। सीस परे को सेल पछानी ।।
अस समझ हि मुझ से मति हीना ।। बहुत कठिन है अब मुहि जीना ।।
ऊचित न जीवन नीव मूर बिन ।। धिक हजार लालच यहि जीवन ।।
मरन मोहि मनजूर ऊचित है ।। ता बिन जीवन कबहु रुचित है।।
या पर स्री गुरु बचन प्रमाना ।। कह्यो सा स्रुति सिम्रित पुराना ।।९०।।

यथा सोरठा:

जिस प्यारे सिऊ नेहु तिस आगे मर चलीहे ॥
ध्रिग्र जीवण संसारता के पाछे जीवणा ॥६१॥

चौपई: यहि चरचा की सार सु सारी ॥ राज भवन महि किनहु उचारी ॥
अदभुत इक है राजकुमारा ॥ जगत प्रभाकर जगत उजारा ॥
सभा ससिकला को सरूप सुन ॥ प्रेम बिबस तज राज भार गुन ॥
बहु दिन गिरबन गाह कस्ट कर ॥ पहुच्यो आज आय न्रिप ढिगबर ॥
आगे यहि सु घलहि दुखदाई ॥ रुदन करत निज देह भुलाई ॥
ककु सुघ लै अब भयो तयारा ॥ जरहुं जाय तिहि आग दवारा ॥
बहुर बरजत न्रिप सहत प्रधाना ॥ नहि मानत करि प्रेम बिकाना ॥
न्रिपतिहि निरख नैन भर रोवत ॥ सभा ससकला तुल तिहि जोवत ॥८२॥

सोरठा: कहत निहार नहार मुख दु चंद है चंदते ॥
मनहु रचयो करतार सभा ससिकला जोट कहु ॥ ६३॥

चौपई: यहि सुन चकित चित पटरानी॥ दौर दुवार पर आ निकटानी॥
दौर परे महली तिह बारा ॥ न्रिपति निकट जा कीन सु सारा ॥
राजकवर निरखन हित रानी ॥ राज पौर तग आ निकटानी ॥
क्रिपा करहु संग चलहु लिवाई ॥ सभ रणवास रह्यो उमगाई ॥
यहि सुन न्रिपति हाथ गहि ताकहु ॥ गयो महल महि दिखरावन कहु ॥
निरखत बिलख बदन रणवासा ॥ रुदन करत लहि उरघ उसासा ॥
लख लख बार करत कुरबानी ॥ बिरह बिबस घन घाम भुलानी ॥
सभा ससकला की यहि जोरी ॥ रची हुती बिघना कर चोरी ॥६४॥

दोहरा: रोवत पछतावत कोउ मात गिरी घर झूम ॥
लपट गरे मूरछित कोउ परी महल मै घूम ॥६५॥

चौपई: बहुत निहोर न्रिपति तिह बारी ॥ प्रात चलन हित करी त्यारी ॥
निस को तहीमहल महि राख्यो ॥ जीवत मूर मनहु अभिलाख्यो ॥
इक जाम रजनी जब आई ॥ आन थाल की सफा बिछाई ॥
जगत प्रभाकर खानुयानी ॥ तिह हि संग जहि लगन लगानी ॥
बहुत कह रहे मानत नाही ॥ बल्लभ लाल भयो तब पाही ॥

बहुत भांत कर तिन समझायो ।। ऊचित न अंन अनादर आयो ।।
औपुन सभ रणवासा न्रिपति सहि ।। कोऊ अंन जल करहि नही यहि।।
ताते तुम कछु निज मुख पावहु ।। सकल स्रिस्टि को भलो मनावहु ।।
करनहार पर राख भरोसा ।। वहि सम करन सकति निरदोसा ।।
प्रभू चाहै सभ काज सरहगे ।। सकल मनोरथ सफल करहगे ।। ९६।।

दोहरा: राजकवर तब धीर धर सबके हित मन जान ।।
अनचाहत हूं करयो तहि कछुक खान अरु पान ।। ९७।।

चौपई: बहुर नीद को करे बहाना ।। परयो पलंघ पर जा पट ताना ।।
पै प्रेमिन के नैन निंदारे ।। हों हित गिन कौंन नम तारे ।।
यथा किसू कवि के यहि बयना ।। प्रेम निसा प्रति कथित अचयना ।।
खुले दुवार द्रिग के दिनराता ।। तुव सुमरन महि रहि बिख्याता ।।
ईक पलक कहूं पलक लगी जब ।। रोकन वा सोकन पर है अब ।।
परें परें पुन पलंघ पीठ पर ।। करत प्रलाप सुप्रिय सुमर कर ।।
हिय ते ऊछरत ऊरध ऊसासा ।। या प्रकार बच करत प्रकासा ।।
तो बिन है बयरथ मुहि जीवन ।। जीवन किधों घूंट बिख पीवन ।।९८।।

दोहरा: छितो न मुझ ते छपहु तुम असन होय पटतान ।।
अति बयाकुल हुवै जाहि छप अबहि तनहि तज प्रान ।।९९।।

चौपई: पुन जब लेत करवटैं आकुल ।। दुखित होत मन तन अतिबयाकुल ।।
तब धर धीर अधिक मन रोकी ।। याबिधि करत प्रलाप बिलोकी ।।
अधिक धीर प्रेमी जु प्रगट करि ।। बिन कराह ही बचन असर करि ।।
अहो समय के रंग अनेका ।। लेख हमहु पै संसय ईका ।।
निस बियोग की प्रगट प्रभाता ।। होत लखी नहि जग बिखयाता ।।
री बुलबुल तू करहि सराबर ।। मम कराह की आह बराबर ।।
बौरी कुमति खेच री सग तूं ।। बुधि अपनी सिख जाहि अलग तूं ।।
अहो सदा ही जरत रहयों हों ।। जबते छिनको संग गहयो हों ।।१००।।

दोहरा: अगनित ही ते किधों दिल पुन ह्रिदै हमार ।।
प्रगट भहे है तपत अति अदभुत गति करतार ।।१०१।।

चौपई: मन पंखी मम तल मिलात सद ।। प्रेम पिंजरा महि मरमत हद ।।
न्यो पंख छद होत जु पैदा ।। देत ऊखेर निबेर ऊमैदा ।।
याबिधि करत प्रलाप बिलापा ।। आह कराह अनिक पछतापा ।।
न्यो मछ्कर प्रात काल तब ।। ऊठत हि नित क्रिया कीनी सब ।।
मजन करि सुच कीन सरीरा ।। संधयो पासन कर मन धीरा ।।
इिस्ट देव बर ध्यान लगायो ।। गज आनन कुल देव मनायो ।।
छत्री धरम भगवती सेवी ।। कट सोक सी भगवती देवी ।।
मरन मांडरन कीन तयारी ।। हार जीत करि लख गिरधारी ।।१०३।।

दोहरा: निस को यहि सुधि नगर महि फैल परि सब धाम ।।
प्रात राजसुत चढै गो अभिचारिक संग्राम ।।१०३।।

चौपई: इक जाम जब निसा निहारी।। असत्र सस्त्र गहि कीन तयारी ।।
सकल सैन सैन सरदारा ।। भइे इकठे राज दुवारा ।।
हित त्रिप हुवै सवर चल आयो ।। राजकवर लै संग सिधायो ।।
कौतुक हित जन जुरे अपारा ।। भयो कुलाहल नगर मझारा ।।
राजकवर मुख नूर बहाली ।। दमकत मनहु तूर गिरि लाली ।।
सभ लोगन लोचन ललचाने ।। दरसन पाय अधिक त्रिप ताने ।।
नैन मूद अंचल पसरावै ।। त्रिप सहाय हित देव मनावैं ।।
क्रिपा करहु प्रभ वे नंद नंदन ।। क्रिसन क्रिपा अघ औंघ निकंदन ।।
राजकुमार जीत घर आवै ।। राजसुता संग लेत सुहावै ।।
होहि हमार मनोरथ जी के ।। घूंटहि लोचन घूंट अमीके ।।१०४।।

दोहरा: याबिधि करत पयान सब पहुचे ताही ठौर ।।
गमना गमकी जहा तग हुती सीम तिहि पौर ।।१०५।।

चौपई: राजकवर बहुबिनति कराई ।। रोकयो त्रिपति घेर अगवाई ।।
अब आगे अति जाहु सियाने ।। यहि है सकति मंत्र हम जाने ।।
उठहि ऊपद्रव सकल सहारौ ।। आप मरौं कियाहि अब मारौं ।।
तुम ग्रिह जाहु करहु अवसेरी ।। अब आवत हौं हम बिन देरी ।।
जौ प्रभु क्रिपा चरन बरषाऊ ।। इक पहार गगन ऊडवाऊ ।।
हमरी चिंतनै कनहि करीये ।। मनमहि गाढ धीर अधि धरीयें ।।

वह प्रभ करनहार जग केरे ।। रोम रोम रक्षक है मेरो ।।
अस कहि सब हन धीर धरायो ।। न्रिपति समाज समेत फिरवायो।।१०६।।

दोहरा: जान अवसक फिरे सम मन बयाकुल करलात ।।
परम दुखित लोचन प्रकत अधिक मनहि पछतात ।।१०७।।

चौपई: न्रिपति हि ठौरू पौर निज ताईं ।। हरकारिन के पुंज पठाईं ।।
छिन छिन खबर देहु मुहि बीरा ।। जौ जौ कौतुक लखहु सधीरा ।।
हित यहि रह्यो इकलो ठाढो ।। हरि सहाय धीरज धर गाढो ।।
वहि इकाकी जो सद संगी ।। वही संग नहि आन प्रसंगी ।।
इक प्रेम प्यारी को पायक ।। वहै सहायक पुन वहि नायक ।।
यहि बच बढत बढयो कछु आगे ।। बिथित बियोग प्रेम रस पागे ।।
अहो बिरह तुझ पर कुबीना ।। तोहि मित्रता हाथ बिकाना ।।
तैन सही इकाकी मेरी ।। संगी रह्यो छाड छिन देरी ।।१०८।।

दोहरा: सनमुख पावक दुरग लग गगन मिलयो जिहि सीस ।।
लपट झपट बिकराल अति बिन अंगारन हि दीस ।।१०६।।

चौपई: राजकवर तिहि तीर सुजाई ।। भली भांत करि द्रिस्टि लखाई ।।
इक कुरंग लख्यो तहि निसरत ।। कूदत केल करत कछु बिचरत ।।
पुन ताही महि जात समाई ।। छिक दो बार यहै लख पाई ।।
तब मन महि अस किय अनुमाना ।। यहि सहि पाल सुता को बाना ।।
वहि जो जरीर सक अति खाई ।। कोउ दुस्ट तिन दीन पठाई ।।
मो सन बैर अधिक तिह बाढो ।। मोहि प्रिया के मसतक काढो ।।
तिन ही राजसुता हर वाई ।। मंत्र सकति कला दिखाई ।।
प्रभू बल याको पकर पछारों ।। यहि सम दुरग छार कर डारो ।।११०।।

दोहरा: अस कह लीनी बगल ते तखती वहै निकार ।।
ब्रिघ पुरख दीनी हुती पूरब कही ऊचार ।।१११।।

चौपई: ता महि निरख परयो यहि बचना ।। यहि म्रिग बाल सुनहु म्रिग नयना ।।
है यहि मंत्र सकति को ढंगा ।। जान लीजीहे बढो कुरंगा ।।
यहि पढ मंत्र बान करि मंत्रित ।। स्रवन प्रमान अै चकरि यंत्रित ।।
ताक ह्रिदय निरसंक प्रहारहु ।।प्रथम चोट जौं यहि म्रिग मारहु ।।

तब यहि टूट परहि सम कौटा।। बिजय पाय हौं प्रथम हि चौटा ।।
जौं कदाच चुक जाहु छिहाते ।। तनकी छार ऊडै लख ताते ।।
भसम होय तन पतो न पावै ।। मूठ छार बिन हाथ न आवै ।।
यहि लख कर प्रणाम कस बाँधी ।। मरण जीवण की संका नाधी ।। ११२।।

दोहरा: म्रिग मारौं नीक्न सफल ना तर तबहु प्राना ।।
दुहूं हाथ मोद क निरख हरख तगही कमान ।। ११३।।

चौपई: बान चढाय सिस्त द्रिढ बाँधी ।। नैन प्रान मन मूठ सुसाधी ।।
मुखते मंत्र जपत करि ध्यानी ।। ऊत वहि काल चक्र कर प्रेरित ।।
।। सनमुख अयौं यमहि करि घेरित ।।
छित यहि निपनहु तो घन गुनमाहि ।। तज्यौ तीर तक ह्यिो निघन महि।।
ऊत ताको आपहुच्यौ काला ।। भयौ दुसार तीर ततकाला ।।
वाह वाह धुनि दस दिस छाई ।। सद साबास गुन हि निपुनाई ।।
परयो कुरंग कुरंग धरनि पर ।। भयौ सबद बिकराल गगन पर ।।
कोटि कटकमान हु जुग आइे ।। मारहु धरहु जान नहि पाइे ।।
दस दिस अंधकार हुवै गयो ।। प्रलै काल जनु आ प्रगटयो ।।
धरन गगन मिल दिगज डोले ।। कंपत धरन गिरहुं थरथोले ।।११४।।

दोहरा: राजकवर धर धीर मन मुख ते मंत्र उचार ।।
निकट हुते जन प्रान अब तन ते चलत निसार ।।११५।।

चौपई: घटिकाइेक रह्यो यहि हाला ।। पुन तम मिटक भयो ऊजाला ।।
रवि की रसमि तेज प्रगटाई ।। दसहु दिसा तब परत लखाई ।।
इेकस थंडल लख्यो रेत कहु ।। इेक मित्र कतहि परयो निहारयो ।।
इेकस थंडल लख्यो रेत कहु ।। जहि आस न तहि हुतो प्रेत कहु ।।
इेक मित्र कतहि परयो निहारयो ।। माथे तिलक सिंदूर सवारयो ।।
पीत दसन अधरन ते बाहर ।। मुख दुरगंध होत तिहि जाहर ।।
दगध अंग प्रत्यंग निहारे ।। अंग भंग सम लगे प्रहारे ।। व
वहि अभिचारी दुस्ट कुचारी ।। जिन दीनी यहि कस्ट अपारी ।। ११६।।

दोहरा: , लटैं लटकती सीस पर गर असथिन की माल ।।
नर मुंडन की आल कर महि ली इेक पाल ।।११७।।

चौपई: स्याह रंग झस्यो झरपाक्क ।। मुकतक छुतननगन लखाक्क ।।
लग्यो ह्रिदय महि बान कराला ।।छेद मरम भयो नट साला ।।
ता प्रहार कर प्रान तजायो ।। दुस्टातम रौरुव निकटायो ।।
यहि लख राजकवर सुखमानी ।। प्रभ ऊसतति मुख ते प्रगटानी ।।
बार बार प्रभ चरन मनाइे ।। पुन आगे कछु चरन ऊठाइे ।।
यहि लख दौर परे हरकारे ।। न्रिपति तीर जा बचन ऊचारे ।।
महाराज राजान के राई ।। प्रथम बिजय की लेहु बधाई ।।
नर मत मानहु राजकुमारा ।। यहि कोऊ देव धरे अवतारा ।।
जितो अगनि को पुंज प्रबल तो ।। मन पंछी को पर जहि जलतो ।।
इेक बान अस कीयो प्रहारा ।। नहिलहि कोटन अगनि दवारा ।।११८।।

दोहरा: लई अगारी खोल निज बढयो अगारी आप ।।
यहि सुन न्रिप आनंद मन जान्यो कवर प्रताप ।।११९।।

चौपई: तब निसचय मन महि ठहराई ।। आवहि सच सु बिजय कराई ।।
है बड भट बल गुन निधि पूरन ।। बिजय पाय है निसचय तूरन ।।
तिन प्रति दीनो दान अपारा ।। बहुर पठे ल्यावहु सभ सारा ।।
होनहार बिरवा जो होवहि ।। चिकने दल पल्लव तिन जोवहि ।।
राजकवर तब गयो अगारी ।। सून धरनि लंघति करि सारी ।।
इेक दुरग देखियो तहि आखी ।। जहि न्रिप सुता बंद करि राखी ।।
तहि अदभुत यहि खेल निहार्यो ।। जो मन करि नहि जात बिचार्यो ।।
चार पांच गज कोट ऊचाई ।। पै अध्रुव ठहरत नहि राई ।।१२०।।

दोहरा: यथा सुचक्र कु काल को घुमत अखंड सुभाय ।।
तथा सुकल घूमत दुरग द्रिस्ट न सकति लगाय ।।१२१।।

चौपई: पुतली द्रिगन फुरत अस चंचल ।। अस वहि दुरग भ्रमंत भ्रमंचल ।।
अति ऊतंग लख पाग गिरहि धर ।। नहि मति तहि कछु काज सकति कर ।।
तह ठाडो जा राजकुमारा ।। मंत्र पढत अभिचार बिदारा ।।
तब वहि घूमन ते रहि गयो ।। तेज प्रताप अचल थिर भयो ।।
आछी बिधि तब पर्यो लखाई ।। कंचन कोट नगन जट ताई ।।
जगमगात सूरज मिल जोती ।। जटित अनिकनग मानक मोती ।।

अति बिचित्र हैं चारदुवारे ।। अगनत बुरज न जात बिचारे ।।
मन संकलप की रचित कमंदा ।। पहुच सकति नहि अधक बुलंदा ।।१२२।।

दोहरा: दुवार बंद चहु ओर ते खग को गमन महाल ।।
लख्यो बंगला इक तहि जहि ठाढो न्रिप बाल ।।१२३।।

चौपई: भई अवाज तहा ते अैसी ।। अति भय दायक प्रान हरैसी ।।
अहे काल प्रेरित मतिवारे ।। नहि राखत कर प्रान प्यारे ।।
कत निज म्रित को छोर जगावत ।। कत जीवन तुम को नहि भावत ।।
सुंदर लखम सुभीजत आनन ।। दया ऊपज मुह परत पछानन ।।
सीघ्र भाग इत ते अब जा रे ।। कत अजान निज प्रान प्रहारे ।।
प्रथम जु तै कछु कीन बिगारा ।। केवल तव मुख कमल निहारा ।।
बखसी भूल तोहि अबताई ।। जाहु सीघ्र अब कहूं पराई ।।
नातर असतर पान्य दुखित करि ।। कर डारहु सब बंद जुदे धर ।।१२४।।

दोहरा: गगन निवासी हाल तव निरखरु वहि पछुताय ।।
भूमि निवासिन को पता हाड मास नहि पाय ।।१२५।।

चौपई: तव बियोग न्रिप सह न सकैगो ।। मरहि तुरत तव हालत कैगो ।।
याबन घोर भियानक की घर ।। अरुन रंग हुवै है स्रो नितकर ।।
जीव कला तव प्रलै प्रयंता ।। नींद म्रितु नहि सोहि अचिंता ।।
यहि सुन राजकवर मुसकाई ।। कह्यो मात की गार सुनाई ।।
अरे दुस्ट तू किआ हम ऊपर ।। सता बखस है अब या भू पर ।।
कह लग बर रू रैहै बक बादा ।। बच अलीक तज निज मिरजादा ।।
प्रभू चाहै तु अबहि तुहि मारहु ।। प्रथम दुस्ट के निकट बिठारहु ।।
यहि सुन वहि करि कोप बिसाला ।। बैंगले ते सिर प्रगट निकाला ।।१२६।।

दोहरा: कछु इक दाने माख के काले दाने संग ।।
लीहे हाथ मो दुस्ट जब भयो और ही रंग ।।१२७।।

चौपई: लग्यो अकास भ्रमन तिहि अवसर ।। कांपत भई धर निस सम थरहर ।।
कछु सरखप पढ संग मिलाई ।। कछु कर पास बीज पुनराई ।।
कारू देस कम ख्या देवी ।। लो नाच मियारी कहि सेवी ।।
अस कछु पढते गगन दिसाको ।। दई ऊडाय मंत्र बल जाको ।।

तब ही घोर उठे घनकारे ।। प्रल्य करन भय दायक सारे ।।
अंध धुंध दस दिस पर आईं ।। ऊमड भयंकर घटा सु छाईं ।।
बरखन लगे पखान अपारा ।। परत असंख दीपत अंगियारा ।।
यहि निरभय प्रभू बल त्रिपताता ।। मंत्र पढत आगे बढजाता ।।
आवत निकट अंगार पखाना ।। जल हुवै बहत न परत पखाना ।।
मूठ छार सम होत पहारा ।। अस वहि मंत्र नाम करतारा ।।१२८।।

दोहरा: वहि अभिचारी हीन हुवै दूसर रचित ऊपाय ।।
इत तखती इन काढ कर लीनी देख बनाय ।।१२६ ।।

चौपई: ऊस महि यहि पाईं तिहि अवसर ।। किसहि भात मन कौ कठोर कर ।।
यहि तखती इस कोट पीठ पर ।। देहु लगाय सीघ्र पग बलकर ।।
पुन देखहु कुदरत के रंगा ।। कस कछु रचयौ जात इस ढंगा ।।
राजकवर करि बल पुरखारथ ।। पुन निज बिधि करन हित स्वारथ ।।
तखती जाय कोट संग लाईं ।। द्रिढ करि धरी संक नहि राईं ।।
लगत सार तखती वहि कोटा ।। फिरयौ चक्रवत अधिक अटोटा ।।
पुन ता महि भयौ सबद कराला ।। सहस तोप जन छुटी बिसाला ।।
थरहर कांप ऊठी धर सारी ।। धवल हियौ कंपत भयभारी ।।१३०।।

दोहरा: रवि दहलाय कांपत छपयौ जगतबदल गौ रंग ।।
धूर पूर बन सम भयौ अैसो रचयौ कुढंग ।। १३१।।

चौपई: हर दरंग वहि दुस्ट भयौ तब ।। सरद भयौ थहराय अंग सब ।।
कांप ऊठे सगरे गिर कानन । अंधकार दह दिस प्रगटानन ।।
रुदन पुकार कूर धुनि घोरा ।। सबद भयंकर अति चहु ओरा ।।
घटि का चार रहयौ यह हाला ।। पुन पाछे तहि भयौ ऊजाला ।।
राजकवर तब मन सुख पायौ ।। करनहार प्रभू पच्छ लखायौ ।।
पुन देखयौ तहि द्रिस्टि पसारी ।। नहि तहि दुरग न महल अटारी ।।
इक बालू को ढेर महाना ।। चहूं ओर गाडे तहि काना ।।
काचो सूत नील कछु पीत ही ।। लपट राख करि परम अनीतहि ।।१३२।।

दोहरा: तिन के मधि वहि सरद ससि पूरन मुख अवदात ।।
सची तुलित छिक जो तिही लहलहात दमकात ।।१३३।।

चौपई: बयाकुल दुचित बिथित बिसमादी ।। नहि कोऊ निकट अली सखि आदी।।
चहुं दिस तकत चकित म्रिग बाली ।। दुस क्रित फंदी मंत्र की जाली ।।
याके तौं मन तन अरु नैन महि ।। बसत रोम रोम म बैनन महि ।।
देख तही नख सिख पहिचानी ।। जीवन मूर आपनी जानी ।।
ताहि समय को अनंद ऊमाहू ।। कवन कहि सकय बच बलकाहूहा।।
ता बन सहि परि राजकुमारा ।।प्रेम बिबस हुवै तन न संभारा ।।
सन सनाय हिय प्रेम ऊमग करि ।। मुख द्रिग दुवार चल्यौ जीय जग करि।।
प्यारी पुन प्रथ महि सु अकेली।। लखी न ऊमग परत कछु फेली ।।१३४।।

दोहरा: बहु धीरज मन घर रहयो चल्यो नहेक ऊपाय ।।
थर थराय करि दौर करि लख लख बर बल जाय ।।१३५।।

चौपई: गिरद गिरद फिरनो मन धार्यो।। प्रेम मगन पग जान संभार्यो ।।
छिचल बिचल पग परत निहार्यो ।। पुन निज ऊपर परत निहार्यो ।।
लज्जित हुवै करि राजदुलारी ।। सिर निवाछि अस कीन ऊचारी ।।
संभलो जू कछु लाज बिचारो ।। नीति बाग करि ते मत डारो ।।
अस बिन डर निकटहि चल आवन ।। मतिवारिन की रीति दिखावन।।
ऊचित नही तज करि मिरजादा ।। पग धरहौं लखीहे निज आदा ।।
यहि बच कहे जु नैन मिलाई ।। यहि तो बिछ्यो हुतो प्रथमाई ।।
अब दुसा रही मइ्ं अजाता ।। प्रेम खरग प्रथम हि किय घाता ।।१३६।।

दोहरा: अब नवीन ही प्रेम अस घायल कीन बनाय ।।
गद गद बच हुवै प्रेम मद याबिधि कह्यो सुनाय ।।१३७।।

स्वैया: अब जाको न तोखन ताब है जू औं खराब है रोय कराहने मै ।।
वहि तेरी गली न रहे तु रहे कहा पावक सो जग दाहने मै ।।
सहजें चलि जीव कला तौं अहो मिली प्यारे सौं प्रेमनि वाहने मै।।
हम बेग चलाक हुते रहे बीच ही पाहुते मै न सराहुने मै ।।१३८।।

स्वैया : करि दीन बयालुता हाल हमारे पै दीठ करी तथ मान रहे ।।
यहि ठौर है केवल रोदन की चुक पीछे कहूं कारबान रहे ।।
पुन स्रायत वार गिरायो घर पै न संभार कछू अवसान रहे ।।
यहि प्रेम की बान निदान रहे मूरछा न रहे कहूं प्रान रहे ।।१३९।।

स्वैया : यहि प्रेम की पंथ छपी न कछू कथवे की छिसे परवाय नही ।।
छिस की जु कसीस असीस यही बडे छोटे पै रंच दुराय नही ।।
कई कोटि लपेट मैले कपटी छिन मारे पै दाय अघाय नही ।।
पछु ताय नही घिनियाय नही घिघियाये हूं छूटन पाय नही ।।१४०।।

स्वैया : यहि राजदुलारी निहारी दसा हुवे बिचारी लगी जो बिचारवे मै ।।
लख बयाकुलता अकुलाय गई मंन लायो जबे निरधारवे मै ।।
निसचे यहि प्रेमी हमारी कोउ सचियार है प्रान प्रहारवे मै ।।
जुउ आग दवारे मै प्रान प्रहेल बठयो न डरयो मरमारवे मै ।।१४१।।

स्वैया : बहु दयोस बिते बिन हेकल तान हमारी मयो कोउ भाकसी मै ।।
सुख के तो सखा पन लाख लखे पै सखा सो बनै सखा ना कसी मै ।।
यहि सोचते ही स्यि प्रेम जू की परछाही परी छकाछक सी मै ।।
कुल कान मै करती ही रही मनतहाथा रुल्यो रनही तीफसीनेमै ।।१४२।।

स्वैया : तब राजकुमार को सीस सने सरकाय लै जंघ पै धार रही ।।
मुख धूर सनी सम धूस रहो निज अंचल सो सने भार रही ।।
मुरछा न लखी कबहूं दुखिया लख आंखन ते जलधार बही ।।
मग खेद है मेद लखे बिन ही मनो नैन के नीर पखार रही ।।१४३।।

स्वैया : मुख पै छिनके जू प्रवाह बहयो द्रिग नीर सुधा हू ते सौगुनो सो ।।
तन प्यारी के सौधें सुगंध मिल्यो सो संजीवनी हूं ते अठो गुनो सो ।।
न गुलाब न केवरो काम परयो छुटगी मुरछा न तिनो गुनो सो ।।
द्रिग खोल पिखे निज भाग भले परयो चौंक कै चौंपन चौगुनो सो ।।१४४।।

स्वैया : निज सीस बिसेबीस धूर मै जो परयो मीत के अंक निसंक लख्यो ।।
सुख पारस पाइ न रंक लख्यो न पुरंद रहूं के प्रयंक लख्यो ।।
सुत पंकज लोक लौ पंक लख्यो पदमोस हूं या पै कलंक लख्यो ।।
कछु औरहूं पाय पसारे तबै लिज राजसुता मन संक लख्यो ।।१४५।।

स्वैया : छिन की छितरान औ नैन मिलान की जान कै घात सोजान गई ।।
निज जानू सने सरकाय परे हट बैठी बिथा पहिचान गई ।।
छिनतौ अधखोल कनै खनसौ लख लीनी किठान अठान गई ।।
धिक जागवे को मूरछा छिन पै लख चेतनता कुरबान गई ।।१४७।।

स्वैया ?: हम चौंकते ही वहि चौंक परी अब चौंकसी ते चौकसाई भई ।।
हम सीस बटे मरछाई लई हुती हाय हमारी हिराई गई ।।
अब बेचतौ हौ मूरछा पलटे सुधि कोटि जनंम ऊठाई दई ।।
द्रिग मूंद कह्यो मूरछाही परौ हौ जू क्यो तुम इती ढिठाई लई ।।१४७।।

स्वैया : सुन राजकुमार कह्यो वाह जू यहि रीभ बी सीभ हमारी बडी ।।
हम जान दयावनो कीनी दया कछु सेवा लखी ही तुमारी बडी।।
तुम यौ छितरान सुनान लगे मन क्या समभी कछु दारी बडी ।।
चलो काम करो निज मारग हो भई नेकी पैये गुनागारी बडी।। १४८।।

स्वैया : सुन राजकुमार कही तिन को अजू इती क्यौ आप रुसाई गही ।।
हमो आवनो होत हा आन चुके अब जावने को कोउ जाई नही ।।
तन राख ऊठे तौ ऊठे छित ते ऊठ जान की तौगन नाई नही ।।
पग खोज लौहौं तौ परयो जिहि टा फिरि ठौर तौ रंच तजाई नही।।१४६।।

स्वैया : पर मै तुम को निज प्रेमी नही गन हौ अब प्रेम के पंथ नमै ।।
पुन प्रेमिन की निज पांत मै नाम लिखौ नही रावरो ग्रंथन मै ।।
यहि प्रेम की पंथ अनोखी बडी नही मान गिलान की पंथन मै ।।
धन जोबन रूप गुमान ते जू यहि पार है प्रेम की संथन मै ।।१५०।।

स्वैया : सुन राजदुलारी कही सतराय भलै मन तौ सरसाय लौंजू ।।
समयो फिर हाथ चरै न चरै रस नारस बात न लाय लौंजू ।।
रस प्रेम कथा मेरी जाने बला यहि और सौं जाय सुनाय लौंजू ।।
येर मूजे बुभार तै राखो संभार बको मत जी भ हटाय लौंजू ।।१५१।।

स्वैया : यहि हाल वही भयो मान न मान पैमै तुमरौ महिमान हौंजू ।।
निज सूरत तौं अविलोकीहे आदि अलौकिक प्रेम की खान हौंजू ।।
न सुन्यौ तुमसो मुख चाहीये गो मिसरी की जुलाय क खान कौंजू।।
मुख छोटे ते बात बडी करनी समखान है अंत निदान कौंजू ।।१५२।।

स्वैया : तव राजकुमार खिसानो भयो निहुराय कै नार कही बतिया।।
अब जौ निज हाल सुनाय हौं जू सुन हुवै हैं बिदीरन छतिया ।।
बहु काल भयो मुहि बयाकुल डोल कटौं हीय प्रेम ही की कतियां।।
अव चीर सरीर लखो निज हाथ प्रवै गीन ही रत की रतिया ।। १५३।।
स्वैया : निज देस और राज समाज पिता पुन बंधु तजें बिल पावत हौ ।।
गिर कानन बेहर झारन मै हुवै बिहाल फिरयौं दुख पावत हौ ।।
दिन चैन न रैन मैं नीद परी तव प्रेम की आग जरावत हौ ।।
द्रिग नीर बिना नहि नीर पियो हिय टूक ही टूक से खावत हौ ।।१५४।।
स्वैया : अब रूप कहा लौं संभार रखों जू न्याव की बात बिचार कहो ।।
जह प्रेम की छावनी आन छई तहा और सभै हट तार कहो ।।
अब आप तौ रंच कहाल लख्यो दिन चार तज्यो घर बार लहौ ।।
मुख आप को लायक है मिसरी. मिसरी सी ही बातैं ऊचार कहो ।।१५५।।
स्वैया : छिक रोवतो हुवै हसतो छिक हुवै बह भेद दुहुंन की सूरति मै ।।
हम तोरे बियोग मै जोग लयो तज राज औ भोग बिसूरति मै ।।
अब पूर मनोरथ है हम तौ छिक द्रिष्टि परी तव मूरति मैं ।।
अब आप निबाह करें न करें हम प्रेम करयो निज पूरति मै ।।१५६।।
स्वैया : यहि राजसुता सुन बात पते की खिसानी भई पुन जान गई ।।
यहि राज दुलारी बडो है कोऊ पर प्रेम के पेच पछान गई ।।
निज साचो सनेही लख्यो मितवा तन ते मन ते कुरबान गई ।।
पुन ऊपर ते रिस की बतिया प्रगटान लगी मन मान गई ।।१५७।।
स्वैया : द्रिगत्यो रवराय चलो जू चली कहयो साहब चोंच संभाल रखो ।।
कुरबान हो म्रितू ग्रस्यो वह जो हम पै ये अनोचित ख्याल रखो ।।
यहि हास हमे न सुहाय रहा घर जाहि करो जु मजाल रखो ।।
कुल नारिन सौं कुलटान की क रीति कहो नहि लाज की भाल रखो ।।१५८।।
स्वैया : अभिचार ते मंत्र मकान ते अलाचार है नीच कुचारन ते ।।
नहि या मै कछू बस है बल्ले खलते प्ररो प्रान प्रहारन ते ।।
नहि रीति कुलांगन की है लखो परैं प्रान करैं बिभचारन ते ।।
कस देस कु देस ते आछे हूं जो नहि लाज न बुझ अचारन ते ।।१५९।।

स्वैया : अब का कहीहे जो चहो सो कहो बिन फेर सो सूधे ही गालियादो ।।
हम भाग लिखी सु फिरै कब धौं मनमानै सो धीरम वालियादो ।।
अब आगे हूं क्या क्या करै करतार निहारीयें कैसी बहालियादो ।।
घरबार छुटो पर बास भई जो दुचा हो सो दोख दुखालियादो ।।१६०।।

स्वैया : अभिचारी कुचारी के हाथ परी परी लेख की रेख हमारे यही ।।
तब ही तौ बटौही चले मगजात अकेली परी छिक नारि लही ।।
करि बोली ठठोली अनोचित हूं अनतोली मिनी मनचाही रखही।।
अपसोस नही कछु रोस नही बस भावी सौ काहू को दोस नही ।।१६१।।

सुन राज
स्वैया : सुन राज कुमार डरयो मन मै रस हान ते प्रान निदान चले ।।
मुख सूक गयो रंग पीत भयो द्रिग नीर पनारे प्रमान चले ।।
कर जोर कही अजू कोबज मारयौ जो आपको कैसे बखान चले ।।
मुंहि कौन मजाल जले मुख ते कटु भाख कछू हठ ठान ले ।।१६२।।

स्वैया : छिक मै हौ बिदेसी बिथा करि बयाकुल पीरत बाटको बावरो हों ।।
निज प्रेम को जाल तन्यो निज ते अरुझयो पुन आप ही डावरो हों ।।
कछु हास मै बोल ऊठयो हौ सुदाई हो माफ करौ जूहों घावरे हों ।।
तुम मान बुरो दुहु लोक ते मै तो बिगार दयो जो बिगटावनो हों ।।१६३।।

स्वैया : तब राजसुता ने लख्यो छिस को यहि प्रान अधी निज खोवतो है ।।
हुच की को न टूटत तार अहो दरीयाय बहयो द्रिग रोवतो हो।
मुसकाय कहयो मन धीरज राख तू नाहक जान बिगोवतो है ।।
सच है यहि ओछे को जो अहसान महान को बोझ सो होवतो है ।।१६४।।

स्वैया : बदलो कर हों सिव काई होते रोन रो घर आपने जाऊ जबै ।।
मनभाव तो देहों ऊठाय छितो धन पीठ पैतो हिलदाऊ अबै ।।
चल कैन सकोगो छितो कछु देहौं जू आस तिहारी पुराऊ सबै ।।
तुहि तोख कै पोस पिता ते बिदा करवाय के पीय हौं खाऊ तबै ।।१६५।।

स्वैया : सुन राजकुमार कही धन हो धनवारे हो रानी हो जान लई ।।
हम हूं को रंगाल लख्यो तुम जू धनदान की याही ते बात कई ।।
कबहूं हम हूं धनवारे हुते जग को मनबांछत दात दई ।।
अब मंगते हैं तव दुवार के जू कछु देहु वहै मनजूर कई ।।१६६।।

स्वैया : यहि प्रेम पिशाच के पाले पर पर दुवार पै जाय सरोवते क्यो ।।
अब मागन हारे कहाई भला निज राज समाज ही सोवते क्यो ।।
अपमान सह्यो हुवै निमाने रहे करि सीस पै धार को रोवतो क्यो ।।
मनजूर है जो जो हजूर कहैं जौं जूरूर न होती तौ जीवते क्यो ।।१६७।।

कबित : अैसी भांत केरखार आपस मै हुवै रही थी ऊत मै बिजय की सार गई न्रिपती रसै।।
न्रिपको सरीर सब प्रवन ही हुवै रह्यो थो दौरयो निज मंत्रिन समेत बिनधीर मै।।
पालकी लै संग आप तखत सुरंग पर मारुत मैबेगजस नाव कन तीर मै ।।
दूर रहे लोग आप निकट सु ताके जाय देखतही अकुलाय रह्यो न सरीर मै।।१६८।।

कबित : भूपति आगम लखय हितो सकुच बैठी ऊतवै अलग जाय ठाढे मन संक ते ।।
भूपति ऊतर दौर राजकौंर कौंर मरलायो गरे प्रेम भर कोर तन अंक ते ।।
बार बार मुख फार आंसुन की धार धोहि पौरख सराह मायो पूरन मयंक ते।।
फेर निज सुता को लगाया हिय गोय रह्यो पारस की पाथरी न छुट तज्यो रंक ते ।।१६९।।

कबित : पालकी चढाय सुता परदे लवाय राजसुत को लै आपने बराबरी बठालियो ।।
तबही प्रधान बडे सैनप सिदार आन राजत कनन बेसुमार वार कैदियो ।।
केतो धन डारयो सुख पाल पै अपार आज लगे तहा पावै जिन जाय सोह है कियो।।
दीन तहा जात है तो भाग खूल जात है अपार धन ल्यिात है निरास कोउ न गियो ।।१७०।।

कबित : भूपति के लोटतलों राज को समाज सब दुंदभ निसान अग जुरे भीर हुवै ।।
सैना भांत भांत सज ठाढी पात जोर जोर नागर सुनत धाइ कौतक अधीर हुवै।।
गावत बजावत है आनंदन मावत हैं देत हैं बधाई मन मगन सरीर हुवै ।।
पुर मै प्रवेस कर सोभित बिसेस कर मानो मनि सेस करि आई गई गीर हुवै।।१७१।।

कबित : नगर निवासिन मै प्रान फिर आहे जनु आई भूपसुता जब भूप के भवन मै ।।
रोदन की धूम परी महल न्रिपति कही आनंद मनावो क्यो न बिघन दवन मै।।
रानी बिसंभार मन आनंदत वार वार वार बलिहार बारै राई लै लवन मै।।
प्रभू के दुवार करे बेनती अपार बार बार धर सीस पार परत अवनि मै ।।१७२।।

कबित : हेहो बनिवारी बलिहारी जाऊ थारी जैसे मोरी सुता प्यारी तै मिलाई अब आनंद
अैसे ही जे बिछरे मिलो जू तो क्रिपा ते जैसे मेरे दिन फेरे फेरो जुमल जहानके ।।
वै परया जगत प्रभाकर प्रसाद करि बसदी भई हो हो तो पाइ तन प्रान को।

अैसो सुन राजसुता मन तौ मगन होय ऊपर सुानवै सबही सौं रिस ठानके।।१७३।।

कबित: कुसल तुमारी यहि कहा कहौ बार बार भाग जौन मेरी हौत सुघी लेखमालके ।।
कौन हौजो मोह को छुडावतो जी आवतो यौं यहै सब खेल प्रभुमायका ही के ख्यालको।
अैसी सुन अंतरंग सखी हौखो जान गई रस की कसाई येत मासो छिद्र जालको ।।
पाई है री पारसी क्यो रार सी मचावै आली आरसी दिखावै कौन कंकन केहालको।
।।१७४।।

कबित: मात हित ऊत टली अलीगन आन घेरी तेरी सौं मरी है हम बिरह तिहारै मे।।
मर मर जीवती ही घूंट बिद पीवती ही घड़ीआ गिनत रहे प्रानन हमारे मै ।।
धंन जगदीस जिन सूरत दिखाई तेरी नयो है जनम माई सार के बिचारे मै ।।
कैधों यहि जगत प्रभाकर के पायन को हैरी परताप आलीसार के निहारे मै।।१७५।।

कबित: जैसे ऊन मनसा हमारी परिपूर कौ पूरन करी री प्रभमन चिद तौंन के ।।
सुनत ही राजसुता त्यौर को चढाय कही मौहन तनाय सतराय दैचितौन के ।।
सबकी तुमारी कहा मति बवराई बकबाद क्यो मचाय सौंप थाक्त हो लौंन के ।।
चोचले करो है बडे छोटे कौन कान कछू लाज गई बूढ है न ह्या हि रही कौनके।।१७६

कबित: वाह वारी वारी मेरी खिफ ही निकारी तुमौ बावरी बनाई हौ बनीहौ आपचातुरी
प्रभू जाने कौन वहि आयो कौन देस ते है मेरी जान खाई तुमौ कीनी अतिआतुरी।।
वाको कहा कोसो वहि पंथी है बिचारो कोउ वाको मुख फीरो जिन रची यहि
घातुरी ।।
और मोहि छेर ही तौ रोय पीटगेह हौं री उठन चबाय मुसकानी कहि बातुरी।।१
१७७।।

कबित: अैसी मांत हसी खेल मे लगेल आलिन सो रह्यो सब दयोस छिते ऊतै दरबार मै।।
सबै सरदार और राजे छत्रधारि लै लै भेट सब आइ छेक अनिद अपार मै।।
आग्या भई नगर निवासी बडे छोटे सब आज काज छाड सब लागो याही कारमै।।
रागरंग नाच औ तमासा दिनरात रहै जाको कछू चाहीहे मिलैगो सरकार मै।।१७८।।

कबित: आप महाराज राजसभा को बनाय रागरंग औ तमासा रचयो कौतुक अनंद को ।।
प्रात ऊठ दान को दुवार अैसो खोल दीनो दीनन के दयौस गहे बदल बलंद को।।
महल मे सारी निस यही धूमधाम रही मंनता अपार देत लेत सुख कंदको ।।
आन अपसैरैसी मीरासनै जु गान लगी नौतन बघाई औ सुनाई तान मंदको ।।१७९।।

कबित: अनिध बधाई की सभाई सुखदाई सदा सोभन सुहाई हुवै रहो जू मन भावनी ।।
आज राजकवर की सूरति सुहाई प्रभू आप है दिखाई रहो सदाही सुहावनी ।।
अचल अडोल लाख बरस रहो जू यहि सुंदर सुहावन बने को सुखदावनी ।।
होवे दिन भाग भर्यो जा. दिन बिलोकै भर नैंन सीस सहर दै आनंद बधावनी ।।१८०।।

कबित: पाछे यहि बिवाह के बिहारी देवे बालकोउ हम सब आन तबै देंहि गे बधाई को ।।
सत्रन के सीने रहो कंटक गडोयो सदा मित्रन को फूलन की बारी सी सुहाई को ।।
अैसी भांत मागध औ सूत बंदी जन. सबै गावत हैं कीरति बिरद बंसवाई को ।।
कवित बनाय कवि पुंगव सुनाय छित कंत को रिझाय पावै दात मनो माई को।।१८१।।

इती श्रीमति प्रेम पयोनिध ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीति प्रसंगे कवि साहिब ग्रिगिंदिन बिरचिते
राज कवर को कनक पुर प्रापत अभिचारी प्रहार विजय पाय पुर प्रवेस बरनंन नाम
कककके खस्टमो तरंग ।।६।।

कबित: प्रेमी परमारथ के पावत प्रबोध सुखपार कै प्रपंच पट जाकी परपाटी तै ।।
भ्रमत भवारन तै राव दुवैख फारन तै छूटत जंजारन तै याही ऊदघाटी तै।।
गुरू गुबिंदसिंघ जू म्रिगिंद मंत्र धारी अभिचारी अग्यताकी अभिचार मूल काटी तै।।
दीनी मंत्रपाटी तौ बिलानी भ्रमटाटी लह अनिद प्रमाटी ज्यौ प्रभात पहफाटी तै।
।।१।।

दोहरा: स्री गुरु पदनख पाँति की काँति हिहे परकास ।।
अब मंगल युत प्रेम को बरनौ बिबिधि बिलास ।। २।।

चौपई: बिकसित बदन कमल हे स्री गुरु ।। भयौ बिहर दुख मम कंटक ऊर ।।
देह सुधा कछु ~~अनंद बधाई~~ अस ऊपदेसा ।। अरुन रंग मादक सु बिसेसा ।।
जाते ऊमग हिये पर फूलत ।। नव जोबन तरंग लहि फूलत ।।
कथयो बिथा बहु बिरह प्रसंगा ।। बन फारन बिचरन दुख ढंगा ।।
अब कछु अनंद बधाई बरनन ।। कर्यो चहत आस्रित गुरु चरनन ।।
संगीति कया अनंद सभा के ।। गुनागार मति बिसद प्रभाके ।।
बहुरब जंत्री सभा सुहावन ।। दुलहनि दूलहु की मव भावन ।।
या बख्यान सभा महि याबिधि ।। गायन करत हरत मन गुनि निधि ।।३।।

दोहरा: जबवा अनद ऊछाह तै रागरंग की धूम ।।
पूरन हुवै अवसर लह्यौ रह्यौ परम सुख झूम ।। ४।।

चौपई: इक दिवस न्रिप परम मुदित चित ।। जिहि बिभूति पु हूत तुल्लि अति ।।
बैठयौ हुतो सहज रणवासा ।। बिबिधि भाँति तिर सहास बिलासा ।।
~~लहि इक भाँत लह छिकांत निज नारि सियानी निकृत ऊपकार~~
लह छिकांत निज नारि सियानी ।। सुन रानी अस कहि म्रिदु बानी ।।
क्रित ऊपकार भार हम सीसा ।। जगत प्रभाकर सुत अवनीसा ।।
जस कछु अहे जगत जानत है ।। आप सम हि सम मिल भानत है ।।
नहि क्रितघन ता सम अघ जग मै ।। स्रुति सिंम्रिति सास्त्र के मग मे ।।
जौ अब यहि फिर जाहि निरासा ।। सदा होहि हम नरक निवासा ।।
अर पुन जग अपबाद अपारी ।। करहि अधरम जान यहि भारी ।।५।।

दोहरा: अर पुन यहि प्रेमी प्रगट जानत सकल जहान ।।
राज पाट ग्रह बंधु तज सहे अनिक दुख आन ।। ६।।

चौपई: सुनत हि सभा ससि कला की छबि।। बिनहि लखे गहि प्रेम बिकल तबि ।।
नहि सुधि करी खान पानन की ।। नहि चितका प्रानहु हानन की ।।
बडे कस्ट सहि प्रापति भयो ।। अब जौ यहि निरास हुवै गयो ।।
तन को तज तबारन हिलावै ।। यहि बड अघ फिर कौन मिटावै ।।
अरपुन यहि सामरथ वान है ।। जाको क्रित जग प्रगट जान है ।।
कस अभिचारी मार बिदारयो ।। जाते हम समेत दलु हारयो ।।
जौ याके मन रिस ऊपजावै ।। हम को जीतत बार न लावै ।।
कै कु बचन मुख ते कछु करईं ।। प्रभु सहाय ते पार सु परईं ।।७।।

दोहरा: कस अभिचारी हत कीयो कटयो सुता को फंद ।।
याते भी याको ऊचित बिजय ब्रिछ को कंद ।। ८।।

चौपई: रहो सकल यहि धरयो बिचारा ।। है कुलीन बड राजकुमारा ।।
रवि प्रताप सुंदर ससि बदना ।। सुन सुभाव लाजत लख मदना ।।
गुन निधान बिदया बल पूरन ।। जा समान जग जनमयो सूरन ।।
सभ जन कहत सुहावन जोरी ।। बय अनुरूप किसोर किसोरी ।।
याते यहै ऊचित इहि अवसर ।। अरपन करहुं याहि कंनयाबर ।।
करहु समाज बयाह बिन देरी ।। लखहे नैन सुख मनसा मेरी ।।
ऊचित न बिलम करहु इहि अवसर ।। समय बिचित्र सकति लख तत पर ।।
काल कवन की नहि कछु सारा ।। सदा इक रस इक निरंकारा ।।९।।

दोहरा: आज दिवस की क्रित कहु आजहि करहु ऊताल ।।
मति प्रभात पर छाडीहे बुधि जन कहत बिसाल ।।१०।।

चौपई: यहि मति सुन रानी बिगसानी ।। बिनति करी सु जोर जुगपानी ।।
जो मति रावर मति पावन महि ।। प्रगट फुरी सुख ऊपजावन महि ।।
दासी की तुछ मति महि इवुं ही ।। द्रिड़ मन साधी प्रगटी बिऊ ही ।।
याते ऊतम अवर बिचारा ।। नाहन जस पर लोक सवारा ।।
तजहु बिलंब करहु सविधाना ।। मंगल सौज समाज सुनाना ।।
भूपति कही आज पुत्री प्रती ।। प्रगट करी यहि सभ हमरी मति ।।
ताते सुभ ऊत्र लहि रानी ।। प्रात करहि सभ साज समानी ।।
अस कहि सभा भवन न्रिप आयो ।। मनहु प्रभात अरुन छबि छायो ।।११।।

दोहरा: इित रानी निज सुता को आदर सहित बुलाय ।।
अति संप्रेम भर अंक पुन लीनी निकट बिठाय ।।१२।।

चौपई: निज कुल की जेसट स्रेसट बिय ।। सुचि मति प्रगयावान सुघर तिय ।।
प्राणि ग्रहणि आदिक बिहार महि।। निपुनि सनातन कुल अचार महि।।
पुनि जे सखी सियानी सारी ।। लही हकार सकल सदकारी ।।
राजसुता की पुनि जु सहेली ।। बाल क्रिया जिन सो मिल खेली ।।तनक मनक सुन बिनहि बुलाई।।
अति ऊछाह बस सभ जुर आई ।। ~~कंठ लगाय सुता कहु रानी~~
कंठ लगाय सुता कहु रानी ।। सीच नैन जल मन अकुलानी ।।
सभ संग तलख बात चलाई ।। सकल जगत की रीति सुनाई ।।
जह लग ऊच नीच संसारा ।। राव रंक को यहि बिवहारा ।।१३।।

दोहरा: मात पिता ग्रहि कंनिका रहत न कबहु हमेस ।।
रीति पुरातन जगत की प्रगट अहै सब देस ।।१४।।

चौपई: अर पुनि बिसुत्र तनर ग्रह माही ।। अहै प्रतिस्टित जो भवमाही ।।
जुबन वंत कंन्या ग्रह ताके ।। सदा संत पत हेतु लख वाके ।।
जग महि बवरापन को काजा ।। प्रगट होन कहु वहै समाजा ।।
अर पुनि ईस्वर बच स्रुत रूपा ।। मनु सिंम्रिति आदिक अनुरूपा ।।
तिन की आग्या प्रगट यही है।। कंन्या को बर देन सही है ।।
मात पिता सिर अघ अतिभारा ।। होत सुता पति बिन जहि दुवारा ।।
औ पुनिया बिचार ते ऊपर ।। आन हेतु इक प्रगट सु भू पर ।।
इक न्रिप सुत गहि प्रेम तुमारा ।। राज सहित ग्रह करि बलिहारा ।।१५।।

दोहरा: महा कस्ट तन पर सहै मुख नहि मोर्यो रंच ।।
दुख भयंकर झेलगो सुनत होत रोमंच ।।१६।।

चौपई: पुनि अभिचारी परम कुचारी ।। खेल जान पर लयो प्रहारी ।।
कर प्रवेस पाव कंद वार महि ।। डर्यो न कछु निज तन प्रहार महि ।।
ताहि मार तव बंद छुडाई ।। तब हम को पुन आन दिखाई ।।
मनहु प्रलोक गई सुख होरी ।। अहि दुरलभ ही प्रापति तोरी ।।
पुन वहि राजत जगत प्रभाकर ।। जाकी मुख छबि अर सुभाव पर ।।
प्रेम बिबस सब नगर नार नर ।। बाल ब्रिध जो बन कतन रतिया।।

हित कर करत सबै वारन जिया ।।
औ पुन यद्यपितुम अति प्यारी ।। द्रिगन पूतरी सम निरधारी ।। १७।।

दोहरा: तदपि नयाव सुरीति को ऊचित न करते और ।।
कथन करय कछु आप ही गनय न अघ को जोग ।।१८।।

चौपई: करि बिचार देखिये जु या महि ।। अंतराय बड है तव ता महि ।।
यद्यपि तूं अति रूप ऊजागर ।। सुंदर बिदत सकल गुन सागर ।।
तऊ हूं तिय जग चीस बनाई ।। पर अधीन स्रुति सिंम्रिति गाई ।।
कैसी हो होय सुघर बर नारी ।। अति सरूप वंती ऊजियारी ।।
पै पति बिन गति नाहि लहत है ।। सास्त सिंम्रिति बेद कहत है ।।
वहि नर तन करतार बनायो ।। सदा सुतंत्र सूर जग गायो ।।
नरतन महि अरु नारिन माहीं।।बडो भेद जग दुरयो सुनाही ।।
प्रभू चाहै तौ यहि बच मेरे ।। कहूं ग्रंथ महि हुवै तुम हेरे ।। १६।।

दोहरा: या बिधि रानी बिनय युत बचन कहे प्रगटाय ।।
सभा ससि कला सुनत ही सकुचित नार निवाय ।।२०।।

चौपई? लाज सहित लोचन जल ढोरी ।। कहयो मात सुन बिनती मोरी ।।
यदि पित वसन मुख मुहि बयना ।। ऊचित न ढीट ऊत्र कछु दयना ।।
तदपि पितव प्रेरित कछु बानी ।। कहहुंत छमी अहि बालक जानी ।।
रूप सराहिताहि की कीनी ।। असमंजस हिस ठौर न चीनी ।।
प्रभु माया क्रिय यहि संसारा ।। किसहु सवारयो किसहुं बगारयो।
केतक पंगु किते छिक पादा ।। केकच कुके ऊरु जित बिखादा ।।
मूक बधर आदिक बहु नाना ।। प्रभू माया बस धारत प्राना ।।
कहूं प्रकास कहूं बड प्रावक ।। कहूं सुमन कहूं कंट लखावक ।।२१।।

दोहरा: यहि सभ प्रभमाया रचित रूप कुरूप अपारा ।।
या जग महि अस कौन है रचयो जु बिन ही कारा ।।२२।।

चौपई: जिती भले की अहै भलाई ।। सकल बुरे की बनी बनाई ।।
कंबर पर ही सोह पटंबर ।। बिन कंबर का बडो पटंबर ।।
है वहु सुंदर सभ जहान को ।। यूसफ दुतीय मिसर महान को ।।
पै जो क्रित ऊपकार जु ताको ।। तिहि लख देवन कहत सुता को ।।

यहि अनुचित अति सै निरधारो ।। सकल जगत को यहि बिवहारो ।।
इक को काज दूतीय ते होवत ।। होवत अईं सकल जग जोवत ।।
जौ कदाच यहि होत न प्रापति ।। पुन मुहि दूर हो नही आपति ।।
आन यतन कछु अस बन आवत ।। जाते यहि मम बंध छुडावत ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। इस हि भाव पर लखहु प्रमानी ।।
भलो बुरो नहि किसहि अधीना ।। हो वहि जो बिधि लिख दीना ।।२३।।

यथा दोहरा: को सुख को दुख देत है सभ करमन झकझोर ।।
अरझत सरझत आप ही धजा पवन के जोर ।। २४।।

चौपई: ताम्र चूड़ जहि नहि सुन माता ।। सुन्यो कहूं तहि हुवै न प्रभाता ।।
यहि रचना सभ है करि केरी ।। नहि काहू के करहि निबेरी ।।
श्री गुरु श्री मुख वाक प्रमाना ।। है या महि बड तेज निधाना ।।
करे करावे आपे आपा ।। मानुख के कछु नाही हाथा ।।
मेरो लेख अटपटो अस कछु ।। सुन्यो न लख्यो बिचित्र तरहि कछु ।।
इक कूप ते प्रभू निकारी ।। दुतिय कूप दुस्तर महि डारी ।।
निज पर के बच बान समाना ।। परे सहिन हिय बेधित प्राना ।।
मम अद्रिस्ट फल यह कोउ आयो ।। मोहि बंदते आन छुडायो ।।२५।।

दोहरा: प्रभू जानै यहि कवन है कित ते प्रगटौं आय ।।
राजकवर निज बदन ते आपह को प्रगटाय ।।२६।।

चौपई: मै दासी हो मात तात की ।। आय ससी सहि सकल बात की ।।
यदपि कूप महि देहु गिराई ।। मुख नहि मोरहुंस दुहाई ।।
पै जौ याकी सुंदरता लख ।। किधो सेवको फल या बिधि रख ।।
कर्यो चहित हौं यहि बिवहारा ।। तब मुहि कबहु न अंगीकारा ।।
क्रित ऊपकार ताहि जौ हेरो ।। कर्यो चहित हो ताहि निबेरो ।।
जे जग महि समरथ नर पाला ।। क्रित ऊपकार भार चहि टाला ।।
कत काहू को सहि ऊपकारा ।। करन सकति जो प्रति ऊपकारा ।।
ताते ऊचित तुमि यहि की जयत ।। रजत कनक मुद्रा कछु दीजया।
अथवा देहु देस कछु राजा ।। जाते ताको सवरै काजा ।।
रावर जस सभ लोक मझारा ।। प्रगटै पुनि हुवै प्रति ऊपकारा ।।२७।।

दोहरा: यहि कु बच सुन रानी हसी सुता बाल मति जान ।।
कह्यो सबास सुता सु घर कीनो भलो बखान ।। २८।।

चौपई: अस क्रितग्यता प्रगट करी भल ।। जिन सेवा करि दयो सीस बल ।।
ताप्रति यहि आछो उपकारा ।। देहि द्रबया तिहि कछु निरधारा ।।
पुन अरथी वहि दीन को ठूनर ।। अब पहुच्यो अस आय राज घर ।।
ताते ताको कछु धन दीजय ।। रंक हुतो राजा करि दीजय ।।
अरी बावुरी समझ अजाना ।। वहि तो तुम ते बडे खाना ।।
भाग प्रभाकर न्रिपति बिख्याता ।। ताको यहि छेकल प्रियताता ।।
किते छत्रपति जाके दुवारो। सीस घसत है सांझ सकारो ।।
ता सुत को धन दै त्रिप तावन ।। यथा भान प्रति दीप दिखावन ।। २९।।

दोहरा: सकल सहेली हसी तब अट्टहास दै तार ।।
राजसुता मति वंत बड कर्यो अधिक निरधार ।।३०।।

चौपई: इनके जाने वहि न्रिपताता ।। राजकवर ही नहि बिख्याता ।।
धन अरथी कोउ दीन बिचारा ।। आयो इन के राज दुवारा ।।
ताते ताको कछु धन दीजय ।। रंक हु ते राजा तिहि कीजय ।।
राजसुता यहि सुन खिसियानी ।। कही झिझिर सखीयन प्रति बानी ।।
क्यो री यहि धन तुम रे जाने ।। कछु न चीज है निंदित माने ।।
जा कारन यहि स्रिस्टि सकल नित ।। करत अनेक यतन बड नित प्रति ।।
सागर तरहि न्रिपन को सेवहि ।। सूरीच ढहि सीस सरन देवहि ।।
अस्ट धातु तन इस फंद यारा ।। धनहि तरन महि पर्यो प्रहारा ।।
तिहूं काल जे जग को राजा ।। धन हित लरत जोर भट साजा ।।
या पर श्री गुर बचन प्रमाना ।। धन हित भ्रमत सुस कल जहाना ।।३१।।

श्री मुख वाक ।। दोहरा ।।
धन धन धन को भाखीऐ जा का जगत गुलाम ।।
सभ निरखत याको फिरै सभ चल करत सलाम ।।३२।।

चौपई: धन घर हित कैरव कुल घाइे ।। औंर न्रिपति नहि जात गिनाइे ।।
जग सुख हेतु निपट हित जर है ।। जग बिन नर पंछी बिन पर है ।।

यहि सुन जेठी जे बड स्यानी ।। अधिकारिन न्रिप भवन प्रधानी ।।
ते सभ बोली हम बलिहारा ।। वारी जांहि सुनहु निरधारा ।।
मात पिता आग्या क्रित भंगा ।। हरि गुरु आग्या भंग प्रसंगा ।।
ऊचित न तुमहि तजहु मिरजादा ।। मात पिता आय समहि बादा ।।
औ पुन प्रभू न चहै सुन प्यारी ।। मन आपन महि करि निरधारी ।।
मात पित्रा कछु सत्रु न तेरे ।। तव सुख चित वहि सांझ सवेरे ।। ३३।।

दोहरा: औ पुन अपनी बडपनी त्याग सकै कहु कौन ।।
जग अपजस लघुता सहन यह सभ दुख को भौन ।।३४।।

चौपई: असवे कहा कुमति पित माता।। असु अनचित करि है बिख्याता ।।
अपनी सुता मगी मग जावत ।। कूर कथन ही सुन बिसमावत ।।
बिनही कुल गुन सील पछाने ।। देहि हाथ गहि तव अनुमाने ।।
कछु तौ मन मन महि करहु बिचारा ।। हसी खेल नहि यहि बिवहारा ।।
नरतन पाय बाल मति पाछे ।। करव बिचार ऊचित मन आछे ।।
दिन मति प्रति की बात गहत है ।। ऊच नीच को भाव लहत है ।।
समय सूझ की बूझ चाहीये ।। केवल हठ निज नहि निवाहीये ।।
तुम अबलौ सुख सो ही बाला ।। खेल कूद बच पन को ख्याला ।।३५।।

दोहरा: सभा सकिला सुनत अस रही मनहि सकुचाय ।।
ऊत्र न कछु फिर कै दयो लोचन नार निवाय ।।३६।।

चौपई: यही लख जेही सखी सियानी ।। सुता अमीरन कू गुनखानी ।।
अंतरंग प्रिय राज सुता की ।। सदा समीपन सुमति सुभा की ।।
तिनहु कह्यो हा हारी माई ।। सभ लोगन की मति बवराई ।।
जेठी जू ढेठी यहि मोरी ।। छमा करहुत कहहुं कर जोरी ।।
धूप छिते सिर हुवै सित केसा ।। भई ब्रिघ पन को घर बेसा ।।
क्रंन्या कहूं मात पित आगे ।। कहै बचन बहिरत अनुरागे ।।
लोक लाज कुलकान ऊडाई ।। गई जगत ते पंख लगाई ।।
अस तौ मन महि करहु बिचारा ।। सदा सनातन जग बिवहारा ।।
मात पिता के बच प्रति पाला ।। कवनन करत कंनि का बाला ।।
यहिकिहि भांत न पालन कर है ।। धरम कुल बधू लखत सुघर है ।।३७।।

दोहरा: मूक उत्र पुन प्रान को है अरघंगी कार ।।
याते ऊचित न अधिक अब या महि करहु ऊचार ।।३८।।

चौपई: यहि सुन छिक अधिकारन स्यानी ।। राजसुता जिन पालन ठानी ।।
पुन पढाय गुन सकल सिखाई ।। त्रित गान कबि काबय पढाई ।।
गुन बिदया बय महि बडपन अति ।। असम सनमान करत ताको अति।।
तिन ऊठ गनपति सुमर प्रथम मुख।। मंगल करन सुहरन बिघन दुख ।।
रानी प्रति ऊठ दीन बधाई ।। भेट दीन जस रीति सुहाई ।।
तापाछे सम हरख बढाई ।। भेट दीन पुन दीन बधाई ।।
परी महिल महि धूम सपारा ।। अनंद बधाई मंगल चारा ।।३६।।

दोहरा: यहि लख बंल्लभ लाल तब गयो दौर त्रिप तीर ।।
दई बधाई अनंद सों भेंट दीन मति धीर ।।४०।।

चौपइ: लहयो दास सनमान अपारा ।। भयो सभा महि मंगल चारा ।।
इतमै सम प्रधान आदिक बर ।। करत प्रती काहु ते सु अवसर ।।
भेट दीन सब हन भूपति प्रति ।। बहुर बधाई करत रुचित मति ।।
आग्या भई तोष दारन प्रति ।। कुटी अपार सब अदभुत गति ।।
नौबत भरत भई सुख दावन ।। धीमी धुन माधुर मन भावन ।।
अनद बधाई की धुनि तूरन ।। भई नगर घर गगन सु पूरन ।।
नभ महि देव दुंदभी बाजत ।। मंगल साज दिवागन साजत ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। कही प्रमान अन दरस सानी ।। ४१।।

दोहरा: बजत बधाई गगन पर काको मिलन ऊछाह ।।
भाग्य सूर यहि कौन है तुल्यो भाग यहि जाह ।। ४२।।

चौपई: त्रिप निज मंत्री निकट हकारी ।। याबिधि आग्या दीन बिचारी ।।
पाहुन तुति छित जगत प्रभाकर ।। नहि तिन संग कछु राज साज बर ।।
तुम तहि जाछि सौं सज बजोरी ।। करहु बियाह की रीति बटोरी ।।
हम छित कर है सकल तियारी ।। बेद बिधान युकति बिधिसारी ।।
अस कहि दब दान बहु दीनो ।। बसन अभरन अस्व गज लीनो ।।
सिवका आदि सुभग असवारी ।। लै कर गयो अनंद मन धारी ।।
ऊत यहि सुन करि जगत प्रभाकर।। भयो लाल जनु दुतिय दिवाकर ।।
भमकत बदन रसमि बहु औरी ।। सनमुख द्रिस्टि परत नहि जोरी।।४३।।

दोहरा: बागे महिमा वत नू तन तूटत बंदत राक ।।
पैल जाबल ते कछुक सकुचत लोकन ताक ।।४४।।

चौपई: न्रिप तब निपुनि जौ तकी पंडित ।। रमल निजूम बिमि युमित मंडित ।।
सादर निकट बुलाय बिठाइे ।। दान मान कर सकल मनाइे ।।
सुभग महूरत लगन बिचारी ।। कहहु बिआहु को करुणाधारी ।।
यहि सुन सभ आनंद अनुरागे ।। निज निज मत अवविलोकन लागे ।।
कोउू लगयो डालना ढालना । सकलै लिखी मिलाय संभालन ।।
किनहूं पुसतक खोल निहारी ।।चिंतामणि आदिक निरधारी ।।
किनहूं नाम बरन लिख लीनै ।। भाग देय गनना कछु कीनै ।।
काहु तुला ब्रिस चिघट मीना ।। मेख ब्रिख जुग कर कसु चीना ।।४५।।

दोहरा: पुन म्रिगिंदन कंनिका देखत ह्रिदय बिचार ।।
काहू रवि ससि भौम बुध गुरु भ्रिगु सनी निहार ।।४६।।

चौपई: राहु कैत नव ग्रिह लख सारे ।। चक्र लगाय रासि मध धारे ।।
सुभ असथान कैंद्र ग्रह पाइे ।। तब सब हन अस बचन सुनाइे ।।
बहुत काल महि ससि अर जीवा ।। भइे मेख महि मिल रस जीवा ।।
जनम लगन ते सुभ ग्रह सारे ।। परे कवर कै परत निहारे ।।
सुख की अवधन परहि गिनाईं ।। अस करहै अब स्री जदुराईं ।।
साहा सोध लगन लिख सारे ।। कह्यो न्रिपति सन दिवस ऊचारे ।।
न्रिप धर सीस कर्यो सदकारा ।। दान मान दिय लख अधिकारा ।।
अरपुनि पाणि ग्रहण पसचाता ।। करहौ बिदा देहु बड दाता ।।४७।।

दोहरा: तिन आग्या अनुसार ते बेद बित गुन मान ।।
ग्रह गति नीकै जानते दूर द्रिस्टि मति वान ।।४८।।

चौपई: गगन गौन गति कै बड ग्याता ।। भूत भविख गयानी बिख्याता ।।
तीखन मति गति भनीन बखानै ।। रमल नजूम सोध भल जानै ।। लहयो मह
लहयो महूरत न्रिप तत काला ।। ऊबट अनावन को सुभ काला ।।
सौज ऊबटने की सब जोरी ।। राजभवन ते चले बटोरी ।।
गज सवार ते दास प्रयंता ।। रंगे बसन जनु खिर्यो बसंता ।।
दासी दास जु तवन समाना ।। अभरन बसन रंग युत साजा ।।

कनक थार कर जटित नगीने ।। तिन महि बसन केसरी मीने ।।
कोपर कनक कोटि झमकारा ।। तिन महि मंगल द्रबय अपारा ।।४६।।

दोहरा: नेगनमितगियारह सहस कनक मुद्रका धार ।।
कनिक रचित चौंकी रुचिर मानिक जटित अपार ।।५०।।

चौपई: कनक कटोरा बटना पूरत ।। राजमुकत किगनातम चूरत ।।
ऊडगन सपतरिखिन की नारी ।। ता समान मुक्ता बड भारी ।।
कटपट ह्नित लुंगीया मुल्तानी ।। क्रितम बेल फुवारि प्रमानी ।।
बटना मिल्यो फुलेल सुहावन ।। ऊठत सुगंध परम मन भावन ।।
अतर सिरोमन काश्मीर को ।। ताको हस्त सुगंध चीरको ।।
करत सुगंधत सभा सकाल को ।। अतर सुहाग बसनो को मल को ।।
घरन गगन महि कार भरी सब ।। केसर कियार खिरायेलखि यत तब ।।
कई कोस लग असतिहि बारा ।। मिल्यो थार संग धार निहारा ।।५१।।

दोहरा: मधुर दुंदभी घुर चही बजत बजंत्र अपार ।।
नौबत सहनाई बजत गज बाजन असवार ।। ५२।।

चौपई: जुवा बैस बाजन असवारा ।। कई कोटि कर रहे नगारा ।।
न्रित्य गान की धूम अपारी ।। मंगल गान करत बर नारी ।।
पहुचे जाय कवर के दुवारा ।। मो जा दयो प्रेम करि भारा ।।
भयो नगर महि मंगल चारू ।। मनहु सुरग यहि बस्यो ऊदारू ।।
इित दूलह ऊत दुलहन दोऊ ।। मंजन बसन धार सुभ सोऊ ।।
बेद मंत्र दिज करत ऊचारा ।। सवत सुहागन निज कर धारा ।।
मलत ऊबटनो हरख अपारी ।। देत परसपर रस की गारी ।।
मंगल गान बिबिधि कल गावत ।। दुलहति दूलह को ऊबटावत ।।५३।।

दोहरा: डौंडी दै सब नगर मैं आग्या दीन सुनाय ।।
सेत बसन जिहि लखहि तन ताह तुरत पकराय ।।५४।।

चौपई: ताही के स्रोनत के रंगा ।। बसन हो हिगे अरुन सुरंगा ।।
आपहुं न्रिपति सुरंग पट पहरे ।। अति ऊछाह मन ऊगत लहरे ।।
रंग गुलाल ऊडावन लागे ।। कीने सुरंग सबन के बागे ।।
कुंकम छिरक परसपर परी ।। फगु वाहूं की सुधि बिसरी ।।

केसर अतर अरग जा ढारे ।। ऊमग प्रवाह बहे बढनारे ।।
लगे अंबार गुलाल गली मै ।। रंग अपार बजार थली मै ।।
मनहु कियार केसर कमसीरा ।। रंग बोरित छिक रंक अमीरा ।।
नगर निवासिन प्रति न्रिप आयस।। याबिधि मई आनंद बढायस।।५५।।

दोहरा: चार दिवस लौं आजते न त्याज सकल ग्रह काज ।।
राग रंग आनंद करहु देखहु न्रितय समाज ।। ५६।।

चौपई: जो कछु बांछित किस हु समाना ।। राजभवन ते लेहु सुखाना ।।
हुते नगर महि जे अधिकारी ।। जाति पापित निज महि सरदारी ।।
तिनहि बोल आग्या न्रिप दीनी ।। जिन बिज टोल सु लिखहु प्रवीनी ।।
गनना कर सभ नाम लिखाईं ।। ऊच नीच कोऊ बिसरन जाईं ।।
खान पान लग सकल समाजा ।। चार दिवस लग मम ग्रिह काजा ।।
राजभवन सौ लेहु मंगाईं ।। यथा ऊचित निज देहु बंटाईं ।।
कोऊ निरास रहन नहि पावै ।। यथा यौग सब के ग्रह्जावै ।।
पुन जो ध्र न्रित्य अखारे नाना ।। तिन महि जो अधिक्रित परधाना ।।५७।।

दोहरा: तिन प्रति न्रिप आग्या मई सब कौ समझ बिचार ।।
पटहु तहा जस जोग लख रुचि अनुकूल निहार ।।५८।।

चौपई: जो जाके अनुकूल लखावहु ।। पन तिहि ऊचित बिचार पठावहु ।।
न्रित्य गान बहु रंग तमासा ।। रचहि बिबिधि रस हास बिलासा ।।
बनिक बजारी जे हटवानी ।। तिन प्रति आयस भूप बखानी ।।
सरब तरह की बस्तू बजारा ।। खुलें रहैं बहु बिधि बिवहारा ।।
निकट निकट बहु न्रित तमासा ।। हौत रहै निस दिन रस हासा ।।
भोजन हमरी पाक साल ते ।। लेहु सकल अति रुचि बिसाल ते ।।
रुचि अनुकूल बिबिधि पकवाना ।। अति पवित्र रुचिर चित बिधाना ।।
पुन जिहि आमि खादि अधिकारा ।। तिनहित भिंन भवन महि त्यारा ।।
लेहु निसंक जाय तहि सोऊ ।। निज इछा युत खट रस सोऊ ।।
अपने भवन न भोजन करीये ।। यह आय सह्म प्रकन सुधरीयै ।। ५६।।

दोहरा: सुन करि मई अनंद सभ ऊच नीच नर नारि ।।
नाच गान की धूम अति घर घर नगर बजार ।।६०।।

चौपई: भोजन खट रस बिबिध प्रकारा ।। मिलय न्रिप पति घरु रुचि अनुसारा ।।
निस दिन कौतुक न्रित देखनो ।। ग्रह बैठे सुर भवन पेखनो ।।
कान किसू की नहि मुछंदगी ।। सभ समान मुजरान बंदगी ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। देव लोक महि कथित प्रमानी ।।
सुरग तही जहि दरदन कोऊ ।। पुन जहि कानन कर्न होऊ ।।
दोऊ चिंन यहि देव लोक के ।। प्रापति इहा प्रणास सोक के ।।
याते सुरग रच्यो न्रिप मानों ।। सुख संबूह नहि परत बखानो ।।
पुन जे न्रिपति चहूं मंडलके ।। छत्रपति सम आखंडल के ।। ६१।।

दोहरा: तिन प्रति लिख नेगी पठे बोले कर सनमान ।।
निज अनुसारी भूप पुन बोल पठे मतिवान ।।६२।।

चौपई: पुन निज देस जि अधिक्रित भारी ।। सता धीस आदिक सुखकारी ।।
ग्राम दसा धिप आदि प्रयंता ।। बोले सभ सदकार निमंता ।।
ग्राम ग्राम जे मुख्य प्रधाना ।। जुरे आन लै भेट सु नाना ।।
औंर देस के कौतक हारू ।। आहे तजि निज निज बिवहारू ।।
मंगत जन धनहित अभिलाखे ।। जुरे अपार परत नहि भाखे ।।
राज भवन सुन परम ऊछाहू ।। छले छोट बड नर नर नाहू ।।
तिन हित न्रिप यहि कीय सनमाना ।। नगर चुफेर छिकोस प्रमाना ।।
पाक साल बहु कीन त्यारा ।। जिन महि बिंजन बिबिध प्रकारा ।।
रुचि अनुसार लेह जो आवै ।। छुधावंत कोऊ रहन न पावै ।।
बहु प्रकार मिसटान दुकाना ।। बैठे लिये बिबिध पकवाना ।। ६३।।

दोहरा: जो जाकी रुचि होइि सो लेवै तोल लिखाय ।।
दाम सकल सुकार ते मिलहै गनत कराय ।।६४।।

चौपई: भयो कुलाहल न्रिप ग्रह भारी ।। जुरे छत्रपति आन अपारी ।।
यथा ऊचित सभ की पहुनाई ।। करत भूपामति भाव दिखाई ।।
दिवस दुतिय भई तिलक त्यारी ।। अस आपार बड सौं जसवारी ।।
जौं सब बानिक बरनों बानी ।। ग्रंथ बढे रहि बीच कहानी ।।
याते किंचत करहु ऊचारा ।। छिक तंदुल कटाह निरधारा ।।
सहस पचास कनक के थारा ।। मेवा मधुर अनिक परकारा ।।

ता कर भरे अपूरब भांती ।। चले प्रचारिक लग लग पाती ।।
इेकल छपन को पर टूरे ।। कनिक रचित नग जटित सु पूरे ।। ६५।।

दोहरा: अरधन महि मिसरी भरी अरधन महि पकवान ।।
कनिक छाबरी अनिक ही भरी फूल फल आन ।। ६६।।

चौपई: कंचन कलस भरे दधि पावन ।। चले सीस धर अति मन भावन ।।
तखतर वां रचि कनिक जराऊ ।। क्रितम बेलि करि अस पर भाऊ ।।
लख बिचित्र जाकी बड रचना ।। सुमरन होत प्रक्रित की रचना ।।
बूटा बेल जटित असभावा ।। क्रित मन ही सच करि दिखरावा ।।
आतस बाजी की अस रचना ।। बानिक कही परत नही बचना ।।
सरू भार चादर ह्थ फूला ।। बिबिध बिट प फल सह रह फूला ।।
अनिक प्रकार रचित फुलवारी ।। चली जात जनु सुर पति बारी ।।
सुमन छरी अस अनिक प्रकारा ।। फूलत चलत मनहु फुलवारा ।।६७।।

दोहरा: तिलक सौंज या बिधि गईं बजत बजंत्र अपार ।।
टीका दयो सुभाल महि सगन अंक महि धार ।।६८।।

चौपई: इित प्रधानि मति मान सुजाना ।। महदी रंग हित कीन समाना ।।
कईं सहस मन महदी सुंदर ।। नाहौल की रंग समुंदर ।।
~~करि दुवाय देखय इक बारा।।~~ करि छिन हुवै रंगीन करि सारा ।। ~~लजित होत लाल की लाली ।।~~
करि छुवाय देख इक बारा ।। तत छिन हुवै रंगीन करि सारा ।।
लजित होत लाल की लाली ।। और नगन की कहा बहाली ।।
इेक बार रंजित करि कीने ।। सकल आयु रहईं रंग भीने ।।
इेक बार जो कर लख पावत ।। कर मल मल सद रहि पछतावत ।।
कनक पात्र रच मीनाकारी ।। तिन महि भरी घोल वहि सारी ।।
तिन पै दिप बाती घनसारा ।। होत सुगंधत सभ घरबारा ।। ६६।।

दोहरा: कनक थार किसमिस भरे गरी छुहार बिदाम ।।
आतसबाजी अपरमित किच करत नर बाम ।।७०।।

चौपई: अस अदभुत रचि सौंज समाना ।। ~~समस्त~~ महदी ल्यायो सुभग प्रधाना ।।
मति की चमतकार दिखराईं ।। निज जन महि बडिआईं पाईं ।।
त्रितया निसात बच ढीबराता ।। बानिक कही परत नही बाता ।।
कवर महल ते पांच कोस पर ।। हुतो सुहावन दुलहनि को घर ।।

दोनहु द्रफ फटक फानूसा ।। तिन कर रचित मार बिन दूसा ।।
चमतकार दामनि ते सूचे ।। दिपति जिनहु मध सत सत बाती ।।
पांच पांच गज अंतर थाती ।। तिन पाछे किंचित पुन दूरा ।।
पंच साखे फनूस भरपूरा ।।
दस दस गज तिन को अंतराला ।। अति ऊतंग हुवे करत ऊजाला ।।
तिन पाछे लाखो मजदूरा ।। करत दीप माला घ्रित पूरा ।।७१।।

दोहरा: अदभुत भयो प्रकास जनु छेक निसा महि आन ।।
सरद निसा पूरन ससी चढे कोटि छिकठान ।।७२।।

चौपई: टौंर टौंर तिह पौल दुवारा ।। तिन पर नौबत बजत अपारा ।।
त्रित करत कथक करभावा ।। रच रच कौतुक कोटि बनावा ।।
जगंदोज बहुत ने बिताना ।। झिलत झालरै मुक्ता नाना ।।
आतसबाजी छुटत अपारा ।। बजत बजंत्र सु कोटि प्रकारा ।।
अस प्रकास घर पर झारन को ।। चीटी लखियत असवारन को ।।
जब दूलह अस भयो सवारा ।। परयो कुलाहल अति तह छिकबारा ।।
किनहु कहयो छित लयाव सवारी ।। कोउ छैल छिम ऊटयो पुकारी ।।
पांग पेंच कस कट पट कस कर ।। कह्यो दास प्रति सीघ्र सुरिस कर ।।७३।।

दोहरा?: पांत जोर आगे चले सूर सुबलि पदाति ।। दुंदभि बजगो मुख
दुंदभि बजगो मुख गजे जुरी निसान न पांति ।।७४।।

चौपई: माहिम रात बरव मुखी यां बर ।। झूलत छत्र मनोहर चामर ।।
परम बिचित्र मोर छर ढोरत ।। राज प्रभाव परम चित चोरत ।।
दुहूं ओर बर बाज सवारा ।। पांत जोर चलि बाग संभारा ।।
घर घोरीये बाज अरूढा ।। वजहु बडी पाक्त गुन गूढा ।।
कई लाख गजराज सवारा ।। गिरसपच्छ जनु बांध कतारा ।।
जरीदार झूलै बढ झालुर ।। कनिक अंबारी जटित गन कर ।।
रथ सवार अनगनत बराता ।। सूरस जी ले बुधि बिख्याता ।।
कई सहस बरतखत रवां हैं ।। तिन पर मंगल चार समां हैं ।।
कनिक रचित बर जटित सुहीरन ।। जगमगात तड़िता दुति चीरत ।।
न्रित करत गन कागन तिन पर ।। रंभा लेत अचंभा जिन पर ।।७५।।

दोहरा: जुवा बैस सो रहस जे गावत मंगल चार ।।
मधुर मृदंगन धुन सहत पग नूपर ठनकार ।।७६।।

चौपई: करम सवार अपार जवाना ।। अति मग चल वई या मतिमाना ।।
दूलह चण्यो पालकी माही ।। ताकी छबि कहि कौन सका ही ।।
जगमगात नग जटित अपारा ।। जनु निस महि रवि कोउजियारा ।।
कुंत पानि धनु पानि जिबीरा ।। रच्छक कई सह सति छितीरा ।।
कनिक छरी पानी छरिदारा ।। आगे चलत पदाति अपारा ।।
सहनाई धुनि करत सुहावन ।। सबहन मन अति हरख बढावन ।।
कई सहस सेवक संग आवत ।। जरीदार पट कट लपटावत ।। ७७।।

दोहरा: म्रिग मद अगर सुगंध बहु लीने बसतु अपार ।।
सावधान सेवा निपुनि सुघर सुनिज अधिकार ।।७८।।

चौपई: कनिक रजत के तखत सवारा।।। जिन पर छत्र चमर की ढारा ।।
अब छितीस चालीस तेज धर ।। पाछे चलत सुनिज समाज भर ।।
आगे महाराज की ठौरा ।। सभा सुधा घर न्रिप बरऔरा ।।
सभा ससिकला को बड भ्राता ।। अगमन आयो लैन बराता ।।
बारह सह सगैं दम दमाते ।। गंड सथल मद अंमुचुचाते ।।
तिन पर मंत्री मुख प्रधाना ।। राज भवन के थंम समाना ।।
सदा भूप भल बांछित सेवा ।। मानत सदा न्रिपति निज देवा ।।
तिन समेत वहि राजदुलारा ।। दोय कोस आ मिलयो अगारा ।।
सादर मिल संग लै पाहुन कर ।। सने सने लै चले अनंद भर ।।७९।।

दोहरा: भयो सुगंधित समनगर बीथी बगर बजार ।।
अटा चढी तिय निज भवन गावत मंगल चार ।।८०।।

चौपई: गगन ऊडगं द्रिग लखत पसारे ।। चकित मनहु बिन पलक ऊघारे ।।
बिनके खग म्रिग लखत तमासा ।। थकित रहे लख तज आयासा ।।
छेक जाम रजनी रह गई ।। दुलहनि दुवार बरात सु आई ।।
बरखावत मग घन की धारा ।। रुंक न कोन पति कर डारा ।।
भयो ढुकाऊ दुवार पर आई ।। उमग सगुन हित पटी लुगाई ।।
दो घट लै जल भर पनिहारी ।। मिली दुवार पर सगुन बिचारी ।।

किनहु प्रात जल भर गज पायन ।। ढरकायो कछु सुकुन सुभायन ।।
कनक थार धर दति अछत बर ।। दूर बा पूंगी फल आदिक घर ।।
चौमुद दीप धूप ऊजियारी ।। बेद बिधान आरती ऊतारी ।।
कितहूं छलनी मध दीपक धर ।। तत छिन आडी आन दुवार पर ।।८१।।

दोहरा: लपट दुसाले मै कुवरि अस्वनि पट हि छुवाय ।।
दामन कर कामनि के तूले गई डीठ बचाय ।।८२।।

चौपई: ऊतर अस्वनी ते सु कुमारा ।। ठाढो भयौ जाय तब दुवारा ।।
सुमन रचित सेहारौ सुहावन ।। बडो मोल के मुक्ता पावन ।।
तिन की लरीयन को असभारा ।। सह नहि परत सु राज दुलारा ।।
खरे समीप जि सेवक स्याने ।। थांभ रहे हाथ सकुचाने ।।
दूलहु मिन्यौ क सुंभ की डोरी ।। मंगल गान की करत बहुगोरी ।।
सादर मंडप महि तब ल्याइे ।। जहां बादले छावन छाइे ।।
बारह सैबर त्रित अखारे ।। कौतुक करत तहां तिह बारे ।।
भांड भगती ये अपर जनाने ।। छिजरे अनिक सु कौतुक ठाने ।।८३।।

दोहरा: कसमीरी कंवाल बहु बीन कार बहु मेल ।।
किते रबाबी नकली हेसा री दी रच खेल ।। ८४।।

चौपई: जनवासे तब दयो ऊतारी ।। जेव नार हित गयो हकारे ।।
आइे बजत बजंत्र अपारा ।। जेव नारि बहु भांत तयारा ।।
मनबांछत खटरस बिंजन धर ।। जैंवत भइे अधिक मनरुचिधर ।।
मंगल गान करत बुहु नारी ।। देत बरातिन रस की गारी ।।
सरस सुगंध नीर अचवाइे ।। पवन पान दै बिदा करयाइे ।।
ब्रह्म महूरत लगन धराइे ।। भंवर हित सभ लीन बुलाइे ।।
बेदी रची सु बेद बिधाना ।। नव ग्रिह पूजा नादि क्रित नाना ।।
मंत्रित कर पावक प्रगटायौ ।। स्रुत पाठी दिज पुंज सुहायौ ।।८५।।

दोहरा: द्रबय सुंगधित वहेन कर गनपति देव मनाय ।।
प्राणि ग्रहण अवसर भयौ अंचट गांठ जुराय ।। ८६।।

स्वैया: यहि देख बधाई की धूम मची सु ऊमंग ऊठे सब मंगलगा ।।
ऊत देवन दुंदभि की धुनि कै रहे गै नभै अैन ही रंग लगा ।।
नभ देख मनो यहि रैनि संयोग कह्यो अब बैन ऊतंग लगा।।
तुहि हे मुख चंद मुबारिक कहो यहि रैन सु मंगल संग लगा ।। ८७।।

चौपई: साखी बीच अगनि भगवाना ।। भांवर दई दीनी बेद बिधाना ।।
साखा पढ दिज परम सियाने ।। कुल प्रणालिका प्रगट बखाने ।।
सपतत दीतब दिजन कराई ।। बाम अंगतब कुवरि बिठाई ।।
बिंद नारि किय मंगल गाना ।। न्रिप तब कीन कंनिका दाना।।
बेदी परम परब लख अवसर ।। दयो दान न्रिप परमो तसव कर ।।
इेक सहस गजल कुतुरंगा।। लाखसि यंदन सजित सुरंगा।।
अभरन बसन द्रबय निह पारा ।। ग्राम अनंत दइे तिहि बारा ।।
दसी दास अपरमित दीने ।। कनिक जटित बहु पलंघ नवीने ।।८८।।

दोहरा: बहु सुखपाल चंडोल बहुदा जद यो निह पार ।।
अब जौ सब बरनन करहु होत ग्रंथ बिसतार ।।८९।।

चौपई: दिज दान असदीन न्रिपाला ।। थकित भइे नहि परत संभाला ।।
अति अनंद मन देत बधाई ।। आसिख दै गइे भवन अघाई ।।
न्रित अखारे इेक इेक प्रति ।। लच्छ मुद्रका न्रिप दई हरखत ।।
मांगत सूत भट बंदीजन ।। कवी कवित पटित जा स भांजन ।।
तिन प्रति न्रिप असदीन उदारा ।। अब लग गइे नपुन कहि दुवारा ।।
अपर जिकौतुक हार अपारी ।। सभन दयो धन न्रिप सद कारी ।।
प्रात भयो जब ऊदयो प्रभाकर ।। ऊदित मुदित उतग गजेत प्रभाकर ।।
जनवासे सभ गइे बराती ।। भई सभन की मनहि सुहाती ।। ९०।।

दोहरा: राजभवन पुन कवर को लीनो बोल मंगाय ।।
हास खेल रस रीति हि तजहि सखीयन मुदाय ।।९१।।

चौपई: मंगल गान करत बरनारी ।। देत परसपर रस की गारी ।।
छिति दूलह निदूलख सकु चाई ।। बैठ रहे निज बदन छिपाई ।।
कोई सखी कछु करत ठठोली ।। कोऊ गार दै अस ऊठ बोली ।।
छंद कहो तब छूटन पाखो ।। नातर टांग तरे निकरे हो ।।
काहू पनहीं लीन चुराई ।। किनहू चूनरी आन ऊढाई ।।

कोउ कुवरि की पनही ल्याईं ।। रुमाल संगु सु छुवाईं ।।
किनहूं कंगना खेल मचाईं ।। बार बार निज कुवरि जिताईं ।।
कोऊ कपोलन देत आंगुरी ।। कोऊ चढावत आन बांगुरी ।।६२।।

दोहरा: कोऊ काजर नैन दै कोऊ देत कछु केर ।।
हास बिलास अपार तहि भयो बहुत ही देर ।।६३।।

चौपई: सगुन सपूरन भइ सुहावन ।। लगी ढोल पर पाहुनि गावन ।।
ऊमग चली सब की तब छतिया।। स्रवत नीर अखीयां भर रतीया ।।
बिदा होन दुलहनि के अवसर ।। मात पिता नहि सके धीर धर ।।
रुदन करत सखीयां लपटाईं ।। भयो बिछरनो अति दुखदाईं ।।
सभा सिखिकला की बर माता ।। कंठ लपट रोवत बिल पाता ।।
बच अस कहत रुदित प्रगटाईं ।। सती मात मैं ना जस गाईं ।।
तुलसी क्रित बर ग्रंथ ऊदारा ।। गौंरा बिदा प्रसंग ऊचारा ।।
बिधि कत नारि स्रिजी भव माही ।। पराधीन सुपने सुख नाही ।।६४।।

दोहरा: रोवत सुता समोध कर जगत रीति समझाय ।।
कंठ मेल भुज गहि बहुर दीन चैंडोल चढाय ।।६५।।

चौपई :: प्रेम ऊमग सब केतबलोचन ।। लगे नीर बिन धीर बिमोचन ।।
अदभुत यहि जग के बिवहारा ।। देखन ऊचित सु गूढ बिचारा ।।
नहि अस लखी सुनी अदभुति गति ।। हरख सोक दुवै मिले रहत अति ।।
इक रसता वहि करन हार की ।। ता बिन चल गति सभ संसार की ।।
जग बिवहार सुपन की संपति ।। इचल बिचल चल दल दल कंपति ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। जारा बिचित्रता पर परमानी ।।
इक रस नही जगत किहु काला ।। समझ परयो लख निस दिन चाला ।।
या बिधि दुलहनि बिदा कराईं ।। बहु दहेज युत धाम पठाईं ।।६६।।

दोहरा: अनिक समग्री दाज की कछुक देस को राज ।।
दै बरात हुवै बिदा तब चली बजावत बाज ।। ६७।।

चौपई: पूरबोकत सभ साज समाना ।। चले बजत गह गहे निसाना ।।
परम अनंद मगन सभ लोका ।। बिन बियोग दुख औरन सोका ।।

सगुन सहित ऊत बधन दाज को ।। ऊत आसिख सम दिज समाज को ।।
प्रात पवन कोसने झूलनो ।। झलमलाय दीपक सू डूलनो ।।
सहनाई भैरों अलापनो ।। पुन बिमास तिहि संग थापनो ।।
ललत बिलावल राम कली को ।। मधुर गान रस रंगरली को ।।
ऊतन की बछरि दार पुकारन ।। कोकिल को कल कंठ सुहारन ।।
ऊटत कौर नौबत झरलावन ।। जनु साक्त घन घोर सुहावन ।।९८।।

दोहरा: ऊत झांझन झनकार लो सुखद समय मुन सार ।।
कहूं कहूं ऊडगन झमकऊत धों साधुन कार ।।९९।।

चौपई: मधुर मधुर ऊद्धु घुरत नगारा ।। ससि मुख कछु कसेत तिहि बारा ।।
खरे निरास दुलहनी वारे ।। सोचन स्रवन नैन पर जारे ।।
सुमन सुगंध अतर की लपटैं ।। सब के द्रिगन नींद की झपटैं ।।
कोऊ पदाती कोऊ सवारा ।। बिदा होत सब मेल ऊझारा ।।
खाली फरस परे दल मले ।। आंगन सुमन परे निरदले ।।
जिनह देख ऊपबन सरमाई।। कहूं फूल कहूं चिक छपटाई ।।
कहूं खुले पानन के बीरे ।। बिखरे परे पत्र बहु पीरे ।।
कहूं लोक ठाढे मुरझाने ।। चकित कहूं डोलत अलसाने ।। १००।।

दोहरा: सभा जनहु के बिरहु मैं दीप स्रवत जल नैन ।।
त्रफन पत तिप तंग को धुनि सीस अचैन ।।१०१।।

चौपई: दुलह ओर के सकल मुदित मन ।। दुलहन ग्रिह सब रुदित बिकल मन ।।
कोऊ बिनिद्रित बयाकुल परयो ।। अस बिचित्र कोऊ लख मन डरयो ।।
दीपक दौर दुरयो फनूस मैं ।। प्रान तजे निज आस मसूस मैं ।।
गुल ग्राही गुल ग्रह मुख मेलयो ।। काल कूट गिन जी पर सेल्यो ।।
परे पतंगन के पर ढेरी ।। तजे प्रान जिन फिर चहुं फेरी ।।
सेवक छिकठे करन बिछौने ।। यतन वान चकित मुख मौने ।।
गायक कंठवर जरे बैना ।। कहूं साज कहूं बाज अचैना ।।
अस बियोग अवसर बिज लोचन ।। लखन योग है हरख बिमोचन ।।१०२।।

दोहरा: पंथ चलत पंथी लखय रोय उठय ततकाल ।।
यहि कौतुक जिन हुवै लख्यो वहि जानत अस हाल ।।१०३।।

चौपई: निज बिवाह जुन दीन बिधाता ।। लखी होय तब किहूं बराता ।।
कथा संछेप बना तिह अवसर ।। अति प्रफुलत मुख मन आनंद धर ।।
दमकत भाल भाल की लाली ।। बिहस कपोलन प्रगट दिखाली ।।
गज अरूढबर जगत प्रभाकर ।। चहूं ओर न्रिप पांत छत्रधर ।।
कनिक रजत मुद्रका अपारा ।। बरखत मनहु मेघ की धारा ।।
इक जाम ऊत चढयो प्रभाकर ।। प्रविस धाम निज जगत प्रभाकर ।।
या अवसर की रीत्ति सनातन ।। कुलाचार जिन कीन स्नातन ।।
इस्ट देव कुल देव मनाइ ।। पितर पूज दिज बिदा कराइ ।। १०४।।

दोहरा: निस संयोग के आन की लगी यहै अवसेर ।।
छिन छिन बियाकुल होत मन देख दिवस की देर ।।१०५।।

चौपइ: देख गगन अहि चल प्रभाकर ।। अति अकुलाय सु जगत प्रभाकर ।।
घरी घरी सुधि लै घरूयार की ।। अकुलावन मन की कुमार की ।।
कबहु सीघ्र रजनी हुवै आवै ।। तब इच्छित पियारी कौ पावै ।।
कबहु कहत कस भाग हमारे ।। घरी बजावत नहि घरीयारे ।।
जाम भयो नहि बूडत घरी ।। अस अद्रिस्ट मम घरी ऊघरी ।।
मति अधीर महि कहा अचलता ।। बार बार पूछन ऊठ चलता ।।
कहा बज्यो है कितो दिवस है ।। इस हि भांति दुलहनि बिन बस है ।।
बार बार मुख लेत जंभाई ।। परत ऊसै सीसा सटि काई ।। १०६।।

दोहरा: जान अवस जब आन कछु चलत न लखत ऊपाय ।।
सखिन भुरावन हेत तबनैन मूंद ऊघराय ।।१०७।।

चौपई: हरि हर कर दुहु को तिहि बारा ।। गयो भान असताचल दुवारा ।।
निसा रूप दुलहनि जु नवोढा ।। चंद चूनरी करतन ओढा ।।
प्रेमिन को अवसर भल पावा ।। मिलन हेत मन अति ऊमगावा ।।
सखा सखी सब सेवक स्याने ।। द्रिस्ट बचाय अलग बिलगाने ।।
बना बनी सुभ सेज बनी पर ।। सुमन सुगंधित अतर सनी पर ।।
भइ इकठे सुभग महूरत ।। दुहूं ओर अति प्रेम सु पूरत ।।

ऊमग ऊमग मन अति अकुलावन ।। पूर मनोरथ को दरसावन ।।
नव तन बैसर भयो अवसर ।। बैठन प्रेमी सुमुख परसपर ।।१०८।।

दोहरा: ऊत निद्रा की झोक द्रिग हित लै लखन की चाह ।।
बटनी अतर सुहाग ऊतमह्कत अंगन मह ।। १०९।।

चौपई: वहि फूलन की सेज सवारी ।। कुसमफ रों सा रचित सुचारी ।।
कनक पलंघ मखतूल सवारयो ।। सेज बंद कस म्रिदुल ऊतारयो ।।
म्रिदुल ऊसैसी लघु दीरघ बहु ।। नेहु परसपर मद आपहि लहु ।।
अति अकुलानं मिलन की मनसा ।। अब अमय ठौर मन रंच न संनसा ।।
मिलन हेत दुहु कोऊ मगाना ।। लाज लपट ते ठट रह जाना ।।
इक दिस ऊगन नेह वरूरी ।। मलह मदन को मान गरूरी ।।
इक दिस लाज आड को अरनी ।। बिरख परसपर चूप ही करनी ।।
बिती बिथा हित मन बरनन को ।। ऊत बयाकुल मन सम स्रवनन को ।।११०।।

दोहरा: पैवा निस सखीया सखा रहत लगाहे कान ।।
रीति सनातन जगत की परी समन को बान ।।१११।।

चौपई: यदपि ऊचित नहि भेद किसहि को ।।छप कर सुनबो पाप बिसहि को ।।
तदपि चपलता मन क्रित भावा ।। सुनों चहत अस समन सुभावा ।।
यहि गति दंपति जानत मन मैं ।। लखी प्रक्रित आपहि सम जन मैं ।।
यदपि दुहूं दिस भयो लोगन को ।। मन महि हुतो हरस योगन को ।।
तदपि परसपर स्नेह बिथित मति ।। कथा चलाई बिती बिकट अति।।
सने सने पिछलो बिवहारा ।। रोय दुहुन कहयो सब निरधारा ।।
प्रस्न कीयो जब राज दुलारी।। प्रगट करो जू निज बिवहारी ।।
कवन देस इस्वर के जाहे ।। साच कहो हित किहि बिधि आहे ।।११२।।

दोहरा: राज भाग तज किहि निमित मग दुख सहे अपार ।।
सकल ब्रिथा पहुचन तलग कहु हु साच निरधार ।।११३।।

चौपई: यहि सुन राजकवर भर जल द्रिग।। कहत भयो सम ब्रिथा प्रिया ढिग ।।
सुक मुख स्रवन रूप तुम करनो ।। प्रेम मगन तज ग्रह मग परनो ।।
अनिक कलेस पंथ के पाहे ।। म्रिगय संग लग सम ते गाहे ।।
प्रात भ्रमत कुरंगन पाछे धावन ।। औरं थकित पाछे रह जावन ।।

पुन मंत्री को सुवन बियोगा ।। कहयो सहारन कठिन प्रयोगा ।।
मंत्र जाल बन महि फस जाना ।। साधु पुरख को तहि प्रगटाना ।।
नैंन मुदाय दरस दिखरावन ।। पुन वा बन दुख ते छिटकावन ।।
पुन अभिचार ताल महि परनो ।। तव मूरति लख धीरन धरनो ।।११४।।

दोहरा: अनिक कस्ट तहि पाय पुन परयो मंत्र के जाल ।।
अभिचारिन के बस परयो रह्यो सु किंचित काल ।।११५।।

चौपई: करन हार प्रभ भई सहाई ।। मंत्र बिदारिक बिधि करिआई ।।
तहि ते निकर बहुर मग परनो ।। बाहन बिन पग ढालक परनो ।।
सूरज प्रभा देस महि आवन ।। दैव योग ताको मिल जावन ।।
कछुक कठिन बच कहन परसपर ।। पुन ताको मन आवन छित ढर ।।
बहुत प्रेम कर ग्रह लय जावन ।। मग महि अनिक प्रसंग सुनावन ।।
निस निवासा दरस माना ।। सेज बैठ करनो मद पाना ।।
पुन तिहि पिछलो हाल पुछावन ।। प्रेम बिबस निज दसा सुनावन ।।
लख सनेह तिह प्रान वारनो ।। तासन अपनो बचन धारनो ।।११६।।

दोहरा: ताहि जनिक सो मिलन पुन तखती लैन प्रसंग ।।
पुन ऊमंग मग ही परन रावर प्रेम तरंग ।।११७।।

चौपई: इहा आय सुन असतव सार ।। प्रिया फसी अभिचारिक जार ।।
मरन मांड पावक महि परनो ।। अभिचारिक के प्रान प्रहरनो ।।
अभिचारिक के
रावर दरस द्रिगन जब देखौ ।। तब ही जनम सफल करि लेखौ ।।
क्रिपा द्रिस्टि जब आप निहारी ।। तत छिन बिपति सकल निरवारी ।।
पूर मनोरथ आज भई हम ।। इंद्र भवन सुख नहि अब मो सम ।।
अदुभुत कथा प्रसंग निहारी ।। चकित भई मन रजदुलारी ।।
अभिचारित की सुनी कहानी ।। सभय कंप हिय द्रिगन डरानी ।।
सुन कर सूरज प्रभा प्रसंगा ।। मत सर धर ऊर कुभित सु अंगा ।।११८।।

दोहरा: प्रेम प्रबल ता निज निरख सुचि रस नैंनन छाय ।।
पावके परन परेख तिहि द्रिगन बीरता भाय ।।११९।।

चौपई: लख प्रयतन ताको सकुचाई ।। करुणाबर अखीयन ढरुचाई ।।
लख ताके मन बिबिधि बिलासा ।। पूरत भये नैन रस हासा ।।
मलिन रूप नख सिख तिय अंगा ।। ताहि तकित नो सह्यो कुढंगा ।।
यहि बिचार मन महि जब आयो ।। तब बीभतस नैन भरलायो ।।
प्रभू माया लख परम बिचित्रा ।। छयो सांति रस द्रिगन पवित्रा ।।
लख अदभुत रचना हरि केरी ।। अदभुत भयो द्रिगन तिह बेरी ।।
नव रस पूरत नैन सरोजा ।। चित्यो कवर तन ऊमग मनोजा ।।
प्रेमी निज परपक्ष पहिचानी ।। आप तवन के हाथ बिकानी ।।१२०।।
दोहरा: प्रेम ऊद धिदुहु दिस ऊमड लाज से तम मधि तोर ।।
मिले परसपर बिबस हुवै बिरह बरेती बोर ।।१२१।।
चौपई: ऊभय प्रेमी यन मिलन कहानी ।। कहन सकति सुख वंहि अब बानी ।।
अति अनंद दुहु दिस प्रगटायो ।। जनम जनक को बिरहन सायो ।।
हिय सो हिय अधरन सो अधर ।। जंघ भुजा कर ऊदर परसपर ।।
जिते अंग प्रत्यंग ऊमंगन ।। मिले सकल दे गाढ अलिंगन ।।
इक जीव दुवै कहत सरीरा ।। हे इकहु तन भइे अधीरा ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। कही बिलन प्रेमिन रस सानी ।।
मिलत ऊमग प्रेमी छिक अंगा ।। दफ्तीन कागत के ढंगा ।।
वहि अस नहि छिक रंग सुहोई ।। यथा प्रेमीयन महि गति जोई ।।१२२।।
दोहरा: प्रेमी या बिधि मिलत है चढे प्रेम के रंग ।।
ज्यो डारयो मिल जात है ~~कूल्लने~~ छीर नीर के संग ।।१२३।।

~~कोहरा~~ चौपई: प्रेम ऊमग की ऊतबल कारी ।। छिति लाज्जा बल रौन कवारी ।।
गाढ अलिंगन अरबर जत महि ।। स्वास बडी बरजन तर जत महि ।।
प्रथम समागम राजकुमारी ।। करत बचाव कंपतन भारी ।।
कुच कपोल आदिक अंगन महि ।। छीवन दे तनहि चपलास महि ।।
बिबस होत तब ऊछर जात है ।। पारद कसकर महि समात है ।।
कबहु कहत महि होहु अधीरा ।। अस बयाकुल कोऊ होत सरीरा ।।
वहि देख हु जू कवन अगयो ।। ओट किवार दुरयो ठाढो भयो ।।
कबंहु आप ऊठ देखत भालत ।। छिन पल लाय छिपहि बिधि टालत ।।१२४।।

दोहरा: इचा खिची बहु बेर असरख ऊपजावन हार ।।
मई परसपर प्रम युत मनुहारन मन हार ।।। १२५।।

चौपई: बिंद सुमन कलिका निदान कहु ।। प्रात पवन लग लहलुफान को ।।
सुखद पवन मिल जब बहु फूली ।। सहज सुगंध बिकस कर फूली ।।
मुक्ताफल अबिध वहि प्यारी ।। राज मजूसा की प्रति मारी ।।
यमन देस की लाल लरीको ।। लाजित किय मन हरन परी को ।।
मत सरक रह्यि फटसुक ताको ।। फटयो हियो दूतनि दुस्टा को ।।
मुगधामन मन दोऊ लजाने ।। सोच अनंद मगन रस साने ।।
निस महि संधया सम बधु अरुनाईं।। फुलित सेज पर लखित लजाईं ।।
पुन निज जल पट अप महि अंगा।। सोय रहे मन मान ऊमंगा ।।१२६।।

दोहरा: तपत मेट बहु दिवस की मरदमान बड मैन ।।
तरफरात चात्रिक लही स्वांत बूंद लह चैन ।।१२७।।

चौपई: सदा सुभाव संयोग निसाको ।। पलक लगत पल अटक न ताको ।।
अजहु पलक संगपलक न फबकी ।।। प्रात पिसाचनि आ तहि भबकी ।।
रक्त प्रान प्रेमिन को कीने ।। भई प्रभात अरुन मुख लीने ।।
बोल ऊठयो कुकुरा वहि कूरा ।। प्रेमिन को परि तारिक पूरा ।।
जान अवस ऊठे दंपति तब ।। क्रित असौंच लग क्रिा करी सब ।।
पुन निसा सग्रह कीन प्रवेसा ।। कु ऊबट अनाय बिबिधि क्रित बेसा ।।
सखी सियानी जो रिद अंगम।। हरख सोक मै सदही संगम ।।
ऊबट अनावत मंगल गावत ।। बिबिधि बिलास हास ऊपजावत ।।१२७।।

दोहरा: देत निसानी निसा की रस की बात बनाय ।।
हसत परसपर निरख अलि राजकुवर बनराय ।।१२८।।

चौपई: पुनह पंजीरी सनमुख आनी ।। पानदान की धरी निसानी ।।
नारि निवाय कुवर खिसयानी ।।। सभ सखीयन की रमज पछानी ।।
बिबिध कलोल सखी जन करईं ।।। बिहस बिहस मन आनंद भरईं ।।
कर सिनान सज बसन सिंगारा ।।। अंग राग अभरन नहि पारा ।।
इस्ट देव हरि पूजन कीनो ।।। दिजन बुलाय दान बहु दीनो ।।
खट रस बिंजन बिबिधि सुहायो ।। हरि गुरु देवन भोग लगायो ।।

बहु रामा पक्कु भोजन कीनो ।। सीच सुगंध सीतल जल पीनो ।।
अचवन कर लीनो अचवाना ।। बहु मुख बास सुखद परवाना ।।१२६।।

दोहरा: न्रिपत सभा महि प्रभाकरि जगत प्रभाकर जाय ।।
आनंद युत बैठत भयो सद कारित सुभ ठाय ।।१३०।।

चौपई: राज प्रधान ठौर बैठारा ।। राज मंत्र महिल हि अधिकारा ।।
चार दिवस इहि भांत बिताइे ।। बढत अनंद सदा मन भाइे ।।
पुन न्रिप को इक बाग सुहावना। सरिता तट सुंदर अति पावन ।।
बहुत भांत वहि रचित सवारयो ।। आनंद ब्रिध नाम ऊजीयारयो ।।
सुता जु मात निवास हेत धर ।। दयो न्रिपति वहि अधिक हेत कर ।।
बरनन करहुं बाग को अबजो ।। प्रापति हों हि उपकरन सब जो ।।
नरगस साख लाख बर करसो ।। करहु कलम कर कलम संभरसों ।।
मारकंड की आयु जु पाऊ ।। सुरग बिसेस रहन कहु ठांउं ।। १३२।।

दोहरा: रसनबास सारद करय करि मुख बेग दिवाय ।।
तऊन ताकी सकल छबि पूरन होत लखाय ।।१३३।।

चौपई: बयरथ परै स्रम सकल लिखन को ।। कहा सकति है किल कलि खन को ।।
सिसर बसंत बितै सत बारा ।। इक रवस को परत न पारा ।।
इक पटकी ड़ी लिखत सफाई ।। लेख नि साफ सुंन रहि जाई ।।
मानी से बर चतुर चितेरे ।। रहत ~~चकि~~ चक्रित चित्र कुसे हेरे ।।
जो ताकी वह लिखै सफाई ।। लेखनथि सल सुकरि ते जाई ।।
लजत लखत देवन केऊ पबना। आंख मूंद मुरझ वात नंदन ।।
कई कोस लग तिहि बिसतारा ।। फूलित फलित झर रहरी डारा ।।
अनिक जात के कुसुम प्रफूलत ।। बहु प्रकार फल करतर झूलत ।। १३३।।(१३४)

दोहरा: सदा प्रफुलत सुमन तिहि सदा बसंत बहार ।।
कबहु सिसिर के कोप ते होत न तिहि पतझार ।। १३४।।

चौपई: परम बिचित्र बुलबलै बोलत ।। बाग बान के भय बिन डोलत ।।
नहि कोऊ घसत अखेटक बरती ।। चुह चुहान अदभुत गति करती ।।
नित नौतन नादर सु बोलीयां ।। याद तिनहु के बड कलोलीया ।।
जिते जगत के मधुर सुखद फल ।। सरस नवीन सदा परपक मल ।।

हति पत्र बर रंग सुहावन ।। फल अरु फूल सुखद मन भावन ।।
कंटक रहत सुमन की बारी ।। भरी बिबिधि फल सौ सब क्यारी ।।
रुचिर रवस बर रचित सु पाटी ।। महदी क्रित बर रची सु टाटी ।।
अस अस बिट फलन कर झूले ।। बिनहि लखत नर निज मति भूले ।।१३५।।

दोहरा: सुमन सुगंधन ते सुमन मगन होय बलपाय ।।
हधर फल न लख बदन महि रसना द्रवत सुभाय ।।१३६।।

चौपई: सहस सहस सरिताकी लहरैं ।। जल चादर जल जंत्रन फहरैं ।।
सुरंग कुरंग बिहंग अपारा ।। चहूं ओर सोभित परवारा ।।
सुंदर खग म्रिग की बर स्रेनी ।। बोलत डोलत मन हर लेनी ।।
कनिक बेल चे लीहे मालिनी ।। ~~खोड़ सबर सबहि क्रम~~ गज गवनी बड रूप सालिनी।
खोड़ सबरस बहि क्रम बाला ।। नरी किंनरी नागनि माला ।।
नव सम सजे रस मिरवि की छबि ।। छिकते छक अधिक अदभुत फबि ।।
ससि बदनीर तिरूप मनोहर ।। बिचरत बाग सेव महि ततपर ।।
कनिक खचित मनि मनवर भूपा ।। जड़त जड़ाउ भवन अनूपा ।।१३७।।

दोहरा: जरी कार रसरी परी सकल कनक के डोल ।।
डवांडोल लख होत मन जिनकी जटित अमोल ।।१३८।।

चौपई: कोमल अमल सुहावन चरसे ।। बरद ठौर गवयै बल बरसे ।।
जिन सनमुख कुरंग पग लंगा ।। आलिन मुख ढिग चंद कुरंगा ।।
जरीकार लहगे बहमोले ।। सिरी साप दुपटे सु अमोले ।।
जरी कार कुरती तन चमकत ।। अंगीया चड़ी अंग महि दमकत ।।
सजित सुनहरी पाऊ पन हीया ।। पायल भनक ऊरत महि महीयां ।।
जटित कनक के स्रवत टंका।। जनु ससि ढिग दमनी दमंका ।।
छित ऊत डालन गति बड छबि की ।। निरखत आंस लग परत सबकी ।।
कोउ डोल को करत संभालन ।। हथ्या खिया लगावती मालनि ।।१३९ ।।

दोहरा: कोउ बरद को प्रेर कर गावत छंद प्र बंद ।।
दोहा कबित मिलाय कर कोउ उरचित अनंद ।।१४०।।

चौपई: कोउ परसपर हास बिलासा ।। छेरछार कर रचित तमासा ।।
कोउ काहि को चोक जात है ।। चुटकी लै कोउ ऊछर जात है ।।

या बिधि को वहि बाट सुहावन ।। सरिता निकट बहुत अतिपावन ।।
धवल महल बड रचित अटारी ।। मनिमानिक गच मीना कारी ।।
तहा निवास दीयो नर नाहा ।। राज कवर प्रति परम ऊछाहा ।।
सभा ससि कला को गह हाथा ।। सखी अपसरा सी बर साथा ।।
ऊभय लोक की सुरति बिसारी ।। सीसी मद कै राजदुलारी ।।
परम मनोरथ पूरन पाइे ।। निस दिन केल करत मन भाइे ।।
जग के अलभ पदारथ जेते ।। प्रापति सुलभ यतन बिन तेते ।।
मद आमिख बिंजन बहु नाना ।। मधुर म्रिदंग गान की ताना ।।१४१।।

कबित: प्रीतम औं प्यारी प्रेम पुंज परिवारी परिचारी करैं पाकन परीसी परिचारिका ।।
निसा तौं नाचगान मै प्रभात मांगमान मै करत इक आन मै लहत सुख सारिका ।।
याद निज देस कीन काल के कलेस की सुधिवाके बेसकीजो ब्रिध की कुमारिका ।।
बियोगनि बीमारि काहीये केवाद रारि का न ख्याल इंतजारिकान कवल
कारारिका ।।१४२।।

कबित: प्रेमपयोनिधि की अपारता प्रकट जग जानत है वेईं जेवैपैर पार पर होंहि ।।
झकझोर बरे दुख भरे झकझोरन तै प्रमे मौरमौर पैन बूडन ते डरे होंहि।।
मनचिंद पावत म्रिगिंदवे निहारे इम जगत प्रभाकर लौं आखेंमूंद पर होंहि ।।
मोती माल घरे हौंहि आनंद मै डरे हौंहि सुघरे कहाय जगजस हूं सो भरें होहिं।
।।१४३।।

दोहरा: पिया पियारी के मिलन को बरनयो बयाहु प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो सपतम तरल तरंग ।।१४४।।

सोरठा: आगे बिरह बिथर सूरज प्रभा कुमारिके ।।
बरनन करहु सुधार जो प्रेमिन को प्रिय सदा ।।१४५।।

इती श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीति प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदिन बिरचिते सभा ससि कला को बिवाह ऊछाह नेह निवाह कुवर को बरनंन नाम ~~सपतमने~~ सपतमो तरंग ।।७।।

कबित: प्रेम जू को पायक सहायक सदाही संग मंगल को दायक बिनायक बियोग है ।।
बिथित बियोगी ही संयोगी होत भोगिन मै जोगिन मैं जोगी हूं बियोगीही के योग है ।।
याही ते म्रिगिंद जू अनिंदत बियोग सदा पावत गुबिंद बिरहीजेवाके लोग है।।
बिरहा की बिदित बडाई बडे ग्रंथन मै गुरुजी की संथन मै याको ऊपयोग है।।१।।

यथा स्री मुख वाक ::
बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तूं सुलतान ।।
जातन मै बिरहा नही सो तन जान मसान ।। २।।

स्वैया: जब लग ब्रिहा की जगै तन मै जग त्यागत बै जगदीश मिलै ।।
परि पूरन प्रेम प्रकासन ते स्रुति सासन ते परमीस मिलै ।।
गुरु गोबिंद सिंघ क्रिपा करि हैं बिरहा हरि को बिसे बीस मिलै ।।
म्रिग ईस जूरीस तिनन की कहा बिरहा की जिनीं बकसीस मिलै ।।३।।

दोहरा: यहि प्रसंग छित छाड अब बढत प्रेम को रंग ।।
सूरज प्रभाकुमारि को बरनहु बिरह प्रसंग ।। ४।।

चौपई: हे सतिगुरु कित कीन अवेरा ।। सुधि न करत टेरत बहु बेरा ।।
बिथित बियोगनि ओर क्रिपा करि ।। द्रिस्टि न र करी अजहु मुदिता धरि ।।
प्ररन भयो बयाह क्रित रंगा ।। पै बीचहि वहि बिरह प्रसंगा ।।
तपन तरफनो देहु मिलाई ।। बिरह कथा अब चहौं लिखाई ।।
मुहि संयोग ते बिरह पसंदा ।। सख संगी सुभ जनित अनंदा ।।
निस दिन यहै देत है साथा ।। प्रेमिन के यहि परखत हाथा ।।
जे करुना करुनाई करिघर ।। वाकन हार सभा दुख को घर ।।
पुन जे तपत ह्रिये दुख घरकै ।। क्थक कथा दरद बह मरको ।। ५।।

दोहरा: जिन प्रेमिन कै हाल पर कियो ह्रियों बलिहार ।।
तैया बिरह प्रसंग को लिखत सु अस परकार ।।६।।

चौपई: वहि बिरहिनि बिन साज समाना ।। असि बियोग क्रित घायल प्राना ।।
प्रीतम ते बिछरी अतिदूरा ।। बिरह रुदन दुख नैन छूरा ।।
परम सोक ग्रिह बिथित निवासनि ।। फटयो ह्रियो मन ऊरध ऊसासनि ।।
सूरज प्रभा राज कन्या बर ।। बेधित रोमह रोम प्रेम सर ।।
जगत प्रभाकर की अवसेरी ।। रहत निरंतर सांझ सवेरी ।।

कबहुं महल चढ कांग उडावत ।। औसी पावत सगुन मनावत ।।
अवध दिवस गन मन अकुलावत ।। जल बिहू न मछली तरफावत ।।
आहु टपाय पौर परजाईं ।। निरखत रहत बिकुल टकलाईं ।। ७।।

दोहरा: तिल मिलात छिन चैन नहि क्रिस तन बिथित बिलाप ।।
ऊभ स्वास भर कबहु मुखिया बिधि करत प्रलाप ।।८।।

स्वैया: वहि आन समे नीयरायो हमे अवसेर तुमे ऊठ प्रान चले ।।
ऊटतीं हून तूं सिरहाने हमारे पै बैठो है आन पियारे भले ।।
दिन रात लै नाम तिहारों पिया मुख आह कराह की राह चले ।।
दुखिआरत बैठे पुकारत मै कहो बैठे नही किह भांत गले ।।६।।

स्वैया: कहती जु कोऊ सुनिराज कुमारि कहा गम खात हो जात घुरी ।।
तिन सों कहती मति पूछ अरी गम स्वादु अहो मिसरी की छुरी ।।
नहि खात अघात हो मै बिब रात फिरै मन क्यो हू न लाग बुरी ।।
नदुरी जग प्रीति की रीति बुरी मरै नीतिन चाट तेही अंगुरी ।।१०।।

स्वैया: अति पूछ कछू अरी हाल सखी फल पायो जु मै मन लावन सों ।।
हिय दाहों कराहों निवाहे रहों सिर चाहीं कहा मन भावन सों ।।
अस बातें बियोग भरी कहती सुन छाती फटै दुख तावन सों ।।
तब रो रो समोध करै सखीया अखीयां हरि ओर लगावन सों ।।११।।

स्वैया: वहि अैसो ही दीन दियाल है री न ऊसे करतें पल देर लगे ।।
जिनि होवे निरास कोऊ ऊस ते अवसेरत मै न अवेर लगे ।।
बिगरी बन ब्रात की पांति नितांत ज केहूं कुवात के फेर लगे ।।
रितू आइे बसंत बनावलि मै फल फूल लखे छिक बेरे लगे ।।१२।।

यथा बिहारी:

दोहरा: यही आस लपटों रहत अलि गुलाब के मूल ।।
दै है दई बसंत रितु छिन डारन वे फूल ।। १३।।

स्वैया: वहि आई बसंत बहार अरे बन तू बन है गम खाहु नही ।।
लख कोकिल भ्रिंग बिहंगन भीरू रे तोहि कछु परवाहु नही ।।
गई रात प्रभात भई लख दीपतू नैननीर बहाहु नही ।।
पुन रात आई वहि तेरी सभा मै प्रभा बनै छाड ऊमाह नही ।।१४।।

स्वैया : सुन राजदुलारि सहेलिन की यहि सीख को स्वास मरे कहरी ।।
वहि दीप प्रभात की हाँ मै प्रभा या सभा ते चलों गी यही ठहरी ।।
जब हौं ही रही नरी बावरी तू तब रैन की कौन लखै लहरी ।।
~~कहीनसम्न~~ कहरी जब प्रान गई बहरी ऊपचार करै नकान हरी ।। १५।।

स्वैया : जब जान के जान मै आन छिहा कछु थोरो रहयो किनहूं ते दई ।।
तब आवन की छित की ऊनके ऊठ ध्यान मै आन मईन मई ।।
अब लौं सुधि मूल न हार की वाकीरी बेसुधि की सुधि हू न आई।।
सुधि मूल गई मै बियोग तई दई नाह आपनी जान दई ।।१६।।

स्वैया : बिरहा नल की तप तेज तई छिस भांत परी हौ थी मार हो मै ।।
मुख मीच के बीच ~~ग्रस्स~~ ग्रसे हूं को मै दुखियारि लजावन हार हो मै ।।
कछु ऐसी बियोगने कीनि बिथा तन सूक म्रिणाल की तार हो मै ।।
अखियान मै देखन हारन की तन धारि हौ धूल की धार हौ मै ।।१७।।

स्वैया : जिय जानत जौ जग के जिय मैं पिय प्यारो सुहावन ढूल हो मै ।।
तबहों सबकी अखियान मे जो खटक्यो ई करै वहि सूल हो मै ।।
जग धीर छुटै लख जाह अहोसु हो वहि आह की हूल हो मै ।।
यहि कौन की चाह मैं दाह परी वा अचाह के राह की ~~च~~ धूल हो मै ।।१८।।

स्वैया : छिहि भांति बिते दिन राति तिसै नित ही दिन के घरी चार रहे ।।
तिस ही बन के वा तरु वन मै चढ जानो जहा वहि मीत लहे ।।
वहि ठौर निहार छियो असुवान की धार सो धोछि यौं रोछि कहे ।।
सखियान सो बैन ब्रिहो मरुसे परसे जिस प्रोन लौं देह के दहे ।।१९।।

स्वैया : समयो वहि कौन सुहावन हुवै अरे भावन आवनो ते रोबनै ।।
पद पंकज चूंम हों पाय पराग अली सम घूमनो मेरो बनै ।।
जिह ठौर चरंन को चिंन लखों चलि चूम हौं रोय घनेरे बनै ।।
मुख कंज तिहारो चितार कै चूमनो कंज गुलाबन केरो बनै ।। २०।।

स्वैया : कबहूं जु कुरंग के बालन को ववरी सी गहों गर लाय रहो ।।
तब प्यारे तिहारे ही नैन पिछान हौं चूमत नापल छोर्यो चहों ।।
पिय प्यारे तू प्यारन को पर मीस हौं रंक पै रंक सिरोमन हौं ।।
धन हाथ है रावरे गात छिये तिनै चूमती हां हूं सदा धन हौं ।।२१।।

स्वैया: कबहूं ऊठ भोर ही तै फिरती बन बीथन सांझ समैं नियरे ।।
फिर आवत दौरत हीं बनमैं पछुतावत स्वास भरैं सियरे ।।
दुखिआरत आप संभार तनायों पुकार तहा पिय रे पिय रे ।।
पियरे परजात तरुवन पात जरैं जिय रे फट जाहिं हीरे ।।२२।।

स्वैया: फिरतैं फिरतैं दिन सारो पिया दिन नाथ लौं बीतैं इमे दिन है ।।
फिर आवो कहू जब प्रानी प्रिया तब जानो जु मेरे फिरे दिन है ।।
नतबीब बियोग मैं तेरो कोउ दुखि जीवन के मरती दिन है ।।
बद लोक्यो संयोग बियोग समे प्रभ ही बिगरे सवरे दिन है ।।२३।।

स्वैया: जब प्यारे हमारे गरे लग तो कसरें नहु ती वहि पियारे दिना ।।
कब ढेर लगे गरसो यहि पूछ हों जोतसी देखो हमारे दिना ।।
यहि जो बनही को जवाल कहूं ते लगाहै बयोग के मारे दिना ।।
नही खेलतमासे निहार वे के अब ही तो हुते ये हमारे दिना ।।२४।।

कबित: ऐसे बिललावत बितावत दिवस वहि आवत निसा के चलि आवत अबस जान ।।
प्रेम परवाह परी आह की कराह भरी जागती जगावती औ गावती तौ यहै गान।।
मिलन संकेत कियो सुख के निकेत पिया आज निसानी दरचीनेत मैन मेरे जान ।।
हाय दई काहू कौन होय अवसेरी काहू तेरी अवसेरी प्यारे प्रलै ही करत प्रान ।।२५।।

कबित: बिरह की रैन दुख दैन परबत होत तब हुवै अचैन बैन ऐसे मुख ल्यावती ।।
ये रे दई निस ज्यो संयोगकी घटाई तैसे प्रात भई तौकि क्यो बियोग कीन भावती।।
हाय हाय आजन अवाज ताम्र चूड़ कही हरी हरी बानी काहू कानी ना सुनावती।।
पाहरू पुकारयो हैन आज बज मारयो घरियारी बजावनी गजर मन आवती ।।२६।।

यथा कबित:कैधों आज बिधना बियोगिनि के बैर परयो राखयो रवि बराजोरि बारथमैबोर कैं।।
कैधों राहु केतु जीत खेत मै पछारयो नभ तारे की बिथारयो रवितीर तीर तोर कै।।
देख यहि कौतक म्रिगिंद चंद चक्रित हुवै चित्र सोहुवै रह्यो न चलत ठौर छोर के ।।
याही ते घरा ली घर गयो सोझ घरी बोर मोगरी कौ तोर कै घरावल को फोरकै।
।।२७।।

पुन: कबित:कैधोमान आज मधुपान मै फसों अजान औंधे मुख पर योहो सहै चढ आने कों ।।
कैधो काहू बिरहिनि कराह झार झार सौगंध सौंजा रसातल निज आतस बुझाने को।।
याही ते म्रिगिंद चंद ताप लहै ताप बढी गाडी जरगई रह्यो ठौर न ठिकानो को।।
तौही तौ घराली जरयो जरयो कहि भागयो आली घरियार फौर छोर घरियार
खाने को ।।२७।।

कबित: देखो री संयोग की निसा मै ये पिसाच सब प्रानखान वारे होत सावधान सारेयेके ।।
कुकरा पुकार चौंकचौंक चौंकीदार परे पाकवे निवाजी पानी कान फोर डारेये ।।
आज या बियोग की निसा मै कहा सौ हि गहे स्वासन भरे री कहूं साप बीजमारेये ।।
घरी न घरावल नो मोगरी री आज कहूं फ रगहे हाथ घर गहे घरीयारे ये ।।२८।।

कबित: रोवती यों रैन आसू धोवती ऊ रोज दिन जोवती दिवस निस मारी भार भाकसी।।
सखी समझावती बंधावती अनिक धीर हरि सुमरावती है जाको ये मनाकसी ।।
कबहूं तो चित को खुसाल रख आलीवहि बिरह बदल कै बढावै छक छाकसी ।।
आयो वहि दिवस दयो तोवाकी दूर नहि देर बिन आपही ते बकस है जाकसी।।२६।।

कबित: जैसे सुन बैन सखीयान ते प्रवत नैन चित मेन चैन यों कहत ये री बावरी ।।
हुवै है जब हुवै है वा संयोग निसा भागन ते हाल या बियोग मै प्रभात तो मनावरी।।
बिथित बियोग कौ अराम सौन काम कछू प्रात जौ बचै गौ हुवैत सांझ को बचावरी।।
लावौंयानलावौं लेपनी कै मोहि जानपरी मिलै गौन क्यो हूं प्रेम पाव को धावरी ।।३०।।

कबित: निसा को संकेत कीयो प्यारे तौ पहार दिन हुवै गयो री दुखो सांझ होत ना हमारे भाग
जिन मोहि मारो है ऊठारो वही पयारी आलीयाते फले औरे ऊचारोनास कै गौलाग।
सुमन सदा नहीरे पहिले कहीरे मैतौ येरे मनभौरे सायौ बौरे ते ब्रिथा ही दाग।।
येरे दई दई तै निदान कौ अगारी आन ध्यान दै बचावती हैयोग मै बियोग आग।।३१।।

दोहरा: तरफत बीतत दिवस निस बदन भयो बदरंग ।।
अंग अंग बेढंग सब यही प्रेम के रंग ।।३२।।

चौपई: लखहु प्रेम की अकथ कहानी ।। जानत वहि जिहि सीस बिहानी ।।
ऊत वहि कुवर सु जगत प्रभाकर ।। पहुच्यो दुख ऊलंघ सुख के घर ।।
निस दिन निरपन बाग बिहारा ।। कमल मुखी कामनि संग प्यारा ।।
अति आनंद युत दुख न अंदेसा ।। निस दिन बिबिधि बिलास संदेसा ।।
इत यहि राज सुता दुख पागत ।। अंग अंग बिरहानल दागत ।।
दुख बियोग कंटक ऊरि खटकत ।। दरद कलेस ग्रस्त महि भटकत ।।
पै यहि बिरह बिथा दुख दाहन ।। हिय बिदार बड आह कराहन ।।
बिफल न जात अचल जिहि नेमा ।। अंत प्रेम महि यहि बड खेमा ।।३३।।

दोहरा: तरफतरफ कोकिल जबहि अति कर करत पुकार ।।
निसचय आवत तुरत तब बाग बसंत बहार ।।

चौपई: त्यों ही तपत हिये प्रेमिनि की ।। अतिसय बढ़त अचल नेमिनिकी ।।
तब प्रीतम करि प्रीति अपारा ।। क्रिपा करत दे दरस अधारा ।।
सुमरन आवत बिसर गइे को ।। ह्विया आकर रत बिब सम ह्वे को ।।
जौं कदाच वहि तरफ राय कर ।। तजय प्रान गम अधिक खाय कर ।।
तब वको प्रीतम तहि आई ।। तज़त प्रान नहि गहुर लगाई ।।
समथ हो इतिह तुरत जिवावत ।। नातर आपहु संग सिधावत ।।
हैं यहि अदभुत प्रेम प्रिथी पति ।। बिह्वबल करत दुहूं दिस की गति।।
कह लग याको बरनन करहों ।। कई ग्रंथ लिख पारन पर हों ।।३५।।

दोहरा: या पर इक इतिहास हूं हुतो बिसद बिस्तार ।।
करि सँखेप कछु कहित हौं ग्रथ बढन भय धार ।।३६।।

चौपई: कहूं हुतो इक बड बिवहारी ।। धनगुन निपुन सुदागर भारी ।।
सुता ससि बदन हुती तवन घर ।। जा सम र चीन रवनि अवनि पर ।।
तहि इक और सुदागर आयो ।। देस फिरंग भवन तिहि गायो ।।
निरख त्रिया छबि तिहि मति अटकी ।। भूल गयो सभ ही सुधि घटकी ।।
इक तिहि मीत आन समुझायो ।। प्रेम पंथ ते चहित हटायो ।।
अरे बावरे बहु दुख भरहैं ।। नारि प्रेम पावक पगु धरहैं ।।
यहि चपलावत चपल सुभावा ।। रवहि छिनिक महि अनिक बनावा ।।
बिख की मूल बेल फल फूला ।। होत न कबहु किसहि अनुकूला ।।३७।।

यथा दोहरा:

अहि बिखत न काटे चढै यहि चितवत चढ जाहि ।।
ग्यान ध्यान पुन प्रान हूं लेत मूल युत खाहि ।। ३८।।

चौपई: या पर तुहि इक कहौं कहानी ।। नारि निंद बपु परम पुरानी ।।
हुतो कहूं इक सुघर सुदागर ।। छेल सुवत सुंदर ताके घर ।।
पित आयस जहाज भर भारी ।। पग्यो सिंधु मग हित बिवहारी ।।
प्रभू माया प्रेरत तहि पवना ।। बह्यो आन कछु अदभुत गवना ।।
फट जहाज बूड्यो जल माही ।। बच्यो इक वहि बालक हाही ।।
काठ खंड पर बहत असारा ।। लग्यो कहूं जा देस मंझारा ।।

ऊतर तहां इक नगर निहारयो ।। सने सने चलत हि पगु धारयो ।।
सब भिभूत पूरन बरता महि ।। जीव मात्र की गंध न वा महि ।। ३६।।

दोहरा: भ्रमत भ्रमत भय भीत तहि लख्यौ बाग इक जाय ।।
ता महि इक तिय ससि मुखी लख रति रहत लजाय ।।४०।।

चौपई: ता सन मिल्यो ब्रिथा निज भाखी ।। ताहि कथा स्रवनन अभिलाखी ।।
तिया कह्यो मै राज कुमारी ।। यहि रजधानी सकल हमारी ।।
मुहि अखेट को हुतो सुभावा ।। सखीयन संगि खेल न को चावा ।।
इक दिन सागर तट हम खेलत ।। जाल मेल जल जीवन रेलत ।।
लख्यो इक बड बयाल भयंकर ।। सनमुख आवत जगत खयंकर ।।
मै कस बान ताक तिहि मारयो ।। लगत बान वहि अधिक भबकारयो ।।
बडो रूप धर बाहर आयो ।। सकल सखी गन गयो चबायो ।।
चढ तुरंग मै गई धवाई ।। ताके कोप जुवाल भय पाई ।।४१।।

दोहरा: इक ग्राम तब तिन कीये सकल नगरन नारि ।।
सैन सहित पित मात मम सहत सकल परवार ।।४२।।

चौपई: इक हौ बची किहूं करि जीवत ।। दुखियत घूट आंसू के पीवत ।।
अब तुम फसे कुठौर अजाना ।। भाग जाहु जौ चहीयत प्राना ।।
वहि जौहरी ठौर दिखरावत ।। तहि बैठ हिगो अब हि आवत ।।
यहि सुन तिन इक बुधि ऊपाई ।। खंदक खनी ठौर तहि जाई ।।
लै बरूद ता महि घर डारी ।। त्रिण बिछाय धरि करि हरि-यारी ।।
लाय पलीता दूर भवन महि ।। दुरयो जाहि लख बैठ घात तहि ।।
वहि तहि आय अचानक बैठयो ।। कोमल त्रिण लख परम अमैठयो ।।
तब इन पावक दयो लगाई ।। ऊठयो गगन छुटत हवाई ।।४३।।

दोहरा: हुवै निचिंत तिह नारि सौ प्रेम कीयो रुचिमान ।।
अनिक केल रस भोग किय सपत बरख परमान ।। ४४।।

चौपई: दवै सुत भइे सु परम अंनूपा ।। मनहु सुघर कवर किहु भूपा ।।
नारि पुरख तब मता मतायो ।। नगर बसावह यहि मन भायो ।।
चल्यो पिता पहि संग लवाई ।। तह ते आनहि लोग लुगाई ।।
तहि तखते पर चढे सु दंपति ।। इकह अंक बिरह ते कंपति ।।

तब तिय कह्यौ रसायन को बिल ।। रह्यौ भर्यौ वहि ले चाल मि मिल ।।
आवन करहि किनहि जदु राई ।। असन होहि वहि करते जाई ।।
पुरख कह्यौ तहि ल्याव सिताबी ।। तिय ऊतर तही भई खराबी ।।
बह्यौ पकन तख्ता वहि छूटौ ।। भावी बिबस बंदस बटूटौ ।।४५।।

दोहरा: इक सुकन वा ढिग रह्यौ इक बह्यौ या संग ।।
रुदन करत बिछुरे दुहू यही प्रेम के रंग ।। ४६।।

चौपई: वहि फिर गई सु नगर मझारी ।। यहि बहि चल्यौ सिंधु जलभारी ।।
इक जहाज मग महि मिल गयौ ।। तिन पछान ता महि वहि लयौ ।।
इक बरख महि पुहचे जाई ।। पिता संग वहि दये मिलाई ।। पूछ्यौ पिता बित
पूछ्यौ पिता बितीत प्रसंगा ।। तिनि कहि सकल सुनायो रंगा ।।
अदभुत गति लख स्री भगवाना ।। भयो चकित वहि हुतो सियाना ।।
तहा चलन हित गहि त्यारी ।। पिता ताहि सिखराकन धारी ।।
अरे बावरे तज यहि दावा ।। कामनि दामनि चपल सुभावा ।।
जाके गर लपटी अलबेली ।। भई तही की जिस तरु वेली ।।४७।।

यथा स्री गुरु मुख वाक :दोहरा:
चंचलानि के चरित को चीनि सकति नहि कोइ ।।
ब्रह्म बिसनु रुद्रादि सभ सुर सुर पति कोऊ होइ ।।४८।।

पुन: यथा: सुरमुनि नाग भूजंग सभ नर बपुरे किन माहि ।।
देव अदेव त्रियान के भेद पछानत नाही ।। ४६।।

चौपई: अंत त्रियन को किनू न पायो ।। बिधना सिरजि बहुरि पछतायो ।।
जिन यहि कीयो सगल संसारो ।। वहै पछानि भेद त्रिय हारो ।।
या बिधि के बहुर करे प्रमाना ।। प्रेम बिबस तिन इक न माना ।।
चढ जहाज तिहि ओर सिधायो ।। पिता मोह बस संगि ऊठ धायो ।।
पहुचे तहा लखी अदभुत गति ।। वहि सब नगर बसत सुंदर अति ।।
सैन कोस गढरथ गजबाजा ।। बडो कुलाहल राज समाजा ।।
चकित होहि पूछ्यौ किहु जन प्रति ।। किहि बिधि बसयो नगर अस अदभुत ।।
तिनहु कही इक नर बड सुंदर ।। प्रापति भयौ गुन नीति समुंदर ।।५०।।

दोहरा: राजसुता रुचि करि बरयौ तिन सभ करी संभार ।।
देस बसयौ सब सुख बढयौ राज करत रुचिधार ।।५१।।

चौपई: सुन तिहि पिता कही अबजानी ।। मेरी कही इक नहि मानी ।।
अबहूं हट छिह ते मति हीने ।। प्रान देहि मति मदन अधीने ।।
यहि सुन चकित चित्र सो ठाढो ।। ऊत मै तबहु कुलाहल बाढो ।।
राजसुता की चढी सवारी ।। आवत छिस ही ओर निहारी ।।
प्रेम बिबस यहि भपट अगारी ।। गही बाग असुर की सवारी ।।
बिनति करी बहुतै घिघियाओ ।। मै तव छित बहु कस्ट ऊठायो ।।
तिन करि कोप अस्व भिभकारयो ।। गई कुराय बुहुर निहारयो ।।
पिता अधिक तिहि करी धिक्कारा।। अज हूं हुट बच मान हमारा ।।५२।।

दोहरा: प्रेम बिबस मानी न तिन वहे सुक्न ले संग ।।
आगल दिन पुन तिसी बिधि पकरयौ आन तुरंग ।। ५३।।

चौपई: बार बार वहि बाल दिखयो ।। करी दीनता बचन सुनायो ।।
तिन करि कोप पकर तरवारा ।। करि दु टूक वहि बाल संघारा ।।
अस्व कुराय गवन मग कीनो ।। यहि तृफन्त गिर परयो अधीनो ।।
पिता ~~अनन~~ आन बहु बिधि समभायो ।। बाल देह लख रुदन करायो ।।
दुखित हो छिक रिति हस सकारा ।। कहयो समभ मति मंद गवारा ।।
अब तूं अपने प्रान गवावै ।। जौ ताके सनमुख पुन जावै ।।
प्रेम अधीन फिरयो नहि फेरे ।। बहुर भयो ताके वहि नेरे ।।
तिन तिहि पिता ओर लख भाखी ।। क्त यहि मरन हेत अभिलाखी ।।५४।।

दोहरा: तुम तौ जानत हौ सकल चंचलान की रीति ।।
छिति पति कमला कामनी कहो कवन के मीति ।।५५।।

चौपई: छाडत हों तव ओर निहारी ।। बहुरि द्रिसटि जिन परहु हमारी ।।
अस कहि अस्व फेर वहि गवनी ।। साची करी रीति जो रवनी ।।
हुवै निरास ये भवन पधारे ।। अदभुत तिय के लखे अखारे ।।
ताते तुम हि ऊचित नहि रीति ।। करहि नारि मन प्रीति प्रतीती ।।
तजहु बिअरथ बियोग बिथाको ।। यहै प्रयोजन कहन कथाको ।।
तिन भर स्वास कही यहि बानी ।। प्रान तजहु पर तजहु न ठानी ।।
वहि ऊठ अपने भवन पधारयो ।। छिन या मग बहुतै सिरसारयो ।।
तजे प्रान हू थकित निदाना ।। तन ऊठाय ले चले मसाना ।।५६।।

दोहरा: ताहि त्रिया के महल्ल तर निकरे जब तिहि त्याय ।।
कूद महल्ल ते वहि परी मिली मित्र संग जाय ।। ५७।।

चौपई: यही प्रेम की रीत पुरानी ।। दुहू ओर दुख देत निदानी ।।
पै यहि सकति प्रीति साच महि ।। प्रान प्रयंत प्रीति राची महि ।।
प्रेम प्रथ अति बिट दुहेला ।। है यहि सीस परे को खेला ।।
जब यहि साच प्रेम परखत है ।। तब प्रीतम को मन करखत है ।।
या पर स्री गुर बचन ऊचरही ।। काचे बिरही फफकर परही ।।
सहु पाई अै जब आप गवाईवै ।। ~~सूरज प्रभा जु राज~~ चतुराईन चतुर मत पाईवै।।
सूरज प्रभा जु राज दुलारी ।। परम पति ब्रत जग ऊजियारी ।।
बचन मात्र पर साच पछानी ।। बैठी परम बिरह दुख सानी ।। ५८।।

दोहरा: क मन बच क्रम छिक बचन पर किय तन मन कुरबान ।।
याते साची प्रति तिहि परम प्रेम की खान ।। ५६ ।।

स्वैया: जब आन निदान बनी संगि प्रान तौ यौ करती मनुहारन कौ ।।
बिन ये अवसेरी दिखाइ तेरी जु लगे सम भूमै ऊतारन कौ ।।
बिन आई बियोग तिहारे पिया तरफाई लगौ अब मारन कौ ।।
फरो बैठी पुकार तें जौ अपनी तब आइ सिराने पुकारन कौ ।।६०।।

स्वैया: दिन रात लगी टक दुवारन ओर रहै रख ना पै यहै कहनौ ।।
अरे भावन आवन केतन ध्यान मै दुवार पै कान लगौ रहनौ ।।
यहि भेद छिपावन को द्रिग मूंद परी मिसनींद लिये बहनौ ।।
घर बांधन को छिल केते गहे तुफ से यह बाग नही रहनौ ।।६१।।

स्वैया: अतिसै अवसेर मै द्रिस्टि घटी पुन प्रान लगे तरफावन को ।।
मन बयाकुलता करि बाढी बिथा दिन रात लगी कलपावन को ।।
टक बांधन के दिन दूर गहे यौ म्रिगिंद कहे निज भावन कौ ।।
अब दो दो घरी द्रिग बंद रहें न रह्यौ बलदेख दिखावन को ।।६२।।

दोहरा: जब या बिधि बस प्रेम के परी प्रान पर खेल ।।
तब ऊह दिसि मन चैचली प्रगटी सम मुख रेख ।। ६३ ।।

चौपई: स्री रवि प्रभा प्रति मन साची ।। जगत प्रभाकर के मन राची ।।
सभा ससि कला प्रेम अवस बर ।। जा लग तज्यौ सहत संपति घर ।।
सो प्रापति याको सुख निस दिन ।। नहि संसय बियोग दुख छिक छिन ।।
तदपि प्रीत साची महि यहिबल ।। बरबस अंचलें मन प्रबल ।।
सूरज प्रभा परम द्रिढ नेमा ।। बिफल न परत अंत यहि प्रेमा ।।
सुमरत ही मन परी बिचारा ।।~~क~~ तरफ गयी बियाकुल करि डारा ।।
आप बिरह दुख सम लख राखे ।। सहे सकल तिम परे पराखे ।।
प्रम जानै ताकी गति कैसी ।। करी बिरह मम मम गति जैसी ।। ६४।।

दोहरा: पल बिछुरी बिहबल परी जल सफरी की रीति ।।
बिरह तची हुवै है बची अबलग मुहि न प्रतीति ।। ६५।।

चौपई: अवध आस आस्रत करि डोरी ।। लिखत हौं छिगि चंद चकोरी ।।
हौ तहि सबब बचन करि आयो ।। बहौं कुमति अब ताहि भुलायो ।।
धिक सुख संपति बिबिधि बिलासा ।। बचन हार ~~करि~~ दुहु जग ऊपिहासा ।।
या बिधि मन बिचार करि नाना ।। भयौ अचैन भोग बिसराना ।।
या चिंता महि सभ सुख भूलो ।। नौतन सुमन बाग हिंय फूलो ।।
सभा ससि कला प्रति यहि बानी ।। कही बियोग दुसह रस सानी ।।
याते अधिक न बल मुझ माही ।। देस बिरह दुख दुस ह्स हांही ।।
आज न्रिपति ते बिदा सु चहहौं ।। निज ग्रह जाऊ सु आय सलह हो ।।६६।।

दोहरा: परम पतिब्रत वहि हुती धरम चारनी नारि ।।
पति आग्या प्रिय तियन को धरम रच्यौ करतार ।। ६७।।

चौपई: पिय आग्या वहि सरब काज पर ।। मुख मानती मन बच क्रम कर ।।
कह्यो पिया यहि भली बिचारी ।। करहु चलन हि बेग तियारी ।।
मुहि अभिलाख रहत यहि निस दिन ।। पूरन करहि कवन प्रभ तुम बिन ।।
करहि अखेट बिबिधि गिरि कानन ।। बिबिध केल क्रीड़ित सुख प्रानन ।।
नित नौतन धर लखहु सुहावन ।। सरिता सुभग सरोवर पावन ।।
नहे नहे देस्न अविरेखहि ।। नित नौतन कौतुक भल लेखहि ।।
याते और भली नहि बाता ।। दरस करहु चल निज पित माता ।।
सास ससुर पद सीस छुहावौ ।। आदर लहि कुल बधू कहावहु ।।६८।।

दोहरा: मुहि मनहूं अभिलाख अति लख हु सासुरे धाम ।।
ताते चलहु बिलंब तज याते भलो न काम ।।६६।।

चौपई: गयो सभा महि राजकुमारा ।। यथा होत नित को बिवहारा ।।
अवसर लह प्रसंग लख बानी ।। कही बिनीत प्रीति रस सानी ।।
मो पर परम अनुग्रह कीनो ।। दास जान अपनो कर लीनो ।।
सफल करे मम सकल मनोरथ ।। रावर गुन किहि भांति सकहु कथ ।।
यहै आह अब मुहि अभिलाखा ।। क्रिपा करहु तब सुलभ परांखा ।।
पिता मात मुहि बिरह दुखित अति ।। नहि जानत तहि भई कवन गति ।।
बिदा करहु तब धाम सिधारहु ।। जननी जनिक चरन सिर धरहु ।।
रावर ज सु म्रिदु सील सुभाई ।। करहु जाहि निज मुख बडिआई ।। ७०।।

दोहरा: सुनत न्रिपति लोचन भरे लीनो ऊरध ऊसास ।।
दुखित होहि मुरफाय मुख या बिधि कीन प्रकास ।।७१।।

चौपई: कस बच स्रवन हि बज्र कठोरा ।। सुनत ह्यिो आवत मुख औरा ।।
अहो प्रा प्रिय पुत्र सुजाना ।। सह न सकत दुख तव बिछराना ।।
कवन भात तुहि बिदा करावो ।। हठ जु करहु संगि प्रान पठावो ।।
जो अखेट आदि करु चिर भारी ।। बन बिहार गिर लखन खिलारी ।।
रंम्य देस हमरो यहि पावन ।। गिरि कानन धरनी मन भावन ।।
सैन कोस बाहन गज बाजा ।। अनिक भांत सभ राज समाजा ।।
सभ संभारनिज रुचि अनुसारा ।। जहा चाहो तहि करहु बिहारा ।।
चनत चलन की मति न चलावहु ।। द्रिगन औट कीने नहि भावहु ।।७२।।

दोहरा: जगत प्रभाकर बचन सुन बिनति करी करि जोर ।।
बिनय नीति युत म्रिदुल पुन बंदत कर तनि होर ।। ७३।।

चौपई: न्रिप सरदूल सुनहु मन लाई ।। दास जान बड छमाक राही ।।
इिक संमति प्रयंत यहि दासा ।। सेवा करी पद पंकज पासा ।।
इितो हेत निज जान करत हो ।। सभ बिभूति सुख संग भरत हो ।।
तन मन धन कछु भेद न राख्यो ।। यथा तथा मुहि सुख अभिलाख्यो ।।
वहि जो मात पिताह हि दास के ।। अभिलाखी हुवे पुत्र आस के ।।
लाख लाख गुरु पीर मनाहे ।। यतन करोर कस्ट बड पाहे ।।
दिवस निसा इिक सार पछानी ।। छोड़ सबर रस धूल बहु छानी ।।

पालन कर्यो मोह धर आसा ।। ऊचित कीये किह भाव निरासा ।। ७४।।

दोहरा: प्रेम बिबस बिन ही बिदा पर्यो पंथ ग्रह त्याग ।।
तुमरी क्रिपा बरते भयो क्रित्य क्रित्य बड भाग ।। ७५।।

चौपई: अब बहु काली बित्यौ नर राई ।। ऊन प्रति मुहि सुधि रंच न पाई ।।
मम बियोग बस दुखित घनेरे ।। तजे होहि सुख सब जग केरे ।।
जियत किधौ तन किय परि हारा ।। नहि कछु मोहि तिनहु की सारा ।।
तुम धर मग्य नीति बिधि ग्यानी ।। न्याव सहित ह्यि लखहु पछानी ।।
कितो कु दुखितन को निह पारा ।। हुवै है ह्यि निज करहु बिचारा ।।
जो केवल निज सुख अभिलाखी ।। जग असार सुख बिखियन काखी ।।
तात मात को दुखित छोर करि ।। आपु सुखी रहि मुखहि मोर करि ।।
मानवता ते दूर पछानो ।। अर पुन ताहि कुपूत प्रमानो ।।७६।।

दोहरा: बिनति करहु याते प्रगट यहै आस मन धार ।।
हर तज आयस दीजीहै मन धर धीर बिचार ।। ७७।।

चौपई: जो जीवन कछु अधिक दास को ।। हुवै है पूरन करन आस को ।।
यहि संसार सुपन को देसा ।। पलक फुरत मै होत अमेसा ।।
नहि थिरता याकी जानत बुध ।। होत छिनक महि कछु को कछु सुधक ।।
आपत काम कोऊ नहि याते ।। जावत लखे सकल बिललाते ।।
पै जो कछु दिन जीवन पाई ।। पुन आवहु कछु काल बिताई ।।
आन दुवार पर सीस झुकावहु ।। दुहु जग की बडिआई घावहु ।।
अर जौ अब मुहि जान न देहो ।। बहुर दास को जीय तन पैहो ।।
तात मात दुख चिंता माही ।। घट घट प्रान छूट अब जाही ।। ७८।।

दोहरा: धरम हान ते जानीहै बिगर जाय परलोक ।।
या जग महि ऊपहास सब करहि ब्रिंद जन थोक ।।७९।।

चौपई: प्रभू दरबार होहि मुख कारा ।। पा मर कहहि सकल संसारा ।।
यहि बिनती मम ह्रिदै बिचारहु ।।। बिदा करहु करि क्रिपा निहारहु ।।
न्रिप समझो अब यहि नर हैगो ।। हठ राखे दुख देह दहैगो ।।
नैन नीर भर गिरा ऊचारी ।। भलै पुत्र जस मनशा धारी ।।
जा बिधि ~~किम नेमक~~ छिछा प्री भगवाना ।। आपहि अब बनाका बाना ।।
जो तव बचन कहे सब साचे ।। कूर कपट छल बिन मन राचे ।।

इक मास दस दिवस प्रमाना ।। ठहरहु करहि पयान समाना ।।
कहि प्रणाम सिर आय सधारी ।। गयो भवन तब कवर बिचारी ।। ८१।।

दोहरा: यहि चरचा सभ नगर महि फैल परी ~~नैक~~ इक बार ।।
बीथी बगर बजार मिल सोचत है नर नार ।। ८२।।

कबित: याही ते याछित को निवास छलरूप सदा दामिनी छटा सो छई ब्रिछन की छामिनी।।
मगको मिलावन दीनाव को सोयोग कै संयोग को दिवस सुख जोबन की जामनी ।।
ओस कोसो मोती जोती सांझ समै सूर कीसी संपति सुपन की म्रिगिंद ज्यों सुहामनी ।।
कामनी की बात जलजात मात जल बिंदु फूलका न तोरीहै सदा नरित सामनी।।८३।

दोहरा: राजकवर के चलन की सुनी सकल नर नारि ।।
राज भवन रणवास सभ कलपत बिकल असार ।। ८३।।

सब अब आगे सु पयान को बरनन करहु प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो अस्टम तरल तरंग ।। ८४।।

इती स्री प्रेम पयो निधि ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीति प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदिन बिरचिते सूरज प्रभा को बिरह बिकलता राज कवर को पयान चिंतन बरनंन अस्टमो तरंग ।।८।।

कबित: और और भौरन मै भ्रम बोहै सांझ भोर भौ निधि नाइक तौर रहबेकी ठौर है।।
कौन बिसवासो इंद्र जाल को तमासो जैसे पानी मै फासो पल पल घुर तौर है ।।
गुरु गुबिंद सिंघ जू की ओट लै म्रिगिंद जाते फोर भवसागर की भौर कौन भौर है।।
देखो करि गौर सभै भीति कीसी दौर इेक अचल अडोर सिरमौर यही पौर है।।१।।

दोहरा: स्री गुरु चरन सरोज रज सज अंजन द्रिग कंज ।।
प्रेम पयोनिधि रस कथा बरनत हौ बरमंजु ।।२।।

स्वैया: चलरे अबलेखनि के बरबाज चला काथि राकते पाक है तूं ।।
अब बैठे हुहे बहु बेर भई क्यो करी जीय को गमनाक है तूं ।।
जब बैठने की जग ठौर नही रह्यो बैठ भला कहा खाक है तूं ।।
हर स्वास मुसाफरी है सबको छ्क्यो ओस की बूंद के छाक है तूं ।।३।।

स्वैया: जगहूं यहि इेक बचित्र बडो यम धाम के पंथ को धाम है ये ।।
नहि बैठयो कोऊ निचलो हुवै यहा छिनकोसो बसेरो अराम है ये ।।
निज बंधुप मीत सखा खल सो करै दूर सदा बदनाम है ये ।।
सुचलाचल की धूम धाम मर हैन अराम मुकाम कौ काम है ये ।।४।।

चौपई: गुपत दोस पथ के जि पथिक बर ।। बिचरन हार मुल्क बरनन कर ।।
बैन बिहार बिन खरच खजाने ।। प्रेम भरा निज सिर ठहराने ।।
प्रेम पंथ निस दिन जे चलई ।। सुधि बुधि हारन पन ते टलई ।।
पंथ परत बिनई अवगानी ।। सदा याद प्रीतम मनभानी ।।
दुहु लोकन सुख दयो भुलाई ।। केवल दुख पग पग संग लाई ।।
आह कराह मीत निस दिन को ।। चितवन मीत प्रीतम हि जिनको ।।
ते या बिधि यहि लिखत प्रसंगा ।। जब वहि राजकुमार सुरंगा ।।
चलन हार प्रीतम दिसि हुवै कर ।। प्रेमिन को सुभाव मन लै कर ।।५।।

दोहरा: सवा मास तिहि ठार ह्यो सवाकलप समान ।।
या महि भयो तयार सभ जो प्रस्थान समान ।। ६।।

चौपई: थिति समाधि जनु राजकुमारा ।। प्रान प्रेम गति दसम दुआरा ।।
चाली दिवस बैठ किय पूरन ।। प्राच चलहगो ऊठ अब तूरन ।।
यहि लख न्रिपति समेत प्रधाना ।। सांझ हि ते अति मन अकुलाना ।।
पह फाटत सभ ~~हा~~ फारथ सन निज ।। चलत भयो ऊठ बिरह दुखित खिज ।।
दोय कोस मग सीस सिखर गिर ।। देखन हित जा भयो तहा थिर ।।

निज मंत्री मतिवान निहारी ।। ता प्रति आग्या दीन पुकारी ।।
बिदा करहु तुम सहत समाना ।। हम हित बैठे लखह पयाना ।।
परी नगर महि यहि सम सारा ।। आज चलहिगो राजकुमारा ।।७।।

दोहरा: बाल ब्रिध नर नारि लग दुतीय ओर गिर सीस ।।
देखन हित बैठे सकल बिआकुल बिसवे बीस ।। ८ ।।

चौपई: जगत प्रभाकर ऊदित प्रभाकर ।। ऊठयो करत सुमरन मुख करहरि ।।
नित्य क्रिया कर ऊबट अनायो ।। चढयो सु गज गज बदन मनायो ।।
बाज उठे गह गहे निसाना ।। धुनि पंच तूरन परत बखाना ।।
न्रिप सम सार दीन हर कारन ।। लग्यो भूप मग ओर निहारन ।।
ऊतर विरस मिनर मकछु नि सरी ।। छित सज सैन सुपंथ प्रविसरी ।।
कई सहस बरस जित पदाता ।। पांत जोर जनु चलत बराता ।।
तिह पाछे बर तोप अपारा ।। जिन सी करम नार घुर नारा ।।
तिहि पाछे बरस जित ग छिंदा ।। दुवदस सहस सघन घन बिंदा ।।६।।

दोहरा: कनिक अंबारी जग मगत हौ दज जटत जराऊ ।।
लख अमरापति भूल ही ऐरा पति को चाऊ ।। १०।।

चौपई: सहस किधौ दुवादस सत दंती ।। परम मोत जो ऐंथर पंती ।।
फरत कुंभि मद अंभु चु चाते ।। गुंजत चलत गरबर समाते ।।
गंड स्थल पर भ्रमर गुंजारत ।। बार बार मदमत चिंघारत ।।
फटकत सुंडभ सुंडीरन कत ।। कनक रजत संकर पग खनकत ।।
फूलेंक सीस जत जर कसी ।। रेसम दामर सी रस मसी ।।
कनिक जटित है कल गल ठनकत ।। क्षुद्र घंटिका सों मिल छनकत ।।
जरीकार गज गाह रही पर ।। ऐरावति पति जात निरख डर ।।
भूखन बसन सजे सु महावत ।। पाग अनूप बंधी छब पावत ।।११।।

दोहरा: पेस क बज जम धर किधौं लगे फेट बर ऐंठ ।।
कर कंचन गज बाग धर आसन बैठ अमैठ ।।१२।।

चौपई: दुवै बूड़ी बरदार बराबर ।। छिक गिरास कट दंड पानि बर ।।
दुवै दुवै कुंत पानि बड सूरे ।। सांट मार प्रेरक बड रूरे ।।
बिब असवार बाज बलवाना ।। छूलत चलहि पचारत नाना ।।

कई लच्छ पुन बाज अरूढ़ा ।। चलहि बिलगु गजते गुन गूढ़ा ।।
नख सिख सस्त्र अस्त्र महि जड़े ।। सबल सूर नव जोबन चड़े ।।
अस भीजत सुंदर बर आनन ।। जोबन दिन मानत किहु कानन ।।
जिरह संजोय खोल सिर सोहत ।। दछन बाम लोह कर रोहत ।।
ढ्रिदै पीठ पर चार आछिने ।। छिन छिन प्रितहि करत माछिने ।।१३।।

दोहरा: दसताने दुहु हाथ महि चढे पुलादी रंग ।।
जंग रंग दमकत बदन सदा जंग को ढंग ।। १४।।

चौपई: छिक कर वार जीन महि घसी ।। दुती कंट घर कट सो कसी ।।
जुगलत मचे कसे कमर महि ।। सूरबीर अनिदस मर महि ।।
जम धर कटि महि किधों करौली ।। रचित पीठ पर सिपरस जौली ।।
कर महि कुंत बात सम तीखी ।। मनहु मत सदी की गति सीखी ।।
किधो केसरी गुंजत बन माहि ।। अरि गज मत्त बिदार तन महि ।।
बार बार मुख मूछ मरोरत ।। निज महि नोक चोक कुछु छोरत ।।
सुभग सु चाल सुहावन बाजा ।। जिन लख काल बाज मन लाजा ।।
अब लग चाल बिसर नहि आई ।। छिचल बिचल पग परत सदाई ।।१५।।

दोहरा: लखन हार अस कहत है यहि जंगमम जग बाग ।।
पूल रह्यो बहुरंग फल यो जात चल्यो बड भाग ।।१६।।

चौपई: दुहूं ओर रच पांत बनाई ।। पट भूखन आयुध चमकाई ।।
अस्व कुदावत जुबन दिखावत ।। चले जात निज महि बतरावत ।।
करभ सवार अहे तिन पाछे ।। बारह सै सम का छन काछे ।।
बसन बसंती अंग बनाहे ।। अरुन पाग सब सीस बंधाहे ।।
असत्र सस्त्र बर अंग सुहावत ।। आगे बढे मुहार ऊठावत ।।
रात रात पंचा सत योजन ।। नाख जाहि हि सीघ्र प्रयोजन ।।
काल चक्र को कर भजि नहि लख ।। बिललावत अजहूं खिआनख ।।
नाख गहे जब न्रिपति द्रिस्टि तर ।। तब आहे कोतल सु बाज बर ।।१७।।

दोहरा: अरबी तुरकी ता जीहे यमनी और इराक ।।
कई काठीयावार के दखनी दोसन पाक ।। १८।।

चौपई: अस बर बाज अलौकिक नाना ।। सभ पर सजे कनक बर बाना ।।
दिवस निसा को जो बर बाजी ।। द्रिस्टन लखे हो हि अस ताजी ।।
हडा मूत्रा नहि रस पग मैं ।। डंक ऊजार ब्रै बजो जग मैं ।।
नहि खूंटी ऊखार दोख भन ।। नहि सांपन भौरी नहि नागन ।।
अकरब अर जलनहि निस अंग ।। नहि मुहि जौर नक मुखर बंध ।। ~~नहि कम चाल~~
नहि कम चालन हसरीफ मगं ।। नहि खोटा कहूं बागन प्रमंग ।।
कुह नै लंगन छाती बंग ।। सभ तन ऊसतित ही को रंग ।।
जीन किस हि पर कैचर जामा ।। कोऊ गरदनी सजि तल लामा ।।१६।।
दोहरा: कनिक जटित गंडा पटासा खत सजित सुरंग ।।
पूजी परम सुहावनी मानिक लगे अभंग ।।२०।।
चौपई: कलगी लगी सीस पर राजत ।। पाखर परी जर कसी साजत ।।
गाम दुगाम कोऊ सह गामा ।। कोऊ रहवार दुलकि अभिरामा ।।
करत ऊलेलन कुक्त पग धरनी ।। नहि बिसास तन की तिन करनी ।।
चरवादार चवर लै ढोरत ।। कोऊ तिवाई लै संग डोरत ।।
काग डोर रेसम बर डोरै ।। ~~लह~~ लीहू जात सेवक चहु ओरैं ।।
पुन पाछे बुहुलीहे निसाना ।। करभन पर दुंदभि घहराना ।।
माहिम राव ब सूरज मुखी ।। सिंघ सरप मुखि की बडरुखी ।।
राज समाज बिजय को दावन ।। तेज प्रताप सु जस जग छावन ।।
नौबत रनक झांझकी झनकन ।। धुनि कर नाह्नि फीरी खनकन ।।
भैरों अर बिभास आलापन ।। सहनाई के सुर मर थापुन ।। २१।।
दोहरा: बढो बचो की बोलीयां देतन कीब पुकार ।।
इक ओर कर कनक की छरी लीहे छरिदार ।।२२।।
चौपई: अदभुत समय लखन की लायक ।। सभ जन बंधे प्रेम के पायक ।।
ह्विक दिस दुंदभ घुरत अपारा ।। सुथरी करि कर भीनण कारा ।।
धुनि पंचुतूय- गमन नभ पूरन ।। कान लाग धुनि परत न तूरन ।।
ह्विक दिस बालक पुंज नगर के ।। कौतक ह्वित जुर चलत डगर के ।।
कहलब जंत्रिन प्रति बहु टेरी ।। चलहु बजावत सभ बिनु देरी ।।
यथा किसू कवि को यहि बचना ।। या अवसर लागत बड रचना ।।
मनहु सूर ससि छरी दार दुवै ।। निज प्रकास बर छरी पानि हुवै ।।

कहत गगन पर अदब करहु रे ।। निज पचाय बिलगाय चलहु रे ।।२३ ।।

दोहरा: पुन सिकार की सौज लै आइ मीर सिकार ।।
बली बाजबाजू प्रबल रखत चोंच नख सार ।।२४।।

चौपई: बहरी बासे अरसा होन ।। पुन ऊकाबन ख चोच रंगीन ।।
इक बार जो करते छूटे ।। खेचर नामन ऊन ते छूटे ।।
सबल स्वान गंघ म्रिग पावें ।। छपे सिकारन पकर उठावे ।।
चीते सबल बचित्रत चीते ।। सदा सत्र की अपजय चीते ।।
किधो रकत दुरजन को पीते ।। नावत म्रिग जो तिख सिर बीते ।।
स्याम स्रवन कितन क बलवाना ।। मिरन हार म्रिग कौतक नाना ।।
तिन पाछे कई सहस मास की ।। करत नदी सम रीस तास की ।।
चले जात मग को छिरकावत ।। जन साकन को घन फरलावत ।। २५।।

दोहरा: बँधे खारवे कमर पर फंडी सजत सिकंघ ।।
जरी बादले की बनी सराबोर सुभ गंघ ।।२६।।

चौपई: मसके मुसक बेद को नीरा ।। भरी केवरे सम गंभीरा ।।
मुख पर लगे हजारे सोहत ।। सींच सुगंध सुरन मन मोहत ।।
कई सहस सेवा बरखारा ।। बसन बाद ले के सजवारा ।।
कुंडल कटिक जटत हीरन के ।। सकल खान गुनतदबीरन के ।।
कनक अंगीठी कर मह दहकत ।। अगर तगर अंबर महि महकत ।।
बन महियो जन कई प्रयंता ।। भयो सुगंध सहत मह कंता ।।
दोहि सहंस फनूस बिलोरी ।। करत प्रकास चलत हिक ठोरी ।।
बाती दिपति मैन घन सारा ।। होत सुगंधत पंथ ऊजारा ।।२७।।

दोहरा: कमल बदन सोभा सदन मनहु मदन अव तंस ।।
कछुक बढे जोबन चढ़े कढे चाल गति हंस ।। २८ ।।

चौपई: तब कलकंठन कीब पुकारे ।। ऊत महि होन लगी भुन सारे ।।
सूक्ष परन लग करि पसरायो ।। कवि कौतक लख देहु लसायो ।।
प्राची दिस की खोलद रोंची ।। लागी लखन डीठ करि नीची ।।
ऊत महि फूल प्रात पवन को ।। छित पयान ऊमगान गवन को ।।
फल मिलाय दीपन को बलतो ।। मुख ऊदास चाहत जन टलतो ।।
मंद मंद ऊत गवन सवारी ।। छित गिरवर प्रखग फनकारी ।।

पस पसु पंछी सभ ऊठत प्रभाता ।। गान करत जस त्रिभुवन ताता ।।
लह लहान ऊतहरि तरोवर ।। खिरनो अनिक अ रंग फूलन वर ।।२६।।
दोहरा: ऊत सीतल मस कान के मिल सुगंध छिरकान ।।
ऊतफनकारन खगन को दहन बियोगिनि प्रान ।।३०।।
चौपई: ऊत नख तेसन खित लै संगा ।। छपत जावनो जानकु संगा ।।
ऊत रवि रसमि नस नै प्रचारा ।। होत जावनो जग ऊजिआरा ।।
सुमन सुगंध चहूं दिस छावन ।। ऊत निरफर सीतल बह पावत ।।
नगर निवासन की छित भीरा ।। सभकी द्रिस्टि गिरोवर तीरा ।।
कबहूं लखन गिर बाग बहारा ।। कबहुं भीर बहु जन पर वारा ।।
चला चली ऊत बहु पथिकन की ।। ऊत न्रिप नैन नीर फलकन की ।।
छित प्रभ की यहि प्रिस्टि सु सारी ।। चिंतमान नैनन जल ढारी ।।
कोऊ सवार कोऊ निज पायन ।। नैन नीर सिंचित हिय घायन ।।३१।।
दोहरा: अदभुत कौतक समय को निरखत हे अकुलाय ।।
तिह अवसर नरयान गन प्रगटो छिक समुदाय ।। ३२।।
चौपई: कंचुक कीम खाबी तब धारे ।। गुजराती मसरू सलवारें ।।
इंद्र प्रस्थ की पनही पायन ।। अरुन पाग सिर रचित सुभायन।।
चढे गिलाफ बनाती सोहत ।। खासे निरख अमर मन मोहत ।।
रज निवार मनमल के सुंबर ।। संग पायक संग्राम समुंदर ।।
कमर जर कसी कटित बाधे ।। कनिक रचित कर बोनें काधे ।।
सेरे बचे कर थड रचे ।। जिन आगे पल सैन न बचे ।।
जटित कार कर कुंत अपारा ।। धनुख बान धारी निह पारा ।।
वजहु जिन की निसचित नीकि ।। चलत लखावत साहस जीकी ।।३३।।
दोहरा: चहू ओर बेस्टा कीहे जगत प्रभाकर पास ।।
बीच बाज आ छढ वहि धर दिन राज प्रकास ।। ३४ ।।
चौपई: सभा ससकला को सुखपाला ।। संग संग बर रंग निराला ।।
पांच सतक पुन सहस किधो बर ।। परी किंनरी सी सुंदर बर ।।
ता सुख पाल ऊठावन हारी ।। प्रिय द्रसन ससि बदनिक हारी ।।
खोड़ सबर सब हि क्रम बाला ।। छायो जु बन मराल निचाला ।।
जरी कार अतल सकैलहगे ।। डाक सितारे रचित सुमहगे ।।

मलमल बनारसी ऊचौंनी ।। गंधक रंग कुरती है लौंनी ।।
तंग अंगिया रंग कासनी ।। मखमल की गादी सुखासनी ।।
लीयें सिकंध केऊ सुखपाला ।। चहुं और परिवारित बाला ।।३५।।

दोहरा: कर कोमल बर कनक के कटिक जराऊ लाल ।।
पायन कंचन के छरे फनकत चाल मराल ।।३६।।

चौपई: स्रवन सुहावन मुक्ताबाली ।। रूप जु बनके मद मतवाली ।।
काहू कोऊ अति कोमल करना ।। मुक्ता मारस हारन परना ।।
ताको भाऊ रूप बाजारा ।। दुगन भयो महगी तिहि बारा ।।
कर कटा छति हि स्रवन संभालन ।। त्यौर चढाय सिसकती चालन ।।
नाक सकोर सनै पग धारन ।। कर कटाछ ऊभकन भिभि कारन ।।
लखनहार ही वहि सुख जाने ।। किहूं भांत नहि परत बखाने ।।
कई सतक खोजे संग दौरन ।। महली अदभुत नौतन तौरन ।।
कोऊ नस कटाको जस नैना ।। तुरक नैन कोऊ सुख देना ।। ३७।।

दोहरा: महलन की सेवा निपुन तिन महि बे सरदार ।।
सतर सवार तरह तनित अस्वति के असवार ।।३८।।

चौपई: याबिधि बडे प्रताप समेता ।। जिलौ सवारी की अगनेता ।।
साज बाज बड धूम धाम सों ।। जीत चढे जनु रूम सामसो ।।
पहुचे आन न्रिपति के तीरा ।। दुखित ब मत मुख सरदस मीरा ।।
कवर निहारयो न्रिपतिंहि बेरी ।। मम बिछुरन मन सोच घनेरी ।।
द्रिग निरफर ते अरुन प्रवाहा ।। बहुत लख्यो बड अगम अथाहा ।।
हिचकी थकीन रुकत रुकाई ।। बिआकुलता सभ अंगन छाई ।।
अस ते ऊतर सीघ्र पग परियो ।। नैन निवाय बिनहि बहु करयो ।।
भूपति आन दीन तिहि बेरी ।। निकट न आऊ मोहि छिहि बेरी ।।३९।।

दोहरा: बिना मिले ही सीघ्र अब करहुत करहु पयान ।।
जान तरव असपयान महि प्यान चहित किय प्रान ।।४०।।

चौपई: असमय जान कवर मन थिरकर ।। कर प्रनाम चढ तुरत बाज पर ।।
ऊत मुख फेर स्रवत जल नयना ।। अस्व बढायो होय अचयना ।।
जौनर नारि भूंड तहि आयो ।। लोचन हियों जियो भर आयो ।।

पुनि मन निप को तहि रुदन कलापा ।। कका निरख थिर राखय आपा ।।
सभा सस्किला को कर लाला ।। मात पिता के गर लपटाना ।।
ह्यि लपटावन बाल सहेली ।। अति प्रीतम जिन सो मिल खेली ।।
तिन सभ को अति रुदन पुकारन ।। लखत होत है ह्यिो बिदारन ।।
रुदित पुकारत सभ रणवासा ।। मात पिता मन अधिक तरासा ।। ४१।।

दोहरा: मोह ऊपज बिआकुल महा सुता कंठ लपटाय ।।
करत बिलाप बिहाल अति नैन नीर महनाहि ।। ४२।।

चौपई: बिधि कत नारि रची भव माही ।। पराधीन सुपने सुख नाही ।।
जन मन मात पिता बस चारी ।। जोबन महि पति के अनुसारी ।।
ब्रिध भइ संतति आधीना ।। यह सदा मग नहि नवीना ।।
अस करना करि मन पछताईं ।। असमय जान मनहि ठहराईं ।।
सभा ससकला पुन गर मेली ।। बिदा कीन सम प्रान दुहेली ।।
अनिक भांत दै सिख समझाईं ।। कुल नारिन की रीत जताईं ।।
सदा सु धरम पंथ द्रिड़ चलीय हु ।। पति ~~बन~~ उपदिस्टन पथ ते टलीय हु ।।
जस ससुर आगया सिर धारी ।। करीय हु सेव सु हित चित धारी ।।४३।।

दोहरा: जगतप्रभाकर ओर लख बिनति करी करि जोर ।।
सेवा हित दासी दई बोलत कर तनि होर ।।४४।।

चौपई: तुम हि ऊचित या मान राखनो ।। कबहू न अनुचित बचन माखनो ।।
तुम करि सौंपी हम यहि ताता ।। तुम प्रभ को सौंपि बिख्यात ।।
जाहु सुखद अब पीठ दिखाइ ।। पुन सुख सोहरि मुख दिखराइ ।।
याबिधि कहि बिनीति युत बयना ।। बिदा कीये सरवत जल नयना ।।
जब ऊत को ऊन की पयाना ।। नगर निवासी सभ बिलखाना ।।
सभाससि कला बिन रजधानी ।। जनु बिभूत सभ आज बिकानी ।।
यथा ससि बिना निस अंधियारी ।। सभा ससकला बिन रजवारी ।।
छिन के मग को बिबिधि कलेसा ।। सदा बिपद जहि सुख नहि लेसा ।।४५।।

दोहरा: बहुत दिवस लग सुमर करि नित नौतन दुख होहि ।।
या बिध करत प्रलाप जन मोह बिबस मति ~~सम~~ मोहि ।। ४६ ।।

चौपई: लखन हार यह करत बखाना ।। कई स्त कर नर नारि दिवाना ।।
बिनही कहे सुने तिहि बारा ।। चले संग ही तज घर बारा ।।
मग दुख सह्न भले करि माने ।। ग्रिह तज संग चले बिलखाने ।।
तिह पाछे खट सतक पालकी ।। किधौं सपत स्त सह्त नालकी ।।
भांत भांत बर बने चंडोला ।। लखत लजत ह्वै स्वरग हिंडोला ।।
राज सुता की सजनि सहेली ।। तिन महि चढी सदा संग खेली ।।
सुता अमीर वजीरन की सभ ।। परम कुमार सुरन कहु दुरलभ ।।
चार सतक सियंदन तिह पाछे ।। भरे सभै लखीयन के आछे ।। ४७।।

दोहरा: अस्ट जाम ढिग रह्त जे सेवा महि सविधान ।।
रचन हार स्रिंगार बर खान पान छिस नान ।। ४८।।

चौपई: तीन सतक मियाना बड सोह्त ।। लखन हार के मनको मोह्त ।।
तिन महि दासी चढी अपारा ।। परम सुघर सेवक दरबारा ।।
तिन पाछे बर बहल नवीना ।। इक सहस संख्या तिहि पीना ।।
तिन महि चढी धाई खिलवाई ।। अधिकारिनि महलन सुखदाई ।।
ब्रिधा अवसथा परम सियानी ।। नीतिसिंधु मथ करि जनु आनी ।।
बली बरद जिन लगे नगौरी ।। सूक्त चलहि छिंचा छिन कौरी ।।
लिख पड़त क्रित करने वारी ।। अंतह पुर की सेवा दारी ।।
पांत बांध आगे जब भई ।। बहुर पांत स्वस्ट न कछि आई ।। ४९।।

दोहरा: कई सह पुन कर मग जलदे अनिक समान ।।
तंबू पल घसरय चे असन बसन परिमान ।। ५०।।

चौपई: प्रात काल ते सायिं लौं सब ।। लग्यो बडी भीर मग महि तब ।।
रजत कनिक मुद्रका अधारा ।। मग बासी जिन को अधिकारा ।।
सुघु बिप्र कवि को विद ग्यानी ।। तिन प्रति सेव की न मन भानी ।।
देव स्थान तीरथ घर मालया ।। ठाकुर दुवारे सुभग सिवालया ।।
निज कुल देव नगर के देवा।। पूजन कीछे सकल बुहु मेवा ।।
धनवत धन बरखा अस धारी ।। भई मुकत पति जनम भिखारी ।।
बिबिधि भांत पकवान मिठाई ।। सकल कटक महि अस बरताई ।।
ब्रिख भर कभार सभगज बाजी ।। भच्छन कर न सकै बड भाजी ।। ५१।।

दोहरा: मेवा बिबिधि प्रकार को बच त्यों सैन मझार ।।
खाय सके नहि चक सके देयो अधिक महि डार ।।५२।।

चौपई: तिन ते जनमे अधिक कुहारे ।। मढ़े सघन बन अब तहि मारे ।।
न्रिप ग्रह गयो ऊदास मन अति ।। नगर निवासी फिरे सुबिल पति ।।
मनहु नगर सम थयो ऊजारा ।। दीप रहत हटतार बजारा ।।
राजसुता हित सम मन सोचत ।। सम रणवास नैन जल मोचत ।।
थकित परे सम लोग लुगाई ।। हाट बाट सम जड़ी जड़ाई ।।
राज सुता पुन जगत प्रभाकर ।। तिन के बिरह दुखत नारी नर ।।
दुवार बंद ग्रिह बैठा बिचारत ।। वहै प्रसंग सकल ऊचारत ।।
दोतन जौं हिक ठौर कहूं हैं ।। दुख प्रसंग वहि कथित दुहूं है ।। ५३ ।।

दोहरा: कोऊ नीद बस स्वै रह्यो जागत सो चुपचान ।।
सकल नगर बियाकुल बिथित दगर बगर सुनसान ।। ५४।।

चौपई: न्रिप को दुगुन दरद दिल अंदर ।। पीत बदन पैठयो निज मंदर ।।
तह हूं बाल ब्रिधि नर नारी ।। बिलख बदन देखे दुखियारी ।।
वहि पियारी बर राज दुलारी ।। सम की हुती प्रान ते प्यारी ।।
तास बिरह महि बियाकुल परी ।। तरफत जाल बंधी सफरी ।।
यूसफ फिरह भाकसी महि निज ।। परी दुखनि के बंद सकल निज ।।
पै जो राम सुता की जननी ।। ता पर बिथा परी अन गननी ।।
~~मनहुस्ने~~ मनहुसू रस सि गयो छपाई ।। द्रिस्टि द्रिस्टि अंधियारी छाई।।
मन पग प गड्यो बिरह दुख काटो ।। जो किसहूं पहि जात न बांटो ।।५५।।

दोहरा: खान पान बोलन चलन सिथल सकल बिवहार ।।
मनहु पूतरी चित्र की बैठी सुरत बिसार ।। ५६ ।।

चौपई: न्रिप घर धीर बहुत समझायो ।। सकल जगत को राहु जनायो ।।
सुता बिगाने धन संसारा ।। यहै सनातन जग बिवहारा ।।
हितो सोच मति करहुसियानी ।। काहे बिअरथ प्रान निज हानी ।।
कछु दिन बिते बहुर बुलवैं हैं ।। प्रभ चाहै तहि आन मिले है ।।
अनिक धीर दै मुद पसारयो ।। अनिक यतन करि कछुक खवायो ।।
हित ये निस दिन बयाकुल महा ।। रहे बिरह कर जात न कहा ।।

छत वहि जगत प्रभाकर मग मै ।। करत गवन चितवत डग डग मैं ।।
सास ससुर की दुखति बिकलता ।। किहि बिधि पिट्ठ हेत पत प्रबलता ।।५७।।

दोहरा: सभा ससिकला सोच मन मात पिता की ओर ।।
नहि बसात तरफत मन हि जिऊ गुडीआ बस डोर ।। ५८।।

चौपई: इक दो मजल अधिक चिंतुतुर ।। पुन कछु धीर भयो मन आतुर ।।
पांच कोस को कूच करहि नित ।। इक दो करहि मुकाम कहूं हित ।।
बन बिहार गिर केल करावत ।। सब लोगन को सुख ऊपजावत ।।
सैना लहर बिजय सागर की ।। पात ढुलैत बडे नागर की ।।
जहा नाइ सैना वहि छाई ।। इक नौतन नहि नगर बसाई ।।
सगल जगत के अलभ पदारथ ।। लेहु तहा पूजत सभ स्वारथ ।।
सायं पात कुलाहल भारी ।। सुभग बजारन छैल बजारी ।। ५९।।

दोहरा: बडे सुदागर जौहरी बहुर सराफ बजाज ।।
कनक रजत पुन तांब की मुद्रा अनिक समाज ।। ६० ।।

चौपई: ढाके की सीसा फब सम बर ।। पुन गुल बदन बनद सिकौघर ।।
कीम खाब सुंदर गुजराती ।। हीरा पंना अनगन जाती ।।
जो इछा मन लेहु बजारा ।। खान पान की बसत अपारा ।।
अनिक भांत के बन फल नाना ।। मेवें मधुर न परत बखाना ।।
भवन सिकंघ धरै बिवहारा ।। जह चाहो तह लग तजारा ।।
कोउ मीना बाजार कहावै ।। बाग बहार नाम कोउ पावै ।।
भिंन भिंन सभ लगत निसाना ।। चौपर की सभ खुलत दुकाना ।।
सिंघ पौर सनमुख हटवानी ।। अरध रात्र लोक रह बिकानी ।।६२।।

दोहरा: तहा बांस इक ऊच बड गडल गडत गगन समुहाय ।।
ता पर इकमहताब बड देत जगाय चढाय ।। ६३ ।।

चौपई: मग भूल्यो कोउ रहत पिछारी ।। तिह निहार आ मिलत सुखारी ।।
निस को सैनप तेत तलावा।। दुस्ट [illegible] चोर कोऊ सिर न ऊठावा ।।
या बिधि सभ अनिंद सहत मन ।। करत गमन गिरि पंथ सघन बन ।।
पै कबहुं वहि राज कुमारा ।। सूरज प्रभा के बिरह दुखावा ।।
या बिधि मुख ते करत बखाना ।। बिरह बान बेधत मन प्राना ।।
या मग महि सभ सुखद समाजा ।। मो मन तऊ दुखहि सो काना ।।

करतल राखों सकल पदारथ ।। कर संकोच हौं जान निरा रथ ।।
याविधि करत मनै मन कलपना।। ऊचित नहु तौ प्रगट यहि जल पन ।। ६३।।

दोहरा: चलत चलत निस दिन मग हि कछु इक काल बिताय ।।
प्रेम परपक परताप ते पहुचे तिहि पुर जाय ।। ६४।।

अथ सूरज प्रभा के असथान पहुच कर बिवाहा दिक बिवहार कथनं ।।

स्वैया: लेखनि की दुलही ऊलही दुलरावत जे दुलरायि निदायिनि ।।
तेनव सात सिंगारन साज बखानवे के ग्रह मैं चित चायिना ।।
यां बल राव नहार करे म्रिग झिंद बडे रस की ठकुरायिनि ।।
सैन बिजय की सी सैन सी बैन भई तिहि बाग के जो निकटायिनि ।।६५।।

स्वैया: जब सार दई हरकार निजा सुन राज दुलारि बधाई लिजे ।।
वहि राजकुमार ऊदार अबे ऊतरयो इत आ इत बार किजे ।।
सुनसार को प्रेमतवार को लाहि गिरी मुरझाय मूलायनि जै ।।
फुन नैन ऊघार संभार कछू कछु बोल ऊठी खिसिआनी खिजै ।।६६।।

स्वैया: अन राग सो जाग परै जौ कहूं अस भाग हमारो ये सोयो नही ।।
पय्रो पाय पसार असार हिसो पुन नैन ऊघार तौं जोयो नही ।।
दुखिया दिल के परचाय बे को जु कहौं सुनिये कछु खोयो नही ।।
मुख धोयो करैं द्रिग नीरन सों बिन प्रेम की पौध मै बोयो नही ।। ६७ ।।

स्वैया: परचायिन की चरचा चित ठान चवायिन हुवै जु चलावती हौ ।।
मर की बिरहानल मै त्रिण डार बुझावती हौं कि जगावती हौं ।।
बहलै गोन क्यो हूं अरी दिल ये गहली हौ भला बहलावती हौ ।।
मछुरी बिछुरी परी नीर ते जौ गह छीर मै बोर बचावती हौ ।। ६८।।

स्वैया: जब यौंही रहे निस दयोस कछू तब जानिये काम समापति है ।।
बिधि के प्रति कूल यंतनस बेनिर मूल सरासर कापति है ।।
निह चैं इक है प्रिय प्रेम की पाक प्रान परे रहे तापति है ।।
जिन प्रेम कियो तिन पायो सही जु ऊघारे करे सोंउ ढापति है ।। ६९।।

स्वैया: पै निज दाय बचाय बो नयाय है मानै नही अखियांनन हुवै रही ।।
जावो रहो नर हो तन औंधन नेह की रैनी चढाय कै चुवै रही ।।
चिंता चिता की बलाय करे हम को दुचिताई नही अब कुवै रही ।।
प्रान पिया की गली ही अली हमै बोही बनारसिकी थली हुवै रही ।। ७०।।

स्वैया: कर कैल अकेली ही केलिया तूं वा संयोग के बाग बहारन मै ।।
हम हूं सिलेहारि बनी सिर मारत तेरे ब्रिहो खरवारने मै ।।
जग पाटी पै जो जो कछू चुन सार लिखे हुते बीर बिचारन मै ।।
इक बार ही ऐसे गई मिटकैन निसान रहे ही निहारन मै ।। ७१।।
स्वैया: अब कैसी खुशी औ कहा की हंसी कर प्यार सू जै चलावनो री ।।
मति छेरी हमे हम वे नार है अब छेर परे पछुतावनो री ।।
नहि छूट है आस तौं अंत के स्वास लौं वाही बिसासी को गावनो री ।।
भरते रहे स्वास ऊसी को ऊसास लै आवै तो ऐसे सुनावनो री ।। ७२।।
दोहरा: या अवसर वा महल ते ऊतरी सखी सियानी ।।
अंतरंग प्रीतम हुती दुख सुख इक समान ।। ७३।।
चौपई: प्रभ जानै सुन राज दुलारी ।। चतुरंगनि सैन दल भारी ।।
ऊतर्यो है या बन महि आई ।। चढें महल पर परत लखाई ।।
सूरज प्रभा मंद मुसकाई ।। सखी सिकंध भुजा लटकाई ।।
कौतक हित अति मंद कछू कर ।। सखिन सहारि चढी कछू ऊपर ।।
चढी ऊरध भर ऊरध उसासा ।। साफ समे जनस ग्री पूकासा ।।
निसचय लखी सैन चल रंगिनि ।। जनु पावस की प्रबल तरंगनि ।।
राज पौर तंबू समियाने ।। रंग रंग की तनी बिताने ।।
इत ऊत फिरत सवार पदाता ।। बने ठने जनु सजी बराता ।। ७४।।
दोहरा: तिहि अवसर तिहि द्रिस्टि तर पर्यो राज कुमार ।।
संग कछुक असवार बर आप अस्व असवार ।। ७५ ।।
चौपई: प्रभा प्रभाकर जगत प्रभाकर ।। तेज पुंज जनु दुतिया दिवाकर ।।
सने सने आवत इत औरा ।। निरख नैन भई चंद चकोरा ।।
प्रथम लख्यो हो मग कर चूरन ।। बिरह बिथित बियाकुल स्रम पूरन ।।
मलन बसन क्रिस तन इकाकी ।। सिथिल अंग प्रान रुप हु इक बाकी ।।
अब वहि लख्यो प्रभा बड भारी ।। रिस्ट पुस्ट तन मुख ऊजियारी ।।
चवर छत्र सिर राज समाजा ।। सैन समूह संग गज बाजा ।।
नख सिख भूखन बसन सवारे ।। तेज प्रताप पुंज बल धारे ।।
सूरज प्रभा लखत तिहि काला ।। प्रेम बिबिस हुवै गी असहाला ।।७६।।

दोहरा: सुंभ स्वेद रोमांच तन अस्रु कंप सुर भंग ।।
तन बिबरन जमुहाय मुख आठो भाव ऊतंग ।। ७७।।

चौपई: पुन सकुचाय सकिन दिस देखी ।। बोली कछु लख कंप बिसेखी ।।
आवत ही यहि किया तव प्यारे ।। कंप अंग नहि परत संभारे ।।
अदभुत गति तन पर असछाई ।। संभल संभल बैठे क कंपवाई ।।
अस कह मन अति भई खुसाली ।। बदल पीत तलन दमकत लाली ।।
बिरह बिथा महि मुख जु मलीना ।। करयो छिनक महि चंद कमीना ।।
अंग अंग होवत सर साहे ।। सुसक सालि जन घन बरसाहे ।।
तिहि अवसर वहि राज कुमारा ।। ऊतर अस्व ते बाग दुवारा ।।
सूरज प्रभा तात ढिग जाई ।। करयो प्रणाम सीस निहुराई ।। ७८।।

दोहरा: आसन ते ऊठ दौर तिन लीनो कंठ लगाय ।।
आसिख दई अनेक मुख नैन प्रेम जल छाय ।। ७६।।

चौपई: अति आदर युत ढिग बैठारयो ।। कुसल प्रस्न करि स्रम निरवारयो ।।
क्रिपा करी प्रभू करने हारे ।। कुसल सहत तव दरस दिखारे ।।
क्रिपा करी प्रभ गिरवर धारी ।। मनसा पूरन करी तुमारी ।।
पन पूरन करि प्रेम दिखायो ।। प्रेम कीयो तिन ही फल पायो ।।
तिहि अवसर सुंदर बड बाला ।। लीहे संध कनक सुख पाला ।।
सभा ससि कला राज दुलारी ।। तिही ठौर तिन आन ऊतारी ।।
करी प्रणाम संकोच बिनय युत ।। ब्रिध पुरख लख अति सनेह युत ।।
कहयो भला कर है जगदीसा ।। रहो सुहागवति लाख बरीसा ।। ८०।।

दोहरा: दीन फकीर पछान कर करी क्रिपा हित होर ।।
पुत्री सुख संपति सहत जीवहु बरस करोर ।। ८१।।

चौपई: राज सुता म्रिदु सकुचन बोरी ।। बिनति बिनीत करी कर जोरी ।।
रावर सु जस सुनत ही काना ।। राज कवर बहु करत बखाना ।।
दासी के मन ऊमग अपारा ।। हुती क दरस की जै कब दुवारा ।।
जब देहरि पर सीस घसावो ।। दुहु जग बीच बडाई पावो ।।
। सफल मनोरथ भहे हमारे ।। राज कवर क्रिपा अपारे ।।
जिह प्रसादि दरसन तुम पायो ।। चरन कमल पर सीस झुकायो ।।
ब्रिध पुरख आदर तिहि कीनो ।। तन मन अति सीतल कर लीनो ।।

इक महूरत कीयो निवासा ।। नम्र बिनय युत बचन बिलासा ।। ८२।।

दोहरा: पुन बिनीत बिनती करी आय स करहु दयाल ।।
राज सुता के मिलन की मन महि लगन बिसाल ।। ८३।।

चौपई: ब्रिध पुरख आयुसु अस भाखी ।। ग्रह तुमार ससि सूरज साखी ।।
निज ग्रिह पैठ न हित कस आयस ।। पावन करहु यथा मन भायस ।।
तिनहु तुमारि बहुत अभिलाखा ।। अवसेरत निस दिवस पराखा ।।
जगत प्रभाकर सीस निवाईं ।। बाहर गयो सैन जहि छाईं ।।
सभा ससिकला आयस लीने ।। सूरज प्रभा और मग लीने ।।
पहुची हुती प्रथम तहि सारा ।। राख्यो हुतो भवन करि त्यारा ।।
सुमन झरोखा बिबिधि बिताना ।। मुकताझालर रचित सु नाना ।।
दुवारन बंदर वाल बंधाइे ।। जरी बाफ पामडे बिछाइे ।।
रव सै छिरकी अतर तरातर ।। फरस फनूस जगमगात बर ।।
इंद्र भवन सम रचितत अवासा ।। अगर धूप धूपत सु बासा ।। ८४।।

दोहरा: नव सत सजे सहेली आं लीने बिबिधि समान ।।
सूरज प्रभा सादे बसन दीयें दुवार पर धियान ।। ८५।।

चौपई: हित छिन की पहुची असवारी ।। जाय दुवार सुख पाल उतारी ।।
सभा ससिकला तजी सवारी ।। मनहु ससिकला अवनि उतारी ।।
सूरज प्रभा निरख अगवाईं ।। फरस प्रयंत दौर उठ आईं ।।
छिन आवत लख कीन प्रणामा ।। यथा दंडवत कहि बुध धामा ।।
उनगह सीघ्र सुलीन उठाईं ।। अति आदर युत कंठ लगाईं ।।
अति अनंद मन सकत न छोरी ।। प्रेम उमग नैनन जल ढोरी ।।
बार बार मिल कैठ लगाईं ।। सुभग सैज पर आन बिठाईं ।।
संग सखी गन जो समुदाईं ।। यथा योग सभ ही पहुनाईं ।। ८६।।

दोहरा: याथा उचित आसन दीइे बार बार सदकार ।।
सभ तिय भईं प्रसंन मन तिहि बिवहार निहार ।। ८७।।

चौपई: पुन करि जोर नैन जल छाईं ।। बिनय बिनीत करी सकुचाईं ।।
इहो सभा ससि कला प्यारी ।। चिरजीवहु तुम राज दुलारी ।।
मो पर क्रिपा इती तुम कीनी ।।। लजित करी मोल जनु लीनी ।।

तुम छिति पति की राजदुलारी ।। बडे कीये जग महि गिरधारी ।।
मै फकीर की सुता निमानी ।। मों पर छिती क्रिपा तुम ठानी ।।
मोहि दीन के ग्रह तुम आई ।। आपन जान मुहि दीन बडाई ।।
कहि लग अपन सरहु हु भागा ।। बने पाहुनी तुम अनुरागा ।।
यदपि दीन अरु पर मर जाना ।। तिस प्रेम को हैं सकल समाना ।।८८।।

दोहरा: तदपि तुमरे पद कमल धरों द्रिगन पर लाय ।।
दई बडाई जग तुमहि मोर भक्त तुम आय ।। ८६।।

चौपई: सभा ससि कला सुन यहि बानी ।। साच सनेह बिनय रस सानी ।।
मनह सुराह सुघरता बांकी ।। कह्यों बचन रचना बढ बांकी ।।
बस जू बस यहि तज हु प्रसंगा ।। करहु चोचले औरन संगा ।।
असकुल बल बच बयंग समेता ।। तिसहि कहों जो समझ न भेता ।।
तुम कत दीन मस हम हु कत रानी ।।। जिन प्रभू हेत तजी रजधानी ।।
तुमरो पिता न्रिपति बड भाखा ।। भुक्त हो भोग मुकत रस चाखा ।।
या पर स्री गुरु बचन प्रमाना ।। कहयो सार स्रुत सिम्रिति पुराना ।।
कोऊ न बडा माछिआ बडिआई ।। जो बडा जिनि राम लिव लाई ।।६०।।

दोहरा: ताते तुम हमरे सदा प्यारी पूजन जोग ।।
होत क्रितारथ पतत हूं दरस परहु हरि लोग ।। ६१ ।।

चौपई: औपुन सुन सन बंधकहानी ।। जाकी जग महि रीति नछानी ।।
राजा रंक बराबरता महि ।। होत जगत सन बंध सुजा महि ।।
साकस पतिनिक तुम सो मेरो ।। कर बिचार ऊर अंतर हेरो ।।
कहा रही कहु नीच ऊचाई ।। हम तुम हमहि सेज सुहाई ।।
कर निरधार जु लखहु मिवेरी ।। बडी सपतिनिक तुम हो मेरी ।।
ऊचित मोहि पद कमल तुमारे ।। धरहु द्रिगन पर परम पियारे ।।
स्रवन समीपी राज कुवर के ।। पूजनीय हम नित सिर धर के ।।
करि बिचार जो लखहु पियारी ।। प्रथम आप हो हमहु पिछारी ।। ६२।।

दोहरा: जोबन रस तुमही लह्यो प्रथम समागम कंत ।।
तुम ऊचिस्ट पायो हमहु मधु जिम बिते बसंत ।। ६३।।

चौपई: यहि सुन सूरज प्रभा सकुचानी ।। हास बचन मन माहि पछानी ।।
म्रिदमुस्काय मधुर मुख बयना ।। कहे बिनीति ऊचित सखु दयना ।।
साच कही तुम राज कवरि बर ।। यहि सभ भयो मोरही हित पर ।।
मोहि रूप की अघक प्रसंसा ।। करी कीर या महि नहि संसा ।।
राजभवन परवार समेता ।। तज्यो कुवर निकरायो मम हेता ।।
बन बेहर फारन गिर खोहन ।। खोजत फिरयो मोह मग जोहन ।।
परयो ताल महि मोहि निहारी ।। सह्यो कस्ट जनु गयो पयारी ।।
टुनहाई क्रित अनिक कलेसा ।। सहे कुमार मोर निस देसा ।। ६४ ।।
दोहरा: इेक निसा ते अधिक अति रह्यो हमारे धाम ।।
लयो कनक पुर मग तुरत सभ यहि मोरे काम ।। ६५ ।।
चौपई: प्रभू जानय तहि भई कवन गति ।। दुख सुख किधों बिपति कै संपति ।।
संबत सर नहि बसयो तुमारे ।। मम हित ही अस कीन अखारे ।।
सुनी लखी बहु रूप बडाई ।। यहि अदभुत गति अबहु लखाई ।।
सुन सुन फिरई म्रिस्टि दिवानी ।। प्रेम बिबस न्रिपत रजधानी ।।
बन बन फिरहि ब्रिही बिललाते ।। कालक पगन प्रेम रस राते ।।
यहि सभ मोह रूप गुन नामा ।। पर रही धूम रूप अर सामा ।।
रावर और रंच नहि यामहिं ।। सुघ सब मोर बिदित बसुधा महि ।।
सभा ससि कला सुन अस बानी ।। मधुर बयंग युत सच सुखदानी ।। ८६ ।।
दोहरा: परम सुघर सूरज प्रभा मन महि कर निरधार ।।
प्रेम उमग भर कंठ पुन मेली भुजा पसार ।। ८७ ।।
चौपई: अति प्रसंन मन राज दुलारी ।। मुसक मधुर म्रिदु गिरा ऊचारी ।।
कयोन होहि असगुन सुघराई ।। सुनी प्रभा तैस हि लख पाई ।।
रह्यो इेक निस राज कुमारा ।।मधुर बचन कामन गर डारा ।।
संबत सर ग्रिह रह्यो हमारे ।। रावर बचन नमन ते टारे ।।
निस बासरतव बचन बडाई ।। बार बार मो प्रति नित गाई ।।
यदपि रूप क्रित दोख हमारा ।। बरनन कीन आप निरधारा ।।
तदपि तिहार मनोहर बयना ।। टा मन वत मन करत अचयना ।।
रूप हमार होत बिद माना ।।तरफत रहे कवर के प्राना ।।

कलप समान बितयौ संबत सर ।। रावर जस बरनत निस बासर ।।
आज तक्न तन परे पराना ।। ससि लख जनु चकोर बिगसाना ।। ९८ ।।

दोहरा : इक बारही बाले मन मोल लेख री बीर ।।
यहि अदभुत गति तोहि मै रची बचन तां सीर ।। ९९ ।।

चौपई : या प्रकार रच बिबिधि बिलासा ।। मन भावत करि हास प्रकासा ।।
सकल भांक कीनी पहुनाई ।। खान पान रचि सभा बनाई ।।
राग रंग खेलत बिधि नाना ।। कबित छंद पर बद बखाना ।।
दुहूं ओर रस चाऊ अपारा ।। बीती निसा भयौ मुन सारा ।।
नौतन बधू निस सकुचाई ।। चुनरि अवाची बदन छिपाई ।।
दूलहु दिवस तखत प्राची पर ।। रसम सेहरी रच बैठयौ बर ।।
सभा ससिकला बिदा कराई ।। गई सैन महि न्रिप तिकटाई ।।
सूरज प्रभा सुघर बर नारी ।। बार बार तिहि प्रभा ऊचारी ।।
सील सुभाव सनेह मघुर बच ।। गुन बिदया पुन बिनय यथा रच ।।
सरब कला निधि असबर नारी ।। अबलग सुनीन नैन निहारी ।। १०० ।।

दोहरा : जगत प्रभाकर सुनतबच भयौ मगन सुख पूर ।।
हुती असूं आकी खटक पटक दई तज दूर ।। १०१ ।।

चौपई : दुतिय दिवस तब राजकुमारा ।। ब्रिध पुरख के निकट पधारा ।।
बिनय सकुच युत बचन चलायो ।। निज दिस अति प्रसंन लखायो ।।
नीके जानहु जग बिवहारा ।। सुता न सोहत निज पित दुवारा ।।
पुन यहि यथा किसू कवि बानी ।। अस प्रसंग पर ऊचित बखानी ।।
बचन करहि जो नर दातारा ।। सफल करहि मन बच क्रम धारा ।।
तिसहि बचन आस्रित यहि दासा ।। पहुच्यौ आचरनन के पासा ।।
यहि सुन वहिं पंथी सच पथ को ।। समझ कवर के बचन कथ को ।।
पुन पुत्री को लख मन भावन ।। आयस दीनौ सहम सुहावन ।। १०३ ।।

दोहरा : यदपि हम नहि योग अस पै यहि बचन प्रमान ।।
देहि बडाई दीन को अदभुत तहि न न्रिपान ।। १०४ ।।

चौपई: तुम निज बचन पूर बड आही ।। साचौ प्रन करि चहित निबाही ।।
जोरावर मन है अस बाता ।। लेहु नाम हरि को बर ताता ।।
निज दासी की नो पंकति बर ।। देहु बढाई तहा क्रिपा कर ।।
बिआहु कथिन तौ अहै सिफ्रावन ।। नहि हम नहि हम समय सहावन ।।
अस कहि पंडित लीन बुलाई ।। लगन सौध सुभ दिवस गनाई ।।
बेदी रच बर बेट बिधाना ।। पावक सह्त थाप ग्रह नाना ।।
समय सुहावन मंडप छाहे ।। पावन मंगल द्रुब मंगाहे ।।
गुरु गनपति ग्रह पूज मनाहे ।। बेद मंत्र पढ दिजन सुनाहे ।। १०४ ।।

दोहरा: गावत मंगल बिबिधि सुभ सह्ज सुहागनि नारि ।।
ऊबट अनाय सहेलीयन रचे कुवरि स्रिंगार ।। १०५ ।।

चौपई: ऊत ते कुवर ऊबट अनवायो ।। भूखन बसन मुकट छबि छायो ।।
बाधि सेहरो बेद बिधाना ।। बजत बजंत्र तूर पंच नाना ।।
आन दुआर पर कीन ढुकावा ।। रजत कनक जनु घन बरखावा ।।
लगन हेत मंडप पग धार्यो ।। आदर युत न्रिप आन बिठार्यो ।।
ऊत सखियन न्रिप सुता सिआनी ।। बसन पलेट मंडप हि आनी ।।
लगन समय अंचुर जुग जोरी ।। मंगल गान करत सम गोरी ।।
बेद मंत्र युत भावर लीनी ।। सपत पदी पावक तठ कीनी ।।
बाम अंग तब कुवरि सुहाई ।। बंदी जन सम देत बधाई ।। १०६ ।।

दोहरा: बहु समाज गज बाज रथ भूखन बसन अपार ।।
दयो दाज मन मुदित न्रिप समय जान तिहि बार ।। १०७ ।।

चौपई: दिजन दछना दीन अपारा ।। बरख्यो मनहु न्रिपति घन धारा ।।
बहुरे बेनती करी नरेसा ।। तुमहो बडे न्रिपति जग तेसा ।।
तुमरी सम लायक नहि हमरे बित ।। दासी दई चरन सेवा हित ।।
अति प्रसंन मन राज कुमारा ।। भांत भांत न्रिप को सद कारा ।।
प्रात भऐ डेरन महि आहे ।। हित जियु नारि तयार कराहे ।।
आदर युत सह सैन समाजा ।। लहे बुलाय जिवावन काजा ।।
बिबिधि भांत पकवान जिनारा ।। बरनत होत ग्रंथ बिसतारा ।।

खट रस भोजन दै त्रिप ताहे ।। भूखन बसन ऊचित पहराहे ।।
भई मगन मन सकल बराता ।। त्रिप को जस बचन तबि ख्याता ।।
बिदा पाय डेरन महि आहे ।। नित आदर पावत मन भाहे ।। १०८ ।।

दोहरा: सूरज प्रभा सस कला बढयो अधिक मन प्रेम ।।
रहत भई कछु काल तहि अति अनंद लहि खेम ।। १०६ ।।

चौपई: दुहु दिस प्रीत अधक अस जोरी ।। मनहु सहोदरि दोऊ किसोरी ।।
राज कवर संग रच्यो कीता ।। छिक छिक निस रह इकनि केता ।।
निज महि रंच बिलग नहि मानहि ।। परम प्रीति निज महि नित ठानहि ।।
चुहु दिस कछु असीब निआई ।। राजकवर की प्रीति भुलाई ।।
नवल बधू जुग नवल किसोरी ।। सुंदर सुखद सुहाक जोरी ।।
जब निज महि साचो हुवै प्रेमा ।। दुहू ओर बिन छद मजु नेमा ।।
तब तहि करन प्रवेस असूआ ।। दूत दुस्ट सक मेलन दूआ ।। ~~लो~~
लोक ऊकति दुहु दिस जब राजी ।। तिन प्रति कहा कर सकै काजी ।।११०।।

दोहरा: त्यि बेधक दाहक दुखद कपट कुटल अरिवेस ।।
तूं तूं मै मै सभ कुटी नित को दंत कलेस ।। १११।।

चौपई: सहज दुस्टता नारि सुभावा ।। रचि बिरंचन ह रच्यो ऊपावा।।
बहु रस पतनि कजह सन बंधा ।। ऊरफ जात बड गोरख धंधा ।।
लख लख बाह सुमति समझावहु ।। नीच ऊच बिध कोटि लखावहु ।।
तदपि त्रिय न पहिरयो न जाई ।। सिर खसोटनी करत अघाई ।।
छिक रस रहन सकति नहि दुवै दिन ।। कटु कर देत पुरख को जीविन ।।
लाख तरह को होत खरो गम ।। आन रहत है नाक बीच दम ।।
बिन छिन आप सकै संतोखा ।। किहूं कस्ट यहि हो त मोखा ।।
जो प्रभ दे ग्रह महि दुवै नारी ।। दै निज महि संतोख बड भारी ।। ११२ ।।

स्वैया: प्रथम प्रेम मैखे मय ही बडी दुहुं ओर ते नेम निबाहनो हुवै ।।
हित ते चित ते नितचाहों जिसै वहि हूं चित चांपन चाह नो हुवै ।।
मन दैके म्रिगिंद जो मेली बनै मन मेल बनै सोऊमाह नो हुवै ।।
जब तेरो बनयो तोनि बेरो कहा तु हूं ताको बनै तो सराहनो हुवै ।। ११३ ।।

कबित: पंथ तौ बिकट पै निकट फल देवन कौ देवन कौ तरु सनेह सो हि तर कौन प्रेमसी।।
परमेस हूं के पायवे को पथ प्रेम यहै साधन सिरोमनि सही है सूत के मतै ।।
प्रेम कै कुमार सभा ससिकला सी नारि पाई सूरज प्रभा हूं पति पायो साचो नेम तै।।
मिले सब प्रेमी भई नेमी रहे मन माही जे मील है प्रेम रस खेम तै ।। ११४ ।।

दोहरा: अब आगे कछु चले गो अदभुत और प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो नवमो तरल तरंग ।। ११५ ।।

इती स्री प्रेम पयो निधि ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीत प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदन बिरचित राज कवर को प्यान सूरज प्रभा कुमारि के असथान प्रापति बियाह प्रसंग बरनंन नाम नवमो तरंग ।। ९ ।।

कबित: मीत मतलब के तलब करि देखो जगगलबे मचाय चलबे गल ही आय है ।।
कपटी दरोही छली छदमी सों छंद कुरे फंदन फरेब की कमंद खेल दाय है।।
याही ते म्रिगिंद मल मिलहैन साचो मीत बीत है जनम क्यो हूं पाकस न पाय है।।
गुरु गुबिंदसिंघ जू के पावन पदार बिंद मन चिंद है जो मलिंद हुवै समाय है।।१।।

स्वैया: बिपता की बिथा के कथानके अंकन पंक्ति पाय परे खनी है ।।
हिय फार फिराक भरी थहरी असुवान भरी मेरी लेखनी है ।।
लिखती है सुभाव सभै को कछू छल मीत मिताईयै देखनी है ।।
इक कौतुक कीस कथा है नई भई बात अचंभे की पेखनी है ।। २।।

स्वैया: नहि प्यारो किसू को कोऊ चित तै यहि प्यारो हमारो तो मानै सही ।।
यहि पयारों निहारों परै तिनकी तो बराबर बैरी नही है नही ।।
जग प्यारे हजारें लखे मैं म्रिगिंद पै मानीये साची मै आखो लही ।।
कछू है तो जरूरत ही के जरूर वे दूर अंदसी इ दूर रही ।। ३।।

दोहरा: कथा संछेप कुमार तहि रहयो यथा अलि भाख ।।
संपति सुख सुपनेन दुख प्रेम महा रस चाख ।। ४।।

चौपई: इक दिवस यहि सभ मिल प्रेमी ।। बैठे हुते प्रमि द्रिढ नेमी ।।
हास बिलास करत मन भाइे ।। पूर मनोरथ सभ सुख पाइे ।।
राजकवर तब बात चलाईं ।। पाय प्रसंग भवन सुधि आईं ।।
बहु तक काल भयो तजे सुदेसा ।। मुख मीतन ते मोर अभेसा ।।
अजहू दूर सिर ऊपर गवना ।। चलनो ऊचित ओर निज भवना ।।
वहि कुल बधू पति ब्रत नारी ।। साच सील बच पालन बारी।।
जानन हारि जु कछु पिय जी की ।। कह्यो जु तुमहु बिचारी इनी की ।।
सास ससुर पग लखन मिलाखा ।। पर वहि कुवर मनै गिन राखा ।। ५।।

दोहरा: पै हम को बरतन ऊचित रावर मति अनुसार ।।
पति अनुसासन नारि को धरम रचों करतार ।। ६।।

चौपई: जौं रावर मन महि अस आईं ।। चलहु कंत इक्क दंत मनाईं ।।
सूरज प्रभा के जनक पास तब ।। गयो कवर मन राख गनत सब ।।
बिनति करी करि जोर बिनीता ।। करिये क्रिपा काल बहु बीता ।।
मात पिता युत सब परिावार ।। ममि बियोग हुवै है दुखियारा ।।

बिदा करहु पग सीस झुवावौं ।। सकल संबंधिन को त्रिप तावौ ।।
बहुर होय जो भाग हमारा ।। दरस परस पुन करहु दुवारा ।।
यहि सुन ब्रिप पुरख मल मानी ।। यदपि बिरहि दुख मन तपतानी ।।
अवस जान आयस अस धारी ।। प्रात चलन हित करहु त्यारी ।। ७।।

दोहरा: कनक रजत मानिक अनिकअमरन बसन अपार ।।
सकट सुतर भर बहु दहे अस गज दाज सवार ।। ८।।

चौपई: हितनो कछु दयो त्रिप दरवेसा ।। सभा सकिला पित ते बेसा ।।
बहुर बिनति करि जोर सुनाई ।। तुम हित पति कीने जगराई ।।
तुम लायक ग्रह बसस तुन मोरे ।। जो कछु भेट करिय अब तोरे ।।
केवल सुता दीनहित सेवा ।। अस कहि पुन इकांत लै जाई ।।
।। अति स्नेह बस कहयो सुनाई ।।
इक मंत्र गुरु ते मुह पायो ।। सो तुम प्रति अब चहत सिखायो ।।
समय परे पर असफल दै है ।। काहू कौसन समर कै है ।।
अस कहि मंत्र सुदीन सिखाई ।। रीति क्रिया बिधि सम समझाई ।। ९।।

दोहरा: इक बचन स्रवनन धरहु करहु नही इतबार ।।
प्रगट करहुं जिनि भ्रात सों मीत बंधु कहि धीर ।। १०।।

चौपई: प्रगट सहोदर हूसो कर हो ।। यूसफ तुल बिपति अति भर हो ।।
जग के भ्रात न घट पिसच ते ।। कपट द्रोह छल अनिक राच ते ।।
यही हेत जग महि निज मरमा ।। ऊचित न कथन मस्ट बड धरमा ।।
यहि सम जग महि प्रगट बात है ।। बड़ो सत्रुनर सह्ज भ्रात है ।।
या पर राकन ऊकति प्रमाना ।। राघव नाटक महि बखियाना ।।
डरहु न लछमन ते न राम ते ।। कपि संब्र सैना संग्राम ते ।।
इक बभीखन को भर मोरे ।। सत कहहु लिख कागद कोरे ।।
सह्ज सत्रु मोरे वहि मरमी ।। मोह हरावत भ्रात अधरमी ।।११।।

दोहरा: याते कबहु न दीजीये भ्रातहु को निज भेद ।।
मीत बंधु तौ प्रगट ही कहत बिगाने वेद ।। १२।।

चौपई: यथा किसू कवि की यहि बानी ।। कही पुरान नीति रस सानी ।।
कुग छिन हु ते बड नर क्रेता ।। भ्रात कहा के देहु न मेता ।।
यूसफ सेद ये बेच बजारा ।। अस दुसटन को नहि छिबारा ।।
याते सीख कान यहि धरीयें ।। याको कबहु बिसा न करीयें ।।
मीत बंधु सेवक निज भ्राता ।। प्रगट न करहु मंत्र की बाता ।।
बार बार बहु बिधि समझायौ ।। भावी को कछु मर मन पायो ।।
अप हत गति जाकी सुत भाखी ।। बरतत सकल जतन पर नाखी ।।
पुन चल सभा ससि कला पासा ।। बचन बिनीति सु कीन प्रकासा ।।१३।।
दोहरा: तुम हो सुता अमीर की यहि है सुत फकीर ।।
प्यारी दासी जान मन करहु दिलासा धीर ।। १४।।
चौपई: यहि भी सेवा महि सवधाना ।। रहिहै दासी तुलित प्रमाना ।।
तुमहि समरपन कीनी पियारी ।। तुम सहाय सद कुंज बिहारी ।।
अस कहि बिदा कीन भर लोचन ।। प्रेम बिबस जल धार बिमोचन ।।
बहुर सुता निज कंठ लगाई ।। आसुन के जल सींच नवाई ।।
असमय जान धीर मन धारी ।। बहुत भांत सिख्या अनुसारी ।।
सील पति ब्रत नारिन धरमा ।। कहे ऊचित सुत सिंम्रित मरमा ।।
सभा ससिकला को बडमाना ।। रासहु निस दिन बचन प्रमाना ।।
पति आयस सिर धर अनुसरनो ।। दुहु कुल बीच ऊजारो करनो ।। १५।।
दोहरा: सीघ्र हि बहुर बुलायौ हौ मिलन हेत सुख पाया ।।
बिदा कीन धर धीर बहु बार बार गर लाया ।। १६ ।।
चौपई: रुकी रही कछु देर सवारी ।। यहि चरचा ही सभन मझारी ।।
गुपत मंत्र कछु ब्रिध नरेसा ।। करत कुवर प्रति हित ऊपदेसा ।।
भावी बिबस समय के फेरा ।। मंत्री सुत पहुच्यौ तिहि बेरा ।।
वहि जो राजसुवन को संगी ।। भयौ हुतो तज देस प्रसंगी ।।
दयो तुरंग कुरंग पिछारी ।। गयो गहन बन भ्रमत दुसारी ।।
राजकवर ते छुटो छिकेला ।। बयाकुल डोलत बिपन दुहेला ।। प्याद दह पाय नग
प्याद दह पाय नग नतन छीना ।। छुधित पिपासित प्रमितम लीना ।।
भ्रमत भ्रमत प्रापति भयौ तहवा ।। खरी चमूच तुरंग निज ~~बसन~~ हवा ।।१७।।

दोहरा: सनघ बघल सकर लखौ भारी सबै तयार ।।
बिसमय मन पूछत भयो किस की सैन अपार ।। १८ ।।

चौपई: अवसेरत किहि की असवारी ।। कवन देस की अहै तयारी ।।
तिनह कहा बड राज कुमारा ।। जगत प्रभाकर जग ऊजियारा ।।
कहयो सकल पूरब प्रसंगा ।। सुन तह प्रान परे हिस अंगा ।।
कह्यो कहा अब राज कुमारा ।। तिनहु बहुर अस बचन ऊचारा ।।
या मंडल को जो नर पाला ।। याकी जन है भगत गुपाला ।।
कछु हित मंत्र सुनावन के हित ।। गयो हिकंत कुवर संग हित चित ।।
या अवसर न्रिप को संतोख करि ।। पायन पर हित बचन स्रवन धर ।।
बिदा पाय निज बाज सवारा ।। निसरयो मुदित बाग के दुवारा ।। १९ ।।

दोहरा: मंत्री सुत सनमुख भयो कीनो दौर प्रणाम ।। हाथ सीस धर प्रगट किय
हाथ सीस धर प्रगट किय पिता सहत निज निम ।। २० ।।

चौपई: राज कवर अविलोकन कीनो ।। मंत्री सुवन मीत निज चीनो ।।
ऊतर अस्व ते गर लपटायो ।। जनम रंक जन नव निघ पायो ।।
बार बार मन मुदित मिलाई ।। निरख बिहाल मनहु पछताई ।।
तत छिन भूखन बसन मंगाइे ।। अंग सुधार तुरंग द चढाइे ।।
लयो साथ कर आप समाना ।। मग महि सकल ब्रितांत बखाना ।।
कहत सुनत सब कथा बिहानी ।। डेर न लग पहुचे सुखमानी ।।
ऊतर अस्व ते राज कुमारा ।। निज अंतह पुर महिं पग धारा ।।
मंत्री सुत तह लयो बुलाई ,, दुहु ढान न्रिपति भेंट दिवाई ।। २१ ।।

दोहरा: कह्यो कि यहि वहि मित्र है मंत्री सुवन हमार ।।
जा बियोग कंटक हिये खटकत सदा असार ।। २२ ।।

चौपई: भटक रहत सदा जिय तन मै ।। बिस दिन चितवत रहत सुमन मै ।।
जब सुभ दिवस फिरत है नर के ।। बिछरे मीत मिलत सुख घर के ।।
पुन जब कुटिल दिनन को फेरा ।। बिछुरत बंधु मीत तिह बेरा ।।
जब दिन हमरे कुटिल भइे ते ।। बन बिपता महि डार दइे ते ।।
बिछरे मीत बंधु सब यारा ।। बिलग बिलग बिपता महि डारा ।।
अब सुभ समय फेर के बसते ।। दूर भइे सब दिन कर कसते ।।

प्रेम कलप तरु के फल पाइे ।। बिछुरे मीत सकल ढुल आइे ।।
या बिधि मुदित सु राजकुमारा ।। मंत्री सुत की सुनहु कुचारा ।।२३।।

दोहरा: सभा ससिकला ~~कन्फल~~ रूप लख बदन अनूपम दीप ।।
परयो दीप महि सलभ सम तृफत भयो समीप ।। २४ ।।

चौपई: मनही मन अस कीन बिचारा ।। नहि त्रिभुवन महि अस बर नारा ।।
स्वामि धरम तज तुरत खियाल महि ।। मिलन यतन के फस्यो जाल महि ।।
मीत मीत सभ करत बखानी ।। हम जानहि यह सकल कहानी ।।
मतलब के सभ मीत कहावहि ।। दाव परे पर घात करावहि ।।
मीत धरम तज तुरत बात महि ।। मंत्री सुत तब लग्यो घात महि ।।
मित्र पलट भइे सत्रु सरूपा ।। अहो समय को फेर अनूपा ।।
अलख ब्रह्म जो मिलय तौ मिलई ।। दुरलभ साचो मीत जु मिलई ।।
कोउू किसू को मीत न जग मै ।। जिते मिले लखे अंत सु ठग मै ।।२४।। (२५)

दोहरा: याही बिधि बैठे रहे तहा घरी दो चार ।।
पुन अपने अपने डेरन सभै गइे अनद मन धार ।। २५ ।।

चौपई: मंत्री सुत हित छिक बड सेमा ।। खरो करायो कर मन प्रेमा ।।
जगत प्रभाकर सरल सुभावा ।। अति सनेह तिहि ओर जितावा ।।
जिती हुती ससि बदन कामनि ।। दुहुरानिनि के संग सुभामनि ।।
रूप जुबन सुघराई भरी ।। नरी किंनरी रति ते खरी ।।
सुता अमीर वजीरन की बर ।। सकल कुमारी ओचित जोग बर ।।
पांत बांत सभ निकट बुलाई ।। निज मंत्री सुत को दिखराई ।।
जो छिन महि रुचिहोछि तुमारी ।। बरहु मीत मन आनंद धारी ।।
याकी द्रिस्ट दुस्टता धारी ।। सभा ससिकला ओर सु लागी ।। २७।।

दोहरा: कपट राख बिनती करी मेरी कवन मजाल ।।
छिन सनमुख लख द्रिस्टि अब करहु अनुचित खियाल ।। २८ ।।

चौपई: रावर अंतह पुर पनिहारी ।। मात समान हमहु वहुनारी ।।
अस अनुचित बच बहुर न माखो ।। लोक प्रलोक दास को राखो ।।
अस छल बद्ध सुन राजकुमारा ।। बडो धरम चित ताहि बिचारा ।।
अति आनंद गहि कंठ लगायो ।। अमल हियो सुभ मन ठहरायो ।।

तापर बाढ्यो अति बिसवासा ।। तब बिचार सँग अन यासा ।।
भई ह्रिदे महि अस तिहि ठौरा ।। या सम जती न जग महि औरा ।।
गुपत प्रगट सब बातैं मन की ।। मग भ्रम बिपति बहुर फल धन की ।।
तासनन खत न रंच दुरावा ।। प्रगट कहत सम गुपत जु भावा ।। २६।।

दोहरा: पै वहि ब्रिधन रैस जो कह्यो मंत हे कंत ।।
ताकै चलै प्रसंग जब गुपत करत बिरतंत ।। ३० ।।

चौपई: तब वहि दुस्ट बिचारत मन महि ।। रहत भेद कछु इनं बातन महि ।।
इसी भांत कछु दिवस बिताइे ।। गमन करत नित प्रति मन भाइे ।।
मंत्री सुत को मीत मान मन ।। निज निवाह करवे हित मित पन ।।
अंतह पुर निसंक संग त्यावै ।। खान पान संग प्रेम बढावै ।।
इक दिन मिल दोउ पट रानी ।। दुस्ट द्रिस्टि ताकी पहचानी ।।
जगत प्रभाकर पाय इकंता ।। कथत भई मन को बिरतंता ।।
यहि नौतन लखि रीति तिहारी ।। अदभुत होत मन हि अतिभारी ।।
इक पर पुरख बैस किसोरा ।। संग रावनो सलखन छोरा ।। ३१।।

दोहरा: ~~पेज्जरत्निज्जि~~ हिल्यो मिल्यो अंतर भवन रखनो कवन सु रीति ।।
धन धरनी तरुनी नहि तकहु कका के मीत ।। ३२ ।।

चौपई: औ पुन राजन के बर भवना ।। ऊचित न करहि पर पुरख गवना ।।
जो तुमरो अति मीत पियारो ।। देहु ~~सिर~~ बडाई जिती बिचारो ।।
पै कछु लाज समझ मन कीजे ।। अंतह पुर परवेस न दीजै ।।
काम क्रोध के रचे सरीरा ।। दूर न जान इन हि मति धीरा ।।
कहयो जु तुलसी दास गुसांई ।। बुध जनता हि न देत भुलाई ।।

यथा।। मोहन अंध कीन किहि केही ।। को जग काम न चावन जेहीं ।।
त्रिसना किहि न कीन बौराहा ।। किहि करि रिखे क्रोध नहि दाहा ।।
नारद भव बिरंचि सन कादी ।। जे मुनि नायक आतम बादी ।।३३।।

दोहरा: ग्यानी ताप सिसूर कबि को बिदगुन आगार ।।
किहि के लोभ बिडंवना कीन न इह संसार ।। ३४ ।।
स्री मद बकून कीन किहि प्रभू ताब धरन काहि ।।
म्रिग नैनी के नैन सरफो अस लागन जाहि ।। ३५ ।।

चौपई: ताते करि बिचार पग धरीये ।। सीख बडन कीन हि न बिसरीये ।।
जो कीजत है बिना बिचारे ।। मन हठ ते दुख जन है भारे ।।
सूरज प्रभा बिनिति अस कीनी ।। राजकवर मन भली न चीनी ।।
कह्यो कि अस बच बहुरन भाखहु ।। याकी ओर संक मति राखहु ।।
यहि मुहि परम मीत सच मन को ।। काँखी नहि पर धरतीय घन को ।।
लखी न तुम याकी प्रभू ताईं ।। मै सम कामनि इसहि दिखाईं ।।
तुमरी सेवक जान सहेली ।। मात तुल कहि सकल प्रेहेली ।।
जिन तुमरी दासी असमानी ।। तुमहि कु द्रिस्टि लखहि किम जानी ।।३६।।

दोहरा: पुन हमहूं कछु नहि हुते समभ हीन अनजान ।।
बिन प्रती किय बात पर कहते अस अनुमान ।। ३७।।

चौपई: यहि सुन भान प्रभा मुसकानी ।। समा ससिकला दिस बतरानी ।।
प्रभ की सपथ तुमहि सुन पयारी ।। कहु हु न्याव की बात बिचारी ।।
नहि कछु करहु कवर की हौरा ।। नहि मम दिस कछु करिय निहोरा ।।
इन की मति पर कर इतबारा ।। मूरख होय सुखावै मारा ।।
क्यो जू रावर मति के धनी ।। राखत हो इबिचार अति घनी ।।
अकलु चौकरी चूकन जाते ।। क्यो तलाव महि गोते खाते ।।
क्यो फसते मंतिनि की जाली ।। दुखित हो इकुल कान सु टाली ।।
साच कहो अब लाज बिहाईं ।। लजित न हूजै छिमा कराईं ।। ३८ ।।

दोहरा: कवन बात मन समभ करि कूद परे सर माहि ।।
अस बिचार मन रंच हूं कहु क्यो आयो नाहि ।। ३६ ।।

चौपई: नावन हार बिचार सुमति को ।। दै दुबकीसर समभ सुध्रित को ।।
नहि नवाय देख यो मन बोरी ।। धीरज करिव रीति कछु औरी ।।
समा ससिकला कत इत आईं ।। गहवर बन सर माहि समाईं ।।
अरपुन जल महि जीवन बची ।। कवन भांत यहि मन महि जची ।।
वहि जो हुती कौऊ राजदुलारी ।। किधों मतस की हुती कुमारी ।।
याकों ऊत्र प्रथम सुनावो ।। ता पाछे मति मान कहावो ।।
यहि सुन राजकुवर सिखिआनो ।। हवै मन बचन बखनो ।।
बात औरम सखरपन औरी ।। यहि औरहि बिधि चली ठटौरी ।।४०।।

दोहरा: कितको आन प्रसंग इत दीनो भलो प्रमान ।।
मूरख पन हमरो भलें तुम करि परयो पछान ।। ४१ ।।

स्वैया: न सुनी तुम प्रेम की रीति नईं कछु याते बिसेस की यारु करै ।।
तस बीतज ममला धरै कस बीतस बी कहूं माला ऊतार धरै ।।
यहि प्रेम हूं तौ किछ बा मरताकी बिरादरी सों है गुनी ऊचरै ।।
कहु क्यों करि आपनी ही मति मैह में आप ही भेद प्रती तिपरै ।। ४२ ।।

चौपई: प्रेम बिबस दस दिस मुहि प्यारी ।। परत प्रतीति हुती तिह बारी ।।
यहै प्रेम की रीतति पुरानी ।। जानत वहि जिहि सीस बिहानी ।।
अपनी ओर द्रिस्टि कछु धारो ।। तब मो प्रति सम खान ऊचारो ।।
यहि सुन सूर प्रभा मुसकानी ।। कही बिनती रस भरी बानी ।।
देखा आप मनहि सरमाहे ।। तब रि साय यहि बच प्रगटाहे ।।
परयो हुतो मुहि दोख दुरायो ।। भलो कीयो प्रभ कहि प्रगटायो ।।
पै हम नारि सदा मति हीनी ।। कहत सकल मति मान कमीनी ।।
जों हम सों अनुचित बनिआवै ।। अदभुत नहि स्रुत स्रिम्रिति गावै ।।
पै इक भली कीन भगवाना ।। रावर मति हूं हम हु समाना ।।
इक सुघर इक मूढ जु होवत ।। सकल आयु रस हान सुजोवत ।। ४३ ।।

दोहरा: अब हम तुम सम मति भइ सुख रस बढै अपार ।।
बिलगन मान हुं कंत कछु अस कह हसी कुमार ।। ४४ ।।

चौपई: हास बिलास प्रसंग ऊपाईं ।। वहि प्रसंग सम दयो ऊडाईं ।।
पैवहु दुस्ट छली मति हीना ।। लग्यो घात महि कुमति कमीना ।।
काम बिबस मति गति बौराईं ।। चहित बिसास घात बुरिआईं ।।
कूच मुकाम संगि नित जावै ।। नित आवसैर समय कब आवै ।।
इक दिवस अैसी बनिआईं ।। दुख की अवध पहूची जाईं ।।
राजकुवर को बन महि डेरा ।। ऊतराये जाइ समय के फेरा ।।
चहूं ओर फूलत फुलवाईं ।। बनसुर ऊपबन की छबि पाईं ।।
पैवहि सुमन सकल कंटक वत ।। दुख दायक घायक ह्यि के अति ।। ४५ ।।

दोहरा: प्रफुल्लित बन तिहि बिधि पवन प्रवत अमल नद नीर ।।
दस दिस ऊठत सुगंध बर गुंजत भ्रमर न मीर ।। ४६ ।।

चौपई: राजकवर निरखत भल जाई ।। भयो मगन मन आनंद छाई ।।
मंत्री सुत को कर गह लीनो ।। बन बहार निरखत मन दीनो ।।
रंग रंग के सुमन अपारा ।। मनहु निवास बसंत बहारा ।।
झरने झरत नीर निमल बर ।। खग म्रिग अनिक कलोल रहे कर ।।
छिक प्रवाह लख स्वछ सुपावन ।। रंम्यो ठौर मनको अति भावन ।।
तहा जाय बैठे दोऊ बीरा ।। सीतल सुख द ठौर तट नीरा ।।
मद मगाय तहि पान करायो ।। कछुक द्रिगन महि अमल सु छायो ।।
मधुर मधुर बतीयां रस भरी ।। करत आप महि सुख की झरी ।। ४७ ।।

दोहरा: नेह निवाहन मित्र को चल्यो कछुक परसंग ।।
इकाकी दोऊ मित्रत तहि मद की द्रिगनभ तरंग ।। ४८ ।।

चौपई: वहि छल रूप दुस्ट बड मनको ।। कपट खान घातक तन धन को ।।
समय जान अनुकूल आपनो ।। छिक छिक्तें पुन सुरा भापनो ।।
कपट जाल निज कुवर पछानी ।। परम आपनो भाग प्रमानी ।।
छल रस सान रुदन बड कीनो ।। द्रिग जल हियो तरातर भीनो ।।
कुवर चकित हुवे मुख मुसकायो ।। कह्यो कुसल है ऊदन ऊठायो ।।
तब वहि छलीन नम्र हुवे बोल्यो ।। मुख जनु बिपति किवार खोल्यो ।।
कुसल आपको प्रभ सद कर है ।। हरि की क्रिपा बिपति सब टर है ।।
छिक अदभुत मुह मन कछु आयो ।। जाते ऊमग द्रिगन जल छायो ।। ५६ ।।

दोहरा: नेह निवाहन मित्र को आप कह्यो प्रगटाय ।।
ऊभय लोक की संपता फल ताको दरसाय ।। ५० ।।

चौपई: मै निज ओर द्रिस्टि तब कीनी ।। निज महि सकल सुध क्रित चीनी ।।
जो जो रीति सुने हनि बाहना।। जग महि बिदित गुपत कछु नाहन ।।
मितहित ग्रह कुटंब तज जावन ।। गिरबन गहन भ्रमन दुख पावन ।।
मेघ घाम सिर सीत सहारन ।। प्रभ पियार सहि रंच न हारन ।।
तन धन जाऊ त सोच न करनी ।। मित सेवा सिर लौ अनुसरनी ।।
सो यहि सकल दास ने कीनी ।। पै सभ बिफल परी अब चीनी ।।

तुम से मीत चतुर गुन खाना ।। निज मुख मित ता करहु बखाना ।।
जौ पुन तुम से करहि दुरावा ।। मीत न ते कछु गूढ जु भावा ।। ५१ ।।

दोहरा: अवर जगत महि मीत की करहि कवन कहु आस ।।
जिन पि परी याते प्रगटा यहि सब बचन बिलास ।। ५२ ।।

चौपई: याते ऊमग हिंयो भर आयौ ।। बिसद द्रिगन महि जल भर छायौ ।।
जौ यहि होत सकल सच साखी ।। ब्रिध पुरख जो तुम प्रति भाखी ।।
हुवै छिकंत कछु गूढ जु भावा ।। कत तुम हम सन करत दुरावा ।।
यहि जो कपट सहत तिहि बानी ।। मद मतवारे कुवर न जानी ।।
सीख बडन की मन ते टारी ।। भावी क्रित की चिंतन धारी ।।
वाक पटीकें असु पात पर ।। भयौ बिल नहि लख्यो घाख पर ।।
भावी बसमद मति बवराई ।। चाहत सूती कलह जगाई ।।
दली न काल चक्र कें पेरे ।। बरबस कीये बिपति के डेरे ।। ५३ ।।

दोहरा: भान प्रभा के बचन पर रंच न कीनो ध्यान ।।
दुस्ट मित्र की बात बिख सुधा जान किय पान ।। ५४ ।।

चौपई: मद की लहर द्रिगन महि छाई ।। त्यो दुस्ट को कंठ लगाई ।।
ब्रिध पुरख मुहि बरज सिखायो ।। पै तुम रे मन हट अस आयौ ।।
मै तुमसों नहि सकों दुरांवन ।। प्रानहु जाहु नही दुख पावना।
लेहु स्रवन करि सब वहि भाई ।। जो तुमरे मन महि अस आई ।।
ब्रिध पुरख मुहि मंत्र सिखायौ ।। सिधि योग करि तिन जो पायौ ।।
ता प्रताप यहि सकति धरत हौ ।। निज तन ते स्वेछित नि करत हौ ।।
आन कलेवर करहु प्रवेसा ।। पसु पंछी सुर नर के भेसा ।।
तिन अदभुत लख कपट दल पेटे ।। बहुर कहे बचन मदनचपेटे ।। ५५ ।।

दोहरा: मोहि सुनावहु सकल बिधि बतिन दीन बताई ।।
सकल समझ द्रिढ करि बहुत भाखे बचन बनाहि ।। ५६ ।।

चौपई: जब लग नहि निज द्रिगन निहर हौ ।। तब लग किम प्रतीति मन धरहौं ।।
राज कुवर ऊठ तब अकुलाई ।। बन महि गयो संगि तिहि लाई ।।
कपित न परयो म्रित कलहि पायौ ।। तत छिन न्रिप सुत तिहि निकटयौ ।।
कहयौ मित्र सन देख तमासा ।। या महि प्रविसौ अब आन यासा ।।

अस कहि मंत्र बिधान कराई ।। निज तन तज्यो तुरत अतुराई ।।
कपितन माहि प्रवेस जा कीनो ।। ऊठयो कपीस रस अंग मीनो ।।
अवसर जान दुस्ट मंत्री सुत ।। निज तन तज्यो मंत्र बलते ऊत ।।
राजकवर तन करयो प्रवेसा ।। ऊठयो तुरत सविधान त मेसा ।।५७ ।।

दोहरा: मन बिचार करि मियान ते लीनो खरग निकार ।।
निज तन के बहु टूक करि डार्यो सरित मझार ।। ५८ ।।

~~कवित्त~~: चौपई: यहि लख कवर मनहि बिसमायो ।। बडो दुस्ट ताको लख पायो ।।
सीस धुनियो बहु करत बिलापा ।। बहु दुख पाय करियो पछतापा ।।
बार बार निज मति धिक्कारत ।। ब्रिध पुरख की सीख समारत ।।
भान प्रभाकर हि रही सिखानी ।। मै मूरख मन रंच न मानी ।।
बडो भूल हो परि यो अहो प्रभ ।। तूं अंतरजामी जान त सभ ।।
मित्र द्रोह छिन दुस्ट कमायो ।। रबु के पेच मन मोर भुलायो ।।
अब तुझ बिन मुहि कौन सहाई ।। आपन आथ बिपति मै पाई ।।
छित छिन दुस्ट यहै मन धारी ।। मारहु कपि को खरग संभारी ।। ५९ ।।

दोहरा: पायो ममारन को कुमति कपित बग यो पराय ।।
तरु ते तरु आंतर तुरत पात न गयो दुराय ।। ६० ।।

चौपई: हुवै निरास तब फिरायो दुस्ट मति ।। भयो मनै मन मगन मुदित अति ।।
मंत्री सुत के बसन ऊतारे ।। रक्त छिरक कीने रत नारे ।।
निधरक सर प्रभा के डेरे ।। गयो कपट रचि रुदित टेरे ।।
रुदन करत करत टेरत तन तारत ।।
मीत मीत कहु ऊच पुकारत ।। ~~यहि गति लख वहि अति बिलखानी~~
यहि गति लख वहि अति बिलखानी ।। पूछत भई ब्रिथा जु बिहानी ।।
तब तिन कहयो मंत्री सुत साथा ।। बन बिहार कर तेगह हाथा ।।
उठयो अचानक छिक के हरि बल ।। मंत्री सुत हि ऊठाय परयो चल ।।
हमहु खरग बहु करे प्रहारा ।। अंग अंग छेदन करि डारा ।। ६१ ।।

दोहरा: पै तिन ताहि तज्यो नही लेही ग्यो ऊठाय ।।
हम बिहबल हुवै थक रहे मित्र हेत पछताय ।। ६२ ।।

चौपई: यहि सुन सूर प्रभा बिसमानी ।। तन चेस्टा तिहि लखी सियानी ।।
अतिअकुलाय मन हि अति रोई ।। जानक रंक नवों निधि खोई ।।
धर धीरज पुन कछु समझायो ।। रुदन करन ते ताहि हटायो ।।
भावी अमिट जानतज सोका ।। सकति न कोऊ करम गति रोका ।।
ससि कलंक सिव अचत हलाहल ।। रघुबर किय कुरंग हित काहल ।।
जनमे जय प्रति ब्यास सिखावा ।। जान बूझ सब बनयो बनावा ।।
जीवन मरन रु मिलन बिछोहा ।। भावी बस लखत जियै मोहा ।।
यहि गति लिखी हुती तिहि माला ।। बनयो निमित देस अरु काला ।।६३।।

यथा दोहरा:
कहि कांसी कस्मीर कहि खुरासान गुजरात ।।
तुलसी पिछले जनम की परारबध ले जात ।। ६४ ।।
तुलसी जो भव तब्ब ता तैसी बनय सहाय ।।
आपन आवै ताह पै ताह तहा लै जाय ।। ६५ ।।

चौपई: कहा जनम कहा काल सुपावा ।। याको वैसहि हुतो बनावा ।।
करन हार पर द्रिस्टि सुधारो ।। तजहु सोक मन रुदन निवारो ।।
या बिध कहि तिन कीन समोधा ।। बाहर गयो सु पाय प्रबोधा ।।
बहुर समा ससि कला के ढिग आयो ।। रोवत यही प्रसंग सुनायो ।।
पुन अकुलाय गयो निज डेरे ।। दुस्ट भाव मन चितव घनेरे ।।
तब ऊठ सूरज प्रभा सियानी ।। समा ससि कला ढिग निज कानी ।।
मंत्री सुत को कथित प्रसंगा ।। आपस महि कापत दुख अंगा ।।
भान प्रभा बड सुघर कुमारा ।। राखत हुती सकुन निरधारा ।। ६६।।

दोहरा: बिआकुल हुवै बोलत भई कुसल करहि जगदीस ।।
आज अपसकुन बहुत ही कूर परत है दीस ।। ६७ ।।

चौपई: आज अंग सम दहनि और ते ।। फरकत हैं अलि बडे भोर ते ।।
मग महि म्रिगनी निसरअकेली ।। पंथ चीर पुन सरी दुहेली ।।
मो मुख ओर निरख अकुलाई ।। भर की लख आपन तन छाई ।।
ऊतरत जब निवास पग धारयो ।। छीक ऊठयो कोऊ तब दई मारयो ।।

सोवत सुपन असुभ मम हेरा ।। चौंक परी ऊत भयो सवेरा ।।
तब ही ते मम हिय अलि फकर्यो ।। लाख सकोच सोच महि जकर्यो ।।
तुम हूं तौं अलिराज कुमारी ।। प्रेम क्रिपात प्रापति मत भारी ।।
बिधा निपुंन सभा चतुराई ।। बुधि वंत जग बिदित बडाई ।। ६८।।

दोहरा: आज बिपर जय लख परत न राज कवर बिवहार ।।
कैमोमति ही भ्रमत है कै कछु मान बिचार ।। ६९ ।।

चौपई: यहि सुन सभा ससिकला बोली ।। धरम चारनी मति की भोली ।।
परम मीत इन को मंत्री सुता ।। ता बियोग दुख अवध सु अदभुत ।।
याते नहि निज देह संभारत ।। बिचलत मति सम होत दुखारत ।।
याते तव कछु पर्यो लखाई ।। अदभुत नहि अस मो मन आई ।।
बुरी होत है बिरह मीत की ।। बड मति वंत हु तजत नीत को ।।
या बिधि करि निज महि बतरामनि ।। बिलग भई संभ्रम चित भा मनि ।।
भावी बस वहि निस की बारी ।। हुती रवि प्रभा की निरधारी ।।
इस हि सार नहि अंत हि पुर की ।। नियत करी क्रित नित जो धुर की ।।७०।।

दोहरा: सभा ससि कला ही दिस हुती याहि दुस्ट को ध्यान ।।
याते याही के भवन मूरख कीन पयान ।। ७१ ।।

चौपई: यहि आगे कछु भ्रमत बिचारत ।। दिवस क्रिया ही महि निरधारत ।।
निज ग्रह गवन अनुचित बिचारी ।। दुगुन भयो हिय महि भ्रम भारी ।।
इक जाम जब रजिनि बिहाई ।। सूरज प्रभा तहां चलि आई ।।
देख हि कहा कपट न्रिप ताता ।। बैठ्यो तहां अधिक सकुचाता ।।
भान प्रभा भाखे तब बयना ।। कहा निवास करहु गे रयना ।।
तिन सकुचाय कह्यो भयधारी ।। जब आयस पुन होय तिहारी ।।
बहुर रवि प्रभा कह्यो सुनाई ।। इतहि सुवें रहो सुंदर जाई ।।
बहुत भला कहि जब तिन मानी ।। यहि भी बित य बात पछानी ।। ७२।।

दोहरा: सभा ससि कला कुवरि को बातन महि बहराय ।।
कर सों करि गह आपने संग हि गई लवाय ।। ७३ ।।

चौपई: जाय छिकंत रुदन बहु कीनो ।। सनै सनै जौ पर तन चीनो ।।
तन तारन करि अति करुनाई ।। वहि हूँ सहम गई भय खाई ।।
कह्यो सच कहु प्रान पियारी ।। तौहि सपथ री हरि गिरधारी ।।
द्रुपत सुता की जिन पति राखी ।। सखी साच कहु वह प्रभ साखी ।।
रोय कह्यो सुन राज दुलारी ।। हम पर परी बिपति अति भारी ।।
राज कवर.के कर ते छूटी ।। निरजन बन बट पारन लूटी ।।
यहि सुन बिलख बदन वहि कामनि ।। भई सुन जनु अचल सु दामनि ।।
सुयो यदपि सुभाव बिचारी ।। तदपि गुनवती राज दुलारी ।। ७४ ।।

दोहरा: कह्यो असंसय आज वै बहु बिवहार कुमार ।।
करे थिपर जय देखिय त लखत होत भ्रम भार ।। ७५ ।।

चौपई: बहुर रवि प्रभा बुधि बिचारी ।। हुती जु अंतहि पुर रखवारी ।।
ऊरदा बेग निपुन कलि कामनि ।। सस्त्र पानि दस दिस निसि फाकिनि ।।
तिन प्रति आयस दयौ पुकारी ।। रहौ प्रार पर अस रखवारी ।।
राज कवर तौ कहा बिसेसा ।। यम हूं श्रा मन पाय प्रवेसा ।।
यहि सुन वहि मूरख डर गयौ ।। तही हुवै रह्यौ जनु मर गयौ ।।
यहि भयभीत आय नहि जाई ।। छेक हु भय दुहु ओर लखाई ।।
दुखित परी बिल लात छिकेली ।। कह्यो रवि प्रभा लखहु सहेली ।।
जौ यहि जगत प्रभा करि होवत ।। हमसों बिछुर कहो किम सोवत ।। ७६।।

दोहरा: ताहि कहौ डर कवन हो आवत निघरक धाय ।।
रिस को कारन पूछतो लेत नि हौर मनाय ।। ७७।।

चौपई: तोहि सपथ री प्रान पियारी ।। यहि नहि राज कवर निरधारी ।।
बिस मति सभा सचिकला बोली ।। रुदन कीयो चित ते अति डोली ।।
नख सिख वहै सरीर सुहावन ।। अंग अंग लखियत मन भावन ।।
छिक सुभाव महि फरक बिसेसा ।। मनहु पिसाच हि कीन प्रवेसा ।।
कारन कवन समझ नहि आवत ।। बार बार मो मति बिरमावत ।।
सूरज प्रभा कह्यो तब रोई ।। अकह कथा जो मन हि परोई ।।
सखी पिता मम जोग कमायो ।। तज कलेस हरि ध्यान लगायो ।।
भजन प्रताप सिधि अस पाई ।। स्वेछित आपन तन हित जाई ।।७८।।

दोहरा : करत कलेवर आन महि अनायास परवेस ।।
जब चाहत फिर आवई निज तन रहत कलेसा ।। ७६ ।।

चौपई : राजकवर प्रति अधिक सनेहा ।। करत हुते मन ते बडनेहा ।।
बिदा समय कर प्रेम अपारा ।। लेहि कंत वहि मंत सिखारा ।।
मो मन आवत यहि अनुमाना ।। कबहु सता नहि परत पछाना ।।
वहै मंत्र निज मंत्री सुत प्रति ।। कह्यो होय नृपति हीन मति ।।
मित्र जान नहि करयो दुरावा ।। जान्यो नही समय को दावा ।। ~~तक~~
ताकी दुस्ट द्रिस्टि तुम ओरी ।। लखत हुती मैं निस अरु भोरी ।।
इसी हेतबहु बिधि समझावा ।। नहि त्यावहु इम ढिग सु हटावा ।।
नहि मानी मति के अभिमाना ।। यहि सम ताक हु फल हम जाना ।। ८० ।।

दोहरा : जोहि तबच मान इन ही मनहर मंद गवार ।।
आप बिपति दुख भोग ई संगी बिपति मझार ।। ८१ ।।

चौपई : ता कपटी के कपट जाल महि ।। फसयो होयगो कुमति खियाल महि ।।
कह्यो होय गो रचहु तमासा ।। ~~ताके कहे तजी निज~~ मोहि दिखावहु रच अनयासा ।।
ताके कहे तजी निज देहा ।। गयो कहूं खग म्रिग तन गेहा ।।
छिन तन तज तहि कीन प्रवेसा ।। कामी कुटल कुवर के भेसा ।।
मित्र दोह छिन पाप कमायो ।। यहि मंत्री सुत मै छल पायो ।।
यहि छल करि ताते तन लीनो ।। समझी नहि न्रिपति अति हीनो ।।
तन तौ लयो दुस्ट मति कामी ।। पै सुभाव महि परत सुखामी ।।
याते बितय सम बिवहारा ।। समझत नहि मति मंद ~~कम~~ गवारा ।। ८२ ।।

दोहरा : ताते हम पर बिपति अति परी सखी अस जान ।।
धरम सील कुल कान तन राखहि स्री भगवान ।। ८३ ।।

चौपई : यहि सुन सभा ससि कला रोई ।। मूरछत परी सकल सुध खोई ।।
मुकर धरम अन्याय ऊपलते ।। देखिय किम राखहि हहि बलते ।।
मन पछतावत करत बिलापा ।। निसा बिताई अधिक संतापा ।।
हाय करम गति तै कस कीनी ।। यही रचन हम हित रच दीनी ।।
मात पिता को ग्रह तज वायी ।। सास ससुर मुख दरसन पायो ।।
कंत कुमति अपनी की जारी ।। फसयो ग्यो कहूं सुध न संभारी ।।

ह्म कुपेच महि परी दुस्ट कै ।। महा अधरमी पाप पुस्ट कै ।।
अब हरि बिन ह्म कौन सहाई ।। जिन द्रुपति की लाज बचाई ।। ८४ ।।

दोहरा: धरम ह्मारो राखो नो लाज सील कुल कान ।।
दीन बंधु ह्म रो तुही अंतरजामी जान ।। ८५ ।।

यथा दोहरा:
सीता पति रघुनाथ जू तुम लग मेरी दौर ।।
जैसे काग जहाज को सूझत और न ठौर ।। ८६ ।।

कबित: येरे काल चक्र तेरे चक्र ते चवाय कर आस करे कौन मुख खोल मुख ब्यान की ।।
है वै जौ असंसह बे की ठौर घाय कोउ खोल मुख हसै तौ हसै ही हान प्रान की।।
अैसे परलाप करते ही प्रात प्रलैकोसो प्रकटी रसमि प्राची दिसते प्रमान की ।।
कूच की तयारी आई पौर पैसवारी चली दोउ दुखियारी सुध हैन आन जान की।।८७।।

चौपई: हरकारन आखबर सुनाई ।। कपट राज सुत पहि अस आई ।।
यो जन सवान गर इक भारी ।। राज करत राज बल धारी ।।
तहा जाय डेरा ठहरावै ।। किधौ ऊलंघत करि तिहि जावै ।।
आयस दीन नगर के नेरे ।। ठाढे हो हि सकल चल डेरे ।।
सिर निवाय जस आयस पाई ।। ऊतरी सैन नगर तट जाई ।।
राज समाज सहित बड डेरे ।। लगे जाय हुवै अदभुत हेरे ।।
इक ओर ऊतर्यो रणवासा ।। तंबू रंगारंग प्रकासा ।।
राजभवन इक ओर लगायो ।। सिंघ पौर दोखत भय दायो ।। ८८ ।।

दोहरा: बडो सभा घर मध महि चहूं ओर बड सैन ।।
अति अपार लसकर प्रबल कह्यो परत नहि बैन ।। ८९ ।।

चौपई: जब ऊतरी जा राज दुलारी ।। बिरह बिथित दुखि पर बस चारी ।।
कपट राज सुत तब तिहि आयो ।। जिनहु दुखित हुवै अति भय पायो ।।
ऊत वहि सकुचत छल हि छिपाई ।। असन होय मम कपट खुलाई ।।
पल भर बैठ गयो उठ डेरे ।। छिन के मद्दे सुमन हि चितेरे ।।
ऊतनगरी सपास यहि सारा ।। पहुची ऊतर्यो किनहु दल भारा ।।
हुवै भय भीत सु रच्यो ऊपावा ।। निज ते अधिक बडो लख पावा ।।

निज मंत्री मति वंत पठायो ।। समाचार तिहि को मंगवायो ।।
दुवारपाल दीनी जा सारा ।। न्रिप मंत्री ठाढो पर दुवारा ।। ९० ।।

दोहरा: सभा निहार नरावरी पढ्यो नगर के ईस ।।
भेट दैन हित ऊमग मन राखत बिसवै बीस ।। ९१ ।।

चौपई: यदपि यहि नाहि राजकुमारा ।। तदपि लखे बहु बिधि दरबारा ।।
खास राज मंत्री को ताता ।। जानत हुतो सकल बिधि बाता ।।
जाय सभा घरे रच दरबारा ।। बोल लीन ढिग सम सरदारा ।।
यथा ऊचित सभ ठौर बिठारे ।। अमरन बसन सहत स्रिंगारे ।।
आप बसन अमर बड धारी ।। राजमुकट निज सीस सवारी ।।
बैठ्यो जाय सिंघासन बन ठन ।। छत्र मोर कर ढुरत चामरन ।।
~~न्रिपमंत्रि~~ न्रिप मंत्री तब लयो बुलाई ।। फुक प्रणाम तिन कर्यो सु जाई ।।
भेट दीन दोउ करि जोरे ।। बिनति करी बहु भांत निहोरे ।। ९२ ।।

दोहरा: छिन तिहि अतु आदर सहित ऊचित ठौर बैठाय ।।
कुसल प्रसन करि न्रिपत को न्रिपति कीयो सभ जाय ।। ९३ ।।

चौपई: देस बेस के चले प्रसंगा ।। गुण बिद्या युति मिले सु रंगा ।।
निज आगम गोन मित जनायो ।। बन बिहार म्रिग यामन भायो ।।
सुन्यो होतो यहि देस सुहावन ।। नीर समीर सुख दमन भावन ।।
नगर निहारन की अभिलाखा ।। पुन नगरी सलखन मन राखा ।।
कहे बचन म्रिदु समय नुकूला ।। सुन मंत्री मन महि अतिफूला ।।
तेज प्रताप सभा गुन माना ।। लख प्रसंन मन भयो महाना ।।
बिदा समय बहु बसन अमोले ।। भूखन सहित दये म्रिदु बोले ।।
अदभुत बसतु कछुक न्रिप हेता ।। दै पठई बड प्रीति समेता ।। ९४ ।।

दोहरा: निज भू पति प्रति जाय तिन कीनी प्रभा बखान ।।
सुनत चढयो वहि मिलन हित रचीहै संधि बिधान ।। ९५ ।।

चौपई: न्रिप आगम छिन हूं सुन पाहे ।। सकल सिदार अगमने पठाहे ।।
भेट दीन अति आदर कीने ।। आकत महे संग निज लीने ।।
सभा पौर पर निज ऊठि आयो ।। मिल्यो न्रिपति कहि कंठ लगायो ।।
करसों कर गह कुसल प्रस्न कर ।। बैठार्यो निज अर घासन बर ।।

भाग प्रभा कर बडो छितीसा ।। तुम ताके सुत बड अवनीसा ।।
क्रिपा करी बड दरसन दीनों ।। नगर भवन मम पावन कीनो ।।
ऊचित न बाहर रहन तुमारो ।। करहु भवन पावन पगु धारो ।।
दरसन देहु सकल नागर जन ।। सफल करहि द्रिग पुन सीतल मन ।।९६।।

दोहरा: कछु दिन करिय अराम अब मग स्रम सकल निवार ।।
पुन इछा जिम रावरी तै सहित करिय बिचार ।। ९७ ।।

चौपई: या बिधि कहि बहु भांति निहोरी ।। संगल वाक्य गयो हट तोरी ।।
रंग महल महि दयो ऊतारा ।। सुखद समग्री सहत सवारा ।।
सभा ससिकला सूर प्रभा हित ।। बिसद हवेली दई प्रीति चित ।।
तिन महि ऊतरयो सम रणवासा ।। सुखद सोंज रच बिबिधि बिलासा ।।
सैन सकल डेरन महि छाई ।। रहीतही सुंदर बड जाई ।।
खान पान पकवान मिठाई ।। बिबिधि भांति कीनी पहुनाई ।।
राग रंग बहु नाच तमासा ।। बहु प्रकार कर रचे बिलासा ।।
जिहि मन रुचै वहै सब ले वया ।। जह तह सवाधान सब सेवय ।। ९८ ।।

दोहरा: रह्यो कुलाहल बहु दिवस नागर न्रिपति ऊछाहु ।।
मन दुहुं दिस प्रेम बड मंगल सहित बिवाहु ।। ९९ ।।

चौपई: बढ्यो दुहुन महि प्रेम अपारा ।। राग रंग रचा सभा प्रकारा ।।
रात दिवस कछु जात न जनियत ।। अस्ट जाम छिन छिन करि मतियत ।।
याते कछु अवकास जु पायो ।। मन महि अस बिचार ठहरायो ।।
जब लग जगत प्रभाकर जीवत ।। अंतरि रकत मोर नित पीवत ।।
ऊलचित प्रथिम ताकौ बध करनो ।। युकति नीति नहि सतु बिसरनो ।।
यदपि कीस तन निबल सुता को ।। तदपि नही बिसवास सुवाको ।।
अगनि सत्रु रिण तजय न सैसा ।। समय पाय पुन जनित कलेसा ।।
याते प्रथम ताहि हन डारों ।। पुन बेखटक भोग बिसतारों ।। १०० ।।

दोहरा: सूरज प्रभा ते भय करत पुन ता पित को नाम ।।
सुनत मिरत जन अस डरत यही चोर को काम ।। १०१ ।।

चौपई: सोच समझ मन आयस दीनी ।। नगर निवासिन प्रति कहि दीनी ।।
जो छिक कपि त्यावहि हम पासा ।। लेह दस कपन रजत प्रकासा ।।

लोभ ग्रस्त दस बिस जन धाहे ।। कई सहस कपि गह गहलआहे ।।
जो सनमुख त्याकत तिहि देखत ।। पहिचानत मन माहि परेखत ।।
पुन ताको सिर तुरत कटावत ।। गहन हार को दाम दिवावत ।।
जानत नहि मति मंद गवारा ।। वहिं बिर्धंत है रचने हारा ।।
मारन राखन है ताके करि ।। निज करि जानत वहि मूरख नर ।।

यथा श्री मुख वाका ।।

भारय राखै अवरन कोहि ।। सरब जीआ का राखा सोहि ।।
करै करावै आपे आपा ।। मानुख के कछु नाही हाथा ।। १०२ ।।

दोहरा: पाप करत फल चहत सुख मन हठ मति को हीन ।।
ताको फल सु निदान दुख पावै कुमति कमीन ।। १०३ ।।

चौपई: कछुक काल महि कपि बहु मारे ।। पाप करम कीने बड भारे ।।
कपि घट गहे दामन बढ गहे ।। छिन कपि के सत लौ जब गहे ।।
दोय तीन योजन चहु ओरा ।। कपि कहूं मिलत न बहु बिघिटोरा ।।
कछु मारे कछु गहे पराई ।। तज्यो देस सभ गहे लुकाई ।।
मनहु तबी कै छितक पिवाहे ।। मथु रा बिंद्राबन महि छाहे ।।
अवघ बंगाले महिं सब देसा ।। ता दिन ते ही कीन प्रवेसा ।।
सकल नगर महि यह ही चरचा ।। फैल परी निस दिन की परचा ।।
छोटे बडे नगर बासिन को ।। बिरद मयो जनु कपि फासिन को ।। १०४ ।।

दोहरा: छिक फंध कता नगर महि बसतो अति कंगाल ।।
पंछी पकरन हित सुनित जाकत प्रात हि काल ।। १०५ ।।

चौपई: खगटस पांच पकर नित लियावता ।। बिक्रय कर अंना दिक पावत ।।
नारि पुरख ता महि मिल दोऊ ।। खान पान सापित कछु सोऊ ।।
जा दिन मिलत न ताहि सिकारा ।। लंघन करत दुखित नर नारा ।।
छिक दिन वाकी त्रिय अस भाखी ।। कंत मंद मति तव अति लाखी ।।
सारो दिवस खगन को ताकत ।। छानत खाक फिरत तरु भाकत ।।
मनहु घूक सम भयो बावरो ।। बन बन भटकत फिरत डावरो ।।
तौहूं मिलत जुऊदर अहारा ।। रहत बसन बिन तन हि उघारा ।।
कहूं छेक कपि श्री करि आवै ।। जनम जनम को दारिद जावै ।। १०६ ।।

दोहरा: इक सतक मुद्रा रजत रजत मिलत मौल न्रिप दुवार ।।
बहु जन त्यावत मैल से करहु जतन मन धार ।। १०७ ।।

चौपई: लोभ बुरा ही है संसारा ।। हुवै प्रसंन तिन ऊदम धारा ।।
कह्यो ऊधार चून कुछु त्यारी ।। दौ रोटी अब तुरत पका री ।।
चने चार मुसटी भर त्यादे ।। यहि समान मुहि सीघ्र बनादे ।।
कपि पकरन हित प्रात सुजैहों ।। माल अंक नी के पत यै हौं ।।
यहि सुन माग जांच तिन नारी ।। जस भाखी तस कीन त्यारी ।।
ब्रह्म महूरत ऊठ खग नासक ।। फंट का जालत ज्यौं कपि आसक ।।
किघा सहत दगे की टाटी ।। सकल तयाग मन औरं हि ठाईं ।।
रोटी चने रस रीयां लै कर ।। चल निकस्यो अन सुमर बिघन हर ।। १०८ ।।

दोहरा: योजन डेढ किदोय लग गयों नगर ते दूर ।।
पात पात ढूंढत लगयौ कपिहित लालस पूर ।। १०६ ।।

चौपई: ऊत वहि जगत प्रभाकरि राईं ।। आपन हाथ बिपति जिन पाईं ।।
कपि पकरत लख दुरजन लोका ।। तिन ते चरचा सुनी बिसोका ।।
कईं सहस कपि न्रिप मरवाइे ।। दिन दिन बढइं दाम सवाइे ।।
सम आपन हित लखयौ समाना ।। मंत्री सुत को क्रित्य पछाना ।।
अति भय पाय दूह्यो गिर भारन ।। मति कहूं प्रानहु पर हि प्राहारन ।।
प्रेम बिबस तज देस नरायौं ।। रानिन को बियोग ऊरिछायौ ।।
भावी बस डर कर ऊपवारा ।। भइ कई दिन छुधा पिपासा ।।
बयाकुल बिथित नींद दुख सह्यौं ।। तरु खोडर महि छप पर रह्यौ ।। ११०।।

यथा दोहरा:
कहा होत ऊदम कीये जौ बिधना प्रति कूल ।।
जैसे निपजे खेत को करत सलभ निरमूल ।। १११ ।।

चौपई: भावी बस खग हात हि आयौ ।। तरु खो डरमहि कपि लख पायौ ।।
सोवत बिसुध बिमुद्रत नयना ।। याके भई अनद मन चयना ।।
सने सने पंग सीघ्र उठायौ ।। पकर पीरते तुरत दबायौ ।।
कपि कंपाय द्रिग खोलन लखायौ ।। अपनो गरो काल करि पायौ ।।

जीवन ते चित लयों ऊठाई ।। तब निसचै मन महि अस आई ।।
जग महि हुतो छितो हि जीवनो ।। अब म्रित प्यालो परौं पीवनो ।।
ऊमर प्रमान मान को बासन ।। पूरन हुवै छलक्यो अब या छिन ।।
दुखित होय करि हाय पुकारयौ ।। अति बयाकुल अस बचन ऊचारयौ ।। ११२।।

दोहरा: हम तिस प्रभ के जीव हैं तिसी और हम गऊन ।।
जैसे सिंधु तरंग को कहा दूसरो मऊन ।। ११३ ।।

चौपई: खग हाकटि तैरजुनिकारी ।। तकरौ जकर लीन बलधारी ।।
निज बस करम गली यौ नगर कौ ।। अति अनंद फल पाय डगर को ।।
कछु कदूर जब तहि ते चल्यौ ।। कपि ने करि पछताप सु मल्यौ ।।
अति अधीन हुवै बिनति सुनाई ।। खगहा जीय के दुख दाई ।।
कत अदोख जीयको करि घाता ।। लेत पापनिज सिरि बिख्याता ।।
सुन्यो न तै हरि अंतरिजामी ।। जो सम जीवन को प्रभु सुआमी ।।
ताके द्वार ऊत्र कस दै है ।। चित्र गुपत जब लेखा लै है ।।
आप हि दुखी करम के मारे ।। पसु पंछी तन धर दुखियारे ।। ११४ ।।

दोहरा: दुखियन को ~~मूल है मन ते मति न भुलाय~~ न दुखाव रे दुख पै हैं पछताय ।।
दया धरम को मूल है मन ते मति न भुलाय ।। ११५ ।।

चौपई: यहि सुन वहि खग हा मुसकाई ।। कह्यो खूब तव बात सुनाई ।।
छल बतीया करि मोहि डरावत ।। कपि बोलत लख अदभुत आवत ।।
जिंन पिसाच भूत दे वासे ।। कछु बलाय हो मोह बला से ।।
किसू भांति तुहि तजहु नही अब ।। मिल्यो यतन कर भाग जगे जब ।।
न्रिप को जाय तोहि पकरावों ।। मुद्रा सत छिनाम की पावों ।।
ता करु पालहु सब परवारा ।। दया धरम कहु कवन बिचारा ।।
यहि सुन सुंन भयो कपि राई ।। रही सही सभ आस चुकाई ।।
बहु अधीन हुवै बिनति सुनाई ।। परी बिअरथ काम नहि आई ।।११६ ।।

यथा चंदर मायने ।।

दोहरा: खेवट प्रति रघुबीर तब केती कही बनाय ।।
गरज गोय की बात को चंद कौन पतीयाय ।। ११७ ।।

चौपई: लोभ क बुरो चिकनो घट पाई ।। ज्यों घरम जल निकट न जाई ।।
खगहा सीघ्र चल्यो तब धाई ।। सायं समय सहर निकटाई ।।
मन अनंद किय मकन प्रवेसा ।। तिय प्रति बोल्यो बचन बिसेसा ।।
सुभग महूरत उद्दम कीनो ।। चाहत जो प्रभ पूरन कीनो ।।
खग निज अरथ चोग बिन जाली ।। आपहि फस्यो आज मुहि जाली ।।
अस कह अधिक हस्यो ~~खगन~~ खग आरी ।। बांध्यो कपि इक ठौर अंधारी ।।
जा छिन इत कपि खगहा पकरयो ।। संग हि भान प्रभा इय जकरयो ।।
रुदन करत बियाकुल तरफावत ।। आह कराहत अस बिल पावत ।। ११८ ।।
स्वैया: अरी हाय री हाय तूं ज्यों फलदायक आगे हुती अब तौंन रही ।।
करि प्रेम के पेंच की खैंच अरी मन मीत मिलावत सौन रही ।।
अब केती कराह की आह करी बनी बे प्रवाह तूं मौन रही ।।
कछु जान परै नही तूही नही किस मौन रही किधों हौंन रही ।।११९ ।।
स्वैया: पुन जाय समा की कलानिधि सों कह्यो हे री सखी कछु तेहूं सुनो ।।
कपि कोटि कु पात्र नैरी बिन दोस मरा है इनै इय मै तौ गुनो ।।
कहूं याही सरीर मै राजकुमार री होव हि गो कहि सीस धुनो ।।
पुन आज कछू बडी मोर ते री दुखिया दिल मै दुख होत दुनो ।। १२० ।।
स्वैया: परी प्रेम के पेंच की ऐंच अली जली जान को खेंच दै ताप चढी ।।
भयो भाकसी भौंन कै भार किधौ बिखा राखसी खात करै जो कढी ।।
यहि जान परी वहि प्रान पिया पकरयो जाते बिथा जो बढी ।।
किधौं काल नयो दुख दै है कछू हसी टौर रुवाय है जो मै मढी ।। १२१ ।।
स्वैया: यहि साच है साच सनेह की रीति मै राच रह्यो मन जासों दई ।।
गर प्रेम की डोर बंधी दुहु ओर खिंची जिहि ओरतों ऐंच मई ।।
दिल बेहाल तै द्रिग की पलकौं थरकाय कछू फरकाय गई ।।
दहलाय इयो इत मै मित को तन कंपत बेथर राय छई ।। १२२ ।।
स्वैया: निज मीत की जौ अखियान क्यो हूं बिथा बढै काल कुफेरन ते ।।
इत प्रेमी के नैन ते आंसुन की धार कढै औं बढै दुख छेरन ते ।।
ऊत आनन तंग यहा दिन तंग ये रंग रहै नित छ टेरन ते ।।
कछु ऐसो अनूठो अपूठो ही प्रेम को नेम रचो अर फेरन तैं ।। १२३ ।।

स्वैया : सुन राज दुलारि कही अकुलाय अली कछु और हूं याते परे ।।
जग मैं दुख और खराबी रही दिन बाके जीऊ हम नैन मरे ।।
निज देस छुटो धन राज लुटो पित मात कुटंब सौं टूट परे ।।
हिय घाय सो आले परे अब प्रान हूं बैरी के आन हवाले करे ।। १२४ ।।

स्वैया : अब प्रान छुटों न छुटों सजनी दुख तौ कम याते नही अपनो ।।
प्रभु या बिधि को दुख सूल अरी नहि बैरी को देयहि यौ तपनो ।।
पुन जाहि तसूल सहे निकरी प्रति कूल समय को लखौ कपनो ।।
तिहि खोय रही निज देस हूं ते कर धोय रही औपख्यो सपनो ।। १२५ ।।

स्वैया : अब जौ प्रभू को भलो भावै अली भलो मान वहे सिर पै सहनो ।।
यहि चाहे कि योग की बंदते जो छुट जावे जु भाव लिखौ लहनो ।।
हम घाईया प्रेम सुधा के बटे कहूं मौत मिले तौ भलो कहनो ।।
दुख मीत बियोग भरतो दिल जौ जग के दुख भ्याल बे को बहनो ।। १२६ ।।

दोहरा : छित के करत बिलाप अस तुल खगहा की नम्म नार ।।
गई झरप कपि के निकटि कर महि दीपक बार ।। १२७ ।।

चौपई : कप तिहि देख बिचार त मन मै ।। परे कु पेच फंध जिहि तन मै ।।
कूर कुमति वहि दया बिहीनो ।। धन लोभी बड दुस्ट कमीनो ।।
स्रवन धरी नहि बिनती मोरी ।। म्रिदुल न भयो ह्रिदो जु कठोरी ।।
अदभुत नहि यहि ताकी नारी ।। नारी नरम सुभाव उचारी ।।
म्रिदुल बचन कहि यांहि रिझावों ।। सुन यतु अपनी बिपति सुनवों ।।
भलैं जु कछु नारी नर भावें ।। दुस्ट सत्रु ते प्रान बचावें ।।
यहि मन समझ सने कहि बयना ।। लिहु प्रणाम री सुंदर नयना ।।
चौक परी वहि भय मन मानी ।। कपि बोलत कहूं सुन्यो न कानी ।। १२८ ।।

दोहरा : यहि लख कपि तिहि धीर दै कहि बडभागनि नारि ।।
भय बिहाय द्वै बचन मम सुनहु प्रकट हिय धार ।। १२९ ।।

चौपई : कछु निरभय हूं होवत गामिनि ।। पुन हट वंत सुभावि कि भामिनि ।।
कपि बोलत लख अदभुत मानी ।। हठ कर कहयो सु करहु बखानी ।।
कपि बोल्यौ भर ऊरध ऊसासा ।। स्रोता लख दुख कीन प्रकासा ।।
मै हो छिक बड बिथित बिदेसी ।। मस्यो दसो दिस दुखन बिसेसी ।।

बयाकुल थक्ति दूर निज घर ते ।। परबस बंद दरद गन भर ते ।।
मात पिता बहु बिधि दुलरायो ।। लाड चाव के पलन झुलायो ।।
दुस्ट काल के परयो हवाले ।। कस कस कस्ट कलेस दिखाले ।।
बडी बिपति हित घर तजवायो ।। दुवार दुवार ब्याकुल भरमायो ।। १३० ।।

दोहरा: दिवस कठूर दिखाय अस तन धन सकल छुडाय ।।
परे बंद अब अजल के तुम ढिग पहुचे आय ।। १३१ ।।

दोहरा: इसी हेत ऊतपति कियो मुहि नहि कछु अवर बिसेस ।।
ल्यायो मुहि छिठौर लग जग कारन जग तेस ।। १३२ ।।

चौपई: प्रात होत जब हमरे प्राना ।। घात हौं हिगे दुख सह नाना ।।
तब सतमु द्रार जत तुमारे ।। करि आवहिगे रक्त लिवारे ।।
पाप निदोख प्रान हानन को ।। बदलो हुवै प्रलोक जानन को ।।
तज बिकुंठ सुख नुरक सिधारो ।। जान बूझ निज काज बिगारो ।।
घन बिभ्रति सम बादर छाया ।। जा पर द्रिढ करि तुम मम न लाया ।।
कब लग जग जीवहु अर खावहु ।। जनम बसन को दाग लगावहु ।।
धोवत धोवत मरहु जनम भर ।। छुट है नही दाग यतन कर ।।
पुन जौ लखय हि हामरो हाला ।। करहु दया प्रभ होहि दयाला ।।
करन हार अस जतन बनावै ।। ब नौ निधि तुमरे घर महि आवै ।।
सत मुंद्रा हरि हेत तजावो ।। मुद्रा कन सहस कर पावो ।। १३३ ।।

दोहरा: हमरे मारन ते प्रगट इक दोख तुम सीस ।।
दुतिय त्रिसन वा दुस्ट की पुरहे बिस्वे बीस ।। १३४ ।।

चौपई: याते अधिक लाभ कछु नाही ।। समझ देख सुंदरि मन माही ।।
यदपि या बिधि मुहि जीवन ते ।। मरन भलो दुख बिख पीवन ते ।।
तदपि प्रभु जानै वहु स्वामी ।। सगल घटन को अंतर जामी ।।
भावी महि कस भाव रचे है ।। भाल अंक किहि भांत लचे है ।।
जीवत लख विधि बनत बनावा ।। प्रान गहे कछु चलत न दावा ।।
हरि के हेत प्रान मुहि दाना ।। देहु दया करि है भगवाना ।।
ताहि नाम पर जो बलिहारा ।। तिहि राखत हरि सांझ सकारा ।।
तुम नहि सुन्यो मन को राजा ।। हरि हित दीनो राज समाजा ।। १३५ ।।

दोहरा: इक दयो दुगुनो लयो संपट दीने प्रान ।।
राज पाय प्रभ क्रिपा तें पाइ सूख महान ।। १३६ ।।

स्वैया: यहि बैन सुने दुख संग सने खगाहा की त्रिया तर पान्य गई ।।
बनी अँन मनो वहि मैंन की मूरति मोरी जितें सम साय गई ।।
लखतौ रसमे को डरी मन मे मुरझाय रुरी सह्माय गई ।।
सरझाय गई नरमाय गई सरसाय गई तरसाय गई ।। १३७ ।।

दोहरा: हुवै अधीन बिनती करी हनूमान महाराज ।।
कथा न्रिपति की क्रिपा करि मोहि सुनावतहु आज ।। १३८ ।।
यहि सुन कोमल बचन तिहि कपि मन बांध्यो धीर ।।
यतन सफल निज मान मन सुमरे श्री रघुबीर ।। १३६ ।।
अब आगे सब कहैं गो न्रिप को सकल प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो दसमो तरल तरंग ।। १४० ।।

इति श्रीमत प्रेम पयो निधि ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीत्त प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदिन बिरचिते राज कुमार को मित्र बोह मंत्री सुत को मित्र द्रोह याको कपितन प्रवेस रानीन को बिपति कलेस बरननाम दसमो तरंग ।। १० ।।

कबित: इेक रस रह तन कहत सियाने सब संम्रित समुंद्र कै तरंगन को तानो है।।
काहू मे मिलत मुकताहल हलाहल हूं काहू मै जहाज बूडे ठौर ना ठिकानो है।।
गुरगुबिंदसिंघ जू की ओट लै म्रिगिंद जाके कोटि जैसे इेक पल ऊठानो है।।
साची मनमानो है बहानो सबै और वाहि आपही बने है बानो जाका ब्रिदबानो है
।। १ ।।

दोहरा: बिघन हरन को सुमर बन बानी कै बरदानि ।।
यमन न्रिपति की सब कथा कपि मुख कहत बखान ।। २।।

चौपई: ई सुन संदरि अब सकल कहानी।। जस मैं सुनी बडन ते कानी ।।
प्रभ की अहै अपरमित माया ।। जिन यहि अदभुत खेल बनाया ।।
छिन महि राव रंक कर डारै ।। रंक सीख पर छत्र झुलारै ।।
यमन देस इिक भूपति भारी ।। छत करि भरी प्रजा तिहि सारी ।।
कोस अखंडित भरे भंडारा ।। भूपति कनत रंक तिहि दुवारा ।।
चित ऊदार अस बड दातारा ।। चौदह भवन सु जस बिसतारा ।।
याचक सबद स्रवन जहि परयो ।। तबहि मनोरथ पूरन करयो ।।
प्रभू के हेत जिनहु कछु चाह्यो ।। ग्रह बिभूति सिर लौ निर बाह्यो ।।
याते बढ्यो सु जस बड भारी ।। नाम परयो ताको प्रभू पियारी ।।
इेक दिवस अस बनयो बनावा ।। कपटी इिक याचक बन आवा ।।३।।

दोहरा: कह्यो जु प्रभ प्यारी असल करहु इेक मम काज ।।
तीन दिवस कहि हरि हेत पर देहु सकल निज राज ।। ४ ।।

चौपई: न्रिप सुन कह्यो बोल हरि नामा ।। लेहु सकल अब ही धन धामा ।।
सकल बुलाइे राज प्रधाना ।। तिन प्रति सकल ब्रितंत बखाना ।।
तीन दिवस यहि सकल समाजा ।। दयो हेत हरि याको राजा ।।
जो याकी आयस नहि करई ।। राज कोप पावक महि स जरई ।।
अस कहि ताहि सिंघासन दीना ।। आप भजन हरि को मौन कीना ।।
आप रंक तिहि राव बनायो ।। तीन दिवस तिन राज कमायो ।। चतुरथ
चतुरथ दिवस भूपति अस भासी ।। कहहु मीत अब किंया अभिलाखी ।। व
वहि लंपट कपटी कमजाता ।। छल करि चाहत सुख बिखयाता ।। ५ ।।

दोहरा: यौ नहि जानत मंद मति परारबध की खेल ।।
तप बिन राज कहा परयो जस दीपक बिन तेल ।। ६ ।।

चौपई: लोभ लहर महि बह्यौ कलंकी ।। बानी नही करम की संकी ।।
कह्यौ कि प्रथम हुतौ पती याका ।। किहि बिधि होत सु राजकमावन ।।
अब याको सुख मो मन भायौ ।। चाहत हौं नित राज कमायौ ।।
तुम यहि राज समस्त समाना ।। देहु संकलप हेत हरि दाना ।।
मम यहि सुन त्रिपति सुधरम ऊदारा ।। दयौ सकल आनंद मन धारा ।।
सकल तज्यौ कछु लियो न साथा ।। दुवै सुत निज गह कर तिन हाथा ।।
धरम चारनी निज मह पटरानी ।। संग लई सम तज रजधानी ।।
मन को दयौ धीर समझाई ।। इतने दिन लयौ राज कमाई ।। ७ ।।

दोहरा: अब विरक्त मन होय द्रिढ की जय जोग बैराग ।।
कंद मूल लंघन कहूं देखहु अस अनुराग ।। ८ ।।

चौपई: यदपि धन बिभूति सुख भारी ।। तदपि भाग चहीयत बलकारी ।।
जा हित दयौ राजधन सारौ ।। वहि अंतरयामी नहि न्यारौ ।।
बहुर वैस कछु बयीत बनावै ।। इक गुन दयौ दुगुन फिर पावै ।।
पै अब याके दस मझारा ।। रहन उचित नहि हम हिहि बारा ।।
अनत जाय बिचरहि जहि जहि इछा ।। चोरी देस बिदेस हि भिछा ।।
प्रभू हूं को प्री मुख यहि बचना ।। कहु हु विरक्त नप्रति यहि बचना ।।
बिचरहि जाय धरनि किहु आना ।। तब तिन को अन है पुन आना ।।
यहि जग है इक ठौर पेखनो ।। प्रभु ते नहि कछु दूर देखनो ।। ९ ।।

दोहरा: किया जानिय कछु बनत ही औंर हि अनय बनाऊ ।।
राऊ रंक छिन मै अनय अनय रंक क ते राऊ ।। १० ।।

चौपई: सपत बरख को हेक कुमारा ।। नौ बरखन को बडो बिचारा ।।
हेक आप चतुरथ पटरानी ।। चले नगर ते तज रजधानी ।।
वहि हरि भगत भतार निज हाथा ।। हेक औट गहि त्रिभुवन हाथा ।।
राज बसन अभरन सब डारे ।। दिसा बसन तन पर द्रिढ धारे ।।
चले पगन मग बिन असवारी ।। यहि जग अदभुत हेक खिलारी ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। अदभुत जानत जगत प्रति मानी ।।
यहि जग नवल बधू कुलटा है ।। रासत सहस कंत नित चाहै ।।

काल हुतो वहि राज समाजा ।। चमर छत्र बहु तेज बिराजा ।।
आज नगन पग मग महि जाके ।। द्वार द्वार कन छित मर मांके ।।
योजन कबहु कबहु द्वै कोसा ।। चलत न्रिपति हरि रास मरोसा ।। ११।।

दोहरा: यथा ।।
पले सरचन बांध ते पंछी पुन दरवेस ।।
जिन की तकी या प्रभू की तिन की रिजक हमेस ।। १२ ।।

चौपई: नहि दुंदुभि नहि बजत निसाना ।। अनिक कस्ट सँग करत पयाना ।।
भोजन मिलत करत अजयासा ।। नही तबर तरहत ऊपवासा ।।
याबिधि नित प्रति करत पयाना ।। इक नगर के तब निकटाना ।।
धरमसाल महि ऊतरे जाई ।। जहि पंथी बहुर हुत सु जाई ।।
भावी बसतहि इक सुदागर ।। ऊतरयो वा दिन धनी ऊजागर ।।
नगर निकट बाहर तिहि डेरा ।। परयो बडो लसकर तिहि हेरा ।।
आप इकलो अस्व सवारा ।। नगर निरख वे छित मन धारा ।।
तही आय बिचरत भयो प्रापति ।। जहि ऊतरयो वहि जाय धरापति।।१४।।

दोहरा: यदपि मग रज लिपत नत रानी श्रमित सरीर ।।
तदपि सुहावन बदन ससि छपित न भर गम चीर ।। १५ ।।

चौपई: यथा किसू कवि कै यहि बचना ।। सुंदर बदन न चाहत रचना ।।
नायन की कछु तिन पर वायना ।। जे सुंदरि मुख सहज सुहायना ।।
सौदागर की द्रिस्टि जु परी ।। इक द्रिस्टि महि सुधि बुधि हरी ।।
ऊतर न्रिपति ढिग कीन प्रणामा ।। यहि हरि जन बड धीरज धामा ।।
वहि लंपट कामी कमजाती ।। अंवत फिरत जगत दिन राती ।।
न्रिप प्रणाम को ऊतर दीनो ।। बैठन हित कहि आदर कीनो ।।
या महि ऊन छिप चरित बनायो ।। अति बयाकुल ह्वै द्रिग भर आयो ।।
कह्यो न्रिपति सौं सुनि हे मीता ।। मो पर समय इक अब बीता ।।१६।।

दोहरा: मै इक बिवहारि धनी बहु बिधि संग समाज ।।
भावी बसया नगर ढिग आ ऊतरे है आज ।। १६ ।।(१७)

चौपई: बस सनेह तिय संग लियायो ।। ताको समय प्रसूत सु आयो ।।
दाई हित या नगर मकारा ।। बहुत फिरयो भटको सम दुवारा ।।

प्रापति भई न भयौ बिलंबा ॥ अब वहि प्रान तजय अविलंबा ॥
तुम हरि जन हो पर ऊपकारी ॥ हरि हित काटहु ब्रिथा हामारी ॥
निज तिय को आस हरि हेता ॥ देहु क्रिपा करि घर अपनेता ॥
मो संग जाय नारि मम पासा ॥ तब ताकी ह्वै बंद खलासा ॥
यहि हरि हित कीजय ऊपकारा ॥ म्रितु न होय हरि कीऊ बिचारा ॥
घटिका चारिक महि यहि कामा ॥ करि फिरि ऐहै तिह तव धामा ॥ १७ ॥

दोहरा: यहि तौ हरि के नाम पर बिके फिरत दिन रात ॥
आर तबच नहि सहि सकै कही प्रिया संग बात ॥ १८ ॥

चौपई: धंन भाग अपने करि जानहु ॥ हरि हित परऊपकार जु ठानहु ॥
यहि दीनत अवसर माही ॥ ह्वै ऊपकार भलो अति आही ॥
गहुर न कर जाहु संग याके ॥ करहु क्रिया यहि हरि हित त्यिय ताके ॥
वहिपवि ब्रता तिय बड़ भागी ॥ पति आयस निस दिन अनुरागी ॥
करि प्रणाम तिहि संग सिधारी ॥ पटरानी घर भयय विचारी ॥
नगर दुवार बाहर तिन जाई ॥ कपट सहत अस बिनति सुनाई ॥
डेरा दूर गहुर मुहि भई ॥ जीवत किधौ म्रितहु मर गई ॥
सीघ्र चलत हित बिनति हमारी ॥ आप अस्व पर करहि सवारी ॥१९॥

दोहरा: वहि सुधी बड भामनी रंच न लखत प्रपंच ॥
बिपति सताई आप ही सम लख संच न कंच ॥ २० ॥

चौपई: अस्व प अरूढ भई तिहि संगा ॥ हरि अंतर जामी निज संगा ॥
जाके हित ऊपकार परायन ॥ चली दुस्ट के संग सुभायन ॥
~~चल्यो दुस~~ चल्यौ दुस्ट वहि बाग ऊठाई ॥ निज डेरे पहुंचौ तब जाई ॥
आग्या दीन कूच हो जावै ॥ अब ही संग हमारे आवै ॥
अस कहि आप सु अस्ट दुरायौ ॥ तब रानी ताको छल पायौ ॥
रुदन कर्यौ बहुत भांत पुकारी ॥ तन तारित बयाकुल अतिभारी ॥
सुनी नही तिन मदन अधीने ॥ क्रिपा न कीनी कुमति कमीने ॥
जयें दसकंध जनक जा हरी ॥ त्यों हित दुस्ट क्रिया अस करी ॥२१॥

दोहरा: ताही सम फल पाय है सहित बंधु परवार ॥
करहि संवारित पलक महि हरि लिहि धरम उबार ॥ २२॥

चौपई: छित जब घटि काचार बिहाईं ॥ न्रिपति लख्यो रानी नहि आईं ॥
छेक जाम लग करि अवसेरी ॥ उठे आप बयाकुल तिहि वेरी ॥
चलहि आप देख छित हि जाईं ॥ कवन हेतु करि गहुर लगाईं ॥
करि पकरे फुन करि माँही ॥ बाहर गहे चहूं दिस चाही ॥
उ ढूंढत डोलत करत बिलापा ॥ मन महि बढ्यो अधिक संतापा ॥
डेरा ठौर सूंना जा हेरी ॥ गरद उठी छिक दिस बहु वेरी ॥
पग महि बल नहि दौर पलावै ॥ बार बार सिर धुनि पछुतावै ॥
निज मति को बहु कीन धिकारा ॥ देखत दुस्ट छली मम नारा ॥
प्रम मुहि परम मूढ मति जानी ॥ उचित नही जढ मति रजधानी ॥
याही ते मुहि घर पटकायो ॥ राज छीन परदेस निकार्यो ॥ २३ ॥

दोहरा: राज कहायहि राख है राख सक्यो नहि नारि ॥
न्याय कीयो मति मंद हौ दयो राज ते टारि ॥ २४ ॥

चौपई: नहि समरथ पग दौर मिलाईं ॥ नारि गैल पुन तबी न आईं ॥
सरब तरह दुख मीत न साथी ॥ दुख बिसार जो बनय संगाथी ॥
नहि को परमेसर मय वारो ॥ नहि कोऊ सुनय जु दीन पुकारो ॥
जा तब हीर ह ओर लख रोयो ॥ घटा धुनि सुन सब सुख सोयो ॥
करत प्रलाप कहत अस बचना ॥ यथा किसू कवि के बच रचना ॥
प्रात पवन तूं कहियो मेरी ॥ संगी जे बहीर तिन हेरी ॥
जौं वैसे पग वेग तुमारे ॥ तौ हम रहे मग महि महि हारे ॥
याबिधि कहि अति बिल- बिकल सरीरा ॥ चल्यो पाछ लग तिसहि बहीरा ॥२५॥

दोहरा: कछुक दूर चल भूल मग बन महि पर्यो वसार ॥
छिक सरिता प्रापति भई अगम नीर बड धार ॥ २६ ॥

चौपई: चहूं ओर न्रिप द्रिस्टि जु करी ॥ नहि तहि से तुन तुमरी भरी ॥
नहि खेवट नहि घाट सुना को ॥ मारग रोक को कछु ग्यान न याको ॥
नहि नतहा पंथी के गवना ॥ करत पुकारि सुनय नही कवना ॥
तृफत फिरौं जल बिना सफरी ॥
यदवा तदवा धावनि कर करी ॥
मग दिखराकन हार पुकार्यो ॥ कारज कूल नहि द्रिस्टि निहार्यो ॥

परयो बिवरथ यतन जो करयो ।। स्वारथ बेड़ा पार न परयो ।।
कछु क्तरन को ढब थो जलको ।। भावी बिवस आन हिय फलको ।।
कढे सुक्न को तट हि बिठायो ।। लघुसिंध पर पुत्र ऊठायो ।।२७ ।।

दोहरा: जल महि कीयो प्रवेस जब गयो मद्ध मफधार ।।
तट के सुत को ता समय आ चिमट्यो बिघियार ।। २८ ।।

चौपई: तब वहि बालक रोय पुकारयो ।। न्रिप ब्याकुल मुख फेर निहारयो ।।
लीह्रे जात बघियार जु देखा ।। दखराय दुख भयो बिसेखा ।।
दुतिय बाल छूट जल महि गयो ।। अति अकुलाय सु दुखी तब भयो ।।
आपहू बूड चल्यो मफधारा ।। प्राण अंत आहे तिहि बारा ।।
पै जीवन कछु हुती जु सेसा ।। बुल्त बह्त लग्यो तटहि अमेसा ।।
चिंतातुर है कलपत भयो ।। सोच सिंध महि बूड सु गयो ।।
बडो पुत्र बघियार हि हिरौ ।। लघु सुत छूट नदी महि गिरौ ।।
नौतन रंग समय को हेरी ।। अति अचरज मन चिंत घनेरी ।। २६।।

दोहरा: तिय भियारी के छुटक की लाज लपेटौ दरद ।।
सुत बियोग दाहत ह्रिदे ऊरध ऊसास तज सरदा ।। ३० ।।

चौपई: राज दयो हरि हेत ऊठाई ।। मनहु बिपति को ब्योंत बनाई ।।
याबिधि ब्याकुल दुख अति पायो ।। चल्यो बहुर हरि सुमर मनायो ।।
हरि भाणे महि सैन कीनी ।। जो कछु भई भली करि चीनी ।।
यहि हरि जन की परम निसानी ।। हरि माणे महि सै न आनी ।।
जिम जिम बिपति परै अति भारी ।। तिम तिम करहि न मुख मल नारी ।।
तन धन बिभव जग की जावै ।। हरि सुमरन छिन अर्ध छूटौ न भावे ।।
या पर श्री गुर बचन प्रमाना ।। सिख द्रिढ मति हि कीन बखाना ।।
यथा ।।
तेरा भाणा मीठा लागै ।।
नाम पदारथु नानक मागै ।। ३१ ।।

यथा ।। दोहरा: सिंघ सा पुरख पदमनी छिन को यही सुभाव ।।
जिम जिम दुख गाढो पुरै तिम तिम आगे पाव ।। ३२ ।।

चौपई: चलत चलत कछु दूर बिसेसा ।। त्रितिय जाम रह्यो दिन जब सेसा ।।
तहि छिक नगर निकट भयो प्रापति ।। छुधित त्रिसत करि आपति ।।
नगर दुवार बहु जन की भीरा ।। देखत भयो वीर तिहि नीरा ।।
रीति हुति तिहि देस मझारी ।। भावी बस बस बयो तस वारी ।।
जब तहि को न्रिप तजत सरीरा ।। ऊठ प्रलोक कै परत बहीरा ।।
ता पाछे सभ राज प्रधाना ।। नगर महा जन तहि मिल आना ।।
हुवै छिकत्र छिक बाज ऊडावत ।। हरि भावत जिहि सीस बिठावत ।।
ताकि सिंघासन देत बिठाईं ।। सभ मिल सेवत सीस झुकाईं ।। ३३ ।।

दोहरा: परमेस्वर की ओर ते रच राख्यो सकेत ।।
राज करत तिहि को जाको प्री हरि देत ।। ३४ ।।

चौपई: भावी बस यहि बनौ बनावा ।। वही दिवस यहि हुतो जि आवा ।।
बाज छोड सभ खरे निहारत ।। बार बार हरि बिनति ऊचारत ।।
बैठ्यो हुतो न काहू सीसा ।। वैस हि छिका थी जग दीसा ।।
तिसी समय न्रिप प्रापति भयो ।। रंक रूप धारे तहि गयो ।।
बैठ्यो बाज आन छिन सीसा ।। जिम भावत की प्रभ परमीसा ।।
यथा रीति तहि हुती सनातन ।। ल्याइ तखत प्रधान तथा तन ।।
हुवै अधीन बहु बिनति सुनाईं ।। दयो सिंघासन तुहि जगराईं ।।
बैठतखत सुभ राज कमावहु ।। सेवक प्रजा लोक त्रिपता वहु ।। ३५ ।।

दोहरा: यहि गति अचरज त्रिपति लख कही तिन हि समझाय ।।
मग भूल्यो पंथी बिथित पर्यो देस छिस आय ।। ३६ ।।

चौपई: मै नहि याहि सिंघासन योगा ।। हुवै बिरक्त तियागे जग भोगा ।।
जान अनित बफन घर राजा ।। तज सुख मोर्यो सकल समाजा ।।
अब फिह हेत कलेस ऊठावौं ।। गईं ऊपाधि बहुर गल पावौं ।।
यहि सुन लोग रहे बिसमाईं ।। लखी राज ते बेपरवाईं ।।
बुधि वंत सब गहे पछानी ।। यहि त्रिपत जे कोऊ खघानी ।।
हुवै बिनीत बड बिनति सुनाईं ।। हमरे रीति सदा चलि आईं ।।
बाज सीस जिहि प्रभू बिठावत ।। ताको हुक्म राज हित आवत ।।
या महिहमरी नहि बस चारा ।। को हरि हुक्म ऊलंघन वारा ।।३७ ।।

दोहरा: याते तुम हि प्रसस्त यहि हरि आग्या धर सीस ।।
पालन करि ताकी प्रजा बनहु हमारे ईस ।। ३८ ।।

चौपई: जौं तुम हठ करि हम हित जहुगे ।। प्रभ आग्या पुन मेट भजहुगे ।।
तौं हम सकल बसन अब फारे ।। हुवै बिरकत तुम संगि सिधारे ।।
याबिध न्रिप को बहु समझाई ।। राजसिंघासन ल्यो बिठाई ।।
भेट दीन सब सीस निवाई ।। गहे भवन लै बजत बधाई ।।
तोमै चली बजत पंचतूरा ।। राज समाज संग बड पूरा ।।
मंसल समय प्रताप दिनेसा ।। राज भवन महि कीयो प्रवेसा ।।
सकल देस को कोस बिभव धन ।। ग्राम दे सनद टापू गिरबन ।।
सम याकी आयस महि आयो ।। राजसिकाङिन नाम चलायो ।। ३९ ।।

दोहरा: फिरी दुहाई देस महि डौंडी दई पुकार ।।
चोर जार जालम जु हो दंड सहैं गो मार ।। ४० ।।

स्वैया: पल मो वहि चाहै तौं रंक हूं को परयंक बिठारे तो चित्र नही ।।
करतार की माया बचित्र बडी रंक राऊ ठगऊनो मित्र नही ।।
वहि मूढ जो राज को मान करै खलतै सो कोऊ अपवित्र नही ।।
घर डारे अकास चढे को कुबेर कंगालैं करै तौ बचित्र नही ।। ४१ ।।

यथा स्री गुरु मुख वाक ।।

छिन महि राऊ रंक कऊ करई राऊ रंक कर डारै ।।
रीते भरै भरे सखनावै यहि ताको बिवहारै ।।

चौपई: याबिधि राज करन वहि लागा ।। हरि हित दयौ फल्यो अनुरागा ।।
पै बियाकुल हिय मन मुरझायो ।। सुत तिय बिरह अगनि तन तायो ।।
कहि न सकति कछुल जा बसते ।। सुमरन होत जु जुगल कुमारा ।।
कुल दीपक कोकिल बलिहारा ।। कुहूं कुहूं करि कोकिल कत न्रिपा ।।
।। करत बिलाप कलाप नराधिपा ।।
अब बालन की सुनहु कहानी ।। लयो ऊठाई बिधार जु आनी ।।
मग महि कोऊ धनुख सरधारी ।। मिल्यो बान तिन कियो प्रहारी ।।
तजे प्रान बधियार लगत सर ।। बालक बच्यो परयो ताके कर ।। ४२ ।।

दोहरा: दुतिय बाल बूडत बहत जात लख्यो मति सार ।।
सीघ्र डार ऊरझा लियो सुभग प्रीति के जाग ।। ४३ ।।

चौपई: दोऊ हुते वहि रहत संताना ।। पुत्र दहे प्रेम अस जिय जाना ।।
तिसी नगर के दोऊ निवासी ।। निज निज भवन गहे सुख रासी ।।
सुत सनेह करि पालन करही ।। प्रेम की दाति हिये महि धरहीं ।।
भावी बस छिम दोनहु माहीं ।। बिछुर परे छिम काल बिताईं ।।
सुत बियोग ऊत न्रिप तन तायो ।। बियाकुल हुवै कछु काल बितायो ।।
इक दिवस मंत्री प्रति भाखी ।। दुवै बालक कुलीन अभिलाखी ।।
ऊचित समीप रहत वारे लख ।। ल्यावहु सुंदर सुघर सुपरख ।।
मंत्री आयस पायन रिंदा ।। सकल नगर के बालक ब्रिंदा ।। ४४ ।।

दोहरा: इकठे कर देखत भयो वहि ही दोनो बीर ।।
सुंदर सुघर कुलीन लख परखे करि तदबीर ।। ४५ ।।

चौपई: यदपि ऊनहि प्रान ते पियारे ।। पुत्र भाव धर निस दिन पारे ।।
इक पितन सकति न विरह सहारन ।। न्रिप आयस नहि सकति निवारन ।।
पुन मंत्री बहु बिधि समझाहे ।। दान मान दे धीर धराहे ।।
न्रिप सनमुख आने दोऊ बीरा ।। मनहु सूर ससि धरे सरीरा ।।
धंन पुरख वहि करने हारा ।। अदभुत गति जिहि रच्यो पसारा ।।
मिले बिछोह करन जिह नामा ।। पुन मिलावनो कितनक कामा ।।
बीत गयो हो बहुत जु काला ।। अंग बदल गे बिपति कराला ।।
याते न्रिप तिन करी पछाना ।। तिनहु न्रिपति नहि कछु पहिचाना ।।४६ ।।

दोहरा: पुन इक निज आसन लखत गह लेगो बधियार ।।
दुतिय सरख महि बहि गयो संसय कवन प्रकार ।। ४७ ।।

चौपई: छिन देखत पित बन्यो फकीरा ।। भयो बिपति बस सहत सुपीरा ।।
कवन भांत संसय न्रिप मांही ।। करहि पिता प्रेम बनत सुनाही ।।
पुनि निज महि बालक बिलखाने ।। बदले अंग भहे अब स्याने ।।
याते आपहि महि नहि जानत ।। भ्रात सही पैन ही पछानत ।।
यहि भी सबल सुताकी माया ।। इकठे रहत न परत लखाया ।।
न्रिप सनेह तिन महि अति करई ।। नित प्रति क्रिपा द्रिस्टि अनु सरई ।।
यहि बच सुन्यो सकल संसारा ।। प्रेम पूरन यहि बचन ऊचारा ।।
सकल काज जग समय अधीना ।। समय पाय तरवर फलदीना ।।४८ ।।

दोहरा: कछुक दिनन महि छिन दुहूलल ह्यो सभा अधिकार ।।
निकट निवासी त्रिपति के भड़े कार मुखतियार ।। ४९ ।।

चौपई: या महि वहि जो दुस्ट सुदागर ।। छल ले गयो हुतो रानी हर ।।
हुतो जु प्रथम यहा नगरीसा ।। तास न राखत मेल बरीसा ।।
बहुत प्रीति करि आवत जावत ।। मिल कर जात मन हि त्रिप तावत ।।
ऊतरौ आय नगर के बाहर ।। अंतर चोर साह बड जाहर ।।
नगर निवासिन ते लहि सारा ।। प्रथम त्रिपति परलोक सिधारा ।।
सुन सिर धुनि बहु कीन बिलापा ।। बयरथ गम लख किय पछुतापा ।।
तब लोगन बहु धीर ब धराई ।। नौतन त्रिप की कीन बडाई ।।
सुठ सुभाव बड दीन दियाला ।। धरम धुरंधर यहि महि पाला ।। ५० ।।

दोहरा: सुनत सुजस मंत्री निकट जाय कीन अरदास ।।
त्रिप दरसन की लालसा पूरन करिये आस ।। ५१ ।।

चौपई: मंत्री त्रिप सन जाय जताई ।। आयस पाय सु संग लवाई ।।
देस देस के सुभग पदारथ ।। लहे लवाय त्रिपति भेटारथ ।।
भेट दीन पग सीस छुवायो ।। आदर कर भल ठौर बिठायो ।।
भावी बस त्रिप ताहि न जान्यो ।। नहि तिन मूरख ताहि पछानयो ।।
देस देस के बिचरन हारा ।। जान त्रिपति बहु किय सतकारा ।।
खान पान बहु दयो पुजाई ।। भली भांत तिहि सेव कराई ।।
अस त्रिप क्रिपा द्रिस्टि महि फूलौं ।। प्रथम त्रिपति की प्रति सु भूलौं ।।
नित प्रति राज सभा महि आवत ।। देस देस की कथा सुनावत ।। ५२ ।।

दोहरा: त्रिपति प्रेम करि पूछई वहि बहु देत सुनाय ।।
अति प्रसंन भूपति रहत बढी प्रीति सन भाय ।। ५३ ।।

चौपई: छेक दिवस अस बन्यो बनावा ।। त्रिप सन कथत सुनत परचावा ।।
सायं समय भई तिहि अवसर ।। त्रिपति प्रीति करि कह्यो बचन वर ।।
आज रात रहीये हम तीरा ।। पुन कछु कहहि सुनहि गे बीरा ।।
वहि सुन बैठ गयो मुरझायो ।। त्रिप को बचन न जात हटायो ।।
त्रिप तिहि चिंतातुर पहिचाना ।। कारन कवन सु कहुहु बखाना ।।
त्रिप सुन ऊचित न करय दुरावा ।। भावी बस अस बन्यो बनावा ।।

बिनति करी इक काज महाना ।। जा करि उचित अवस मुहि जाना ।।
दास भक्त इक तीय बिमन मन ।। परम उदास रहत वहि मो सन ।।५४ ।।

दोहरा: ताकी रच्छा आप ही करत सकल निस जाग ।।
पुन मन मै नित डरत ही मति कहु जावै भाग ।। ५५ ।।

चौपई: गुप्त भेद मम प्रगट करावै ।। काहू के आस्रित ह्वै जावै ।।
भू-प सुनत वायस अस दीयो ।। यहि क्रित आज तुम्ह सौ लीयो ।।
वहि दीनो जौ बाल हजूरी ।। तिन प्रति वायस दीन सुरूरी ।।
खास अरदली संग लिजावौ ।। चहूं ओर चौकी सु बिठावौ ।।
आप सकल निस जागत रहना ।। थिति कराई सो निर बहना ।।
अहै अमानत जो तहि ताता ।। तुम सी लई जा छिनी प्राता ।।
गहे दोउ अस आयस पाई ।। चहूं ओर फौजी लकराई ।।
डेरा हुतो बाग महि ताको ।। तंबू लग्यौ दुस्ट कौ बांको ।।५६ ।।

दोहरा: चहूं ओर सैना करी अमकस आप दुवार पर जाय ।।
दोउ बीर सविधान ह्वै कुरसी बैठि बिछाय ।। ५७ ।।

चौपई: अरध निसा जब गई बिताई ।। लघु बालक को निद्रा आई ।।
दुतिय कह्यौ यहि उचित न सोवन ।। पुन पछुताव सीस धुनि रोवन ।।
सोवत तुमहि द्रिस्ट जो करई ।। सूली फल हि जग मति परई ।।
होय अमानत महि कुछु खियानत ।। स्यानत परै प्रान पुन दियानत ।।
तब तिन कह्यौं नींद उचटावन ।। कोहू कहानी कहु मन भावन ।।
जाहि स्रवन महि अस मन लागै ।। जाते उचट नींद यहि भागै ।।
यहि सुन तिहि भर ऊरध उसासा ।। कह्यौ कथा इक कहौं प्रकासा ।।
जु कछु बिथा मुहि सीस बिहाई ।। कहुहु स्रवन दै सुन रे भाई ।।५८ ।।

दोहरा: सुनहि स्रवन करि ध्यान जो कहानीद की बात ।।
छुधा पिपासा दिनहु की उचट जाय है प्रात ।। ५९ ।।

चौपई: रे प्रीतम सुन ब्रिथा हमारी ।। यमन देस इक भूपति भारी ।।
मै हौ ताको जेस्ट ताता ।। तात मोर हरि जन बिख्याता ।।
हरि के हेत हेक मंगत प्रति ।। सकल राज दीनो मन हरखत ।।
इक हौं संग मोर लघु भ्राता ।। तब अनुहार सुघर बिख्याता ।।

छिक हमरी मात पटरानी ।। चारिहु चले त्याग रजधानी ।।
मग महि मिल्यौ इेक ठग भारी ।। भेस सुदागर दुस्ट कु चारी ।।
त्रिप सन छल प्रनाम कर रोयौ ।। मम तिय प्रसुव समय अवहोयो ।।
हरि हित देहु तिया निज संगा ।। कवय मोहि तिय छिनहि प्रसंगा।।६०।।

दोहरा: आयस दीनी त्रिपति तब धरम चारनी नार ।।
छल कर लै गयौ दुस्ट मति दीने कस्ट अपार ।। ६१ ।।

चौपई: त्रिप बयाकुल ह्वै अति दुख पायौ ।। ढूंढत कछुक दूर तब आयौ ।।
मग भूले गह बर बन मांही ।। नदी मिली दुस्तर पुन ताही ।।
नव कासे तुन खेवट तहां ।। नीर गंभीर प्रबल बहु महां ।।
त्रिप मुहि तट पर गयौ बिठाई ।। लघु बालक निज लयो ऊठाई ।।
मध्य धार पहुंचे दुह कर जब ।। पाछे ऊठ्ये ऊपद्रव अस तब ।।
ऊठ बघियार मोहि महि लीनों ।। भय कर दुखत रुदन मै कीनो ।।
त्रिप बयाकुलमम ओर निहारयौ ।। बालक खिसर नदी महि परयौ ।।
बूढत बहुत त्रिपती हूं देख्यौ ।। पुन सुधि नहि अस दुख मै लेख्यौ ।।६२ ।।

दोहरा: मोहि ऊठाईं जात हो मझन हित बघियार ।।
मावी बस मग महि मिल्यौ धनुख बान करिवार ।। ६३ ।।

चौपई: तिन मुहि निरख बान तक मारयौ ।। प्रान छिदे बघियार पधारयौ ।।
मुहि छडाय सुत करि किय पालन ।। ता दिन ते ताके हम लालन ।।
अब यहि समय त्रिपति पहि ल्यायौ ।। अब देखख कहि चहत दिखायौ ।।
यहि जो सुनी सु सकल कहानी ।। निज बड भ्रात सु लयो पछानी ।।
लपट ऊ गयौ भर सो अति रोयौ ।। भ्रात भ्रात कहि दुख महि पोयौ ।।
नद महि गिरयौ हुतो मै बीरा ।। गह्यौ मत सहा बहुत अधीरा ।।
तिन मुहि आप पूत करि पाला ।। स्रमफल परयौ पिता को हाला ।।
यहि सुन छिदे लाग अस रोहे ।। छिदे बसन तर बल बर तर होहे ।।६४ ।।

दोहरा: रुदन सबद सुन दुवार पर चौंक परी वहि नारि ।।
परदे निकट भीतर खरी पूछी बिथा पुकार ।। ६५ ।।

चौपई: तिनहु सकल ब्रितात सुनायो ।। जांबिधि कस्ट हुतो सब पायो ।।
यहि सुन अपनै पुत्र पछानी ।। निहरी हरखराय तब रानी ।।
लपटी दोउ बाग मर अंका ।। मनहु सब तस धेनु तब संका ।।
महारुदन अति कीन कलापा ।। ह्रिदो फटत तिनि सुनत ब्रिलापा ।।
मै अब लग निज धरम संभारी ।। परी दुस्ट की बंद मकारी ।।
यहि सब सार न्रिपति जब पाई ।। मुदित तुरत सुख पाल पठाई ।।
आपस महि सब परे पिछाने ।। दुहूं सुकत गह गर लपटाने ।।
गह्यो दुस्ट पग डार जंजीरा ।। कन सम दयो लुटाय फकीरा ।।६६।।

दोहरा: जब जलादरवि गगन को सैंच फिरत करवार ।।
छोरयो जग ह्रिग बंद को तम बट पार संभार ।। ६७ ।।

चौपई: यम मारग गामिनि को संगी ।। कीयो सुदागर दुस्ट अनंगी ।।
हुतो सिंघ सीस को भारा ।। दयो उतार सु कीयो सुखारा ।।
यमन देस यहि सकल कहानी ।। लिखी सुनी पहुची सब जानी ।।
वहि जो लंम्पट राज पाय कर ।। गरबित भयो अनीति पंथपर ।।
पीड़ित भई प्रजा दुखियारी ।। राज प्रधान बिमन भय धारी ।।
निस दिन काटत दुख बिपता के ।। सहस कस्ट मुख परे बलाके ।।
यहि न्रिप की उन सार जु पाई ।। गुप्त समन मिल मता मताई ।।
बिलदै तुरत ताहि हन डारा ।। महा कस्ट ते निज महि उभारा ।।६७।।(६८)

दोहरा: सेवक प्रजा प्रधान मिल लिख्यो पत्र न्रिप वोर ।।
पाप भार सिर धरनरक गयो दुस्ट वहि चोर ।। ६८ ।।

चौपई: राजसिंघासन खाली परयो ।। अब लग सत्रु प्रबल नहि परयो ।।
आय आपनो राज संभारो ।। प्रजा सेव कन दरस दिखारो ।।
यहि सुन देस प्रीति मन जागी ।। करहु पयान तयारी लागी ।।
यथा फिसू कवि की यहि बानी ।। कही बैस निज प्रीय पछानी ।।
छिक बराटका अपन देस की ।। तखत सुलेमानी बिसेस की ।।
कंटक अपन देस को जैसो ।। बेल चंबेली सुमन न वैसो ।।
यूसफ भयो मिसर को भूपति ।। तदपि भयो छिद्द भांति तिरूपति ।।
रंक गली बिचरत कन आना ।। कोउ तखत नहि ताहि समाना ।।६९ ।।

दोहरा: कथा संखिप नरेस चढ आयो अपने देस ।।
दोऊ देस को राज लह पाइ कुसल असेस ।। ७० ।।

चौपई: कति यहि कथा सभापति कीनी ।। कह्यो नारि संग तै सुन लीनी ।।
याको यहि अभिप्राय सुभामनि ।। समझ देखरी सुंदरि कामनि ।।
न्रिप मर्हि हरि हेत राज छिक दीनो ।। आप मलन मन कबहु कीनो ।।
यदपि कस्ट सहे कछु राजा ।। तदपि बन्यो फिर सकल समाजा ।।
दुगुन लयो छिक गुन दै देसा ।। प्रभ क्रिपात सुख लहे बिसेसा ।।
तुम जु मोहि हरि हेत बचावो ।। प्रभु चाहैं तु दुगुन धन पायो ।।
नहि कछु दूर जगत पति स्वामी ।। सगल घन को अंतरजामी ।।
वहि लोभी दोऊ प्रान गवाई ।। गइे नरक दुरगति गति पाई ।। ७२ ।।

ल दोहरा: भइे धिकारन जोग वहि जब लग रहैं कहानि ।।
जो मति वंत पढ़हि सुनहि करहैं धिक सु बखान ।। ७३ ।।

यथा दोहरा: जस जीवन अपजस मरन जग महि ऊभजे बेहू दोहि ।।
कहा लंक पति ले गइे कहा करन गइे सोहि ।। ७४ ।।

चौपई: यहि संसार सुपन वहि कामनि ।। रहत सदा यथा घन दामनि ।।
जो हरि हित कछु बनय ब भलाई ।। जात संग जुग जस रह जाई ।।
या बिधि तिय जब सुनी कहानी ।। म्रिदुल ह्रिदै हुवै अति नरमानी ।।
बार बार कपि के पग परी ।। हाथ जोर बिनती अस करी ।।
धीर धरहु जी स्री हनुमाना ।। जब लग है मेरे घट प्राना ।।
दुस्ट न्रिपति करि तुमहि न देहौं ।। लंघन आदि कस्ट सिर लेहौ ।।
अस बच भाख अभय तिनि दीनो ।। अंनोदक दै प्रम दुख छीनो ।।
बसन लपेट छपाय सुवायो ।। प्रात भई खगहा ऊठ आयो ।।७६ ।। (७५)

दोहरा: कपि को लै न्रिप के निकट जान हेत हुवै त्यार ।।
कह्यो ~~न्रिप-के-नि~~ नारि सन त्याव कपि तब बोली तिहि नारि ।।७६ ।।

चौपई: यहि तौ अपने पास बिचार ।। आज बहुर बन जाहु सिकार ।।
माल अंक नीके पति या वहु ।। खगन हेत जा जाल बिछावहु ।।
जो प्रभ ऊदर पूरना करई ।। तब यहि क्यों त्रिदोख हत परई ।।
पुन कपि बध को अघ बहभारा ।। ह चढय सीस अपजस संसारा ।।
पुन जो हाथ कछू नहि आवै ।। प्रान राख धरम हि स्रुति गावै ।।

प्रात करिहु जिम मन सा तेरी ।। आज करहु अस आयस मेरी ।।
खग हा कृतिघ कही मुख बानी ।। तू कपि की बात नपतियानी ।।
यहि सुन कवि हरि सुमरन कीनो ।। खगहा प्रति कहि बचन प्रवीनो ।।७७।।

दोहरा: वहि तिय हुवै धीरज धरत प्रभ पर करत संतोख ।।
पुरखा रथ तज पुरख तूं पलट करत है रोख ।। ७८ ।।

चौपई: तिय सेवक तौं होत कमीना ।। आय स्मारि लंघहि किम दीना ।।
पटक झटक कवि तजु अकुलावत ।। फटाका जाल सु चल्यो ऊठावत ।।
कां पाल्यो दगे की टाटी ।। बन महि जा खगपकरन ठाठी ।।
सदा सकल दिन भटकत जाई ।। पांच चार खग परत गहाई ।।
प्रभू माया प्रेरित वा दिन मै ।। गहे पचास साठ छिक छिन मै ।।
फटके महि फटके भर गइे ।। याहि मनोरथ सभ सर गइे ।।
परम मुदित फिर नगर सिधारयो ।। खग समूह बिक्रय करि डारयो ।।
कहिं मुद्रका राजत सु पाई ।। मन महि कीनी अधिक बधाई ।। ७६ ।।

दोहरा: ग्रह ऊपकरन खरीद कछु लई मिठाई मोल ।।
इक टके को मद पीयो चढे अमल को झोल ।। ८० ।।

चौपई: कर पग फूल गइे मद झूमत ।। गावत गीत चले ग्रह घूमत ।।
गयो भूल सभ दारिद कै दुख ।। प्रापति भइे मनहु जग के सुख ।।
आवत कहयो नारि सौ चायना। अरी पूज हनुमत के पायन ।।
भागवान याके बड रचना ।। करी ~~मि किनि~~ क्रिपा प्रभ कारन करना ।।
आज खगावलि अस कर आई ।। कहिं मुद्रका रजत सु पाई ।।
यहि बच सुन वहि तिय घर बसी ।। खिर खिराय आनंद मुख हसी ।।
प्रथम लई कछु तुरत मिठाई ।। हनूमान पग पूज सवाई ।।
पुन निज ग्रह मै कीन रसोई ।। कछ कछ कासुख भर निस सोई ।।८१।।

दोहरा: यहि लख कपि समझी तबहि बहुर बचे कछु प्रान ।।
पै जौ समय न लख जरै करै आन कछु आन ।। ८२ ।।

स्वैया: कहा कोयल बैठी अमेठी सी तूं यहि फूल छरी पर फूल भरी ।।
डर मौहि ~~बखो कि~~ या समे को अरी लख्यांको बुरी न लगै कहरी ।।

फल त्यायी जबै तौ निरासता हीन म्रिगिंद लख्यो कोऊ यौल हरी।।
कबहूं बिनयाके बियौग तरोवर फूल्यो ढल्यो न लख्यो सुनरी ।। ८३ ।।

दोहरा: याबिधि कपि ताके भवन लागौं रहत दिन रात ।।
खग हाकी प्रति दिवस तब लागि बढ़न अतिबात ।। ८४ ।।

चौपई: कपि प्रताप वैसी बनिबाई ।। दिन दिन ताकी बढत सवाई ।।
कछुक काल महि धन कर धामा ।। पूरन भई मगन नर बामा ।।
भूखन बसन असन मन भावत ।। सगल समग्री दिस्टावत ।।
भावी बसतह ईक सुदागर ।। ऊतरयो घरम साल महि नागर ।।
खगहा बसत जाहि पिछवारा ।। तही आन तिहि लयो ऊतारा ।।
इक दिन ईक जाम निस गई ।। सकल स्रिस्टि सोवत सुख मई ।।
ऊठयो सुदागर हरि सुमरन करि ।। मन अपनो ले क्रिसन चरन धर ।।
बार बार प्रभ नाम बखाना ।। छिस्ट मंत्र जप किय हरि ध्याना ।।८५ ।।

दोहरा: निस की वेला सुमर हरि पठन लगौं गुर बानि ।।
सब ताके स्रवनन परी मंद मधुर धुनि आनि ।। ८६ ।।

चौपई: यथा बाल के प्रिय म्रिदु बचना ।। वै वहि बचन युकति बड रचना ।।
तब तिन वहि तिय तुर तब गाई ।। जाके ग्रह ऊतरयो यहि आई ।।
कहयो कवन कौ ग्रह पिछवारा ।। तिन कहि सग-हार-हत बिचारा ।।
कही सुदागर तिन को बालक ।। कस म्रिदु बचन कहत स्यि सालक ।।
तब तिय कह्यो समझन माही ।। बाल बचा इिन के कोऊ नाही ।।
नारि पुरख हैं दोऊ बिचारे ।। दारिद बस बहु बार निहारे ।।
कही सुदागर आऊ प्रकट करि ।। तव वहि बैठी आहि धिआन धर ।।
आवत लखी बालकी बानी ।। माधुर म्रिदुल सुधरता सानी ।। ८७।।

दोहरा: कही सुदागर सुनी तै बातैं म्रिदुल अरंस ।।
पुन यामै कछु फलकती प्रेम मंघ की अंस ।। ८८ ।।

चौपई२: याते अब सुन सुंदर नैना ।। भयो मोर स्यि अधिक अचैना ।।
सीघ्र तकन के भवन सिधारो ।। बालक आन सु मोहि दिखारो ।।
निकट बैठ सुन ही तिहि बानी ।। कछु तिहि देऊ अधिक रुचिमानी ।।
मुख मीठो कछु तुमरो करही ।। पुन पठाय दैहौं तिहि घर ही ।।

यहि सुन वहि ताके गृह गवनी ।। निकटि जाइ ठाढी तिहि रवनी ।।
देखहि कहाँ तहा कवि राई ।। बोलत मधुरि बानि सुख दाई ।।
देखत छिमहि मस्ट उन गही ।। तब ऊन पुरख नारि यहि लही ।।
ऊठ भय भीत चरन तिहि परे ।। बिनति करी बच-बस-ब अस बैन ऊचरे ।। ८९ ।।

दोहरा: हम बड दुखसों पालयौ सुत की साँधि पुजाहि ।।
कछुक सुखी दिन कटत है यासो मन परसाहि ।। ९० ।।

चौपई: भयौ नगर महि अति अनयाया ।। जब को दुस्ट न्रिपति यहि आया ।।
कोटि कोटि कपिल दहे खपाई ।। याते हम यहि राख दुराई ।।
तौ बिन किनहु भेव नहि चीनो ।। तूं परोसनी परम प्रवीनो ।।
यहि हम देहु क्रिपा करि दाना ।। भेद न कीजिय कहूं बखाना ।।
अस्त होय तव मुख निकरावै ।। चलत चलत न्रिप के तट जावै ।।
लेख लेय खसोट दुस्ट प्र पाला ।। हम पर परै बिपति बिकराला ।।
यहि सुन वहि बोली तब बामा ।। अटकौं कवन हमारो कामा ।।
तुम दीनन को पुत्र छिनाऊं ।। या त्रिदोख के प्रान गवाऊं ।। ९१ ।।

दोहरा: अस कहि आई भवन निज- निज कह्यो सुदागर संग ।।
तहा न बाल न त्रिष को नारि पुरख छिक अंग ।। ९२ ।।

चौपई: यहि बच सुनहु न बहुर बखानी ।। बरी बावरी भई दिवानी ।।
बानी मधुर स्रवन निज सुनी ।। तोहि सुनाई नीके गुनी ।।
नही बालक तौ बोल कवन के ।। बहे मनोहर निकट भ्रवन के ।।
यहि सुन वहि मूरख मति हीनी ।। देखिय करत कुभाव कमीनी ।।
नारि ह्रिदय पुन पत्र जलज को ।। समता राखत सदा सहज को ।।
वाघर भेद न आपर नीरा ।। ठहरत कबहु कहत मतिधीरा ।।
ऊनकी बिनति न आपन बस को ।। रंच बचावन किय पन कचको ।।
कहत सुदागर प्रति वहि नारा ।। कहौं कहा जू मै बलिहारा ।। ९३ ।।

दोहरा: ऊचित न कहनो भेद किहु कपि बोले त्रिदु बन ।।
हस्यौ सुदागर बैन सुन नारि मूढ मति बैन ।। ९४ ।।

चौपई: कहा त्रिया तव मति बवराई ।। कहत अजगरी असलंमराई ।।
सुन्यो लख्यो जग कहु कपि बोलत ।। अस अयु कति बच सुनहिय डोलत ।।
पुन तिय कही गरीब निवाजा ।। बल गई यही मोहि बढलाजा ।।
कहत नरावर ढिग मै तब ही ।। कपि बोलत देख्यो मै अब ही ।।
यहि अदभुत सुन वहि अकुलायो ।। मनहु सुमन ताको ववरायो ।।
भजन वजन तज यहि मन ठानी ।। लखहु प्रथम यहि कहा कहानी ।।
निकट हुतो ग्रह आप गयो चल ।। लख्यो ठीक बालक नहि तिह थल ।।
इक पुरख दूसरि तहि नारा ।। त्रितिय निकट कपि लख्यो बिचारा ।। ६५ ।।

दोहरा: यदपि तब बोल तन थो तदपि किय अनुमान ।।
माया अदभुत सकति प्रभू बोलत यहि हनुमान ।। ६६ ।।

चौपई: वहि कपि को तब लगे कृपाकन ।। अति भयभीत मनहि पछुतावन ।।
कह्यो सुदागर भय मति करु रे ।। भेद तुमारो गयो ऊघरु रे ।।
दुरनसकति अब कीहे दुरावा ।। अब तुम को यहि ऊचित ऊपावा ।।
कपि मुहि देहु गुपत छिह बारा ।। मांग लीहु धन रुचि अनुसारा ।।
यहि मै राख हु प्रान समाना ।। तुमरो दारिद दुख हुवै हाना ।।
नातर त्रिप सन कहौं सुनाई ।। पल महि याके प्रान गवाई ।।
तुमरे हाथ कछू नहि आवै ।। या त्रिदोख के प्रान गवावै ।।
यहि सुन वहि बिह्वल नर नारा ।।लो रुदन करते तन तारा ।। ६७ ।।

दोहरा: कपि समझो अब किसू बिधि अब तन मोरो प्रान ।।
छिती वायु ही हुती मम आयो काल निदान ।। ६८ ।।

चौपई: सगहा प्रति अस कह्यो पुकारी ।। मत तुम खेद करहु म अस भारी ।।
समय कुटिल गामी को फेरा ।। गगन चक्र दुख दीन अतेरा ।।
ता पर तिहि संतोख न कीनो ।। हित हि कृपयो तहू चैन न दीनो ।।
अब तुहि ऊचित मान प्रभू भावन ।। देहु हिसहि मुहि तज पछुतावन ।।
भावी अमिट टरत नहि टारी ।। यापर युकति सु कवन बिचारी ।।
भावी वस सब भव प्रानी सारे ।। कौन समृथ यतन करि टारे ।।
श्री मुख प्रभज सु कीन बखाना ।। जा छिन आवत हुकमुखाना ।।
नहि न देर ता महि छिन जोका ।। नहि वहि छिन आगे बढ होवत ।।६६।।

दोहरा: यहि सुन सगहा दुखित हुवै कीने बचन प्रकास ।।
अति ऊदास हुवै रुदन करि ब लीनो ऊरध ऊसास ।। १०० ।।
चौपई: देखहु चपल कहा कपि जाती ।। बिफल सदा जग मै बिख्याती ।।
लखी न मुहि मिहनत सिव काई ।। कुक्रम बैठ्यो नैन फिराई ।।
भयो सुदागर संग तयारा ।। पल महि तोर्‌यो प्रेम हमारा ।।
धनी पुरख लख मन ललचायो ।। हमहि दीन लख रुदितजायो ।।
अस सुन ऊत्र दीन कपीसा ।। जांऊन प्रान परत है सीसा ।।
तुम पर पर है परम कलेसा ।। बहु दुख दायक कोप नरेसा ।।
आप मरहुं पुन तुम हम रावौं ।। प्रान जांहि पुन मूढ कहावौं ।।
हठ नहि करिहि जि जग मति वाना ।। करहि प्रब्रित समय अनुमाना ।।१०१ ।।
दोहरा: सगहा मन समझी तबहि चलत न कछू ऊपाय ।।
सार होत न्रिप सकल हम कपि हि लेय पकराय ।। १०२ ।।
चौपई: हुवै निरास नैनन जल ढोरी ।। बार बार तिहि कहत निहोरी ।।
सुत समान यहि कपि पार्‌यो ।। ब या आस्रित दारिद दुख टार्‌यो ।।
छिमा करहु तौ जाहु तजाई ।। भलौं करहि तुमरौं जदु राई ।।
हम है दीन निबल दुख दाहा ।। भली न होत दीन की बाहा ।।
दुख दे लीजत है जु पदारथ ।। सफल न परत न करत क्रितारथ ।।
जौ कदा चलव मन अस आई ।। छीन लेहु दीनन दुख दाई ।।
लेहु हमारी नहि बस चारा ।। पै इक सपथ करहु इहु बारा ।।
न्रिपति कुमति प्रति कबहु न देवहु ।। प्रान समान पाल करि सेवहु ।।१०३ ।।
दोहरा: करी सुदागर सपथ तब साखी करि भगवान ।।
न्रिप प्रति देऊन से ऊनित सुत समान प्रिय प्रान ।। १०४ ।।
चौपई: या बिधि सपथ करी कपि लीनो ।। ता बदले धन बहुत सु दीनो ।।
ताको दारिद दयो बहाई ।। कपि राख्यो निज धाम सु ल्याई ।।
सेवा करत प्रेम करि पालत ।। खान पान सुख सेव समालत ।।
सुत समान अति बध्यो सनेहा ।। छिन प्रति बढत चौगुनो नेहा ।।
म्रिदुल बचन कहि तोख सु दीनो ।। कछु कबिथा पूछन मन कीनो ।।

तब कपि लीनो ऊरध ऊसासा ।। अपना हाल पर कीन प्रकासा ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। कही परम दुख दरदन सानी ।।
कछु कछंद पढ दीन सुनाई ।। बिथा प्रगट करि भाव दुराई ।। १०५ ।।
स्वैया : नहि कोकिल हौ कल बैन या बागन नौतन फूल गुलाब सिरौ ।।
रितु आई बसंत मै साखा कटौं तरु हौ लरजौं छिक कुंज हिरौं ।।
यहि रौकनो सीसे सराब जहा हरुनौं जहि प्याले की तुल मिरौं ।।
अब या बिघ के मद धाम कोहौं जनम्यौं हौ सदा मति वारौ फिरौं ।।१०६।।
स्वैया : कछु काक हौं जू अब कौन हौं मै मुख मौंन हौं या दुख बोलत ते ।।
पुन जो कछु हौं सु वहै कछु हौं दुखिया हौं दुखी दुख फोलत ते ।।
अरे प्यारे मै पाक सो कारवान के पाय को चिंन हौं तोलत ते ।।
परी न्यारी वे प्यारे गहे तब जो रह्यो डोलत ते थक टोलत ते ।।१०७ ।।
स्वैया : जग जाहर तौं यहि हाल कह्यो मति पूछो छपी जु बिथा जिय की ।।
छिक कोकिल हौ परी बाग ते दूर भुली ग्रह ते दुखिया हिय की ।।
परौं पीछे फंधावन को फंधिया दसकंघ सो घात मैं ज्यौं सिय की ।।
बन बारी न डारी पै बैठन देत पुकारत हारी हारी पिय की ।। १०८ ।।
स्वैया : छिक प्रेम प्रिथी पति की है क्रिपा ऊपलंभ सभे को समायो रहै ।।
क्रित कार संसार के होते जोऊ अब दारिद को दुख पायो रहै ।।
न सिंघासन है नहि क्रीट वहै नहि सीसन छत्र नवन तनायो रहै ।।
निज देस छुटौं सुख सौं ज लुटौं नभ चक्रन यो दुख लायो रहै ।।१०६ ।।
स्वैया : नहि मीतन बंधु पयार कोऊ दुख हाल तो काहु पुकावै नही ।।
बिसमाद हुवै बयाकुल क्यो न फसी कियो आपनौं क्यों काऊ पावै नही ।।
निज हाथ जो बंद बलाकी परै तिस फंद कौं कोऊ ऊन छुडावै नही ।।
निज जान हौं हाथ दुखो के परयौ तरफो तौ कहा बनिआवै नही ।।११० ।।
स्वैया : कबहूं जिनको मुहि बयोग हुतो अब मोरे बियोग वहै मरहै ।। फिन्र-
फिरौं प्रान छिपावत वाही ते हौं मरहौं मुहि मीत तवै मरहै ।।
छल जाल मै यौं ऊरफायो हमे दहे सौंप वे सत्रु के यौं कर है ।।
अरे हाय या चक्र सभौं के ते वैसी अनूठी क्रिया हम पै परहै ।। १११ ।।

स्वैया : कठिनाई बनी है बड़ी बिकटाई बड़ी अनयाई कहा कहि ये ।।
फसों इेक हौं मारबे कों लिये हाथ हजार जलाद खरे लहिये ।।
नहि मीत कोऊ जो मिताई करै बिन इेकला मिवुवान हिये ।।
इिक आह कराह हूरी करै थक टूरी सौ ऊकसी लहिये ।।११२ ।।

स्वैया : अब का करि यै न बसाय कछू पग साबली ठीक नही ठहिरै ।।
हम इेकले हाय कलेस हजार निहार तिनै हिय रोह हरै ।।
जु कहीं कठनी कहीं कठनी हठनी कौन ही दुख के पहरै ।।
बहरै नह क्यो हूं प्रिपिंड फलै जेऊ प्रेम पयोनिधि कील हरै ।।११३ ।।

स्वैया : इिक आज कहूं भल मागन तें तुम से गुन ग्राहक हाथ ल परे ।।
दुख पूछत प्यार करै मन तै लखे जात हौं दीन दियाल खरे ।।
मन मेरो ठिकाने लगै अब जौ अब जान हौं पाछे है प्रान परे ।।
निज आदि ते अंत लौ सारी दसा कहि हौ तुम सौं जु कलेस भरे ।।११४ ।।

सवैया : यहि बैन दुखारे सुने ऊन जौं क्रुट पीर गयो द्रिग नीर बह्यो ।।
पुन जान परी कपि हैन कोऊ ये कुलीन प्रवीन है जात लह्यो ।।
बड राजकुमार बडे घर को फस बंध्र के जाल दुखी हुवे रह्यो ।।
तब धीर दयो गर लाय लयो बस प्रेम मयो यहि बैन कह्यो ।। ११५ ।।

~~सव-जीवन-संग-जीवनो-है-मेरे-कपिराया-।।~~

सवै दोहरा : तव जीवन संग जीवनो है मेरो कपिराया ।।
दास भवन निज जान अब रहु भय सकल भुलाया ।। ११६ ।।

चौपई : कपि के धीरज मन आयो ।। कह्यो काल मुख ते फिरि आयो ।।
अब जो कछु पुन बनय बनावा ।। लख्यो जाय है समय प्रभावा ।।
कवित काव्य बहु छंद प्रबंदा ।। पढत ब भयो मन जनित अनंदा ।।
कथा पुरातन बड इितहासा ।। करत रह्यो बहु बचन बिलासा ।।
निज प्रसंग पुन कछु न चलायो ।। आन कथा रस महि ऊरझायो ।।
वहि सब निसान पुन वहि सोयो ।। याके दुख सुन सुन अति रोयो ।।
अब कपि बड सदकार समेता ।। रहन लग्यो पुन ताहि निकेता ।।
पै भावी हरि की बलवाना ।। बन्यो चहित वहि रचित जु बाना ।।११७ ।।

दोहरा: दुर्योधन जल महि दुरयो अरजन ग्रह बैराटा ।।
प्रगट मझे पल महि निपट न दे समय को नाटा ।। ११८ ।।

कबित: राखे राम चंद से सुकंदु लछमन दूजे जानकी गवाई पाई सिंधु पार लंक ते।।
नलहूं को पल मै पकर परबस कीनो दीनो दुख दमयंती को कला कलंक ते ।।
बेचो लैक बजार हरीचंद को ग्रिगिंद देखो ग्रिंद ब्रिज बनिता लुटाई बन रंक ते।।
सस को कलंक बंब बास का छोरयो मला आसरा है कौन मझे बासर के बंक ते।।११९।।

दोहरा: अब आगे बिधि और ही चल है कथा प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो इका दसम तरंग ।। १२० ।।

इति श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति निरूपित प्रीत प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदिन बिरचिते राज कुमार को कपि तन मै बध कनारि सो संबाद पुनह सौदागर ग्रिह निवास बरननाम इकादसमो तरंग ।। ११ ।।

दोहरा: प्रेम सिंघ अदभुत कथा अदभुत करहु न कोहि ।।
हारि माया बह स्मृति मति अब नै बन तस मोहि ।। १ ।।

स्वैया: अब न बनावै पुन अघट घटावै फेर अलख लखावै माया नाम तबी पायो है।।
नारी बनी नारद जनाछे पुत्र साठ सुता दुवादस जनायो फेर नर तन पायो है।।
गुरुगुविंदसिंघ जू डेरावरी मया ग्रिगिंद जो जो अपनायो सोऊ हाथ दे बचायो है।।
पल नाल लगायो माया छलते छुडायो प्रेमनिधि मै नवायो वहै माँ निधि तरायो
है ।।२ ।।

चौपई: कपि तन धर वहि राजकुमारा ।। ता ढिग रहत सहत सदकारा ।।
हित चित करि सेवत सौदागर ।। अधिक प्रान ते प्रिय कपि नागर ।।
जो तिहि मित्र मिलन हित आवै ।। ताको ता कपि ढिग लै जावै ।।
छंद प्रबंध कथा इतिहासा ।। सुनवावत रच बचन बिलासा ।।
जो जो सुनत रहत बिसमाई ।। कपि बोलत लख अदभुत पाई ।।
वहि आगे जा करत बखाना ।। निज मित्रन की सभा सु जाना ।।
यहि सुन सुन सभ जन बिसमावत ।। कपि बोलत सुन अचरज पावत ।।
देखो सुनौन को त्रि भवन महि ।। कपि ब- तन बचन कहत अदभुत यहि।।३।।

दोहरा: यहि चरचा सब नगर महि डगर बगर बाजार ।।
फैल परी अदभुत भरी कथित चकित नर नार ।। ४ ।।

चौपई: चलत चलत यहि कथा गई ऊत ।। दुस्ट जहा क्रितघन मंत्री सुत ।।
ताके स्रवन परी तब बानी ।। यहि कपि वहै सु गयो पछानी ।।
बोल चाल याबिधि चतुराई ।। कपि महि कहा न सुनी लखाई ।।
दुस्ट मनै मन हरख बढायो ।। समय पाय अब हाथ सु आयो ।।
ई पठे तहा तत छिन छरिदारा ।। कपि लियावन हित ताके दुवारा ।।
यौं नहि जानत मंद मूढ मति ।। कपि मि सत्रु निज मीच बुलावत ।।
फल क्रितघन मित्र द्रोह को ।। सुख बाछत देख कै संदोह को ।।
वहि अंतरयामी सभ घट महि ।। देख रहयो नहि दुरत कपट महि ।।५ ।।

दोहरा: छरीदार ता संग कह्यो कपि हि मंगावत राज ।।
मन बांछत फल लीजीछे सफल होहि सब काज ।। ६ ।।(७)

चौपई: यहि सुन वहि अति ही अकुलायो ॥ हाथ जोर यहि बचन सुनायो ॥
दास भवन सुत बिन अंधियारो ॥ या दुख सो चित नहि सुखियारो ॥
चित परचावहित यहि कपि बालक ॥ बालक वत पाल्यो करि पालक ॥
निस दिन निरखत हों मुख याको ॥ राज हंस है कपि जिन ताको ॥
तहि चाहों धन कोटि खजाना ॥ या बियोग महि तजहु पराना ॥
या पर जो छिछा नर राई ॥ लेह प्रान पाछे कपिराई ॥
यहि सुन छरीदार फिर आहे ॥ सकल यथा वत बचन सुनाहे ॥
कपि सुत करि पाल्यो करि ने हैं ॥ कपि नहि देहि प्रान निज दे है॥७॥

दोहरा: सुन यहि दुस्ट जर्यो ह्रिदै कीनो अति अहंकार॥
यौं नहि जानत मंद मति वहि प्रभ गरब प्रहार ॥ ८ ॥

चौपई: कह्यो तहा के न्रिप हि सुनाई ॥ जौ चाहत निज राज बसाई ॥
सीघ्र सुदागर ते कपि ल्यावहु ॥ निकट हमारे अब पहुचावहु ॥
ना तर सकल देस रजधानी ॥ रहहि न कोऊ निहार निसानी ॥
यहि सुन गरब बचन तिहि केरे ॥ निज प्रधान मंत्री सब टेरे ॥
कह्यो कि कपि सुत करि उन पार्यो ॥ करि अनीति किम उचित प्रहार्यो॥
यहि राजन कीरी तिन होई ॥ प्रजा महि जु पदार्थ कोई ॥
बिन बिक्रय बल करि ससोट करि ॥ हरि लेनो बढ पाप सोट करि ॥
याते लखी परत मन माही ॥ असल राज बंसी यहि नाही ॥९॥

दोहरा: प्रजापाल वे हित रखे प्रिथी पाल जगदीस ॥
करि अनीति दुख देवनो उचित न बिसवे बीस ॥ १० ॥

चौपई: यहि बचन सुन सब राज प्रधाना ॥ धंन धंन न्रिप मुख हु बखाना ॥
पै अब तुम हि दोख यहि नाही ॥ यहि है प्रबल लखहु मन माही ॥
इक कपि हेत उपद्रव देसा ॥ उचित नही लख नीति बिसेसा ॥
वहि अंतरजामी सब जानत ॥ घट घट की जो पीर पछानत ॥
याको करम याहि फल दै है ॥ करि अनीति सुख रंच न पै है ॥
औ पुन भवन मारग रासन हारा ॥ वहि प्रभ है नर कौन बिचारा ॥
कपिह बचाय छिपावहि छल वावे ॥ अस बिअंत कछु बयोत बनावे ॥
याते तुमन खेद मन धारो ॥ करन हार पर द्रिस्टि धारो ॥११॥

दोहरा: या बिधि मन समझायो त्रिपति सब मिल राज प्रधान ।।
धर धीरज हरि सुमरब- मन आयस दीन रजान ।। १२ ।।
चौपईं: निज सैंनप कछु सैन समेता ।। जावहि तहा मान हरि नेता ।।
दान मान दै तिहि समझाईं ।। जिम तिम बनय ब लेहि कपिराईं ।।
ताहि दुवार पर दै पहुचाईं ।। या बिन नहि कछु आन ऊपाईं ।।
यहि सुन गई तहा सुदारा ।। सैन सहित जब तहि पगु धारा ।।
तब कपि कही दोऊ कर जोरे ।। सुनहु सुदागर प्रीतम मोरे ।।
काल ग्रसत मोहि त बकबादा ।। करहु नही हर तज मिरजादा ।।
यतन बिबरथ सकल हित मोरे ।। अफल परै गो दुख हितु तोरे ।।
भावी निकट पहूची आईं ।। गयो मीच को दुवार बुलाईं ।। १३ ।।
दोहरा: असन होय किहूं भांत को दुख मो मितता माहि ।।
तुमरे सतुन को परे बैठे सुख की छांहि ।। १४ ।।
चौपईं: याकी लाज परम दुख भारी ।। रहै प्रलै लग मो तव जारी ।।
निंदा करहि सकल संसारा ।। आप मरत मित्र हि गहि मारा ।।
जो कछु बनय सीस पर सह हौं ।। तुम हठ रंच न या महि गह हौं ।।
यहि बच सुन ऊन कह्यो सुनाईं ।। पतति ऊधारन वहि जगराईं ।।
कहा बात यहि ऊचित प्रसंगा।। जो मुहि पुन मुहि सिर के संगा।।
धिक ताको ~~जन-नि~~ जिहि बचन लजायो ।। पुन धिक जनिक जननि न जायो।।
जो तुहि बनय प्रथम सिर धर हौं ।। तौ हि मरत पल पहिले मर हौ ।।
या महि वहि सैंनप सरदारा ।। ऊतरे आन निकट ति बारा ।।१५ ।।
दोहरा: त्रिप आयस याबिध तुमहि कपि संग ले इक बार ।।
यथा ~~ब-बिध-तुम-हि~~ तथा दिखरान हित जाहु तक्त के दुवार ।। १६ ।।
चौपईं: या महि हमरी नहि बस चारा ।। वहि बड बली सु राजकुमारा ।।
मारय तजय हाथ यहि ताके ।। हमन बिगार सकति संग बाके ।।
धन की बाछा जो मन होईं ।। लेहु सकल हम ते गन सोईं ।।
ताते ऊचित तुम हि यहि भाईं ।। इक बार तिहि देहु दिखाईं ।।
मारन राखन करि जग नाथा ।। कौन सकत लावै किहु हाथा ।।
यापर श्री गुर बचन प्रमाना ।। तापर राख ध्यान मति वाना ।।

जिस राखै तिस कोन्ह कोहि न मारै ।। सो मूवा जिस मनुहु बिसारै ।।
याते हट तज राख बडाई ।। यहि सब खेल करत जगराई ।। १७ ।।

दोहरा: करी करी परकस क्रिपा रच दुफ्ता के चीर ।। ~~हरिनाकस-कुमति-बध्यो~~
हरिनाकस कुमति बध्यो कवन तदबीर ।। १८ ।।

चौपई: यहि सुन करि तिन बचन बखाना ।। धन न लेऊ जग कोटि खजाना ।।
मै कपि यहि सुत करि निज पार्यो ।। प्रान सहित धन या पर वार्यो ।।
न्रिप आग्या बर सीस हमारे ।। प्रात चलहु लै संग तुमारे ।।
कपि लै संग ताहि ढिंग जावों ।। जौ वहि लेखत प्रान तजावो ।।
जौ तज देयत देऊ असीसा ।। फिर आवहु लै संग कपीसा ।।
चालिस मुद्रा कनि कनि कारी ।। दयो सैन को खरच ऊतारी ।।
वहि तब नम्र हुय बचमानी ।। प्रात चलन की ही मति ठानी ।।
मम धन यहि बडो म्रिदुल भव माही ।। म्रिदुल करत सम को पल माही।।१९।।

दोहरा: लोह सीस धर कनक जो नरम करत नहि देर ।।
मानव की केतक कथा सबै कनक के चेर ।। २० ।।

चौपई: निस महि निस रस कल यहि सारा ।। फैल परी घर दगर बजारा ।।
छिक कपि है बड पठित प्रवीना ।। किसहि सुदागर निक्ट नवीना ।।
कपि संबारिक न्रिप सुन पायो ।। प्रात जायसो फकर मंगायो ।।
निसचै पकरि घात कपि कर है ।। बडो कस्ट बस कपि जब मरहै ।।
यहि सुध सुर प्रभा सुन पाई ।। बिरह बिथित बवसेर हताई ।।
हुवै निरास हिय तफ्त परी ही ।। सुनत मनै मन ट नीठ करी ही ।।
यहि कपि नहि जो पठित प्रवीना ।। राजकुवर है निज मन चीना ।।
बढ अरमान सहस पछतापा ।। अब किह जुगति बचय यहि आपा ।।२१ ।।

दोहरा: बडी चिंत मन चितव करि रच मन हेक ऊपाय ।।
तब या बिधि पूछत भई मंत्री सुत हि बुलाय ।। २२ ।।

चौपई: प्रात सुदागर कपिहि समेता ।। कित हुवै आवहि न्रिपति निकेता ।।
यहि कौतक कयो हूं हम देखहि ।। कपि बोलत निज द्रिगन परे लहि ।।
तिन करि जोर बिनति अस कीनी ।। परम सुगम तर पार है चीनी ।।
रावर महल दरीचीतर हुवै ।। राज मारग हुवै हित हि निकर है ।।

चहूं ओर ते जो कोऊ आवत ।। यही मारग ह्वै त्रिप तट जावत ।।
यहि सुन सकल निसा वहि कामिनि ।। तरफत रही बिकल जनु दामिनि।।
दुवै घटि का निसर ही जब हुते ।। बैठी तिहि जायत बहुते ।।
छेक कीर पिंजरा ढिग राख्यो ।। अवसेरत मन यतन पराख्यो ।। २३ ।।

दोहरा: ऊत कौतक हित नरन को मेला मयो अपार ।।
ऊमग चले सब नगर के बाल ब्रिध नर नार ।। २४ ।।

चौपई: जब ससि सौदागर ऊडमन कन ।। लयो छिपाय धाम पछम मन ।।
पुन रवि राज प्रधान बहुन मुख ।। रकति पानि करि दुस्टन दै दुख ।।
प्राची दिस निज राज भवन ते ।। आयो निस रस माहित मन ते ।।
ऊठयो सुदागर हरि सुमरन करि ।। जो वह सदा दीन रछक हरि ।।
पुन गज चढयो मनाय गजानन ।। गज रछक सुमरत निज आनन ।।
कट महि पेस कवज कस लीनो ।। प्रान देहुंगो मन प्रन कीनो ।।
कपि सुत जयो निज अंक बिठायो ।। मरन हेत निज कटिहि कसायो ।।
कपि सन कह्यो चिंता मति करीये ।। यहि मम बैन मन हि द्रिढ धरीयें।।२५।।

दोहरा: जो मावी पुन धन सकल सरवन सरहै काम ।।
तौ पुन जो कछु बन परय करहौं तब धन धाम ।। २६ ।।

चौपई: पै निज जीय तै तोहि नहि देहौं ।। या बच संग निज प्रान परैहौ ।।
बचन सु पुरस प्रान निज धारत ।। निज जीवत वहि कबहु न हारत ।।
बहुर यथा काहू कवि बयना ।। है प्रमान या पर सुख दयना ।।
मयो करी सिर वहे पिछारा ।। कह्यो है हु ह्वै गयो पसारा ।।
याबिधि कपि प्रति धीर धरायो ।। चल्यो तबहि छिक दंत मनायो ।।
याको छित ते हौन सवारा ।। प्रिस्टि अपार कीयो परवारा ।।
बल्यक चहूं ओर बहु जन की भीरा ।। मयो कुलाहल गघित अधीरा ।।
कपि तिन ओर निरख अकुलायो ।। निज कुफि दुख दुखी देख दुख पायो ।। २७।।

दोहरा: सनमुख ह्वै सब ओर कपि कह्यो स्रवत जलनयन ।।
कर प्रमाण निज हाल पर यथा किसहि कवि बैन ।। २८ ।।

स्वैया: बिज मारयोतपायो तप्यो हुवैं किधौं पर बज्र पुरंदर किधौं हत हौं ।।
जिहि रंग मैहौं तिहि मैही भलें पै भुलाइ हू हे निज ते मत हौं ।।
सुनियो हौ सभा बनोया जग की तसती पर हौं छिक चित्रत हौ ।।
तसवीर हौ पै अधराधर दंत पिसावत हौं फकुलावत हौ ।।२६ ।।

स्वैया: फंधियारे समेट फंधो बनम अपनो बंधियारी समीर सबेक की जौं ।।
पिक हौं तो सही छिस बाग भी पै सुखफूल तो बौरे छियौं न अबों ।।
बरी बाह कराह तूं आगे बढे जिनि हौ हूं तो रावरे संग चलौ ।।
बिछुरयौ निज साथ ते इक अनाथ हौं पंथी हो साथ लिये निब हौं ।।३० ।।

स्वैया: छिक मूरत हौं चित चिंत हि की दुख रूप किधौं छिय घाय हौं मै ।।
तपताकंतदूरन को तन हौं कि मरी हौ जु प्रान ढराय हौं मै ।।
परे प्रेम के पिंजरा मै भ्रिगिंद तिनै तन को पंघराय हौ मै ।।
छिसही के लीइ जनम्यो जग हौ जु लखो जग ही की बलाय हो मै ।।३१।।

स्वैया: बरे प्यारौं बिचारौ यहे जग जो नित न्यारौ ही रंग रंगायो करे ।।
खुटियारौं लबारौ ही पारो छिनै बहिरूपीया देख लजायो करे ।।
डर की पुन कौतुक की यहि ठौर रवा रव आयो सु जायो करे ।।
सरमायो करे लख याको बजार बिजार हुवैयो बिफरायो करे ।। ३२ ।।

स्वैया: जितनी बिन से है भली बौ बुरी सब रंग कसुंभ रंगाई छिनै ।।
छिक खेल खुवारी निकारी कीया मै सरीद बड़ी दिखराई छिनै ।।
छिक भावी अमेट सदा अपने नित क्रित्य मै लागी लखाई छिनै ।।
छिन मंभार औंर सबै कछु है नित बाई छिनै यो चलाई छिनै ।।३३ ।।

स्वैया: छिक भावी पै दावी किसू को नही सब ज्यौ घटि यंत्र लगी घटिका ।।
बरजोरी जथा मन याके रूचै सब नाचै कु भले है बटा नटिका ।।
कोऊ काहू के बैर मै बावरौं है कोऊ काहू के प्रमी भयो भटिका ।।
जोऊ देखौं जु दी नहि पायो काऊ परयो काहू बिसेरे ही के सटिका ।।३४ ।।

स्वैया: छिक बैसे है सूफ न बूफ कछू कहा हुवे रह्यो लैन रूदैन यहा ।।
बड बयाज की आस बंधे ही रहे वहि मूल हूं हाथ से सोय रहा ।।
बिवहार बड़ो बवरापन को जु लख्यो है वहै बवरा ही लहा ।।
यहि माया की देखो बिचित्र गती जोऊ चित्र कीयो रूऊ सोऊ चित्र महा ।।३५।।

अब मोहू से मूक महा पसु को अस बोलन की वह बूझ दई ।।
तुम को सबको लिख प्रीत दियो मति बानी मोहि मैं ऊ झक गई ।।
सब संग लगे हो सनेह सने न बियोग सह्यो परे सूझ गई ।।
जोऊ देखतीं हो निज प्रेमी लखौं मति मातो मोही पर लूक गई ।।३६ ।।

स्वैया: दुखी दीन दयाव लो देखत मोहि दुखी द्रिग नीर बहावते हों ।।
करुणा की बही है बड़ाई यही कृपा निधि हुवे छबि छावते हौं ।।
पुन ये हूं बिचित्र तली हरि कोप ते हौ हू फस्यो लख पावते हो ।।
बिन काम हीवा अनयायी सो काम परयो है लखो मे जु आवते हौं ।।३७।।

स्वैया: यहि जान परी न नहीं वहि घातिक घात करे गोन क्यों हू टरे ।।
न डरे निरदोख पै चोट करे बिन खोटक प्रोणन हाथ मरे ।।
मुख कारोके करेगी दुहू जग ते ठगती सुख बैठ है चैन करे ।।
यहि बोलतो हूं मुहि मानो सदेस हुतो प्रित को अब प्रान हरे ।। ३८ ।।

स्वैया: करि गौर लखीजगती छिन ठौर भलों औं बुरो पतियावन को ।।
पुन पामर भोग अराम के जोग बिचार रचैं सुख छावन को ।।
दिन दुवै कहीं जीवन के हित कैसे लखो करें नाट ठटा वन कों ।।
सिर काल भुलाव कै माल भरे भरे ऐंठ परें घर पावन को ।। ३६ ।।

स्वैया: जब सीस ऊठाय कै मूंद दोऊ द्रिग यों चलते है गरूर भरे ।।
तब दीनन के दल ते मल ते सिर कैरो जेघर सार परे ।।
पुन अंत त्रिसा तुर तोख बिना पछुताप ही ले कर संग मरे ।।
कर न अघायी त्रिगिंद कोऊ जग ते भखते भखते प्रक्रिया ही भरे।।४०।।

स्वैया: सब वा वन के हित धावत हैं जु बढे प्रम हैं तिहि पावने कैजक मै ।।
पुन पावै जो प्रान तपाय कहू बड दुख हुवे रास छिपावने मै ।।
छुट प्रान चले तब छूट परयो न धरयो डग हू पछुवावने मै ।।
तब हुवे कै निरास ऊदास धरें सिर हाथ रुवे पछुतावने मै ।। ४१ ।।

स्वैया: यहि स्रिष्टि तो बार बधू जठिरा बिन प्रीति बलज सदा बिफली ।।
नर को यहि नारि बड़ी बट पार बिगारि कलोक प्रलोक छली ।।
नर हे छिन ठौर कहूं थिर ज्यों घर ही घर चौपर सार चली ।।
लख्यो अंत को राव औ रंक दोऊ गज दुवे पट दारु की सेज भली।।४२।।

स्वैया: पुन यामै पटे बर कै पस मंबर काहू को बंबर ही जुर रून गौं ।।
अब काहू को चीर पटीर मिलौं फुन कोऊ करी रही सौ पुर गौ ।।
पुन पाछे पखान को छान रचौ कोऊ आपै पखान तरे दूरगौ ।।
किनै कंचन चित्र समाधि रची काहू ठौर समाधि ही कौ मुर गौं ।।४३ ।।
स्वैया: जग ते त्रिसना पट पार चुके घर सैन दुहू को बराबर है ।।
नहि वाके खूर सूर बिछौने पटंबर पाम ड का भर है ।।
नहि वाको फटी सतरंजी नुरी न चटाई मुरी हूं न साथ रहे ।।
नहि राव की रावी रही नहि रंक की रंकी त्रिया ही सरासर है ।।४४।।
स्वैया: कछु काल गहे ते मढ़े ऊत पात गिरायो गयो मट जीरन हुवै ।।
छुट ईट सों ईट जुदी बिखरी न परी पहिचान बिदीरन हुवै ।।
यहि यामै समाधि अमीर की है ये मढी ही फकीर बिसीरन हुवै ।।
यहि जोबन मै तन त्याग परयो यहि जीरन बालिय बिथीरत हुवै ।।४५ ।।
स्वैया: यहि यहि बी बड मारी परारबीन को है पट औम को मिलनौ ।।
नही सै कहो हाथ हिये वही तन त्याग परे न कैसि मिल्यो हिलनौ ।।
घर दाग छथेली गहे तज लोग तौ बाय सबील को पिलनौ ।।
गहि स्वान शृगालन चोर ते हैं फक्फोरल पिंजर को फिलनौ ।।४६ ।।
स्वैया: बन अंबर है वा दिगंबर है मठ कानन अंध है दीप बिना ।।
पछताप निरास बिना सिरहाने न पाछि ती रोवै बिना त्रिसना ।।
बहुसाल मढी मन की रचना लखते फिरे बाम बिताछे दिना ।।
बहुच्यो सस हे दुख दीनन की मढ़ी या अंधियारी लखी बगिना ।।४७।।
स्वैया: छिक कौतुक औरनयो ही लखौ जिन के वहि राज सिंघासन मै ।।
मसनंद पै राजत राज करे निस दयोस अनंद हुलासन मै ।।
तिन मत न के तपवे को लखो हरि को पहि ते मन बासन मै ।।
रचे नीढ़ सु थाय सबील चूकन लोटत स्वान अवासन मै ।। ४८ ।।
स्वैया: मढी मठ ठौर यहि गौर करि देखिये तौ ठौर पछुता मान कीया सम्न बौर है।।
सोवत है बैठे- जेहँ काल ही कलोलत है बोलत हे यहूं बोर डोलत हे दौर है।।
फूली फुलवार की सिसर फतमार देसी ठार देसी कमल बदनि कसूप जौ रहै।।
जो पै काहू सुमन पै जुबन बहार तौ बिचार देखौ बेधौ कोटि कंटक कुठौर है।
।। ४९ ।।

सवैया : प्यारो परपंच मै तौ कंचन से कंच मैं तौ यौंही कबद दिन रैन फकफकै है।।
कोऊ रसभोगी कोऊ बिथित बियोगी रासपान छकै अंक तहासंग दुख छकै है।।
कठिन अगारी सब ही कोयम पंथु मारी ताही कै मुसाफर जहा लौं रावकै है।।
हुवै चलो निसंक बंक क्रोंधि कलंक लाय रहै मौनकथो हूं बिथापाप ही को फंकै है।
।५०।।

सवैया : पिक को सिसर मै बिसरतन रोत पायो फंक निपट सीस पटक कुपाका रतौ।।
नीद की सुमारी लौंऊडारी गई फूलन की नौ पै बनिवारी लख्यौ सौवत बसारतौ
बहुत ही बेर ऊठ बढी ही सुबेर सुन मौलवी की टेर लै मसीत सिरमाद तौ ।।
बरस बिताइे छिनही कै बकिाइे बडे कस्ट ऊठाइे फिरयो दुसह सहारतो ।।५१।।

सवैया : बीते बहु मास सन गजल प्रभात लै सहारयो सीस माव तट तीरथ के नाव मै ।।
देखीये बिचार वहि चंद बदनीन को जु मेल हो किसापनो होय जब होनात मैं।।
आछी भांत देखौं हौं मै सभी निरधार बिवहार या संसार के निहारे बात भात [illegible]
मै ।।
कबहूं महल मै चहल वौ पहल मै कै कू कूनी ओ रमाई कहूं बैठ बन बात मैं।।५२।।

स्वैया : कहूं बडे बालमौं मुलानौं कौ मिलानो जाय जामनी कहानी कोटि सुनी सब जामनी।।
कहूं बैठ पंडतो मै सम गुन मंडितो मैं सुनो सीस धुनौं पैन पुरी मन मामनी ।।
वे तौहै अबे घेरो पै पंथ प्रेम प्रीतम को जीवन कौ फल रस है जो सुख मामनी।।
वेरै तुछ ढीठ ढीठ अंतरायी प्रेम जूकै नेम द्रिढ हू के बाट पार तन तामनि।।५३।।

कबित : नीकै निरधारयौ तौ ये निज पछपाती सरे पर पछपाती बैठ गाती बाघ सरे है।।
आपनी तौ जान मै छिनौ की खीचतान मैं निदान मै म फलकछू कहू हाथ पर है।।
पूम जू ही जाने वौ छिनौं की यहि कैसी बूफ आपै मले मान कै बुरे को और घरे है,
मरम की बूफी है न सूफी है दुहूं को अब वैसी सूफ वारों से प्रभू ही सीफ करे है।
।५४।।

सवैया :
कबित : मली को बुराई और बुराई को मली ही जानै कैसी बुरी जानि है जो मली बान
रहे हैं ।।
जग तौ निपट छेक पंथ को सौंधाम जिम स्वास न को तार तिम सबै चल लहै है।।
जीवत लौं जग मै हजारें ही बसेरे डर आगे सभा जम की जवाब डर रहे है ।।
काहूं भांत छेन सुख मानव को मरे जान कौन सोन फना है जामैज ढाना लिख है है।
। ५५।।

सवैया : सुनिये सिधांत औ नितांत सब ही को याको जीवन को जौंक सौ कमाने नाम रन कौं।।
ननलौ—निस
दूजै यहि चाहीये जहा लौ जाते पूजे न दुखावै हिय काहू को सुरासे सुमरन कौ ।।
नातौ निस आधिक पुकारै दुखी दीन कोऊ काढ है कराह आह दारुन घरन कौं।।
छार करदें है घनधाम औं बिभूति सब से करौं बरस की कौ छिन नापरन कौं ।।५६।।
सवैया : दिल दुखियारी की ऊचित दिलदारी गिरयौ ठौर ते निहारी कौ सहारी करबो करै।।
आसा और त्रिसना निश्रित चित ते जुहौं हि बिभव बडाईं कौ गर बहर बो करै ।।
प्रभू की क्रिपा पै करितौस ऊपकार वाको जन जन हुवे के कबहूं ते टरबो करै ।।
दुख को सहार छिकसार सब रंगन मै जग बिवहारन ते धीर धरबो करै ।। ५७ ।।
स्वैया : दुस्टन के संग ते बचाय बनै औ जसते संपति भरोसा कौन आपति ते लाज का ।।
जीवनौ ऊधारौ ईक दिन छुटकारो दीयें यामै कौन चारौ है सहारौ रंक राज का ।।
याते सुभ काम को धियान रहे आठौ जाम जीवनो है कैद अंत छूटनो समाजका ।।
कीजे द्रिग गीले ना बिलोक मरयौ काहू ऊनै रोये बो मरै हैं हेते जीवन कर काजका
।।५८।।
सवैया : सेस की ऊमर अमरेस की समाज हेत संपति धनेस की कोऊ दम ऊठावे है ।।
याही की मटक मे अटक रहे छोटे बडे खटक मिटै न परै सीस पटकावे है ।।
केवल अकारथ हीया मं पुरखारथ है स्वारथ प्रमारथ ते हाथ फारजावे है ।।
हाथ कथ आवें हैं बिभूति गुन बिदया ते रे प्रभ की की माया ते प्रभू माया केहूं
पावे है ।। ५६ ।।
स्वैया : जेहै गुनवान बडे पौरखी प्रधान रहे रीते ही निदान मिली माया मूढ पसु कौ ।।
रुक्त को रास हीरा फंना अभिलास दिन जागौ न औ सौनो निस सोनो बढी बसुकौ।।
चंपक बरन अरुनारे अधरन सो मिलाय मुख सोकौं जु पायो जैसे रसु को ।।
तिन कौ बियोग महे भोग रोग रूप वहे चौगुनो तपावत परै है परख सुकौ ।।६०।।
सवैया : याके तज जावत मै प्रान अकुलाव है कैसी प्यारी ठौर है बिनासी जगधाम की।।
रंक ते लै राव लौ निरास जात लखे जेवे वायस चलावत हुवे सेवक प्रणाम की ।।
बाज बडे मोल के मरत पसराहे लखे मर सरके छमे लगरे कंचन के काम की ।।
पै कहूं प्रभात भोग कबहूं बियोग रात छिन मै पलट गति जात चित्र फाम की।।६१ ।।

कबित: राऊ होत देर है नर्क होत बेर कछू अब अबेर या अंधारे धाम जग मै ।।
जब सों सवार यहि सके गो सवार हुवै तुरंग निस दिन के दुरंग पर्यो अग में।।
राख तन बाग हेक रंग पै निसंग यहि फेरत है रंग रंग हेक हेक पग मै ।।
जान्यो बडो ठग मै अलमै प्रिगिंद हुवै निहालर्यो रंग ढंग हेकसार अग तग मै।।६२।।
कबित: जाके बाजसाल मै बिसाल बाज राजन कों गिनो न परत थोरे दिनौन की बात है।।
तिनही को देखौ अब समे की प्रभा ऊपाऊप नही कों ठाढे हैं ऊधारन्त ढाव है।।
आवैं जब काल तब माल की मजाल है न सैन चतुरंग जय तरंग जंग पात है ।।
बंधु पन मीतन कुटंब सखाप्रीत महूं हाथ ते कुढाव तन बाडे कोऊ आत है ।।६३।।
कबित: जौ कदा चये ही ऊपचार है बचाके तौं चाव कौनहु तौं कालकु तरे आवनौं।।
रावन से रावन कौं राज के प्रभावन कौं आंत होन कोऊ अंत बन्यो पछुतावनो ।।
जरा सिंघ जोर औ सहस बाहु की मरोर दारा से सिकंदर से अंत बन्यो जावनौं।।
कहा लौ गिनावै कोऊ प्रिथ को बढावतेऊ अंत तौन आवै मढे भूमि मैं समावनो।।६४।।
यथा श्री गुरु श्री मुख मुख वाक ।
कबित: जोगी जती ब्रह्मचारी बडे बडे छत्रधारी छत्र ही की छाया कई कोस लौ चलत है।।
बडे बडे राजन के दाबत फिरत देस बडे बडे राजन के द्रब को दलत है ।।
मान से महीप औ दिलीप कैसे छत्रधारी बडो अभिमान भुजदंड को करत है।।
दारा से दिलीसर दुर्जोधन से मानधारी भोग भोग भूम अंत भूम मैं मिलत है।।६५।।
कबित: कीनौं सुभ काम जिनौं लीनो हरि नाम पर काम काढ दीनो हाथ तेजुसर्यो है।।
यहै काम आपत प्रलोक के मुकाम जस रहे सुभनाम धुवि संत हाम भर्यो है ।।
नातौ जग जल कौ तरंग यहि जीवनौ है यासो मन बंधो वहै बंधन मै पर्यो है।।
याते मन तोरबो मुख मोर्यो वाहि थोर्यो कहूं दोर्यौं हूं मिले है औरयो तार आप तर्यो है ।। ६६ ।।
सवैया: त्याग जग पोच कौन सोचिये प्रिगिंद कछू ऐसी बडी बात नहीं आपैं तज जात है।।
नीकी है बहार बाग सापने सुहावन की पै जौं पल सौंली तहा डार है न पात है।।
संपति सुफ्न जग पल है बिलाय जै बो काल कोच बीनो बाल ब्रिधि जो दिखात है।।
ऊपर सौं पूरन त्यो पुरन तरे हूं भूमि मानो तसवीर दुहूं ओर हेकै भांत है।। ६७।।

स्वैया : वहै मुनव्वर गुनागार जो संसार को असार सोच सापने की संपति समझ न लावेना ।।
कीनों इन भले को बुरों ही सदा सोहैं करि जो बयो दुखी ही सुख लेसतों लगावेता।।
राव रंक रानों लोंजुवान ते पुरानों लौ बहानो कै गिलानो कहू नै कन अघावैना।।
गरद मिलावैं करझार हुवै गहे हैं फावे लै कें पछरावे ढेर फोरनेक पछुतावे ता।।६८।।

स्वैया : अतिबावरौं हुवै तूं बिरा नौंम लागम खायो करै कहा गैरन को ।।
जिनकी मति बेस बिसेस वहै गम खावें समै नद पैरन को ।।
नर को यहि वाजिबी है जग मै वहि काम करे जिन घेरन को ।।
जग कागज पै सुभ नाम सदा रहे याद अबैरन बैरन को ।। ६९ ।।

स्वैया : जग जीवहुतो इहि भांत जियौं जु जियौं गयौं काहू तौं याद कियो ।।
न दियो करौं काहू मै हाय हियौं यहि जायत बे तरफाय जियो ।।
जु पियौं कहूं पाय संयोग सुधातो बियोग हलाहल घोर पियो ।।
फटजात हियो न लियो न दियो कछु कयो इक नामक प्रान दियो ।।७० ।।

स्वैया : वहि प्रेमी है पारस पावे कहा दगा घोह भरे हर ठौर परे ।।
चित चाह मै दाह निदान है जू चुकै चाहक हूं तब चैन परे ।।
नहि चाहते चैन दई कबहूं चित चाह ने आहरे दाह करे ।।
अस भूल पै पै अब सोस बडो निज हाथ लै हाय कलेस मरे ।। ७१ ।।

स्वैया : जब जोबन के दिन बीत गइ मद दूर भइ अखिया ऊघरी ।।
सिर हाथ धरे पुन रोवत है ऊरघोवत आंसुन लाय झरी ।।
समयों करि तीरस रास्त ते छुट हाथ परे पछुतापु करी ।।
मिलयौं करौं हाथ हमेसा परयो कहि बीती बिती समे झरौंयौं परी ।।७२ ।।

स्वैया : सुनि या बिध की बतीया कपि ते जन भीर समै सहमाय गईं ।।
हिय बेघ कहै बढ प्रेम भर पगी डर कै मति हूं हहराय गईं ।।
कहूं सीख कहूं समझौती कहूं रचना कै बिचित्र रिझाय गईं ।।
दुख ही की भरी कहूं तयाग ढरी कहूं लाय झरीही रुवाय गईं ।। ७३ ।।

स्वैया : इहि भांति सुनावति जात चल्यो पंघलावत प्रेमिन के मन को ।।
हरबाति भरी दुख दाह की पैकर आह न रोक सकै तनु को ।।
अति रोय सबै करबाव वहे संग आवत साचे लीये पन को ।।
परवारु करें गज को चहु ओर ज्यो मोर हुवें सावन के घन को ।।७४ ।।

स्वैया: अब याही समाज सने पहुचे जहि मान प्रभा अवसेर तही ।।
निस सारी न नीद परी दुखियारी हुवै देव मनावत टेरत ही ।।
ला सोर झरोखा ते झाक कह्यो वा सुदागर सो दुख प्रेरित ही ।।
पल ठाढे रहो जू जरा कपि केहों हूं बैन सुनै बे को हेरत ही ।।७५ ।।

स्वैया: सुनते ही ऊनै गज रोक लयो तब मान प्रभा अस बैन कहे ।।
अहे ठीक ही मूक तूं चूक परयो निज चौकरी ते दुख देहसहे ।।
हम यदपि ना किसु लाय कहे तऊ तेरी बिथा सुन बे कोच है ।।
सुन तैही लहे कपि बैनि अमे मम प्रान प्रिया के हे चौकर है ।। ७६ ।।

स्वैया: पहिचान तही पहिले वहु तौं अति रोयो मनो द्रिग लाय झरी ।।
पुन आसुन पौंछ संभाल कछू हिचकी द्रिड़ रोक कै आह करी ।।
कह्यो जो दुखियाहरि औरन ते निज मीतन हूं ते पुकार मरी ।।
किहि भांत कहौं कोऊ साछी नही ये प्रले की घरी ही हजूर खरी ।। ७७ ।।

स्वैया: कछु भेद छपौं न रह्यो अब यहै जहाब के कान चढी बतीया ।।
बसुन बिसरावौं क्रिपा करि यें करि प्रांन सुनो अब मो बतीया ।।
लखो भाग हमारो कहा चढ कै गईं टूट कमंद फटै छतीया ।।
जब हाथ अलंबित ठौंर रही परे छोर रसातल की खतीया ।। ७८ ।।

स्वैया: अपसोस बडो दिल दोसत नै रच द्रोह दसा ये हमरी करी ।।
जिहि रोवत पै जिय खोवत हौ तिनि स्रोनत पान की त्यारी करी ।।
कलिकाल की साची प्रभाव करी बदलौ भलि को बुरियारी करी ।।
मन ही मैं रही मन मीतन की ग्रिह जान की कीचल तारी करी ।। ७९ ।।

स्वैया: फल पायो न मानी ही मीतन की फल द्रोह मै जान अजाइ दई ।।
पुन मीत फसाइ जहान जीइ जु जिये तौं चिता मै सदाइ दई ।।
सच है जग ठौरन स्वास मरौं नहि भेद किसू सौं कहाइ दई ।।
मनसूर कह्यो हौ दई हौ दई तब सूरी की सेज सुहाइ दई ।। ८० ।।

यथा स्वैया:

यहि जान परी जग पेख नौ है तहि की अवछाक छकै रह्नौं ।।
पुन मंत्र यहै निरधार निरंध्र अंतर कीन कहूं कह्नौ ।।
कहि चाकर दोस लगाइये कौन कौपाइये भाग लिखौं लह्नौं ।।
अब काम यहै मरदानगी कौ सिर आन बनै सु लिये बहनौं ।। ८१ ।।

स्वैया : जोऊ बोल ऊठयो सोऊ मारौं गयो निज जानहू ते सो बिचारो गयो ।।
कह्ते तौ कही पुन सोच करी कपि हाय ये भेद फुकारयौं गयौं ।।
सुन पावै कहूं वहि कूर तबै पहिचान है हौतब मारयो गयो ।।
अबी आस है याही ते फेर कीयो कछू बात बनाय ऊचारयो गयो ।।८२।।
स्वैया : यहि देखिये बात बिचित्र बडी गुन ते जग कोऊ बडाई लहे ।।
गुन बोलन के निरदोस ये कूर के हाथ परयो तौं सजाई लहे ।।
गुन है तहा लाख लखौं घुन है अपुनी ही बडे दुख दाई लहे ।।
अब क्यो न गुमान करौं अपनी अगुनाई में मूल भुलाई लहे ।। ८३ ।।
स्वैया : प्रभू जाने जु कौन कौ है मुख चंद ये देख रहेस तो बिसमै ।।
मई औरन दूज खुसाली यही छिक खाली रहे तौ हमी छिसमै ।।
निज हाथ मे पाऊ कुठारह न्यों धरौं दूसर दूसर मै किसमै ।।
सब भांत बनाई बिगारी ऊनी छल भावी कौ है बल है जिसमैं ।। ८४ ।।
स्वैया : मति बैमक्ता ही हमारी बहो गल मोरे परी दिन फेरन सो ।।
पिक तूं क्यो रिसातरी फूलन पै फासी तूं कलि कंठ की टेरन सो ।।
अब कौन ऊपाय है छूटने को मुख म्रितयु कौं आखि नहरे न सो ।।
हम जानते है जु बिती हम पै तन जात घरी छिन देरन सो ।। ८५ ।।
स्वैया : कछु जानत है वहि देखतहै जिने सार नही तिन सो कहना ।।
हित तेरे तजौं ग्रह देस सबै अब प्रान बियोग परी सहना ।।
तव पेम बटे मुहि मारीये है बहु भीर है लोगन की लहना ।।
चढ प्यारे अटारे निहारी तौ आवढ कौतुक है फिर ना रहना ।। ८६ ।।
स्वैया : छिन बातन ते कछु भान प्रभा हिय सौं जुही वहि षोय गई ।।
समझी यहि राजकुमार सही द्रिग रोय सबै सुधि सोय गई ।।
कहयो जानते सो कहा ही छिस को अब अनजान कहा करै मोय गई ।।
फल कौन है ताके दुखाहि बे को अब होनी हुती सो तौ होय गई ।। ८७ ।।
स्वैया : यहि बोलते ही हरखे मह कीर के प्राण निकार कै खाली करयो ।।
पिंजरा कपि द्रिस्टि तरे कै झरोखा तरे लटकायो बहाली भरयो ।।
कपि देखत ही पहिचान मायो गयो लौट तहा ही खुसाली भरयो ।।
कपि देह तजी बरयो कीर कीर देह ऊठयो फरकयो हरियाली धरयो ।।८८।।

दोहरा:कौतुक हित हुवै रही ही बहु लोगन की भीर ।।
यहि गति कोऊ न लख सख्यो कपि तज गयो सरीर ।। ८९ ।।

चौपई: मान प्रमा लख सुक फरकाक्त ।। फरक ऊठयो ह्यि अंग नमाक्त ।।
मनहु गई फनि मनि फिर पाई ।। गई मूरि जीवन जनु आई ।।
कीयो पिंजरी मक्तो मभारी ।। करी करौखा बंद किवारी ।।
ऊत कपि म्रित सुदागर देखी ।। भ्यो ह्रिदे अति दाह बिसेखी ।।
पे सकवज गह तुरत निकार्यो ।। चाहत आपनो ऊदर प्रहार्यो ।।
तन तज जगते निंद निवारौं ।। मम सिर चढयो कलंक ऊतारौं ।।
हुतो समीपी जो मति माना ।। तिन कर गह्यो नदी नो जाना ।।
कहि म्रिदु बचन ताहि समझायो ।। घात करन ते बरख रहायो ।। ९० ।।

दोहरा:प्रभू को मानअसान मन नहि नमस्त की ठौर ।।
पति राखी प्रम क्रिपा करि प्रान बचे करि गौर ।। ९१ ।।

चौपई: काल करै सुत प्रान पियारा ।। नहि ताहि जन निज निक को चारा ।।
बयरथ निजा तम को यहि घावन ।। करत मूढ मतिवान न भावन ।।
जौ बल ते महि हन त नरीसा ।। ऊचित मरन तव बिस्वे बीसा ।।
अब मन समझ तोख जिय आनहु ।। करन हार प्रमु वाय समानहु ।।
तोख ठौर नहि और ऊपावा ।। तोखिन को प्रम कै बढ भावा ।।
या महि प्रभू स्री मुख हु बखाना ।। सुन्यो न तुम कबहूं निज काना ।।
सांद संतोखन को मै साथी ।। हाथी दै राखहु जिम हाथी ।।
याते मन संतोख द्रिढ राखो ।। हरि बायस मन माहि पराखो ।। ९३ ।।

यथा स्री गुरु मुख वाक ।। सलोक ।।
भ्रण घाले सम दिवस सासन हि बढन घटन तिल सार ।।
नीवन लो रहि मरम मोह नानक ते ऊगवार ।। ९३ ।।

चौपई: याबिधि कहि तिन बहु समझायो ।। घात करन ते ताहि हटायो ।।
सब लोगन यहि सुध जब पाई ।। अति पुकार रोवत कर लाई ।।
कारन मरन बिचारन लागे ।। प्रेम बिकल अति दुख महि पागे ।।
मति मानन मति किय अनुमाना ।। हुतो कपी स परम पति माना ।।
न्रिप छकारनो कालह कारा ।। बान परी किय प्रान प्रहारा ।।

सुनमुख जान समय नहि आयो ।। मीत अंक निज प्रान गवायो ।।
निसचै मरन जान मरगयो ।। दुख बियोग महि घर गयो ।।
ताहि दुस्ट तट यहि सुधि गईं ।। तबहूं चैन न मन महि भईं ।। ६४ ।।

दोहरा: कपि तन अग निजराह्यिो निज मन को सिय राहि ।।
राखी नहि तिहि राख हूं निज सुख राखन माहि ।। ६५ ।।

चौपईं: इत यहि भान प्रभा सुघरातिया ।। ले बैठी पिंजारा इकंत पिया ।।
सनै सनै तब सुक म्रिदु बानी ।। आदि अंत सब कही कहानी ।।
या बिधि मद के अमल मफारा ।। तिहि रौवन पर कर इतबारा ।।
मित्र जान वहि मंत्र सिखायो ।। ताहि दुस्ट मो पर पति यायो ।।
कपि तन लिय मै ताहि निदेसा ।। दुस्ट कियो मम तन परवेसा ।।
पुन खगहा के जाल फसाइे ।। रोंइे मीत अमीत हसाइे ।।
तहा सुघरता निधि पहिचानी ।। लयो सुदागर बड हठ ठानी ।।
बडी बिपति के दिवस बिताइे ।। अब प्रभ तुम सो आन मिलाइे ।। ६६ ।।

दोहरा: भान प्रभा सुन सीस धुन कही करहु मन धीर ।।
प्रभु चाहें अब सीघ्र ही बनहें कछु तद बीर ।। ६७ ।।

चौपईं: इत या बिधि यहि भईं कहानी ।। ऊत वहि अयो दुस्ट अर्ध अग्यानी ।।
यहि सुन भान प्रभा बड चातुर ।। बैठी आय अगम नेसा तुर ।।
आगे कबहु जु आवत वहि चल ।। भान प्रभा तब जात तुरत टल ।।
नहि सदकारत मुखहु न बोलत ।। बिफल जात डरतो ह्यिो डोलत ।।
आज अगम ने हुवै ऊठ लीनो ।। आदर करि बैठव तिहि दीनो ।।
गूढ मिसंधि मनहि कछु राखी ।। बच बिलास किय रस अभिलाखी ।।
वहि समफो मत मंद गवारा ।। कपि मरनो इन द्रिगन निहारा ।।
याते मम प्रताप बड जानी ।। भय करि दबी तबहि बतरानी ।। ६८ ।।

दोहरा: अब न सीघ्र ता ऊचित है इक दुवै दिन हि बिताहि ।।
बनत बनत मम रस ढरें आपहि जाहि मिलाहि ।। ६६ ।।

चौपईं: पै पहि लेया सौं बिभचारा ।। बनय तुहैं रस रंग हमारा ।।
याके पित सों अति भय राखत ।। याते याको मान पराखत ।।
यहि मन समफ चलत के अवसर ।। कह्यो रवि प्रभा बुधि उपाइकर ।।

अजा बाल छिक सुभग मगाई ।।। हम पहि दीज्य आज पठाई ।।
ढिग राखहि क्ति को परचावन ।। जनित बिदेस स दुखन बिसरावन ।।
कैतौ कबहु न बोलत बचा ।।। अब मगवावत है अज बचा ।।
भयो मगन मन तब यहि बचा ।।। बचा पठ्यो यहि बरतो बचा ।।
दुतिय दिवस जब पुन तिहि आयो ।।। और अधिक आदर तहि पायो ।। १००।।
दोहरा: पुन याके सनमुख तबै अजाबाल सो खेल ।।
करत रही बड प्रेम करि अंक भरत हिय मेल ।। १०१ ।।
चौपई: इसी भांत दुवै तीन दिवस लग ।।। करत रही बहु प्रीत रीति ठग ।।
पुन छिक दिवस चांप अजबाला ।।। करि छाड्यो अति बहुत बिहाला ।।
अति अकुलाय पठी प्रतिहारा ।।। ल्याव सीघ्र छित राजकुमारा ।।
जौं पल छिन कछु गहुर लगावहु ।।। मान प्रभा कहि जीयत न पावहु ।।
यहि सुन वहि दौर्यो हरबर कर ।।। छित छिन पिंजरा कीर लयो कर ।।
पलका निकट ताहि धर दीनो ।।। अज छौना निज अंकु सु लीनो ।।
काल चक्र ते प्रेरत वहि आयो ।।। तहि अदभुत गति लख बिसमायो ।।
रही बिलख वहि बदन सलौना ।।। लीहे उछंग छाग कौ छौना ।। १०२ ।।
दोहरा: वहि ससक्त यहि रुदि अति पुन तिहि ।।
घुपत कंठ तिहि पकर द्रिढ दीने प्रान उडाय ।।। १०३ ।।। (१०४)
चौपई: उत वाके तन प्रान वियोगा।।। छित याको रोवन बड सोगा ।।
बसन फार ग्रह तज जावन की ।।। गही तियारी तरफावन की ।।
यहि गति लख वहि अति बिसमायो ।।। बिलख बिनति करि बहु समझायो ।।
उचित न तुम प्रति राज दुलारी ।।। करहु सोकथा छित अस भारी ।।
अबहि मगावहु तज यहि ख्याला ।।
या सम सहस छाग को बाला ।।। भावी बस छिन तजे पराना ।।
नास वंत है सकल जहाना ।।। अस
अस दुरलभ यहि कहा पदारथ ।।। छितो सोक छिस हेतु निरारथ ।।
यहि सुन वहि बोली बिलखावत ।।। तुम याको नहि मरम सुपावत ।।। १०४ ।।
दोहरा: प्रानन ते मुहि प्रिय हतो यहि अज बाल असील ।।
या बियोग मुहि प्रान अब जात न लावत ढील ।।। १०५ ।।

चौपई: तुम याको इक वेर जियावो ।। केल करत मुहि द्रिग न लखायो ।।
नातर तजहु जियन मुहि आसा ।। तजहु प्रान या संग अनयासा ।।
या सम अवरन लाखनहि लेवहु ।। नहि जो जियै प्रान निज देवहु ।।
तब तिन कह्यो म्रितक कहु जीयो ।। अस अनुचित कबहूं किहु कीयो ।।
अस हठ करहु जु लोकन हस ही ।। फँल परँ नहि जग अप जस हीं ।।
रुदित ~~करहुने~~ कह्यो तब राजदुलारी ।। वाह वाह जू भली ऊचारी ।।
तुम मुहि मैना मरी जिवाई ।। रुदित लखी मै तब त्रिपताई ।।
यहि सुन वहि समझो मन मूढा ।। त्रिय चरित लख सक्यो न गूढा ।।१०६ ।।

दोहरा: राज कवर यहि प्रेम बस करयो होयगो ख्याल ।।
यौ नहि जानत मंद मति आन पहूचौ काल ।। १०७ ।।

चौपई: भावी को प्रभाव भव माही ।। प्रगट सदा स्रुति देत ऊगाही ।।
होन हार हिय करत निवासा ।। तै सिमति मन करत प्रकासा ।।
यहि जग मह लोको कति भावा ।। जै सो करय सु तैसो पावा ।।
कूप खनै तिहि फेर तियारा ।। ऊलट परहि ता महि सिरमारा ।।
अहो मित्र जो किसहि दुखावया ।। सुमरन रख वहि नहि कलपावय ।।
या जग नासी महि सुन मोले ।। कर अनयाय आज कल कोले ।।
चकित बोहि तिन प्रस्न कराई ।। हम मैना किहि भांति जिवाई ।।
कह्यो रवि प्रभा याद करावौं ।। जान बूझ मति बात दुरावो ।। १०८ ।।

दोहरा: लोट रहे थे आप तुम पलका पलक मिलाय ।।
मैना ऊठ स मो स तबहि बातैं कीन बनाय ।। १०६ ।।

चौपई: यहि भी बात पते की पाई ।। ऊत वहि काल कला निधराई ।।
कह्यो अंक ते करहु किनारे ।। प्रभु चाहे अब इस हि जियारे ।।
ऊन ततकाल गोद ते गोरौं ।। जान्यो मंत्र फुरयो अब मेरौ ।।
हरि सो बिनती करी अपारा ।। नैन मूंद करि बरि बारा ।।
तूं अंतरजामी सब जानत ।। भले बुरे को न्याव पछानत ।।
या महि वहि पलका पर जाई ।। लेट गयो वहि तन ह्ति जाईं ।।
अजा बाल महि कीयो प्रवेसा ।। कूद ऊठयो वहि चपल बिसेसा ।।
भई मगन लख नैन ऊघारी ।। लयो गोद हस राज दुलारी ।। ११० ।।

दोहरा: लगी दुलारन प्रेम करि निज अरि पकर्यो जान ।।
वहि मति मंद गवार मन या बिधि किय अनुमान ।। १११ ।।

चौपई: दो घटिका यहि राज कुमारी ।। परच जाय गी हठ हि बिसारी ।।
पुन निज तन महि करहु प्रवेसा ।। निज कारन पुन करहु बिसेसा ।।
यौ नहि समझ वहि मति मूढा ।। यहि है दाव समय को गूढा ।।
यहि छल नारि चरित्र सुभावा ।। जाको भेद बिरंच न पावा ।।
काल चक्र को फिर्यो कुफेरा ।। कर्यो चहत कछु औरहि बेरा ।।
अब वा तन के निकट जावनौ ।। दूर रह्यो वहि दाव पावनौ ।।
जगत प्रभाकर यहि कौतुक सब ।। निरखत सुनत कीर तन महि तब ।।
अवसर पाय तजी सुक देवा ।। गयो आपने तन के गेहा ।। ११२ ।।

यथा दोहरा:
रे नर धोहन की जिये तो सो कहत सुनाय ।।
कूप जु खोदय दवर को परत आप ही जाय ।। ११३ ।।

चौपई: मित्र द्रोह छिन दुस्ट कमायो ।। अपन हंस कहु कीस बनायो ।।
निज तन निज करि दीन गवाईं ।। करम फलयो अज देही पाईं ।।
वाहि धरम ते पुन तन पायो ।। छिन लो लप निज प्रान गवायो ।।
ऊठयो प्रभाकर जगत प्रभाकर ।। मुख करि सुमरत हरि गिरवरधर ।।
जिन जल महि गज दौर बचावा ।। बार बार ताको मुख गावा ।।
यहि लख वहि अज कंपति अंगा ।। भय करि बिकल भयो लख ढंगा ।।
जान्यो काल पहुचो आईं ।। पल छिन महि असि कै गल भाईं ।।
~~उलत~~ ऊत वहि भान प्रभा गुन माना ।। मन भावत बनयो लख बाना ।।११४ ।।

दोहरा: सीघ्र मंत्र पढ छिक तबै दीनो बंद लगाय ।।
जाते अज तन तज बहुर अन तन कहूं न जाय ।। ११५ ।।

चौपई: गर महि पाय पटा दुस्टातमा ।। बांध्यो थंभ साथ पापातमा ।।
सभा ससिकला तबहि बुलाईं ।। कह्यो लेहु री सजनि बधाईं ।।
करनहार प्रभु अंतर जामी ।। मुहि तुहि पति राखी बढ स्वामी ।।
पंचालीवत करी सहाईं ।। धरम सील कुल कान बचाईं ।।

थंम पार प्रहलाद बचाई ।। तिन बिछरे अस मीत मिलाई ।।
यहि बैठयो ~~रक~~ तव राज कुमारा ।। मति को धनी अकल आगारा ।।
वहि अजबाल बंध्यो मंत्री सुत ।। परम मित्र छिन को साचो ऊत ।।
जती पुरख है धरम खजाना ।। पर तिय माता कनक पखाना ।। ११६ ।।

दोहरा: बाल सखा छिन को अली दुख सुख मै छिक ढंग ।।
हम नारी मति हीन किम लखहि प्रेम को रंग ।। ११७ ।।

चौपई: यहि सुन राज कवर सरसाई ।। मान प्रभा बड सुखर लखाई ।।
पुन मिल आप सम हिय हि प्रेमी ।। रोहे बहुत गरे लग नेमी ।।
बिरह बिथा के घाव पुराने ।। धोई सकल सु हिये लगाने ।।
भूलो बहुत खोट मै खाई ।। निज करि बिपति आप मै पाई ।।
सच है नही मीत जग कोई ।। कपटी छली दुस्ट है जोई ।।
मोहि सीस यहि तव उपकारा ।। नौतन जनम भयो छिहबारा ।।
या बिधि कहि गल मिल पुन रोहे ।। बिरह जनित दुख सब जन धोहे ।।
यहि लख जेही सखी सियानी ।। अंतरंग सब भेद पछानी ।।
देत बधाई जह तह दौरी ।। आनंद मगन भई जनु बौरी ।। दयो
दयो दान हरि ते अपारा ।। बहुर सभा घर महि पगु धारा ।। ११८ ।।

दोहरा: लयो सुदागर बोल वहि कीयो बडो सतकार ।।
सकल बिथा सों कही हुवै छिनत तिहि बार ।। ११९ ।।

चौपई: सुन अदभुत वहि रह्यो हराना ।। कपि बियोग तब तिन छिन जाना ।।
मंत्री सुत प्रति करी धिकारा ।। मित्र द्रोह जिन किय असमारा ।।
कोमी कुटिल कलंकित करमी ।। रौ रुव गति हुवै बडो अधरमी ।।
अपने भाग सराहन लागा ।। करी क्रिपा प्रभू बड अनुरागा ।।
अस धरमातम राजकुमारा ।। मम ग्रह गयो चरन निज धरा ।।
पुनि प्रभ क्रिपा करी बच प्राना ।। दुस्ट समुख नहि परयो सु जाना ।।
राज कुवर कर क्रिपा अपारा ।। दयो अधिक धन छोर मंडारा ।।
भूखन बसन अमोलक दीने ।। बिदा कियो मन आनद भीने ।। १२० ।।

दोहरा: पुन सगरा को बोल कर नारि सहित सत्कार ।।
रजत कनक मुकता अनिक दहे क्रिपा बड धार ।। १२१ ।।

चौपई: जो खगहा तिनि देस मझारा ।। न्रिप सन कहि वहि किय सरदारा ।।
पुन सैना प्रति आयस धारी ।। करहि कूच की सकल तियारी ।।
बिदा माग न्रिप सौं जब लीनी ।। बिरह बिथा ताकी मति भीनी ।।
बहुत धीर दै तिन समझायो ।। ऊचित अवसर जान जतायो ।।
बहुत काल भयो देस तजाइे ।। मात पिता के दरसन पाइे ।।
दुखी होमिगे हम बियोग कर ।। याते क्रिपा करहु जावहि घर ।।
बडे यतन कर बिदा सु पाईं ।। मेट मेट दीन न्रिप करि बडियाईं ।।
त इति इिन हूं बहु दयो समाजा ।। तब तै बढो भयो वहि राजा ।। १२२ ।।

दोहरा: करी मित्र ता आप महि बांध्यो संघि बिघान ।।
करहि सहायत आप महि काम परे पर आन ।। १२३ ।।

चौपई: इिक दुवै दिन इिह भांत बिताईं ।। राग रंग बड सभा बनाईं ।।
खान पान सम रस मन भाइे ।। भइे अधिक बड आनद पाइे ।।
पुन धर धीर सु बिदा कराईं ।। निज मंडल तक संग लवाईं ।।
सकल सैनको किय सनमाना ।। असन बसन भूखन दिय नाना ।।
राज प्रधान सकल सरदारा ।। सभ यथा योग सनमान सुधारा ।।
अवस जान पन फिरौं बिलख मुख ।। राज कवर को बड बियोग दुख ।।
पूरब वत इे चले अगारी ।। अनिक भांत बन गिरिन बिहारी ।।
कहूं इेक दो करहि मुकामा ।। चलहि सुखी सब हित अरामा ।। १२४ ।।

कबित: अदभुत अैसो इिंद्रजाल सो तमासो जग इेक बाजी मै अनेक बाजी खेल जात ।।
मीतन सो मेल कहूं छिन मैं बिछोरै पेल नाना केल कौतुक मे गाढ़ दुख झेल जात ।।
बदलै जो रंग तो म्रिगिंद कों करै कुरंग फेर कै कुरंग राज पलही मैं रेल जात ।।
पंख कौं परे वार चै जे वरी को साप इेक पल ही के फेर मैं करो रही लाहे जात।
।।१२५ ।।

दोहरा: स्री गुरु चरन सरोज बल बरनो कपि मुख ग्यान ।।
दुवाद दसतरल तरंग गहि पूरन भयो प्रमान ।। १२६।।
अब औंर हि बिघि चलै गो अदभुत रंग प्रसंग।।
प्रेम सुधा निधि अगह के नाना तरल तरंग ।।१२७ ।।

इिती स्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रिंथे नेह नीति निरूपत क प्रीति प्रसंगी कवि साहिब म्रिगिंदन बिरचिते राजकुमार को कपि मुख ग्यान ऊपदेस नागर जन ऊदेस पुन निज तन पूवेस केल रहत प्रयान बरनंन नाम द्वावसमो तरंग : १२ ।।

कबित: संबित बिबेक छेक छल सो छिनाय मोह मोह बस जानौ जग सूनौ बन धरनी।।
कीनौ हौ पखान बिना पौरख प्रमान जंत्र मंत्र के हजार जोर माया जादूगरनी।।
गुरू गुबिंदसिंघ जू की आस है म्रिगिंद मोहि कीजियौ सनाथ नाथ हौ अनाथ सरनी।
करनी खलासी पैन करनी निहारी मोहि करनी परैगी लाज ब्रिद की जु करनी।।१।।
स्वैया: लेखक लेख बचित्र चरित्र के यौ लिखे है या बिचित्र कहानी ।।
पेखनो है जगजादु की ठौर फंधी सभै स्रिस्टि नवीन पुरानी ।।
पैजौ कोऊ है हस्यो जिम फूल तो सूल सहे पतझार की जानी।।
देख्यो हमेसो दुखी ही लख्यौ जग साचै नही सुख ठौर बखानी।। २।।
दोहरा: लिखनहार अभिचारु क्रित मनहु मोहनी मंत ।।
कबित कथा मन हरन यहि अदभुत अस बिरतंत ।। ३ ।।
चौपई: जब वहि चल्यो सु जगत प्रभाकर ।। मनहु प्रात ऊठ चलत दिवाकर ।।
मग काटत नित प्रति सु अखंडत ।। तेज प्रतापु सु जसु कर मंडत ।।
निस आगम लख लसत निसाकर ।। ऊतरत सुखद ठौर सु निसकर ।।
कछु काल महि पहुच्यौ तहवा ।। वहि बन अभिचारि कहो जहवा ।।
परम भयंकर कंटक दुखबन ।। मंत्र सकति क्रित पसु पंछी गन ।।
परयौ कूद जा सरवर महि तब ।। वहि सहि पाल सुता की घर सब ।।
तात लावतट ही अब डेरा ।। लग्यौ आन भावी के फेरा ।।
ता तट ऊतरयौ सभ रणवासा ।। चहूं ओर किय चमूनिवासा ।। ४ ।।
दोहरा: सभा ससिकला रवि प्रभा संग लै राज कुमार ।।
दिखरायो वहि ताल तबु जा महि परे असार ।। ५ ।।
चौपई: यहि है दुस्ट ठौर भयकारी ।। सावधान रहियै सुन प्यारी ।।
यहि सहि पाल सुता की धरनी ।। बडी दुस्ट गति जात न बरनी ।।
जंत्र मंत्र छल छिद्र अनेका ।। राखत निज अभिचारु सु टेका ।।
यदपि प्रभि बल छ्वै न सकहि हम ।। तदपि तिहि छितबार न छिक दम ।।
भान प्रभा तबु कहयौ सियानी ।। तुम निज तन राखिय सविधानी ।।
रावर बच तब चहि हम सारे ।। तुम जु चुके तब हम सब हारे ।।
चौकी पहिरा द्रिढ निज राखहु ।। सावधान छल कपट पराखहु ।।
या बिधि करते बचन बिलासा ।। गयौ सूर असताचल पासा ।। ६ ।।

दोहरा: गुन के गरबन कछु कीयौ छल बल सत्र बचाव ।।
गरब प्रहारी नाम जिहि लख्यो न तिहि पर भाव ।। ७ ।।

चौपई: संध्या समय जान निज डेरे ।। आय नित क्रित किय बहु बेरे ।।
संधया सुमरन करि हरि धियाइ ।। इस्ट देव गुर चरन मनाइ ।।
पुन कछु मग कर स्रम्रित सरीरा ।। गयौ लेट पलका पर धीरा ।।
स्रम्रित हेत कछू द्रिग अलसाइ ।। निंद्रालछ अंग सब छाइ ।।
अवसर लहि वहि दुस्ट पिसाचिनि ।। तची अंग मद नागनि ता चिनि ।।
सभा ससि कला की प्रचारिका ।। बनी मंत्र बल पुकारिका ।।
न्रिप सहि पाल सुता अभिचारिन ।। कुटलि कु नारि कुरूप कुचारिन ।।
हरबरात बयाकल जिम बौरी ।। आई राजकुवर तट दौरी ।। ८ ।।

दोहरा: कहयों आन प्रम की सदा प्रभता आयु बिसेस ।।
रानी जू के अरिन कहु हैं कछू दरद कलेस ।। ६ ।।

चौपई: वहि जौ अंग दु भुजा तुमारी ।। बड बर दायक दरदु प्रहारी ।।
पुन वहि तखती समन कलेसा ।। देहु सीघ्र करि क्रिपा बिसेखा ।।
धोहि नीर तिहि देहि लपिवाईं ।। तत छिन क्रिपा करहि रघुराईं ।।
सुनी प्रिया की दरद कहानी ।। हरबराय मति गति अकुलानी ।।
कछु निंद्रा की द्रिगन खुमारी ।। नहि प्रचारिका लखी बिचारी ।।
भावी बस वहि दोऊ पदारथ ।। दुस्टा के कर दइ ऊठाईं ।।
।। आपन हाथ बिपति पुन पाईं ।।
लख्यो न छल जिम जनिक कुमारी ।। आप पाहि रेख कट डारी ।। १० ।।

दोहरा: देत हि अंगद छिन कम गयौ बिगरत हि रंग ।।
भयौ भयानक सबद इक काप ऊठे सर बंग ।। ११ ।।

चौपई: कहयौ गगन पर गरज पिसाचिनि ।। तरजत इकोप की आचिनि ।।
बहुत दिवस हे जगत प्रभाकर ।। ऊड्यौ फिरयो नभ पंख लगाकर ।।
मोहू जो छल कर बल लीनों ।। पुनि मुहि तज औरनरस भीनौ ।।
अब कु पेच पर स फसयौ हमारे ।। हो सविधान सु कहो पुकारे ।।
अस गरजी तरजी बलभारी ।। गई कंप सुन सैना सारी ।।
बड सूरन के ह्यि बहराइ ।। गइ दहल दिल अस भय पाइ ।।
मूरछित भयौ सकल रणवासा ।। सह नहि परत सबद बड त्रासा ।।

यहि लख राजकुंवर बिसमायौ ।। चौक परयौ तरफत अकुलायौ ।। १२ ।।

दोहरा: ऊठन लग्यो ऊठ नहि सक्यौ चकित लख्यौ तन ओर ।।
अरध सरीर पखान कौ भयौ मंत्र कैं जोर ।। १३ ।।

चौपई: सकल सैन महि यहि गति भई ।। अरध पखान अंग निर भई ।।
जो बैठे बैठे रहि गयौ ।। खरौ तही ठैठो रहि गयौ ।।
चहूं ओर बिआकुल सु पुकारत ।। परयौ डुलौ सु परयौ सिसारत ।।
कछु दुख कछु आचक्त लख इसी ।। सकल सैन दुख जाली फसी ।।
अदभुत कल कलाट मच रह्यौ ।। कायर अकबादी पच रह्यौ ।।
सब लसकर पसु औ नर नारी ।। अरध पखान चरन दिस भारी ।।
ऊपरि अरध सकल चेतन तन ।। रुदन कलाप करत बयाकुल मन ।।
यही भांत सम री रणुवासा ।। रोकत तिय लख बहुत तरासा ।। १४ ।।

दोहरा: सभा ससिकला दुखित अतिमान प्रभा अकुलाय ।।
दुखित बचन याविधि कहत धरनि गगन थहराय ।। १५ ।।

चौपई: स्वास स्वास पर दाग नवीनो ।। देत छिदे पर काल कमीनो ।।
इक घाव सुधरयौ नहि अब लग ।। दुतिय दियौ यहि बान काल ठग ।।
साफ हि ते लै सकल सैन मै ।। भयौ प्रात दुखु पुना अचैन मै ।।
जब ससि सरद स्वास भर दुखि कर ।। बखित बसन लै लसकत मुख पर ।।
सोक भवन भवन पसचम महि गयौ ।। परयौ ऊलट मुखु बहुर न आयौ ।।
छित रवि रसमि बान बहु तीसन ।। प्राची तरकस ते कढ भीसन ।।
कुति लाल मुख दिहे चलाई ।। बिधिक बिदेसि नहि या बिधवाई ।।
भयौ गगन पर इक घन कारौ ।। परम भयाकर बड अंधियारौ ।। १६ ।।

दोहरा: निकरयौ इकु भुजंग तब घनते अति भयकार ।।
गरल अगनि दस दिस प्रबल बरखत फन फुंकारा।। १७ ।।

चौपई: तापर इक तिय चढी पिसाचनि ।। बरसत अगनि दसहु दिस ता चनि ।।
जगत प्रभाकर के तट गई ।। ऊतर सरप ते ठाडी भई ।।
निरखत राज कवर पहिचानी ।। वही दुस्ट है मन महि जानी ।।
मनि महि कहयौ दूरु निज देसा ।। कि निकट पहूचौ काल संदेसा ।।
परारबध कस ठौर फसाये ।। बचन यतन कर ते छिटकाहे ।।

बडो चू कु ही गयो बडो भ्रम ।। अंतरिजामी जानत सम ।।
या मिहि वहि दुस्टा तब बोली ।। गरजत रज रिस करि फफ्फोली।।
कहु अब जगत प्रमाकर साची ।। कवन बात मन महि रख जाची ।। १८ ।।

दोहरा: कवर कही है वही जो प्रथम हुती निरधारु ।।
सिंघ रवन सा पुरख बच होत न दूजी बार ।। १६ ।।

चौपई: कहा जंत्र वहि सुन तिन भाखी ।। तखती कहा लखहु निज आंखी ।।
जिन के बाल बड बने बहादर ।। विजय पाय कूदत बड नादर ।।
अब जो चहिय प्रान पियारे ।। सैना सहि जियन मन धारे ।।
सभा सस्किला भान प्रमा ते ।। मनहि ऊवाहु बिपति लभा ते ।।
धरहु सीस निज हमरी आयस ।। प्रति मोह सम ऊपर भाखस ।।
करहु दीनता मूल छिमावहु ।। तब या मयते छूट न पावहु ।।
नातर छिक छिन महि सम सैना ।। आयस चील भखय लख नैना ।।
लुथ बिरु बिन सीम रही बन ।। जियत बान नहि देही छिकतन ।।२० ।।

दोहरा: कवर कही ठम हीय की तखती पर जो अंक ।।
साचे पंडित हाथ निज लिखे जु होय निसंक ।। २१ ।।

चौपई: निज माया लेख निगह हाथा ।। लिख्यो जंत्र जो त्रिभवन नाथा ।।
कवन सकति जो ताहि मिटावी ।। निज सुभावकि हि बिधि ऊलटावी ।।
बल करि प्रीति न जुरत रसाला ।। वहै प्रेमु को पंथ निराला ।।
कह्यो सु कह्यो किया सो कीयो ।। बदलै बहुर जनम धर बीयो ।।
म्रितु को समय जु पहुच्यो आई ।। याते कहहु कवनि भज जाई ।।
पै तन जियत बचन जो नावय ।। यहि किहि भांत कहहु मन आवयक ।।
यहि सुन वहि नख सिख जर गई ।। रिस भर गई बतुन हुवे गई ।।
कछू बर राय मंत्र पुन फारियो ।। कंठ प्रयंत ऊपल करि डारियो ।। २२ ।।

दोहरा: बयाकुल पसचाता पुन निरासता पूर ।।
भरी ह्रिदे महि दुखित अति पास बिपति की मूर ।। २३ ।।

चौपई: मनहु छिक पखान की मूरति ।। पलका पर रासी गढ सूरति ।।
चेतिन सकति बिना तौ तत ।। परयो निरर्थक छिकस वही बन ।।
वहि भुजंग चढ चढी गगन पर ।। उच सबद पुन कह्यो लगनु धर ।।
इही काल चक्र के पेरे ।। बाठ जाम छाडहु हित तेरे ।।

जौ पुन प्राति न मो बच मानहु ।। प्रान प्रयंत परम हठ ठानहु ।।
तब यहि प्रंक्त धरहु मम बैना ।। लीयोपापु निज सिर सब सैना ।।
असि कहि वहि बन पवन ऊडाई ।। ताही घन महि जाहि समाई ।।
छित मै अधिक क्रिया अस बाढी ।। बानी मुखते सकति न काढी ।। २४ ।।

दोहरा: अरध ऊपल तन जबहु भो तब वहि दोऊ कुमारि ।।
निज डेरन महि बिलपती ऊची करति पुकारि ।। २५ ।।

चौपई: छिति यहि देत उग्र धरु धीरा ।। डरहु न मली करहि रघुबीरा ।।
यही सबद छिन के तन प्राना ।। रावन को हो बडो बहाना ।।
अम अब पखान मयो कंठ प्रयंता ।। बोल न सकति प्रान जनु अंता ।।
वहि धुनि हुती मनहु घंटा धुनि ।। मूत्यो मग मिल जात साथ सुनि ।।
जब वहि सबद मयो अविरोधा ।। परी बिपति बनत बहि अबोधा ।।
मयो अलगतोख अगवानी ।। परी बिपति बन पंथु मुलानी ।।
बहु पुकार दोनहु थक रही ।। राज कवर फिर बात न कही ।।
बोल न सक्ति रही नहि ता महि ।। यहि लख परी अधिक बिपता महि ।।२६ ।।

दोहरा: मान प्रभा अति रोयकब कहत भई तन तार ।।
दगध रिखै बड दुख मरी कठिन मरी दुखु धार ।। २७ ।।

चौपई: समय न छितनो हमय हसाया ।। जा बदले छिहि मात रुवाया ।।
लेहु खुसी की खबर अहो जम ।। मलनिमिति पायो बिदेस हम ।।
बच्यो अजस ते तूं जमराजा ।। प्रान दहे हम आन अकाजा ।।
अदभुत परयो समय को फेरा ।। किस छल सो आने हम घेरा ।।
समासिसि कला कुवरि बिचारी ।। सहम गई अति बिपति पछारी ।।
निरखत सम के मुख हि हराना ।। रोकत नहि मुखु करत बखाना ।।
नहि करलावत नहि दिग रोवत ।।
अतार घटि घटि प्रानन सोवति ।। ~~रुदित कलावति कहत~~
रुदित कलावति कहत सहेली ।। हाहा बडी बिपति प्रभ मेली ।। २८ ।।

दोहरा: कस मह बर बन महि लुटी कुटी कंत के हाथु ।।
अबु तुमु ~~बिन~~ बिनु हमरो कवन दीन बंधु जदुनाथ ।। २९ ।।

चौपई: तूं वहि क्रिपा सिंधि जगदीसा ।। छिन महि रंकहि करहि छितीसा ।।
करहि निरासन आसा पूरीनि ।। पल महि करहि बिपति दुख चूरन ।।
कहा जाहि कह करहि ऊपावा ।। या बलाय ते बनै छुटावा ।।
कोऊ कहत अस प्रम नहि चाहै ।। राज कवर कै अरि ह्यि दाहै ।।
जौ कहूं इक रोम कुंक वै है ।। रानी दोऊ मसमि मिलि जै है ।।
प्रान गवावहि दुखु बियोग मै ।। बचहि बिछुरी दुसह रोग मै ।।
पुन हम छिन के मात पिता को ।। मुखु दिखरावहि दुखु बिपता को ।।
याही बन के तरु का माही ।। सिरु पटकत कहूं प्रान पराही ।। ३० ।।

दोहरा: यहि बलि गई पिसाचनी अमि सह मारौ खाय ।।
रक्त अचे रक्ताचनी बहु दिन रहै अघाय ।। ३१ ।।

चौपई१: जे अधिकारनि तिया सियानी ।। राजभवन महि हुती प्रधानी ।।
गर महि बसन डार करि जोरी ।। मुखु करि लीयौ दुवारिका ओरी ।।
सिर सो बसन डार घिघियावति ।। बार बार यहि बिनति सुनावति ।।
हे प्रभदीन बंध जगु स्वामी ।। सगल घाट के अंतरि जामी ।।
सदका अपने भगत जनहुं का ।। काट कस्ट यहि दीन जनहु का ।।
छिसी हेतु प्रम तव अवतारा ।। करहु बिरदु की लाज संभारा ।।
पुन ता महि जे जेठी जुवती वर ।। तपत स्वासु पुन वाह सरद भर ।।
अंतरंग पुन सुखद सहेली ।। पुन बहिरंग सदा नसि संग सेली ।। ३२ ।।

दोहरा: इक वोर यहि परी सब मुखु करम ब धुग ओर ।।
केस खोल फफकोल द्रिग बिनति करत करि जोरि ।। ३३ ।।

यथा ।। कुंडलीया ।।
बार न लाई किसन तुमु द्रुपद सुता की बारु ।।
पार दुसासन न लह्यो बढ गयो बास अपार ।।
बढ ग्यो बास अपार इंद्र तुम आराधे ।।
अनुज सम घर तुरत काज ताके तुम साधे ।।
अब हरि राम सु बार बार कीनी किहि कारन ।।
तुम तारे मैं सुने राम अंत्यज कपि वारन ।। ३४ ।।

चौपई: कोऊ कहत जो हमरी सैना ।। या बल याते छुटप मैना ।।
बजरंगी हनवंत बीर को ।। रोट लंगोट देहो सुधीर को ।।
किनहु कह्यों मैं श्री दुरगा के ।। नवराते ब्रत करहु सु जाके ।।
किनहु कह्यो गुरु गोरख जी को ।। भ्रूत मरहु श्री खट रस नीको ।।
किनहु कहयो भैरव की थाली ।। मन सु सुलावहु दिज वर आली ।।
किनहु कह्यो जीवत जो वैहो ।। जगन क नाथ की जात्रा दे हौं ।।
किनहु कह्यो ज्वाला जी जाऊं ।। खवा नाली पर छतर चढाऊं ।।
किनहु कह्यो सुर सरि के मग पर ।। जल पियाय हौं पर प्रा बिधि कर ।।३५ ।।

दोहरा: या बिधि देव मनावती सब तीय करत बिलापु ।।
सैनाहूं ते अधिक बढ राज भवन संतापु ।। ३६ ।।

चौपई: दुखित पुकारत सब सुरु ऊचो ।। मनहु प्रलय को समय पहूचो ।।
आरत बंधु पतित पावन हरि ।। सुनी पुकारु तिनहु की मन धरि ।।
लखे निदोखु सकल दुखिया रे ।। ब्रिथा कसट महि परे बिचारे ।।
मुकति करत हित रचि निज नैता ।। ता पिसाचनी के बहु-प बपु हेता ।।
प्रभु प्रव मंगरु जा यस पाई ।। मढे देव मिल सकल सहाई ।।
हरि प्रेरत छिकु पुरख प्रभ्रित को ।। स सेवक मानप्रभा के चित को ।।
या बिद्या महि निपुनि सुधर बर ।। मिलन हेत जावति निज गुर घर ।।
पवन सवार गगन पर जावत ।। प्रकट परी धुनि रूदत कलावत ।। ३७ ।।

दोहरा: द्रिस्टि करी घर वोर जब लखी चमू चतु रंगु ।।
परी जार बमिचार के दूख महि भरी कुढंग ।। ३८ ।।

चौपई: देखन हित चल निकट पधार्यो ।। अदभुत कौतक तहा निहार्यो ।।
नर सैं ले सब पसू प्रर्यंता ।। करप पखान बने दुखवंता ।।
समझो यहि सहि पाल जंत्र मैं ।। उलझ परे बढ कुमंत मैं ।।
पूछत भयो सकल की सैना ।। कहि ते आय परी किन चैना ।।
वहि थे मान प्रभा के सूरे ।। बल प्राक्रम बिदया महि पूरे ।।
अपनी ब्रिथा सकल तिन भाखी ।। आदि अंति लग गुपत न राखी ।।
सुन्यो सकल जब सैन बखाना ।। निज गुरु सुता सवंध पछाना ।।
ताही को यहि भवन बिगारा ।। लखतु दुखी हुवै दुवार पधारा ।।३९ ।।

दोहरा: रोय तार तन जब तिनहि कीनो बहुर ब्रिलापु ।।
घुनि पछानि सूरजि प्रभा बोली अधिक संतापु ।। ४० ।।

चौपई: भीतरु आहि मोरु गुरु भ्राता ।। मुघल छार की क्वन सु बाता ।।
निज नैनन लख बिपति हमारी ।। जो कछु कनय सु करऊ पचारा ।।
तब भीतरि कर भवन प्रवेसा ।। लखी गुर सुता तिस हि अभेसा ।।
कुआरि कही वहि दुस्ट पिसाचिनि ।। करी सुता छल दुख आचनि ।।
ता कर सकल क कुमारी सैना ।। दुखित परी अवलोकी नैना ।।
तिन तब कही न मो महि अस बल ।। करहु बराबर दुस्टा की छल ।।
प्रात होत यहि सकल समाजा ।। बिसर जायगो बिनस अकाजा ।।
बिना आपके पित मो गुर के ।। मिटय नही यहि दुख बड धुर के ।।४१ ।।

दोहरा: ताते ऊचित न गहुर अब प्रभ तुमरो रखवारु ।।
लियावत हो निज गुरु हि अब करिहि कस्ट निरवार ।। ४२ ।।

चौपई: अस कहि ऊड्यो पवन के बारन ।। मिल्यो गगन महि करत कराहन ।।
चल्यो सीघ्र अस मन मारुत को ।। पग पग पर बलिहार करत को ।।
चलत जु बेग पवन की आधी ।। होत ठोकरन महि मति आंधी ।।
ऐक जाम महि पहुच्यो तह वा ।। बाग दुवार निज गुरु को जह वा ।।
सुमन तुलत गर बसन पार कर ।। कली तुलत मुख मौन धार कर ।।
बहत त नैन बड नीरु पनारे ।। परयो चरन वत दंड असारे ।।
बिध पुरख बिसमित प्रस्नायो ।। कसल तुमार दुखित किम आयो ।।
तिन कर जोरु बिनति कर हाला ।। कह्यो कुवर को कठुक कसाला ।।४३ ।।

दोहरा: भाप्रभा की बिकलता समा ससि कला सीक ।।
सैना अरघ पखान सब त्रफरात हैं लोक ।। ४४ ।।

चौपई: सीघ्र चलहु प्रभु गहुर तजिन की ।। ऊन की आयु आज ही दिन की ।।
जौ न पहुच हौ साफ समय लग ।। वहा सबेर होहि गो तब लग ।।
प्रात होत भ्रित को बयापारा ।। मुक्त होहि गो जग बिवहारा ।।
मन की ऊमगा रहै गी मन मै ।। पछुतावन रह जाय जतन मै ।।
लुथन को लखु परै अपारा ।। वे मालक कहि है संसारा ।।
चितवन रहै नबसन चिता की ।। जीवत ऐक बचय नहि बाकी ।।

यहि-

यहि सुन ब्रिधु पुरख अकुलायो ।। सरद स्वास भर बचन सुनायो ।।
बहु समझायो राज कुमारा ।। मान्यो नहि तिन बचन हमारा ।।४५ ।।

दोहरा: इक बिपति ते मरू कर छुटयो परे तन प्रान ।।
यहि कैसी नौतन ब्रिथा परी प्रभू कहु आन ।। ४६ ।।

तत छिन भयो बाज असवारा ।। जा आगे क्रिया पवन बिचारा ।।
सायं समय सैन महि आयो ।। संध्या बंदन करि हरि ध्यायो ।।
पुन चल जगत प्रभा कर डेरे ।। गयो निरख दुख लहे घनेरे ।।
पुन चल सभा ससिकला देखी ।। दुखी देख दै धीर बिसेखी ।।
वहि लख रोवत भई बिचारी ।। बहुरि जाहि निजि सुता निहारी ।।
कह्यो सुता यहि तव अभागता ।। दयो मोहि फल मुहि बिरागता ।।
परयो भजन महि अंतराय मुझि ।। यहि दुख दियो जु जनम लियो तुझि ।।
कई बरख महि तका बाग ते ।। ऊठयो बाज मै तव अभाग ते ।।४७ ।।

दोहरा: भान प्रभा द्रिग भर कही यहि न समय झिझिकार ।।
प्रथम यतन याकोकरहु परहि प्रान छुटकार ।। ४८ ।।

चौपई: पुनहि हमरो लखु मनहि बिगारा ।। मन चाहे सो करिय उचारा ।।
अवस जानु वहि पुरख गिआनी ।। ऊपकारी हरि वाय समानी ।।
जगत प्रभाकर कै चहुओरा ।। करयो कारु को कोट कठोरा ।।
मंत्र सकति महि परम सुघर अति ।। पुन हरि भगत बडो जोगी अति ।।
बढे मंत्र अभिचारु बिदारिका ।। कवहु सतोत्र नामु हरि तारिक ।।
जाते सत्र सकल भय पावहि ।। ताकी छांह छियन हि पावहि ।।
हे प्रभ दीन सहायक कारी ।। गरबवंत कै गरब प्रहारी ।।
मुहि बिरधापन की तुहि लाजा ।। बैठयो चिता बनाइ साजा ।।
तुम ही हो अस समय सहायक ।। द्रिस्टि धारु राखहु जगुनयाक ।।
जो मुझ पर यहि अगम बनी हैं ।। तोहि निकटि अति सुगम घनी है ।।४९ ।।

दोहरा: सेत सम झूमोर को अवस स्याम तरंग ।।
नहि लावहु यहि दाग प्रभु राख लाज सरबंग ।। ५० ।।

चौपई: तव क्रिपा तसक अगम सुगम है ।। तुझ ते मूलत सुगम अगम है ।।
द्रुपत सुता को समय बिचारी ।। गज गिराह की बेर निहारी ।।
ध्रूं प्रहलाद आदि जिम तारे ।। करहु क्रिपा जगदीस मुरारे ।।

याबिधि सब निस बिनति सुनाईं ।। जग पालक प्रभु लीह्रे रिझाईं ।।
ता प्रताप याबिधि बल पायो ।। भयो सहस गुन मंत्र सवायो ।।
सुन असचरय कर्हु जिनि कोई ।। प्रभा साहाय दुरलभ नहि कोई ।।
यापर स्री गुरु बचन प्रमाना ।। संमत सब स्रुति सिम्रिति पुराना ।।
यथा ।। नीकी कीरी महि कल राखें ।।
भसम करै लसकर कोटि लाखें ।। ५१ ।।
दोहरा : जब जोगी जन भगन कों ऊडगन सेवक संग ।।
ससि समाधि थित हुवै बैठ्यो पसचम भवन अमंग ।। ५२ ।।
चौपई : पुन अभिचारिक तुरिय गगन पर ।। बड प्रकास धरत पत अगन बर ।।
सहत समाज मंत्र को तेजा ।।प्रगट प्राची ते तज सेजा ।।
कोप युक्त मुख रक्त बनायो ।। मनहु रक्त बिधि तन पीय वायो ।।
पुन वहि ब्रिध पुरख पद भागी ।। जाकी बिव हरि चरनन लागी ।।
हरि सुमरत सब निसा बिताईं ।। प्रात नितक्रित करि मन लाईं ।।
संध्या बंदन करि भगवाना ।।
सतिगुरु सुमर भयो सविधाना ।। तब वहि दुराचारि रक्ताचनि ।।
परम अपावनि प्रेति पिसाचनि ।। चढी भुजंग
चढी भुजंग भंजनि कारी ।। द्रिसटि करूरि रक्त पा नारी ।। ५३ ।।
दोहरा : जगत प्रभ कर बध निमिति सैना सहत समाजि ।।
आईं केवल आप ही कलपत यतन अकाज ।। ५४ ।।
चौपई : आवत देखय कहा पिसाचनि ।। ब्रिध पुरख ठाढो दुख वाचान ।।
मान प्रभा को पिता पछानी ।। जर बर गईं हमायत जानी ।।
प्रथम तही दिस कीयो पियाना ।। रक्त नैन कर कोप स्मन महाना ।।
बड कठोर बच फिर फिर पुकारी ।। अहो ब्रिध तव मति कत मारी ।।
तोहि म्रितु गह पट तब धीसत ।। त्याईं या बन दस नन पीसत ।।
मोहि निरख आवत बड लाजा ।। तूं अति ब्रिधु क्त मरत अकाजा ।।
मरी परी तूं ते बिन मारे ।। तूं अति ब्रित को कलंक सिर धारे ।।
ब्रिन अपजस फलु वी न कोईं ।। तोसा द्रिस को बध न सु जोईं ।। ५५ ।।
दोहरा : जिहि मग आयो जाहु मग जो चाहत तनु प्रान ।।
बिन आईं मर जायको कहियो कौन सियान ।। ५६ ।।

चौपई: मैं अब कुटिल द्रिसिटि त्हिं करहौं ।। क्रोधि युकति त्हिं बार निहरहौं ।।
घर पटी याते सैन निसानी ।। अंकु असुधि जिम करहु मिटानी ।।
या बिधि वहि दुस्टा बर राई ।। जानत नहि निज म्रितु बुलाई ।।
त्रिघ पुरखु घर धीर अपारा ।। क्रोधि युक्त अस बचन उचारा ।।
अहे निलज कुटिल बिभचारिनि ।। कुल्टा कुमति कुनारि अनारिनि ।।
काम अगनि तुहि अधिक्त पायो ।। चाहत पर नर गर लपटायो ।।
बल कर चहत काम रस बौरी ।। पर पुरखन लपटावत दौरी ।।
लख्यो न राज कवर बिचारी ।। तब मारन हित रची त्यारी ।। ५७ ।।

दोहरा: कई सहस निरदोख नर प्रभु के प्यारे जंत ।।
रतयारी हत नेच हे किन तुहि दयो कुमंत ।। ५८ ।।

चौपई: तूं नहि जानति हरि करतारा ।। सभ जीवन को है रखवारा ।।
गज चिंघार पल पलै सु नीयत ।। चीटी की पहिले ही सुनीयत ।।
तूं कामातुर कुटिल कलंकिन ।। किहि बिधि बधहि जीव हरि रंकिन ।।
मम यहि मीत सबंधी सारे ।। किहि बिधि लखहु प्रान परिहारे ।।
निज मरने ते अब भय पाई ।। रही दब कसब छिनहि मगाई ।।
तेरे ही बच परे प्रमाना ।। मरयो न अब कल तजे पराना ।।
जीवत जग को मुखु दिखरावों ।। बंधु न मैका बडो कहावो ।।
जा प्रान लै कर बलकारा ।। समुख न होहि तोहि मुख कारा ।। ५९ ।।

दोहरा: तूं हम सरबर का करहि कुतसित कुलटा नारि ।।
असुर बिना सिकार छ हम प्री अधि केत मुरारि ।। ६० ।।

चौपई: यहि सुन वहि अति कुपित महाना ।। बसन संभार भई सविधाना ।।
जंत्र मंत्र के नाना रंगा ।। रचन लगी कर कोटि कुढंगा ।।
याके भी सहाय भगवाना ।। ढाल भहे बर रछ बिधाना ।।
जो उन कीयो कुमंत कुचाला ।। पलट सकल ताही बरु डाला ।।
जंत्र मंत्र के रंग मिटावन ।। लगी तंत्र के तीर चलावन ।।
प्रात काल ते दोऊ बरुझे ।। तीन जाम बड चल कर जूझे ।।
चतुरथ जाम दिवस रहि सेसा ।। रहयो न यतन दुंहू दिस सेसा ।।
उचित न होयहि ठौर बिथारा ।। याते कर संछेप उचारा ।। ६१ ।।

दोहरा: थकित भई जब पाप-नी चलेय न कोऊ ऊपाय ।।
बनी सिंघनी मंत्र बल गरज ऊठी भभकाय ।। ६२ ।।

चौपई: ब्रिध पुरख हूं जब लख पाई ।। सिंघ बाहनी सुमर मनाई ।।
प्री असि कैत प्रबल मन धारी ।। बन्यो सिंघ भय दायक भारी ।।
अस भभकाय कीन गुंजारा ।। थरहर पर्यो सकल संसारा ।।
सुनत सबद बनु चर जलचर बन महि परे ।। छपत फिरति तरफति अतिडरे ।।
यहि निजि महि लपटे बिलकराला ।। तुमुल जुध कीनो ककुकाला ।।
भिरत रहे निज बल पतियावत ।। रंग भ्रम बड जंग मचावत ।। सु
पुन निदान वहि नारि लौ बरी ।। सिंघ पुरख सर बर नहि परी ।।६३ ।।

दोहरा: जंबक भक्की दे थहुर बनी कुंज बल मंत [illegible] ।।
गगन ऊडी जैसे गुडी रच कछु और कुमंत ।। ६४ ।।

चौपई: वहि बरबाज बीरता गिरको ।। कीयो बिचार धीर मन थिरको ।।
बिन पकरे निज कारज सग के ।। याकु नारि बटपारु निठग के ।।
सैन कस्ट ते निकल न सकै ।। यहि दुस्टा यौं ही अब फक है ।।
छल बल अनिक प्रकार रचावे ।। बिन याके बध बन नहि आवे ।।
यदपि अबध त्रिया सास्त्र मति ।। तदपि पिसाचिन बधन योग गति ।।
अधवंति निबड किय अपकारा ।। पुन अबहूं नहि करत सु टारा ।।
हती तारिका रघुवर रामा ।।बधन पापु अस दुस्ट अलामा ।।
जो कछु होय सु हो अब याको ।। छिस हि परक कछु बल छिस बाकी ।।६५।।

दोहरा: अस बिचार बन बाज तब गही गगन पर जाय ।।
नख चोचन के घाय कर बिह्बालि करी बनाय ।। ६६ ।।

चौपई: छलबल अनिक ऊपाय रही कर ।। प्रान अंत आई तिह अवसर ।।
भागन को नहि रह्यो ऊपावा ।। काल सुमुख ठाढो निरखावा ।।
त्रफ रही पर छुटन न पाई ।। पीछे परी भ्रितु लख पाई ।।
यही अंचतानी महि ता छिनि ।। पंछ्र प्रान ताहि रूकता किन ।।
तन पिंजर जर जरत ऊडकर ।। गयो नीड़ रौ रव महि भज डर ।।
भयो दसो दिस सबद कराला ।। परगी अंध धुंध तिहि काला ।।
भ्रत प्रात बहु बरत पुकारा ।। गगन चकृवत फिरति निहारा ।।
धरकत धरनि गिरेवर डोलत ।। बार बार दिगज बह बोलत ।।६७ ।।

दोहरा: भयो सकल अंधियार बन बही पवन बड चंड ।।
मंत्र जाल सम ऊड गयो काप ऊठ्यो ब्रह्मंड ।। ६८ ।।
चौपई: सायं समय निकट जब आयो ।। तब वहि अंधकार बिन सायो ।।
प्रगटो मारतंड परचंडा ।। मुद दिखुरायो दमक असंडा ।।
वजर पर्यो तब आपन परायो ।। जगत प्रभाकर तन जिय आयो ।।
ऊठ बैठयो तब हरि सुमरन कर ।। छुटो कस्ट ते तब लसकर ।।
राजकुवर त बाहर आयो ।। पछतावत मन अधिक लजायो ।।
बिघ पुरखु ढिग आय संकोचित ।। कीन चरन परणाम यथोचित ।।
सभु मिलि आइ राज प्रधाना ।। भेंटे दीन बहुत सुख माना ।।
तहा कार कोटहि महि देखी ।। परी पिसाचनि म्रितक परेखी ।। ६९ ।।
दोहरा: बरख असी तीन वत की परम बिघ बिकराल ।। तन कमान कुबरी कुरी लै
तन कमान कुबरी कुरी लैस म्रित कै स्याल ।। ७० ।।
चौपई: द्रिग खडूवार साक को दाको ।। तन के असथि जरजरे जाके ।।
घमनी द्रिस्टि परत झिक झिक सब ।। पसु रोतु चारहत गिनीयत सब ।।
मुखु मजूस बिन दसन सुरीतो ।। दाड़ न दात बदन बिपरीतो ।।
बड बिकराल ऊघर्यो मार सो ।। भुजा भियानक तालु डारसो ।।
अदभुत तन का डोल निराला ।। जनमु नारि बिज हत्यो कराला ।।
जंघ जुगल ह तरु ताड़ प्रमाना ।। ~~ममान कत थनि जनु~~ सड़ी करय रड़कहि असमाना ।।
गगन छत्र की जनु थूनी द्वै ।। किधो पारु ह्वै फूटहि ऊत द्वै ।।
याबिधि जंघ फलाहे पड़ी ।। महल पियो ताकी जनु कड़ी ।। ७१ ।।
दोहरा: ह्रिदे स्रुता सो मर्यो सुंन दीरघु लटकंत ।।
ऊदर अमर बिसतारु बड भरय चिता कर अंत ।। ७२ ।।
चौपई: ह्यियो कठोर बज्र सुरु पति को ।। तोप बराबर फेर कुमति को ।।
अस बिन ते अमिस छुट गयो ।। आमि सु तुचा छाड बिलयो ।।
परम पुरातन ब्रिधि पिसाचिनि ।। कारी बरन कपुर कताचिनि ।।
ढाल सिल्वट की जिहि लख सनमुखु ।। डहराका ह्वै जात सेत मुखु ।।
जन बियोग की निसा अंधारी ।। याबिधि नजर परी वहि नारी ।।
पोखर परम डराकन वैसो ।। जनकट साय बालकन भैसो ।।
सैंदुर बिंदु भाल महिदीनो ।। दूर हु लखत होत दुख जीनो ।। ७३ ।।

दोहरा: गूंदी सेत चूंडी बडी लटकत चूनरि भांति ।।
काख ताको दाग मुख छूट कर मन की शांति ।। ७४ ।।

चौपई: अस सिर की पुन मांग किनारी ।। मांग जांच सेंदुर भरडारी ।।
फ्रीफ तेल चोपरे बारा ।। फटे फटे छीडे किरारा ।।
तहां नदी दी तरह जु पायो ।। रेल पेल काजर मटकायो ।।
मूखन ब्रिसचिक बृयाल लटक्ते ।। सोपर अस बिन हारु मटक्ते ।।
पीठ स्वरप मुखु री तुव औरी ।। थिये परी वहि प्रिंतितु फकफोरी ।।
देख सकत तिहि भाख भिकारी ।। फिरे छाड तिह तही उझ्यारी ।।
राजभवन दिस गयो कुमारा ।। बिध पुरख संग है तिहि बारा ।।
समासिस कला भान प्रभा दी ।। सैन रणवास सुखी मन सादी ।। ७५ ।।

दोहरा: दासी सखी सहेली आ अधिकारनि सब तीय ।।
मुख सब के दमकन लगे तन महि आयो जीय ।। ७६ ।।

चौपई: प्रभ की ऊसतति करत अपारा ।। कर प्रणाम धर पर सिर धारा ।।
बिध पुरखु पग परी सकल मिल ।। बिनति करी कर जोर सुखी दिल ।।
आगमन तुमरो परम सुहावन ।। भयो हेतु यहि जगत बसवान ।।
ब्रिध पुरखु अस कह्यो उचारी ।। अबहु ठर नहि सकल निवारी ।।
बडो कस्ट सनमुख अब ऐं है ।। प्रभ क्रिपास छुटन तहि हुवै है ।।
कुंवर कही वहि कवन बडो दुख ।। आयो चाहत जो प्रभ सन मुख ।।
तब तिन कही पिता याके बल ।। न्रिप सहपाल नाम बड प्राबल ।।
मंत्र सकति वानन को राजा ।। या बिद्या महि प्रबल बिराजा ।। ७७ ।।

दोहरा: सुता बध सुनत याध है कोऊ जात छिन देर ।।
बडो कलेस मचाय है करहि लथेर पथेर ।। ७८ ।।

चौपई: यहि सुनि भान प्रभा मुरझाई ।। बिलख बदन तन सुरति भुलाई ।।
ब्रिध पुरख तब धीरज दीनो ।। तुम क्त होत सु बदन मलीनो ।।
श्री अकिलेत सहाय हमारी ।। वहि किया दुसट मचै है रारी ।।
जो है सत्र प्रबल बिख्याता ।। रछक हूं बड त्रिभव ताता ।।
मम सविधान चिंत नहि करीये ।। करनहार पर द्रिस्टि सु धरीये ।।

अस कह माख दुकैक पढ़ दाने ।। दाहन बाम डार महि ठाने ।।
तत छिन दुवै खग नीलन सूरत ।। जनमत मढे अलौकिक मूरति ।।
कंठ प्रयंत बदनि म्रिग सोह्त ।। तले मयूर सकल मन मोह्त।।
नील मनी के स्रिंग सुहावन ।। हीरन के दुवै द्रिग दिखरावन ।।
पनै के पर परम मनोहर ।। बिचरत केल करत चंचलवर ।। ७६ ।।

दोहरा: दुवै ठिकरी पर कछु लिख्यौ तिन सनमुख बर दीन ।।
दोऊ मुख महि परारि तिहि ऊठ गहे गगन प्रबीन ।। ८० ।।

चौपई: वहि निस हं भय कंप सु डर महि ।। गई बिहाय छिपी हरबर महि ।।
जब अभिचारिक निस जागत ससि ।। प्रात मंत्र क्रित ते डर बस ।।
पसचम ग्रह घस गयौ पराई ।। आधी बही बीज झमकाई ।।
बजत बजंत्र सुने पंतूरा ।। दहल गयौ दल लखत जहूरा ।।
यथा सरप ते जिन भय खायो ।। रजु निरखु भ्रम कर डर पायो ।।
बिघ पुखु तट कर परवारा ।। जुरे समिट सभु सैन श्रिंगारा ।।
छिक दिवस आवत लखी जु सैना ।। बानिक कही परत नही बैना ।।
बिधे गोल के गोल गरट बड ।। झटक आवत झुंड झुंड बड ।। ८१ ।।

दोहरा: बायस बाज ऊलूक ब्रिक ग्रिध ब्रिध बड ब्याल ।।
स्वान स्याल खर पर चढे नगन बदन बिकराल ।। ८२ ।।

चौपई: पांत पांत अगनंत अपारा ।। ठाढे की ये रचित सिरदारा ।।
दुतिय ओर अभिचारिक डाकिन ।। रक्ताचित दस दिस बड झाकिन ।।
कोऊ मोर कोऊ चढी भुजंगिनि ।। अगनि ऊडावत दमकति अंगति ।।
कोऊ नारी थर लिये ऊछारत ।। कोऊ किंगुरी छेर मदारत ।।
तांखबाद ले की बारकंडी ।। फहरावत लग पवन प्रचंडी ।।
ऊडत गगन वे ऊतरत धरनी ।। हास बिलास परसपर करनी ।।
मंत्र जंत्र निज महि पतीयावत ।। कर नाटक अर खेल दिखावत ।।
समर हेत बड गमर तोलती ।। भई त्यार हड़ हड़ सु बोलती ।। ८३ ।।

दोहरा: प्रथम सैन के निकटि ही ठहरी बांध सु टोलि ।।
मद पीवत मतवारी याबी रे बदनत मोलि ।। ८४ ।।

[illegible]

चौपई: यहि लख जगत प्रभाकर बयाकुल ।। निज सैनप बुलवाय सु आकुल ।।
यदपि आज है बड विस्वासा ।। करहु मूढ मति जीवन आसा ।।
पै यहि समय लखन की ठौरा ।। अद्भुत जुध भूमि कर मौरा ।।
जौ जीयत कोऊ बच्यो यहां ते ।। बस समाज पुनु बरय कहाते ।।
नातर म्रितक पुंज के ढेरा ।। लखहि सभा बह रंग बतेरा ।।
याते सकले सैन तज संका ।। मरणा जीयणा को काट कलंका ।।
चमक दमक सो बनैं त्यारा ।। ठाढी करहु बजाय नगारा ।।
म्रिध पुरख हमरो भगवाना ।। ताकी रछा करहु निदान ।।
हार जीत हरि हाथ बिचारो ।। रन कर सनमुख सस्त्र प्रहारो ।।
नौतन साज बाज स्रिंगारा ।। करहु सकल बिन देर त्यारा ।। ८५ ।।

दोहरा: यहि सुनि सैना ते प्रथम निसरे पानि कुदाल ।।
ऊच निचाई धरनि की करी बराबरि ढाल ।। ८६ ।।

चौपई: कंकर पुन पखान चुन डारे ।। कंटक बिरछ बिरे कट डारे ।।
करी मार जित सुठरन धरनी ।। रवि मौरवे सुखर सु करनी ।।
तोपन हित दम दमें बनाईं ।। कहूं सुरंग के घात रचाईं ।।
कहूं बरूद बिछाय गुपत करि ।। रंग भूमि बन रच्यो सु रुचिकरि ।।
गहे मासकी छिरक अपारा ।। भरे बालवे तोपन बारा ।।
बजे बजंत्र सबद प्रंततूरा ।। कायर पीत सूरमुख नूरा ।। म
महँ सैनकी अंत बधाईं ।। जनु सावन की घट ऊमहाईं ।।
पांत बांध बन ठन तयारा ।। ठाढी करत सैन सरदारा ।। ८७ ।।

दोहरा: पांत पांत जोधा सकल जुरे अनरंग भूमि ।।
सस्त्र बस्त्र बूक भूखन सभे झुमित रहे द्रिग घूमि ।। ८८ ।।

चौपई: दाहनु बाम सहस गज माते ।। ठाढे करि मद बंसु चुचाते ।।
सुंडन पर चढ रहे पटे जिनि ।। छिकि छिकि जोधा बढ ऊपरि तिनि ।।
बड बलावनु कवल तन धारी ।। कर महि गहे गुरज बडभारी ।।
पुन पैदल दल बारुन तोपै ।। जमे आन दुरजन दल लोपै ।।
गगन फार सूरज फनकारा ।। नानक मती से रंगु जारा ।।
गढ गंजनि कोऊ दुरग बिभंजनि।। घन गरजनि कोऊ दामिनि रंजनि ।।

ज्वालामुखी चंडिका काली ।। सुतर फील नाली घुर नाली ।।
काल चक्र पर चोट चलावै ।। गढ गिर बरु से मरद मिलवै ।। ८६ ।।

दोहरा: तिन सजायत होट जट कई कोस की चोट ।।
बहुर गुबारे गजब के बराहि कोट की वोट ।। ९० ।।

चौपई: गोला तिन का जो मन धारै ।। गगन दुरग महि जाय उतारै ।।
ता पाछे चढ बाज सवारा ।। खरे घात की ठौर सु धारा ।।
आगे बढहि रौल के टोला ।। पाछे पैदल दल को गोला ।।
जय पुनन की बनि करै बहु ओरा ।। बांधी सकल सैन की कोरा ।।
गल सोग ली प्रक्त सी स्रवता ।। पीठ पीठ दुम सुम झिक ठक्ता ।।
~~पुजपताकजकरह~~ धुजा पताका हरित बरन दुति ।। जरीदार फहराक अदभुत ।।
झमक निसानन की सपि मंडल ।। अति ऊतंग लख दंग अखंडल ।।
सूर द्रिगन महि झिलमिल ताकी ।। मद ऊतसाह क्रित्य कर झाकी ।।९१।।

दोहरा: कायर लख कांपत ह्रिदयम गुमागन हित ताकु ।।
चलाचली महि किनहु को पेट चल्यो सु अथाका ।। ९२ ।।

चौपई: सैन सबल बड सिंध समाना ।। बिजय तरंग लहर ऊठनाना ।।
मारू बजे बजंत्र अपारा ।। जुध समय बस धुरे नगारा ।।
गगन ब्रिखम के ~~क~~ प्रक्त परी धुनि ।। धवन धरनि तल कांप ऊठयो सुनी।।
दीह दमामै की सुनि गरजन ।। ढोल दमंकन की बड तरजन ।।
ऊदयाचलु ते लै अस्ताचल ।। सकल धरन धरधस बड हल चल ।।
नौबत नाद्दिम फीरी रनकत ।। घंटेछुद्र घंटिका ठनकत ।।
प्रलय काल को मनहु भुचाला ।। ख्यिो गयो हल चल यहि काला ।।
जगत प्रभाकर राजकुमारा ।। निज तनु हूं बड कीन स्रिंगारा ।।९३।।

दोहरा: पवन बेग बरबाज पर चढ्यो गनेस मनाय ।।
कनक छत्र चामर मुकट वाके सीस बनाहि ।। ९४ ।।

चौपई: धियान की यो भगवती मनाई ।। तब धर कंठ भगवती पाई ।।
दामिन दमक ~~बढ~~ चमकन हिस ही ।। मानहु काल जीभ लह लही ।।
कवच संजोय सजाय कमरकस ।। ढाल प्रिस्ट पर लाट रही बस ।।
बाम हाथ बर बाग बाज की ।। दहन कुंत सम नाग राज की ।।

जय अरु बिजय जीभ द्वै जाकी ।। भयो भाग अगवानी ताकी ।।
पुन पुरखारथ वौ कुल धरमा ।। कर जोरे सूरमता मरमा ।।
कग चोलि द्वै बंधी जीन में ।। परयो कुकंड सिकंध पीन मैं ।।
राज प्रतापु माल महि दमकत ।। मुख पर नूर सूरता चमकत ।। ६५ ।।

दोहरा: मारुत गामी बाज बर फेर बाग फमकाय ।।
सैन पांत तट जाय फट लीनी बाग बनाय ।। ६६ ।।

चौपई: बोल ऊठे बड कर छरिदार ।। सावधान हू जय ललकार ।।
सुनत गगन पर तेग धनी बड ।। मंगल कहत कहा हरि जू बड ।।
कर खागान कहत ढाडीगन ।। ऊतसाह पुनि करीन कीन की बन ।।
अहो सूरबल का बहादरों ।। सुनहु प्रका दै कैल नादरों ।।
दोऊ ठौरु रादन की ठौरा ।। या सम नहि त्रिभुवन महि औरा ।।
जग जसु लोक लाज कुल काना ।। पुन प्रलोक सुरलोक पयाना ।।
जग महि जिअन चारु दिन माई ।। यही दिवस है ऊचित लराई ।।
सदा रहत जग हरि को नामा ।। रह्यन औंर कोऊ नर बामा ।।६७ ।।

दोहरा: रुस्तम रह्यो न जियत जग रह्यो नाम मनसूर ।।
नाम गगन तर सूर को ह्य सूर सम पूर ।। ६८ ।।

चौपई: अस ऊतसाह बढायक बचना ।। कहे अपरमित कर बड रचना ।।
सुनं यहि बचन सदा के सूरे ।। दान क्रिपान धनी बड पूरे ।।
तिन सूरमत सिंधु समाना ।। मई तरंग तहिय ऊमगाना ।।
मूछन ताऊ देत द्रिग लाली ।। चढी मस्तक नदमक बहाली ।।
सिंघ समान संमल पुरखारथ ।। कब्जे तेग तक्त ग्रहनारथ ।।
हुवै सविपान सस्त्र अविरेखे ।। जंग हेत मन ऊमंग बिसेखे ।।
प्रानदान की कान न राखी ।। ऊभय लोक राखहि मन राखी ।।
निज निज मन अस करत बिचारा ।। किस किस की कट है करवारा ।।
कान कौन को रक्त पीवहै।। कवन कवन को लेख जीव है ।।
देखि प्रथम कुंत बड काको ।। गडै सत्र हिय महि लग बाको ।। ६६ ।।

दोहरा: काके बान तान तक मारे ।।
चलहि रुकति के कूट

दोहरा: परे जंग के तान पर तानत छाती कौन ।।
लोह आंच को जाच मन कौन रहत मुखु मौन ।। १०० ।।

चौपई: काके बान तान तक मारें ।। चलहि रकति के छूट फुहारे ।।
सर को नीरकंठ दुरजन के ।। कौन उतारत परे सु रन के ।।
सिर सर काको सिर खुद जा कर ।। पारहोत है सुरक दिखा कर ।।
काको कौन तर जलल कारत ।। को मारत को दटा पुकारत ।।
लौना लाजनिज राजकुमारा ।। करहु प्रान लौ जंग मझारा ।।
रकत पान खून को करीये ।। जीवन लाला मन पर हरीये ।।
बिगरी पर वहि बनई बाना ।। कुसलम मढी परय बररानो ।।
भीम सेत मुख लख मय खाई ।। छुवत चूक चौकरी जाई ।। १०१ ।।

दोहरा: न्याव सहति न्रिप निरखई पाछे खरी विचारु ।।
लखय कौन बड काम को कौन बयरथ धिकार ।। १०२ ।।

चौपई: किस के हाथ खेत रह जाई ।। कवत खेत आपहि रहि जाई ।।
मनि चलाक कर हाथ दिखावहु ।। रजत कनक ढाले मरपावहु ।।
यही भेद है यहि मैदाना ।। आज बनयौ सो बन है बाना ।।
यहि सूरन के चलत प्रसंगा ।। मन महि उछरत जंग तरंगा ।।
ढल गुंडन की सुनहु कहानी ।। कायर कूर कुसठ कु गिलानी ।।
दुहु जगु महि तिन होत हसाई ।। कुल समेत मरन करि धाई ।।
छिहा करत सब जगत धिकारा ।। पुन परलोकु दुरगति मुखकारा ।।
तऊ हूं सदन रहत घट प्राना ।। या पर स्री मुखु बचन प्रमाना ।। १०३ ।।

यथा स्री गुरु मुख वाक ।।

दोहरा: कबहूं रन जूझयो नही कछु दे जस नहि लीन ।।
गाऊ बसत जान्यो नही स जम सो किन कहि दीन ।। १०४ ।।

चौपई: हिय दहलाय भयो मुखु पीयरो ।। ऊरध ऊसास सब मत मुखु सीयरो ।।
मनहु बदन पर ऊरत छाई ।। भजन हेत चहि बाग फिराई ।।
ठाढे अधरन दसत दसन कर ।। मग परावनो सोचन मन कर ।।
धकरे ऊदर फिरत छित ऊस वे ।। ऊदर चलत अकुलात बहुत वे ।।
बिन मारे ही मरत सुमय कर ।। काहा लेहिगे प्रानन दय कर ।।
कोऊ कहत मई जिय संग जग है ।। प्रान गवाय हाथु किया लग है ।।

नहि जो परय चकरी करहे ।। भीख मांग खावहि यहि बरहे ।।
जान गईं पुन कहा पाय हैं ।। पतिहि राख कहु कहा खाय है ।। १०५ ।।

दोहरा: लाज गईं तो जान रहेगी जान ।।
रकत नदी तौ तनहु ते नही बहेगी मान ।। १०६ ।।

चौपई: बहुत करय कोऊ कायर कहि हैं ।। लाज हु जाहु प्रान तौ रह हैं ।।
छित बिगरय कहूं और बनावहि ।। तीर तेग गोली तु बचावहि ।।
लेहि ~~सल्मार~~ सहार मसकरी गाली ।। भले जान तौ बचै सुखाली ।।
लरन हेतु सूरन कटि बांधी ।। कोस्न हित हम ससितै सांधी ।।
भगन समैं आंधी बन जावहि ।। अब पाछे पुन अग्र परावहि ।।
कबहु जलौ काह मतन लावत ।। मात पिता तब भांग पिवावत ।।
निसरत रकत निरख कांहू तन ।। हम हु मूरछा हो तबि कल मन ।।
हम तो सतु होय कै मीता ।। ~~कुल~~ कुसल दुहूं की बांछत चीता ।। १०७ ।।

दोहरा: भेरेल राईं हेरु हम निकट न होवहि ठाढ ।।
सम सो प्रथम पराय हैं भगरा परय जु गाढ ।। १०८ ।।

चौपई: हम तौ सद ही गारिनि सीठी ।। यहल लगईं आदि डीठी ।।
मुस्ट जुधु कै चले तमाचा ।। बडो जुधु यहि हम मन राढा ।।
याते अधिक लगईं बाढे ।। ताके निकट न कबहूं ठाढे ।।
सकल जनम तन चुभी न सूची ।। कहा आन यहि प्रिति सु पहुची ।।
गारी ~~क~~ खाय जिय न हम कीनो ।। यहि निलाज ताही भल कीनो ।।
भला करो प्रभ यानि लाज कौ ।। जीवन जिन हम दयो आजलौं ।।
ता पर भी असभाग हमारे ।। आन दिखाइे कुटिल दिहारे ।।
हमही जग प्रभून बनायो ।। कहा मरद मीते फलु पायो ।।
याबिधि कायरु कुमति कमीने ।। कलपत भइे मलन मुखु कोने ।।
कायर पीत सूरमुख नूरा ।। कलबल मयो सैन महि पूरा ।। १०९ ।।

दोहरा: आगे सैन पिसाचनी मंत्र सकति को ठाढ ।।
ब्रिध पुरख पाछे खरौ करे सीस की साट ।। ११० ।।

चौपई: ताँ पाछे सब सैंनु सिदारा ।। ठाढे कीये लीइे दलु भारा ।।
ताँ पाछे बर राजकुमारा ।। राज प्रयान सहित खरवारा ।।
ता पाछे दोऊ पटरानी ।। कौतुक हित मन महि ललचानी ।।
ऊच असथान लगायो डेरा ।। जहि ते परहु सुघस बुहेरा ।।
चिलवन डार ~~सकल~~ सहित रणवासा ।। बैठी देखन हेतु तमासा ।।
या अवसरि रिपु बल की सैना ।। आवत दूर बिलोकी नैना ।।
न्रिप सहपाल लीये दल भारी ।। नौ लख संख्या नर अभिचारी ।।
आप तखत पर कुपित सवारा ।। सुता मरन सुन क्षुभित अपारा ।।१११।।

दोहरा: चालिस ब्र्याल्क गल बह रहे ऊठाय बिबान ।।
नभ मारग आयो प्रबल बजत बजंत्र निसान ।। ११२ ।।

चौपई: अति अपार भै दायक सैना ।। बानिक कही परत नही बैना ।।
प्रेत पिसाच दनुज खग नागा ।। बाहन घूक ग्रिघ बर कागा ।।
नहि परमेस्वर कौ भय जाके ।। गरब बिभंजन पन है ताके ।।
सनमुख आन सूर बलावना ।। पांत बांध कीने सविधाना ।।
निसर अगारी नील निसाना ।। स्यामु रंगु छाडे फहराना ।।
मनहु भाग अपने दिखराइे ।। किघो करम नित के दरसाइे ।।
डफ अर भांझ खंजरी बाजन ।। सुथरी रण कन गारे गावन ।।
दहूं ओर के दल सवधाना ।। लरन हेत ~~ल~~ जब ऊदम ठाना ।। ११३ ।।

दोहरा: मंत्री न्रिप सहपाल कौ तब लै न्रिपति निदेस ।।
ब्रिध पुरखु तद आय तब या बिधि दीइे संदेस ।। ११४ ।।

चौपई: बिनती करी दोऊ कर जोरे ।। कर प्रणाम पद कमल निहोरे ।।
नहि नदुत पर ऊचित कोप है ।। अधिक कथन कछु तिहि न ओप है ।।
न्रिप सहपाल बचन जे भाखे ।। सुनहु क्रिपा कर मन अभिलाखे ।।
जीवन मरन समान तुमारो ।। सीत तपत सब समय निहारो ।।
भोग चुके आवरदा सारी ।। पहुची बिघ अवस्था थारी ।।
पै यहि दल दहु दिस बलवाना ।। नौतन बैस सकल तन ज्वाना ।।
इिन पर क्रिपा द्रिस्टि नही कीनी ।। ब्रिथा बध पर हिय हि मन चीनी ।।
इिन सब को अघसीस तेमारे ।। लिख्यो जाय जमराज दुवारे ।। ११५ ।।

दोहरा: कत छिन त्रिया मराय निज धरहु सीस खबार ।।
फल ताको भोगन परय कहहु ऊत्र निरधार ।। ११६ ।।

चौपई: यहि सुनि त्रिप पुरखु मुसकाई ।। कह्यो ऊत्र छिहि भांत सुनाई ।।
काल ग्रस्त त्रिपतव सहपाला ।। किहु गुरु पीर बख नहि टाला ।।
तासन कहहु जाय दुहु दिस वे ।। सकल गिरह धर चौर न छिस ते ।।
तोहि सुता बिभचारिनि सीसा ।। यहि अनीति वध बिसवे बीसा ।।
हम जानत हे प्रथमु सुयाते ।। कुल कलंक नी वहि कमजाते ।।
मै अब अस निसचै मनि आई ।। क्यो न होहि वहि तुमरी जाई ।।
ब्रिछ बराबर ही फल होवत ।। बैसन की सब संतति अस जोवत ।।
सेत सम सुतोहि मुख बौरे ।। लाज न आवत मति के हौरे ।। ११७ ।।

दोहरा: किहि निमित दल साज तूं चल चढ आयो रन वैन ।।
कौन सु जस की बात पर सजी जंग हित सैन ।। ११८ ।।

चौपई: वहि दुस्टा मर गई पिसाचिनि ।। कीयो आपनो लहि रकताचिनि ।।
तो सिरते कलंक कोटी को ।। मिटौ यतन बिन सफकत नीको ।।
तूं ताहूं ते अधिक निलाजा ।। निकर्यो जग मूढन सिरताजा ।।
ऊचित सरम कर बात छिपावव ।। फिधौ अधिक सिर धूर ऊडावन ।।
अब यहि ठौर जंग की धरनी ।। तेग तीर कुंतन की करनी ।।
बयरथ बाद महि फल हे कछना ।। त्रिप जुवा सब सिर हे गवना ।।
करन चहित सौ देर न करिये ।। हार जीत हरि हाथ निहरिये ।।
लख हि आज काके बस बाटे ।। राज सिंघासन किहि सिरि साटे ।। ११६ ।।

दोहरा: कौनु बिराजत तख तखत पर कौन चिता की सेज ।।
कहहु जाय क्ष बखत जहु प्रगट दिखावहु तेज ।। १२० ।।

चौपई: यहि सुन मंत्री फिर्यो सालाजा ।। कह्यो ब्रितांत सकल निज राजा ।।
सुनत हि वहि तब कूर द्रोह मति ।। कुभित भयो हि बड वियालवत ।।
मनहु सरप लागू लछि दाई ।। भयो कुटिल क्रोधित दुख दाई ।।
जर बर रंग बदन को बदलयो ।। पढौ मंत्र निज बल की हुदलौ ।।
छिकद बीया पढ मंत्र बनाई त्रिप पुरखु प्रति आप चलाई ।।
बहुर सैन के सब सरदारा ।। लरन हेत सब को ललकारा ।।
दोय जाम बड चित्र अखारी ।। अदभुत भयो जंग जग न्यारी ।।
मंत जंत्र अभिचार सु दारुन ।। मोह न आपर सन बस कारन ।।१२१ ।।

दोहरा : ऊचाटन ऊनमावनी बिदया जो अभिचार ।।
रही लगई परसपर जूझत रहि नर नारि ।। १२२ ।।

चौपई : किनहू किसू पर अगनि चलाई ।। किनहु मंत्र जल डार बुझाई ।।
किनहु पखान हिये कर कोपा ।। करि पखान बरखा घन ओपा ।।
किनहु मंत्र पढ पवन चलाई ।। किनहु अंगारन की झर लाई ।।
किनहु जंत्र जल रच परवाहा ।। दई पहाय अगनि के साहा ।।
अनिक भांति के रचे अखारा ।। बरन होत ग्रंथ बिसतारा ।।
जब ह यहि सब ह्वै चुकी लराई ।। त्रिय पुरख सब चोट बचाई ।।
न्रिप सहपाल भयो खिसियानो ।। सस्त्र वस्त्र को जुध रचानो ।।
गुरज तेग तन धुन बाना ।। पच्यो जंग जब कुवर लखाना ।। १२३ ।।

दोहरा : ज़गत प्रभाकर मुदत मन जान बनी अब बात ।।
बाग ऊठाई बाज की जान आपनी घात ।। १२४ ।।

चौपई : यहि लख सैन सकल सरदारा ।। तेग ढीर के धनी ऊदारा ।।
ह्वै सविधान ऊमड घन लोरा ।। घेर लीयो तिहि दल चहुओरा ।।
बरखत गोली बान अपारा ।। धंधा धुंध तोफन कर डारा ।।
असि की धार दामिनि दमकत ।।
गरजत सूरमनहु घन घमकत ।। ~~मई अपार लोह की बरखा~~
मई आप लोह की बरखा ।। यहि बिस्रामत सब मन हरखा ।।
वहि दो जामु लरत स्रम बयाकुल ।। भई थकित लरते स्रम आकुल ।।
कई सतक तौ असफ पटन मै ।। कुचले गहे बाजर पटन मै ।।
भयो प्रभाकर जगत प्रभाकर ।। पर्यो मियान ते खरग जगाकर ।। १२५ ।।

दोहरा : बाही जाके सीस पर ब खोद सीस को चीर ।।
धसी कंध महि रपट कर पार दवत बिन बीर ।। १२६ ।।

चौपई : पुन हिय जोरि पुता कर पूरन ।। रकत पान कीनो बर तूरन ।।
वहि सिरि रह्यो सो जु खोद महि ।। पलक झबक महि लख्यो गोद महि ।।
पुन धर चीरू रंगु तंग महि ।। चली खोलती घाय रंग महि ।।
पैठिन लखी जुहु तीजी न महि ।। पुन निरखी रनिकत जमी न महि ।।
लखी म्रित्या सिर तट तिह रोवत ।। वहि लख्यो नीद म्रित की सोवति ।।
जा पर कीयो लपक छिक वारा ।। कीयो छेक ह्वै दैवे दुवै ते चारा ।।

किस हूं मति न रही सविधाना ।। मढे विकल सब ह्यि हहराना ।।
परयो हल चलों सातहु लोका ।। गगन चक्र वत फिरत बिलोका ।। १२७ ।।

दोहरा: बिथरी ले थबि लुथ अति अरयो सु लीनो मार ।।
माग-त को पीछौ तज्यो पीछा फिरत निहार ।। १२८ ।।

चौपईं: छिक घटिका महि रक्त प्रवाहा ।। चल्यो ऊमग रन ते बिनुथाहा ।।
लुथन ढेर मनहु तट ताके ।। बहुत तरंग फेन पगी याके ।।
बहत बाज गज मगन कबंधा ।। मनहु मछ ऊछरत मष सिंधा ।।
लोथरि पुन की प्रले प्रवाहा ।। बहत बेग पान पजल माहा ।।
जीवन ते मन मरयो ऊचटमौ ।। सत्र सैन बादरु ज्यों फट गौ ।।
रक्त मछे कर बारन घाटा ।। कई कोस लोथन के ठाटा ।।
अंत सत्र की सैन पराई ।। त्रिप सहसाल रन हि मरवाई ।।
वहु गरबित कोपी सुरु तारियो ।। मनहु नारीय रुतर ते डारयो ।। १२६ ।।

दोहरा: सैन पराई दुस्ट की परी काठ नई जान ।।
फूठ परी तब सैन महि लीवो सकल समान ।। १३० ।।

चौपईं: बाज ऊठे गह गहे निसाना ।। मढे विजय के मंगल नाना ।।
खुले निसान सुमग फहरावन ।। वहि सब लगे रुमाल फिरावन ।।
सो कारत रोवत पट फारत ।। ऊरध ऊसास ताकु दितखु कारत ।।
जाको मुखु जा दिसु हुवै गयो ।। तिहि ओर भागति वहि भयो ।।
रंग भूमि लोथन कर अटी ।। बन घर जार भ्रित जम रु पाटी ।।
बायस ग्रिध सियाल बढ स्वाना ।। बगन तम छक रत बन जाना ।।
मास अहारी जे बन बा महि ।। ऊदर भरे सम के मल ता महि ।।
बचत मासि लख करत ऊछाहा ।। न्यो तो करत आप महि ताहा ।। १३१ ।।

दोहरा: सकलि भूमि वहि राज सब दुरग कोस ब गज बाज ।।
जगत प्रभाकर सब लिये ताहि को बिभव समाज ।। १३२ ।।

चौपईं: बडे यतन कर ढूंड माल ते ।। सकल भवन के बिभव माल ते ।।
तखती जंत्र बहुरु करु आई ।। अनिक भांत ततवु कीन बधाई ।।
बिदा समय तब भ्रिष पुरखु बर ।। पुन समाफवनि कीन कुवर बर ।।

जह लग छुती ऊच निच जग की ।। समान लाभ हित क्व जहि लग की ।।
मग के कस्टन ते सविधाना ।। समक राखनी अपन बिगाना ।।
बिना बिचारु पा वनहु धरनौ ।। यथा तथा नहि मेदु ऊचरनौ ।।
कूच मुकामु सकल अवसर माहि ।। असावधान मति रहुहु समक लहि ।।
अहो प्रान क्त सुति सुन पयारे ।। अब न करहु कहूं बैस असारे ।। १३३ ।।

दोहरा: जाते ऊठय ऊपद्र कछु करहु न पुन अस काम ।।
सत्रुन के सनमुख हुवो लख न सकहि मित निाम ।। १३४ ।।

सवैये
सवैया: हरि कीनी क्रिपा है बडी तुम पै मन बांछत लामु फले हिय के ।।
अब याही समाज सलामत सो ग्रह जाय बरो सुखु सो जिय के ।।
प्रभू संग सहायक रो तुमरी गुरु राखो सदा कर सो छ्यि के ।।
घर जाय बरो तुमरो पिता मात आनंद सो दीप मरो घिय के ।। १३५ ।।

कबितु: ऐसे बरदान दे बिदा क ले ब्रिध पुरख तोरों क्त सुता को कंठ लाय समकाईयो ।।
सास की ससुरी की सखी जन की सोतन की सोगुनी बडाई राखु पाईयो बडाईयो ।।
मेटीयो न मालक की मरजी तूं मेरी जाई तजके ब्रिजादु कुलपाऊ ना टिकाईयो ।।
प्रम बिसराईयोन माया मन लाईयो न फेरहूं मिलावै वही जाने बिछुराईयो ।। १३६ ।।

दोहरा: बिदा भयो वहि मिल सभन या बिधि कथित प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो त्रियो दसम सु तरंग ।। १३७ ।।

इती श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति तिरूपित प्रीति प्रसी कवि साहब सिंगिदिन बिरचिते राजकुमार को अभिचार जार महि वरफन ब्रिधु पुरख की सहाय ते बिजय पाय सरफन सध्पाल निज सुता सहि बध करनन नाम त्रियो दसमो तरंग ।। १३ ।।

कबितु: प्रेम पारावार की बिहारन सुखारी प्यारे पैर पारवे को अपार भकभकोरे हैं।।
ऊछरत अंग नाना रंग के तरंग याके सै करो जहाज बाके घूमरो मै बोर है।।
गुरुगोबिंदसिंघ जू जोगीस की त्रिगिद दौर जाहरे सरन बिसे बीस सं तौरे है।।
चाहि चित तोरें मिले मीत मुक्ता जु मारे प्रारथकरे मों तौ निरारथ न छोरे है
।।१।।

दोहरा: प्रेम पयौनिधि की कथा अदभुत अघटन मान ।।
अघटन घटै न घटीय सी हरि माया बलवान ।। २ ।।

चौपई: बिचरन हाथ बचन सागर के ।। मुकता फल पावत नागर के ।।
करत सिनान सदा लेखनि नद ।। प्रीति नीर पूरिति जो बोह्द ।।
पैरन हार प्रेम पयनिधि के ।। बूडन हारु नेह निधि बिधि के ।।
मुकताफलु भलकत या बचको ।। बचन लरी महि पोय सुरुचको ।।
स्रवन हार मति मान सुघर जे ।। स्रुति भूखन करत स्रवन सु बर बे ।।
या बिधि करत सुमाय मान अब ।। जगत प्रभाकर बिज्य पाय तब ।।
न्रिप सहिपाल सुता सन हारयो ।। राजभाग प्रभू छिन कर डारयो ।।
दोय मास तहि कीयो मुकामा ।। सैन सहित लहि सुख अभिरामा ।।३।।

दोहरा: निस दिन याही बन हि मै रहे प्रभा बड पाय ।।
राज भाग तह को सकल नीति म्रियाद दिखाय ।। ४ ।।

चौपई?: अपने कर जब राज प्रधाना ।। छाडे तहा समेत समाना ।।
धरम नीति की रीति द्रि ढाई ।। प्रजा पालवे हित ठहराई ।।
जंत्र मंत्र के फूक सजाना ।। टौना नामनि सकल ऊडाना ।।
धरम नीत के माग चलाहे ।। प्रजा लोक सम सुखी बसाहे ।।
ब्रिधि पुरख बहु करि ऊपदेसा ।। गयो बाग निज पाय निदेसा ।।
छित छिन तबहि कूच करि डेरा ।। चले देस निज सांभ सवेरा ।।
नित नौतन बन करत बिहारा ।। भांत भांत गिर देस निहारा ।।
करत अनंद महामंगल मुख ।। मिले मित्र सजन हि सुपने दुख ।। ५ ।।

दोहरा: जस बिहार बन केल कर सेलत ब्रित असेट ।।
चले जात बड सुख करत ताप बिरह को मेट ।।। ६ ।।

चौपई: भावी बस बहु दिन के पाछे ।। जात जात मारग सुखु आछे ।।
इक दिन डेरा समुदु किनारे ।। लग्यो जाहि ऊतरे दल भारे ।।
राजकवर संगु दोऊ पटरानी ।। परम प्रेम निधि जिय सुखु दानी ।।
कछुक दास दासी संगि पायन ।। गइे सिंधु तट निरखन चयन ।।
ठाढे तट इक ऊच असथाना ।। लखयो सिंघ बड गगन समाना ।।
अगम अपार नीर गंभीरा ।। ऊठत तरंग कुटत लख धीरा ।।
पेद दारु आवत बड लहरै ।। नही नजर कहुं जल बिन ठहरै ।।
द्रिसट न आवत पार किनारा ।। निरखत ठाढो राजकुमारा ।।७ ।।

दोहरा: जल की झलकत प्रबलता होत सबद बड घोर ।। लहरै करत आघात बड
प्रबल पवन ~~झकझ~~ झकझोर ।। ८ ।।

चौपई: झकझोरन को अति कौतक लख ।। लखीयत भौर परत तहि लख लख ।।
कैसो परम गंभीर नीर ~~वह~~ वहि ।। प्रबल लहर अनगन इक इक महि ।।
सकल लहर महि प्रलय निसानी ।। स्याम रंगा अस लखीयत पानी ।।
लगत द्रिगन चकचौंधि निहारत ।। धीर धरम बुद बुदा प्रहारत ।।
परत लहर परलहर परेखी ।। कबहु सुसकतट रहत न पेखी ।।
याबिधि कौतुक रहे निहारा ।। आयो इकि जहाज तिहि बारा ।।
आन अचानक दई दिखाई ।। चित्रत रचित बचित्र सुहाई ।।
नाना रंग बेल फुलवारी ।। ता कर सोहत चित्र सवारी ।। ६।।

दोहरा: बंगलै बैठक बिबिधि बर रचित काठ के भौन ।।
प्रगट भयो आवत लख्यो प्रबल पवन के गौन ।। १० ।।

चौपई: राजकवर समझो मन माही ।। कोऊ धनक बिवहारी आही ।।
कहूं जात हुवे धन बिहार हित ।। हुवै है बसतु भरी बहु अगनित ।।
या अवसर वहि निकट हि आयो ।। दीरघ जल महि दूर ठरायो ।।
लंगर डार नाव पर चढ कर ।। करन धार आयो या तट पर ।।
आय कवर प्रति करी प्रणामा ।। भेट राख कहि बच अभिरामा ।।
हम है करन धार महाराजा ।। हमरो है यह सुभग जहाजा ।।
सौ न्रिप करत अखेट बिहारा ।। आऊ तरत या बनहि मझारा ।।
या जहाज हम तिन हि चढावत ।। जल जीवन को खेल दिखावत ।। ११ ।।

दोहरा: करत अखेट जहाज चढ जलचर नाना रंग ।।
जारु डार पकरत तिनहि खेलत परम अऊ मंग ।।१२ ।।

चौपई: चार घरी वा जाम निहारी ।। पुन ऊलरत मन आनंद धारी ।।
हम कछु परारबध अनुसारा ।। पाकत त्रिप जो देत ऊदारा ।।
ता कर करहि कुटंब निज पालन ।। पुन जहाज की करहि संभालन ।।
यही जीविका क्रित्य हमारी ।। अवसेरख आगम त्रिप भारी ।।
यहि सुन जल बिहार की चाहा ।। हिय नद लहर ऊठी अस गाहा ।।
भा प्रभा सन कह्यो पिआरी ।। चलहु करहि जल सिंध बिहारी ।।
तब तिन बिनति करी कर जोरे ।। सुनहु प्रान प्रिय मति को मोरे ।।
अबलग दुखु सागर की कवरी ।। परम कलेसन की मग ठवरी ।। १३ ।।
दोहरा: ताते भयो ऊबारलहि लह्यो न तट आनंद ।।
तुमहि लहर यहि औंर ही ऊठी नई दुख कंदु ।। १४ ।।
चौपई: सिर पर पंथ सहस कोसन को ।। अनिक कलेस कोस दोसन को ।।
ताकी नही चिंतमन म राई ।। नौतन जूफ औंर मन आई ।।
कहो ऊद धिको कोहितबारा ।। थिप्या की जल केल बिहारा ।।
हेक लहर महि कहर मचावय ।। कहो तहा पुन कवन बचावय ।।
अटक्यो कवन काम है तेरो ।। परहु सिंधु के कनिन कुफेरो ।।
हम हि न मत लागत यहि नीको ।। हटहु पिया तज ऊतसव जीको ।।
जगत प्रभाकर सुन असबानी ।। व बहुर कीन हिहि बात बह बखानी ।।
जल बिहार चित अन-द बढावत ।। बवरापन को दूर हटावत ।। १५ ।।
दोहरा: अन परखाकत केल जल सुंदरता दिखराय ।।
सुन्यो न तुम किहू कवि बचन अमित फलद दरीयाय ।। १६ ।।
चौपई: मन परखाय घरी दो चारा ।। ऊतर आय है सैन मफारा ।।
करन धार यहि बिफल न जावहि ।। सुमन करहि जु कछु ले जावहि ।।
यहि सुन मान प्रभा फुन बोली ।। विकल भई चित ते अति डोली ।।
यहि सम साच जु आप अलायो ।। ऊचित न वायस हम हि हटायो ।।
बावरता हो तुम बनिन को ।। सदा मलिन मन रहत सु जिन को ।।
सभा सखिकला सों बहु बारा ।। प्रथम सु मुहि अस कोन ऊचारा ।।
पै यहि मरज सुभावन जोई ।। नहि भेख जया की मव कोई ।।
औंपुन दुगुन होत लख जल को ।। भवन कहत होवत यहि हलको ।। १७ ।।

दोहरा: या पर भीमम मन कछू मरज धरत है बान ॥
ऊत्रा रघ वाऊकाति पर मुहि प्रतीति करि ब्यान ॥ १८ ॥
चौपई: पूरबा रघ जो आप सुनायो ॥ किघू कवी को बचन बतायो ॥
बहु फलदायक है दरीयावा ॥ पूर सरघ यहि आपु सुनावा ॥
ऊत्रारत याको पढ देखो ॥ कहा करत है माव बिसेखो ॥
जौ सुखु अचल चहत हो प्यारे ॥ सो तट ही पर परत निहारे ॥
पूरब बच ते परब चबल है ॥ सब सास्त्रन कोमतो अचल है ॥
यापर काहि न करहु विचारा ॥ सम सुख तट है कहि मतिवाना ॥
पुनि जो करन धारि बिफलावत ॥ कहहु जाय हूं मन पछुतावत ॥
छिनहि दैत अब कका हटावत ॥ देहु दान जेतो मन भावत ॥१९॥
दोहरा: दारिद दरद बिदार छिन करहि जनम मरयाद ॥
रीति सनातन न्रिपन की मति ऊदार मिरजादु ॥ २० ॥
चौपई: देत न्रिपति जे परम ऊदारा ॥नहि चहित तिहि पति ऊपकारा ॥
सेव कराय सबहि कोऊ देवत ॥देत सेव बिन जस वहि लेवत ॥
पै मम मंत मान प्रिय कंता ॥ बरखु न सागर गहर अनंता ॥
यहि सुन राजकवर सुन सायो ॥ मावी बिबस बहै हठ छायो ॥
यदपि प्रथम सा चुको छुटाई ॥ तदपि प्रबल माया जगराई ॥
कह्यो अनंद हम तोहे बोरे ॥ तुम हम संगि बनहु मति होरे ॥
हम हेकल जावहि जल माही ॥ तुम न चलहु बैठहु तट याही ॥
करहु अराम कुसल सो रहियै ॥ हमरी चिंत न मन महि गहियै ॥ २१ ॥
दोहरा: यहि सुन सोचत रवि प्रभा भई कवन जगदीस ॥
हित बच लगत न कवर मन दुखु हुवै बिसवे बीस ॥ २२ ॥
चौपई: कह्यो कंत हम कवन कमीनी ॥ रहहि पिछारि नारि मति हीनी ॥
करहि अराम रहहि तव पाछे ॥ रही समय वहि पिल ग्रह आछे ॥
अब तुम बिनु गति कवन हमारी ॥ बिरह बहन जल ते दुखु भारी ॥
तुमरे सुख सुख दुखु दुखु संगी ॥ कही पुतन प्रिय तिय बरघंगी ॥
छितनि हु कहनि ऊचित हम नाही ॥ नारि धरम बह करनि निवाही ॥
जौ प्रिय निसको दिवस बतावय ॥ घन वहि घन कहि घन मन त्यावया ॥
जोरावर मन अस घनिआई ॥ चलहु हमहि सौगुन मलिआई ॥
पै छिक प्रकटु धरहु मम बानी ॥ गांठ बांध निज चीर निदानी ॥२३ ॥

दोहरा: हित बचन न कत हट करत परत बिकट दुखजान ।।
मंदोदरि के हट कते रावन दीहे परान ।। २४ ।।

चौपई: अस कहि ऊठी संग हुवै लीनी ।। स्मासखि कला चली अघोनी ।।
कछुक दास दासी संग आइ।। वहं रहे नहि अवरु बुलाइ ।।
नव का चढ जहाज पर आहे ।। तब तिन लंगर सकल ऊठाइ ।।
बरदवान पट खोल दीहे तबु ।। पाले चढी छुटे बंधन सब ।।
चल्यो जहाज पवन के भेसा ।। गयो छिनिक महि लंघ बहु देसा ।।
मान प्रभा बयाकुल मुरझाई ।। पढत किसू कवि बचन बनाई ।।
यां अपार बारध भय दायक ।। प्रले कालवत लहरु सुघायक ।।
मगन भेरे मोर मन छिन प्रभू नामा ।। रछक यहा तुही घनस्यामा ।। २५ ।।

दोहरा: लोग लखत कौतुक सुनिधि वहि चिंता निधि नीरु ।।
बूड रही घूमर बिकल दुखु मति लरत सरीर ।। २६ ।।

चौपई: स्मासखिकला सो छार बारा ।। कहत करहि री प्रम छुटकारा ।।
अस बिहार नहिं सखु करह री ।। कैसी ऊठत कहर की लहरी ।।
सिर ऊपरि हुवै करत पयाना ।। आपहि आप डरत लख प्राना ।।
प्रभु रछक है क्रिपा द्रिस्ट कर ।। द्रिस्ट परत अप हेत सरासर ।।
भयकर कांपत अलि छिय मेरो ।। लखहि बाज किम परै नि बेरो ।।
कथा संछेप चार घटिका तौ ।। चल्यो जहाज नाहि बटिका जौ ।।
बाछित अवन सुही अनुकूला ।। रचन लखाई जल सु खु मूला ।।
मनु प्रति कूल पवन बह दारुन ।। ऊठी छेकु दिसते छित हारुन ।।२७।।

दोहरा: करनधार कर ला ऊठे प्रले पवन बल देख ।।
हरबरात दह दिस लगे यतन करन बविसेख ।। २८ ।।

चौपई: चकित पूछित राजकुमारा ।। कारन कवन करत हरि बारा ।।
बिनति करै कर जोरु सीस धर ।। पवन प्रले सम ऊठी मयंकर ।।
अबी बात यह बीति न मुख माहि ।। बही बात बवात करत माहि ।।
परयो जहाज पवन परबाहा ।। बरदबान टूटै बलमाहा ।।
गिरयो थंम मस तूल घु जाको ।। गई चौकरी चुका करी याको ।।
रहि न संभारन को पुरखारथ ।। मावी पर सब यतन निरारथ ।।

दह दिसि लहर पहारु समाना ।। ऊठी पवन फकफोर महाना ।।
फटौ जहाजु लहर अघाता ।। टूक टूक बिखर्यौ बिख्याता ।। २६ ।।

चौपई: इक इक सौ मद्धे नियारे ।। बुडत बहुत बह लहर पछारे ।।
जीवन मरन हाथु हरि जाही ।। पवन अगनि जल गिर कर नाही ।।
गह प्रहलाद अगनि जल पार्यौ ।। कईं बार गिरवर ते डारियौ ।।
ताको बार न बांक न पायौ ।। जौ भ्रिमक्त पति आपि बचायौ ।।
याते नहि अदुभुत कछु माईं ।। जियन मरन कर हरि जगराईं ।।
भावी बस तब बहुत कुंवर बर ।। मूरछित पर्यौ इकु तख्ते पर ।।
चारु पांच दिन बहत असारे ।। लग्यौ कहूं जाइक किनारे ।।
मिटी सकल फकफोरनीर जब ।। मूरछा छुटी खुले लोचन तब ।।
लखो इक तट निकट पर्यौ हौं ।। किधौं चिता तट निकट धर्यौ हौ ।।
ऊठन हेत मन ताकन यातन ।। तख्ता संग मयीतखता तन ।। ३१ ।।
दोहरा: ऊठयौ मरू कर तहा ते तज तख्ता तटु आय ।।
लगी प्रभाकर किरन तनु कछु चेतन ता पाय ।। ३२ ।।
चौपई: तब निज कौ कुछु जियत निहारी ।। रोवन लग्यौ सुमर निज प्यारी ।।
सुन तिहि दरद भर्यौ करलाना ।। बहे नीर ह्वै कंवर पखाना ।।
महादुखित ह्वै कोन बिलापा ।। अनिक भांत मन करि पछुतापा ।।
आपन हाथु इथम बिपति मै पाईं ।। नही मानी हित सीख सिखाईं ।।
परम मूढि मति जढ अग्यानी ।। निज हठ से हित सीख न मानी ।।
मो संगति ते ऊन दुखु पाइे ।। जन-निजनि के ग्रिह छुटुवाये ।।
हठ कर आन सिंधि महि बोरी ।। अब प्रभ कहु हु कवन गति मोरी ।।
अजह जियत मैं बच्यौ अभागी ।। कहा करम गति पीछय लागी ।। ३३ ।।
दोहरा: मरहु सिंघ मधि बूड अब मिलहु पिया संग जाय ।।
ऊठन चह्यौ ऊठयौ न गौ गिर्यौ तवारन खाय ।। ३४ ।।
चौपई: मूरछत बिहबल भयौ अधीरा ।। ऊठयौ बहुरु सुमरत रघुबीरा ।।
हे प्रभ करनहारु जगु स्वामी ।। सकल घाटा न कौ अंतरजामी ।।

वहै भली अब जो तुहि भाक्त ।। जाबिधि श्रीगुरु बचन अलावत ।।
यथा: कहु मानुख ते किया होइ भावै ।। जो प्रभु भावै सोभ्फी करवाँ ।।
चल्यो तहा ते सने सुमर हरि ।। बैठत ऊठत दुखित अति आतुर ।।
कछुक दूर तहि ते जब गयो ।। इक नगर तट प्रापति भयो ।।
तहि के जन याको लख भाला ।। पुनि बिछि पति बयाकुल दुखहाला ।।
अति [redacted] अकुलाय निकट चल आइे ।। निज निज मत के बचन चलाइे ।।३५ ।।
दोहरा: किनहु कह्यो सुरता तुयहि नर तन घर घर माहि ।।
सुंदरता बन को सच किनहु कह्यो यहि आहि ।। ३६ ।।
चौपई: किनहु कह्यो अब ही तो दिन है ।।प्रगट असंभव सी देविन है ।।
पै चल निकट गइे घर धीरा ।। लयो प्रवार जनहु की भीरा ।।
कह्यो कवन हो जू तुम को हो ।। देव निसाचर सुवन जु होहो ।।
जगत प्रभाकर सदर स्वास भर ।। दुखित ह्यिे दोऊ द्रिग भर कर ।।
कह्यो तिनो प्रति करत बिलापा ।। कहा बतावहु मै निज आपा ।।
वहि गति धर हु जु संधु चहत है ।। प्रान धरहु तन त्याग चहत है ।।
बिपति सकल जे कुहुहु बिसतारा ।। सुरहसहि लख जिय न हमारा ।।
अहो प्रस्न करता मम गति के ।। कहा कह निज हाल बिपति के ।। ३७ ।।
दोहरा: मग भूलो पंथी बिकल रुदित घंटिका तूल ।।
मन पकरयो पग चिंन हौं निजमित्रन को सूल ।। ३८ ।।
चौपई: जिज जढिता जीली पर अरभ्फो ।। चहित बिछोहिन मिलन ससरभ्फो ।।
बिथित बिदेसी ब्रिही अधीरा ।। प्रापति भयो न अंन नहि नीरा ।।
मीत बिरहु करि बिकल सरीरा ।। हहरावत हौं ह्यि तज धीरा ।।
मति अरु ग्यान ग्यो इिक बारा ।। थकित असकति भ्रमत मतवारा ।।
मुख मित्रन को द्रिस्टि न आवत ।। अंधकार जग भयो लखावत ।।
सकति चलन की नहि बोलन की।। नहि समरथ इित ऊत डोलन की ।।
चरन चिंन समु जहि लगि गइे ।। रल न सकै तहि हीं के भइे ।।
कहि पूछत हो ठौरु हमारी ।। बैठोरन की ठौरु निहारी ।। ३६ ।।
सवैयाह: मति पूछिये ठौर बे ठौरन की रहे पाय के चीत्र लौं ठौर परे ।।
सुधि प्यारे की मे फिरौ बांवरी सौं हिल की लगजात है गौर करे ।।
दसा बीती की जौ कहूं बात चले ह्यि घाय तौ होत है और हरे ।।

अरे हाय रे हाय मैं आपने हाथ ही आपने असे कुठौर करे ।। ४० ।।

सवैया : धुजा आह कराह कीयो फहरान ते जान परी दुख जीत भई ।।
रनजीत के हेत दिखावन होत है यौं फहरावन छोर दई ।।
छडवाइ सभै या सनातन ते सब मीत मेरे कर जोर दई ।।
मिट है कब दाग मेरे हिय ते नव बैसिन को अरे हाय दई ।। ४१ ।।

सवैया : चिनगारे फरे परें आनन ते जु बखानी म्रिगिंद लगे करनै ।।
दुखिया दिल आह की फार सीयौं फरसे कोऊ प्रो नलगे करनै ।।
अब ग्रिंथ मला यहि कैसे बनै सम पाकक बैने लगे करनै ।।
गई सूक दवात जरे लिखनी बने कागद छारु लगे करनै ।। ४२ ।।

सवैया : यहि बैन बियोग भरे हिय दारुक औं अरमान दई अदयी ।।
दुखु रे सुनवे सबरौय परे यहि राजकुमार है जान लई ।।
मन दीइ कहूं निज प्रेमिन तैं बिछरयो दुखु सौं ये दस है भई ।।
बिनती कै दयावले हुवै समफाय गहे इक ठौर लै सांफ पई ।। ४३ ।।

सवैया : ऊसनोदक आनन हाथु पखार अनोदक आगेर धरयो कुछु लै ।।
यहि देखत रोन लगौ दुख सौं द्रिग नीर बहै हिय रोऊ छलै ।।
हुवै धूर छुधावा प्रती मतवारे को जाकी दसा हम सौं पुछ लै ।।
जुऊ यौं रक्तापनी प्रान सदा ऊठि आपै अघाय भलै मछु लै ।।४४ ।।

सवैया : प्रभु जानें मेरे व बियोगिन को कस हाल भयो हुवै जिये कै मरे ।।
कछु पायो हुवै खाक पीवनु कों किधौं खायो न पीयौ रटै पीयरे ।।
अब हौं हूंन खाय हौ पीयौ नही छुधाय प्यास मै जाय है प्रान खरे ।।
धिक जीवनौ हैं ऊन सौं बिछरे अब जीवने सो कहा काज सरे ।। ४५ ।।

सवैया: सुनते ही सबै समफानु लगे अजू देखो बिचार कै धीर धरो ।।
जल अंन मैं प्रानी के प्रानी बसै मति मानहों याते न नाहि करो ।।
जब प्रान है प्यारे मिलैं नही चित्र बचित्र है माया संभार करो ।।
परे पान तो का पहिचान रहै या बिदेस करूं ा यौं ऊधारे परौ ।। ४६ ।।

सवैया : जगजीवत को बिवहारु बनो छुर आइ बिराने हूं यौं हमसे ।।
बन आवे यतन अचंभो नही रहे आन मिले कहूं प्रीतमु से ।।
प्ररे प्रान तो पास खरौन हुवै को अपनो जु बिराने सभी दख से ।।
हठ छाडिये प्रान रखो तन मैं हम आछी कही अ न अरोगम से ।।४७ ।।

सवैया : बड आस है जीवत की महाराज बनै कछु बयौंत मिलै मित वे ।।
कहूं जीवत ह्वै है तो माल तिहारी मैं आवै अचंभो नही छितवे ।।
परे प्रान सुनै गेबहे मरहैं तब आस निरास से फिरै क्ति वे ।।
छिक आप मरो ऊनैं मारो ब्रिथा बव मनो हमारे कहे छिवे ।। ४८ ।।
सवैया : अस बैन सुने समझै सब के छित जान अवस कह्यो सो कियो ।।
छिक ह्वै कगि रास बडे बल सो जल सो तरे कुंठ ह्यो सो कियो ।।
बहु दयोसन मै जल प्रान कियो मूरछा तन आन रह्यो सो कियो ।।
सुधि आई तौ बीती ब्रिथा को बखान सने सब हाल लह्यो सो कियो ।।४६।।
सवैया : चले आवत है सुख सो मग मै तट सिंधु समागम कैसो भयो ।।
ह्ठ ठान मै मानी नही हित की चढ क धायो जहाज सो फूट गयो ।।
नमरयो मैं ऊपाधिकी मूलित ऊ तक्ते पै बह्यो छित हौर भयो ।।
बिछरयो वहि साथन हाथ फतो कछु जीवै कोऊ किधो गह लयो ।।५० ।।
सवैया : यहि मासते ही गिरयो सचयत वारु रेहाय रे हाय मै जावौ कहा ।।
गहे मीत मेरे मै रह्यो छिकलौ छिक घात मै चोर है जो रमहा ।।
करियां रहे चीन मेरि नक्का परी घूमें फिरंग को देस जहा ।।
अब कौन साथे रे को पार करै हरैं पीर हमारीन को ऊलहा ।। ५१ ।।
सवैया : यहि बैन बचित्र सुने हहराने डराने वे चित्र सो चित्र रहे ।।
पछुताहे सबै बिसमाहे औंधीर छुटे द्रिग नीर क बहे ।।
बस सोच ही मै छिक बोल ऊठयो बहु पीर दयो अस बैन कहे ।।
मगु दुवै दिन को है यहा ते पहार है कामदा नाम प्रसिध बहे ।।५२ ।।
सवैया : छिक योगी तपोधन को मुनि को तहा थान है पूरन है तप मै ।।
मन हाथ कीये जगुनाथ के ध्यान लीहे बरसाप फले जप मे ।।
कई कोस सहस्रते प्रिस्ट तहां चलि जात है कारज की छप मै ।।
बरषावे कोऊ बिफलावे नही हरि मूरति है नसै बप मे ।।५३ ।।
सवैया : हरि कीनी क्रिपा है महान ऊने बरदान को स्रोत है प्रिस्ट लिये ।।
पर सिधि है सिधि है ब्रिध बडो कोऊ साली गयो नही द्रिस्टि किये ।।
सुनी सार खुसाली की लाली चढी सुके साली मनो बडी बिस्टि दिये ।।
गहे प्रान परे तन आन मनो यहि बैन पढे ऊत क्रिस्टि हिये ।। ५४ ।।

सवैया: बलि जाऊं जौ डीठे ऊनो की परै करै पूर को नीर रसायनी सी ।।
मले हौवो जौ माग ते वाद्रिग कोर परै मम ओर झुमायनी सी ।।
चल पार है मेरौ तौ बेरौ भैया कियो तेरौ करौ गुन गायनी सी ।।
तिन पायनी की छित जायनी सो करौ लोचन चारु बिछायनीसी ।।५५।।

सवैया: कहते ही चल्यो रुसु प्रेम ढल्यो अंच लाग हियो क्योरने बर सो ।।
अजू आप अबी नही हौं मग जोग थक्यो तन नीर हराबर सौं ।।
दिन चारि क मै जु संगाग परै अब काल रहौं पर सौतरसौं ।।
पुन जैसे बनै मन आवै करौ बन आवै है बात सबै हर सौं ।। ५६ ।।

सवैया: छिह मात कहे सुने लीमन के ठहुरयो तो कछू दिन देर करी ।।
अवसेर सवेर ते सांझ करी दुखु टेरत सामाने सवेर करी ।।
रहे घेर वे हेर रहे हहराख ये पयारे पयारे कर टेर करी ।।
करी बेर न झेली अबेर करी जैसे मेरी यौ बेर अबेर करी ।। ५७ ।।

सवैया: चुपु बैठौ रहो करै मूक कबी ब कछू बोलि ऊठे कबी बावरौ सौं ।।
सुधि आवै कहूं तब ये कवि बैन पढो करै आप ही ढावरौं सौ ।।
अति ऊंघो कियो असरावरौ प्रेम के नेम सह्यो दुखु तावरो सो ।।
ऊपालंभ कह्यो अब सो पहिले कहूं आपै कहे कर न्याव रोसो ।।५८ ।।

सवैया: अब कह्यो हम सौं बिगरो हो भला तज प्रेमु के पंथु कयो कूर बनो ।।
जब लौं बल है हिय तोल धरो न टरौ मगतो रे की पूर बनो ।।
जब प्रान गहे मनसूरी रही सब सूरी चढो मन सूर बनो ।।
अब तेरी हजूरी न दूर तजौ मन जूर है जो गिर तूर बनौं ।। ५६ ।।

सवैया: अधरान धरी है पुकारु कबी कबी कूक कराहन आहन सो ।।
अब तेरे बियोग मै प्यो मेरे बहुरो कत हो दिल दाहन सौं ।।
यहि ठौर दया की दया करिये नहि तौ सो दयाल ऊमाह नसौ ।।
बन प्रेम तिहारे परयो बिछुरयो छिनु लौहोम सांस कराह न सौं ।।६० ।।

सवैया: दिन तो गति वैसी भई वदई लसु बावरौ रावरौ प्रेमु कियो ।।
रहे घेर चुफेर हमे लरके चहु वोर सरे है पयान लियो ।।
रही नींद की कौन कहानी निसा हम है वसू वौं है प्रवाह कियो ।।
यहि आंसू वडो गुनदायी हमे तुद दोस ना मानियो या कोह्यो ।।६१ ।।

सवैया: कबहूं ह्व फोरी ऊचाटी लगैं लखो रोवों रुमाल भिगावों लखो ।।
बधुलाय कुहु ो वो गिला जों करों अरे प्यारे तिहा हारों नियावों लखो ।।
दुखु जेते सहौंतौ खुसी ही रहौं तव ओरते प्रेमी कहावों लखों ।।
इनि आखन सौ वहि देखो भले जु दिखाय हौ प्यार लखावों लख लखों।।६२।।

सवैया: हुतो तोख मै धीर मैं इको हियौ न बहावतो मोती लखं लरी पहिलै ।।
अब तौ कछु बेप्ररवाहो लही परवही अथाह परी चहिलै ।।
नसुमार परै अस्तार बंधी है म्रिंगिंद लहं हिय रोदहिलै ।।
कज्ज गुन ग्यान को हाथ सो छूट परौ बिथुरे मुक्ता अब क्यो बहिलै।।६३।।

दोहरा: या बिध करत बिलाप तहि रह्यो राज की राति ।।
तरफतरफु दुखु सहस सह किय करलात प्रभातु ।। ६४ ।।

चौपई: नित्य करम कर लिय हरिनामा ।। इस्ट देव पद कोनु प्रणामा ।।
गिर मग लीयो मनाय गजानन ।। चार दिवस नख्यो मग कानन ।।
पंचम दिन पहुंचो पहार पर ।। बिसमित भयो सुनग निहार कर ।।
सते फटक कोसुभग सरोवर ।। अति अवदात सु जगमगात धर ।।
मनहु ह्रिदय हरिजन को निरमलि ।। अंतह करण किधो मुनि निह्चल।।
अति ऊतंगु बर नग्नि स्रिंगस सुहाकन ।। सतबादिन कै हिय जिम पाकन ।।
सुंदर सुखद सुहावन जीको ।। दरी बिसद बिसत्रित मगुनीको ।।
हरि तब नाव लिवेली चबेली ।। बिकसित सुमन झरहरी वेली ।।६५ ।।

दोहरा: कलित कंठ झनकारु ही नाना रंग न्हि बिहंग ।।
नंदन लखय अनंदतज मूंदय आबु अभंग ।। ६६ ।।

चौपई: सरस मनोहर निरझर झरही।सीरी लखु फरहाद भ्रम करही ।।
स्रब जाति कै सफल तरोवत ।। हर क माया करि ऊपजे मनहर ।।
फूले फले झरहरी डारिन ।। कुहिक कोकिला भ्रमर गुंजारिन ।।
सकल पखान खान ललन की ।। खग म्रिग पांति सुमग चालन की ।।
या बिधि निरखत सुमग पहारा ।। चल्यो जात तहि राजकुमारा ।।
इक दिस देखेसघन तरोवर ।। इक समाधि तह बनी मनोहर ।।
सिध पुरखु कोऊ ग्रसथाना ।। मठ बिन संभ गोल गिरखाना ।।
इक त्रिसूल गड रही इवार पर ।। अरुन धुजा फहराकत थरहर ।। ६७ ।।

दोहरा: नारायण के नाम करि अंकित भक्त पुनीत ।।
कनक रजत के रंग करि लिख्यो गुनी करि प्रीति ।। ६८ ।।

चौपई: निकटि गयो तबु दूर प्रयंता ।। लख्यो सुकछ अस्थान अनंता ।।
मटके निकट हेमु तरु सुंदर ।। आन्यो जनु मधु छीर समुंदर ।।
तात रुतेर सफट कस थंडल ।। जाहि लहित चकर हित अखंडल ।।
ता पर हिक तपसीतप पूरति ।। बित समाधि सकूर हिसथित सिव मूरति।।
परम सिध बड सिधि सपूरन ।। युग की आयु कहौ तौ कूरन ।।
बडी सम प्रनामितरफार की ।। बू गरकी बिसद छवि धरकी ।।
चहु दिसि बड बिभूति के ढेरा ।। जनि नग की बिभूति किय घेरा ।।
कर प्रणाम जु चरनन पर पडी ।। है सुर फेनत कत जन खडी ।। ६६ ।।

दोहरा: पलक बडी द्रिग छा रही मनहु छिपायत भेव ।।
लखे न लोयन कोय नर लख्यो बलख जिन देव ।। ७० ।।

चौपई: किधौं दुस्ट की दीठ बचावत ।। ~~तन-महि-बली-भसत~~ हुलक मूछ पर परी लखावत।।
तन महि बली परत अस ठहरे ।। जनु सुभ छीर सिंघ की लहरे ।।
कुबरी कमर सद्रिस कमान की ।। अचुक चोट जिहि बचन बान की ।।
अदुभुत बान बानावट तन की ।। बरुन लंगोट ओट जग नब जन की ।।
मतवारिन की रीति बनाइे ।। हिक बाघ बर तरे बिछाइे ।।
रमी अखंड बिभूति सरब तन ।। प्रगट बंद द्रिग देख अदेखिन ।।
खुले सदा हिय गिबान बिलोचन ।। बचनि बिज्य कर सोच बिमोचन ।।
बोलत हल तन सोवत जागत ।। द्रिढु आसन बैठो जग त्यागत ।। ७१ ।।

दोहरा: ऊदर पीठु सौं लग रह्यो तन सूखो सर तूल ।।
द्रिय खमल समेट कर द्रिस्टि नासि का मूल ।। ७२ ।।

चौपई: कनु सरीर गुनु चढयो नियासा ।। सवा मास जनु क्रिति ऊपवासा ।।
धमनी जन जग्यो पवीत वर ।। प्रगट दिस्ट आवत सब तन पर ।।
असिथनु चा महि अस फलकावत ।। जनु फनूस महि दीप दिखावत ।।
छिकुरु द्राछ माल कर फेरत ।। परम हंस लख परत जु हेरत ।।
तिलक सिंधुर भाल पर दमकत ।। जनु जनु जोग ते जतप चमकत ।।

प्रभु के इवार करत परणामा ।। परी घास सुभ भालल लामा ।।
मनहु दूज ससिकला सुहावन ।। भगति चिंन हैं प्रगट लखावन ।।
पीत रंग म्रित कातन मली ।। हरि बिचार मन मुखु महि मली ।। ७३ ।।

दोहरा: कहूं आस नही बिछर हे भजन करन की ठौर ।।
संध्या बिंदन को कहूं बिछी चटाईं और ।। ७४ ।।

चौपईं: कोऊ पढत पुसतक खुल रही ।। धूनी कहूं रमी तप रही ।।
हरि बिचारु की अदभुत चरचा ।। सरब रंग की आतम परचा ।।
यथा किसू कवि को यहि बचना ।। कह्यो प्रेम पथ की लख रचना ।।
कवन पंथ महि गिन हुतेहि अब ।। कहु प्रेमी यहि कवन भेख तब ।।
जोगी कहत कोऊ सनियासी ।। सनियासी लख कहत ऊदासी ।।
कहत ऊदासी यहि तो भोगी ।। भोगी कहत निपट कोऊ जोगी ।।
जस कछु हैं कोऊ लखत न ख्याला ।। प्रेम पंथ यहि प्रगट निराला ।।
इक ओर असतल महि कियारी ।। वेल चंबेली की फुलवारी ।। ७५ ।।

दोहरा: कहूं समाइे सिध बड बहु समाधि के ढेरु ।।
कहूं मड़ी मट बन रहे रासे सुमन बिखेर ।। ७६ ।।

चौपईं: मौलसिरी तरवर कहूं छाइे ।। पात पात मुनि ब्रात लगाइे ।।
तिन महि टंगे पिंजरे झूलत ।। सुक सारिक चकोर तहि डूलत ।।
बोलत पढत आप महि परचा ।। करत परसपर आतम चरचा ।।
जग रचना महि प्रसन अपारा ।। करत आप मुहि अस निरधारा ।।
कोऊ प्रमाणू ते ऊपजावत ।। कोऊ प्रधान हेतु ठहरावत ।।
किनहु करम ते जगत बतायो ।। कोऊ कहित बिधना निरमायो ।।
किनहू कहयो सुंन हते भयो ।। आप हि भयो अपि मिट गयो ।।
कोऊ कहत याको हरि करता ।। चतुरु बयूह रूप वहि धरता ।।
किनहु कह्यो यहि सभ जग माया ।। परम पुरखु की हैं वहु छाया ।।
किनहु निमिति हेतु जगुदीसा ।। किनहु असंग कहयो खरमीसा ।। ७७ ।।

दोहरा: किनहु अभिंन निमित पुन ऊपादानु इकुहेतु ।।
निज निज मत अनुसारु सब नाना कथित संकेत ।। ७८ ।।

चौपई: कहूं कल कंठि को कला कूकत ।। कुमरी कहूं सच तूं दूकत ।।
कहूं म्रिग छाल बिछाइे के हरि ।। बैठो चौंकी भरत भजत हरि ।।
धूनी धुखत कहूं बड काठा ।। लगे ढेर काठन के ठाठा ।।
कहूं क बघंबर तरे बिछौना ।। बैठे बन म्रिग मुनि बन मगना ।।
तूंबां कहूं बैगनी रंगा ।। बे मुह्ताज धरयो कहूं चंगा ।।
इिकु दिस बन्यो भगवती भवना ।। तुलसी को मंदरु ढिग बना ।।
हरी भरी बु तुलसी पर फुलित ।। सोह्त सीस मंजरी फूलत ।।
निकट सरोवरु बह्त अमल जल ।। अति रमणिक मनोहर सुमथल ।। ७६ ।।

दोहरा: ढलवों सो असथान वहि फबत ऊचाईं नीच ।।
जुदी फबन फलवार की फूल रही बिच बीच ।। ८० ।।

चौपई: इेक ओर चढु रह्यो मंडारा ।। मोहन भोग पूरी बिसतारा ।।
तंदुल पह्ति पाक पकवाना ।। परतत खटर सि बिंतन नाना ।।
कईं मह्त पुरातन चेले ।। कोऊ नौतन चेले अलबेले ।।
कोऊ समाधि साध अस बैठो ।। चालिस दिवस अंग निंह अैठो ।।
कोऊ जगत से हाथु ऊठाइे ।। खरोइेक पग ध्यान लगाइे ।।
कोऊ गोदरी गरमहि धारी ।। किनहु टोप सिर धरयो सवारी ।।
किनहु सफट कमुखरा पाईं ।। कोऊ बैठो पंचा गनित पाईं ।।
कहूं कथा हुवै रही पुराना ।। गावत कोऊ रागु भर ताना ।। ८१ ।।

दोहरा: बजत तमूरा खंजरी गावत भजन रसाल ।।
कहूं क ढोलक ढमकती खेलत हाल धमाल ।। ८२ ।।

चौपई: इिक दो बनत तहा नित चेला ।। त्रितीय चतुर थे दिन इिकु मेला ।।
यहि सिधांत सिध असठौरा ।। भवन चतुरु दस महि निहि औरा ।।
देख्यो सुन्यो न अस असथाना ।। अस समाज नहि परत बखाना ।।
ऊभय लोक कल कल ते न्यारे ।। परम आनंदि चैनमन धारे ।।
पायन को खटको याको लहि ।। पुरख बिमल मति ऊजल ह्यि वहि ।।
हाथन सो निज पलक ऊठाईं ।। कवरु बदन पर द्रिस्ट लगाईं ।।
अरन नैन हरि मद मतु वारे ।।प्रेमु रंगीले बड रतनारे ।।
राजकवरु दिस भले निहारयो ।। मनहु पछान करत निरधारयो ।। ८३ ।।

दोहरा१: छिन देखत ही दंडवत पर कर कौन प्रणाम ।।
मधुर बचन सो ऊन कह्यो भला करहि घनस्याम ।। ८४ ।।

चौपईं: अहो पुत्र बड बिपति निहारी ।। कालु चक्र प्रेरित बलकारी ।।
प्रभु माया भये बहुत दिखायो ।। जाते इँ हात लग चल आयो ।।
आऊ बैठ गुरु भली करहिगे ।। इकु छिनक महि बिपति हरहिगे ।।
साधसंग महि मान हि गोईं ।। सरनागति नहि बिफलु सु कोईं ।।
साधु बचन ते वहि करतारा ।। पूर मनोरथु करत निहारा ।।
हम पैं तुमरी इक अमानत ।। धरी लेहु नही परी खिआनत ।।
रावरु मग अवसेरत निसदिन ।। अब हम चलहि देर नहि इकु छिन ।।
असवारी है त्यार हमारी ।। हुती आवन की देरु तुमारी ।। ८५ ।।

दोहरा: जगत प्रभाकर सुनत ही बिसमय भयो महान ।।
आगे ही बिसमित हुतो अब तौ भयो हरान ।। ८६ ।।

चौपईं: हे प्रभु यहि क्या अदभुत खियाल ।। समझ न परत मोहि कछु हाल ।।
मैं कब हूं यहि सुनौ न देखो ।। छिन आवत ही मुझ हि परेखो ।।
तूं अंतरजामी सभ जानत ।। छिन पहि मुझ कब धरी अमानत ।।
सहम सोचु चरनन तट जाईं ।। बैठ गयो सु आयस पाईं ।।
तब वहि ऊठ्यो पुरखु बडभागी ।। जाकी मति हरि चरनन लागी ।।
अलग जाय निज किय हिसनाना ।। बसन भगौ है तज्यो सुबाना ।।
सुकल बसन तन सकल बनाइे ।। चंदन तिलक अंग सब लाइे ।।
सीच सुगंध बसन तरु कीने ।। सुरसरूपु धर परम प्रवीनो ।। ८७ ।।

दोहरा: आ बैठी पुन कुवर तट आसन बिसद बिछाय ।।
बिसमय मन लखु कुवर प्रिति भाखे बचन बनाय ।। ८८ ।।

चौपईं: रे पिआरे मति अदुभुत ~~मन~~ मानहु ।। भजन प्रतापु प्रबल जग जानहु ।।
हसतामल वत जग बिवहारा ।। लखे परख हरि जन दरबारा ।।
इक दिन हमरे गुरु क्रिपा निधि ।। परम तपोधन सकल सिधिनिधि ।।
समय सुहावन मन आनंद के ।। बन्धि अपनि मौन कर बच सु छंद के ।।
मो पर करुणा करी अपारा ।। दईं तुमारी सब कहि सारा ।।
जगत प्रभाकर न्रिप बिख्याता ।। भाग प्रभाकर न्रिप को ताता ।।

प्रेम बिस ग्रह तजिनिकरावै ।। सभा ससिकला को बर ल्यावै ।।
भान प्रभा दूसर पटरानी ।। मग मह बरय सकलि गुनखानी ।। ८६ ।।

दोहरा: जल बिहार हठ ते चढै सागरि बीच जहाज ।।
फट जहाज तिहि राज को बूडय सकल समाज ।। ६० ।।

चौपई: वहि बच है प्रभु आप बचावय ।। बहुत बहुत कहूं जानि करावै ।।
बिरहा बिथा पीड़ित दुखुयारा ।। ढूंडत आवय याहि पाहारा ।।
तुमु सनमिलय बनय तिहि बाना ।। तब तुम दुवे परलोक पियाना ।।
तब ते मग ताकत हम तेरो ।। आन भयो तुमरो अब फेरो ।।
यहि सुनि बिसमित जगत प्रभाकर ।। हसिमाया बियंत बड पा कर ।।
मन महि अति आनंदतब भयो ।। जनु बूडत सागर तट लयो ।।
बिनति करी दोऊ करि जोरे ।। अति अधीन पद कमल निहोरे ।।
परम पुरखु जैसे तुमु ~~सस्न~~ सुने ।। दरसन कीयो आन सौ गुने ।। ६१ ।।

दोहरा: जंते बचन भाखे प्रभू साच रंच नहि कूर ।।
सिध सिरोमनि मंतु तुम अर मम जीवन मूर ।। ६२ ।।

चौपई: नाम सुनत तुमरे मम जीवन ।। मई म्रितक मुखु जनु संजीवन ।।
ना तरु तोख बसन को फारी ।। तज्यो हुतो तनु कहु सिरमारी ।।
यहि सुनि राजकुवरु दिस देख्यो ।। सुंदरि ससिते अधिक परेखयो ।।
अदुभुतु बसतु रूपु अरु ज्वानी ।। याहू पर इक द्रिस्टि दिवानी ।।
सकल जगत के मनहि लुभावन ।। प्रिय लागत सब के हिय भावनि ।।
सिध मंत पुन रंक अमीरा ।। सब मन भावत यहि तसवीरा ।।
याके सब ग्राहक मतिवाना ।। तब जोगी बड क्रिपा निधाना ।।
धीर दयो बहु बिधि समझायो ।। बड बिखाद ते बरज रहायो ।। ६३ ।।

दोहरा: सहजि पकै मीठा बनै सनै सवर है काज ।।
माया पुरखु ~~अलेक~~ अलेख की कलपन सकल अकाज ।। ६४ ।।

चौपई: रे बाबा यहि जगु बिवहारा ।। हरख सोक मिश्रिप्रिति निरधारा ।।
कबहु संयोग निसा मिल जावय ।। अति आनंद बढ ~~मनहि~~ हिय न समावय ।।
कबहुं योग प्रात हुवे जावत ।। तब हिंय टूट टूकि बिसरावत ।।
इक निसा जो मिलत संयोगनि ।। इक दिवस दुखर दित बियोगनि ।।

निस संयोग कस कस सुखु जोवत ।। पुन बियोग तन तार तरोवत ।।
ताते ऊचित जु नर मतिमाना ।। बनय बिपत को जब कछु बाना ।।
दुखु बियोग ते बियाकुल तन तब ।। रहहि प्रान आ न अवरन महि जब ।।
तब धर धीर मनहि समझावय ।। या प्रकार के बच सुमरावय ।। ६५ ।।

दोहरा: सदा न सुख के दिवस जो रहे समय के फेर ।।
दुख के कब मन रह सकै चल्यो चहत ही हेर ।। ६६ ।।

चौपई: सकल रुदन पीछै हसनो हुवै ।। ऊजर परयो बहुर बसनो हुवै ।।
जीवत रहैं प्रान घट माही ।। समय सिसर की सकल सिराही ।।
पुन बसंत जीवत को आवै ।। वही डार वहि सुमन सुहावै ।।
जो सुख महि पावत आनंदा ।। वहैं बिपति की सुहत सुबंदा ।।
सुख दुखु ते जो रहत नियारो ।। ताहि बिपति किम परय बिचारो ।।
या पर श्री गुरु बचनि प्रमाना ।। कह्यो विरकति हेतु बड ग्याना ।।

यथा: ऊचा चढहि सु पर-हिय पयाला ।। धरन परै तिसु लगै न काला ।।
पुन प्रसिधि सम जगत कहावै ।। जो गुर खाय सु कान बिधावै ।। ६७ ।।

दोहरा: सुन्यो ना तुम दुवै भ्रात हे रहते नगर तवाम ।।
प्रथम बिपति दुख अति सहे पुन सुखु लहि अभिराम ।। ६८ ।।

चौपई: यहि सुन राजकवर सुखु पायो ।। परसु पुरखु वहि संत जु पायो ।।
ताके मधुर बचन मनु भाइे ।। मनहु श्रवन मग सुधा पियाइे ।।
धीर धरयो द्रिग पोछु स्वास भर ।। निज कारज हूं बनहि समझ कर ।।
वाके बचन परम प्रिय जीके ।। सहज सुहावन मधुर सुनीके ।।
श्रवन हेत मन अधिक लुभायो ।। बिनति करी कर जोर सुनायो ।।
रावर बचन सुधा मम भावत ।। ~~क्रिपा करहु सब~~ श्रवन करत नहि श्रवन अघावत ।।
क्रिपा करहु सब कहो कहानी ।। दहूं भ्रात जिम सीस बिहानी ।।
यहि सुनि साध सुभाव दियाला ।। कह्योसकल वहि खोल हवाला ।। ६६ ।।

दोहरा: अथ दुहु भ्रातन की कथा बरनन ।।

दोहरा: इक नगर महि रहत हे जुग जनमे दुवै भ्रात ।।
तिनिक कुटाई बडफता जौड़ जग बिखयात ।। १०० ।।

चौपई: भ्रात पले दोऊ इक पलाने ।। मात पिता के लोयन लाले ।।
बडे भई जोबन वत देहा ।। निज मैं बाध्यौ अधिकि सनेहा ।।
रहन इकठे खान रु पानी ।। सोवन चलन सकल इकठानी ।।
ब्रित अखेट सों अधिक पियारा ।। भांत भांत बन देस बिहारा ।।
इक दिन बन अखेट हित गई ।। बहुत दूरु बन बिचरत भई ।।
इकि म्रिग ऊठयो अग्र वहि धायो ।। लघु भाई तिहि बान चलायो ।।
लग्यो न सर कछु कान न कीनो ।। स्रवन सबद लहि भग्यो कमीनो ।।
दोऊ भ्रात पाछे तिहि परे ।। धावत गिरत ऊठित रिस भरे ।। १०२।।(१०१)

दोहरा: दिन असताचल निकटि जब गयो दोऊ बडहार ।।
बडे भ्रात को बान तब लग्यो भयो वहि पार ।। १०३ ।।

चौपई: डग मगाय म्रिग गिरयो लखाई ।। ऊतर परे तिहि दोऊ भाई ।।
झटका कियो खरग परिहारा ।। पुन हित ऊन बन ओर निहारा ।।
सकल दिवस की दौर मझारी ।। अस्व थकित सिल भई बिचारी ।।
दाना घास नीर बिन बिआकुल ।। भूख पियास पुनि थकित स्रमाकुल ।।
चुन चुन कछू कासट इकठायो ।। भूंज मास दुहु वन मिल खायो ।।
पै वा दिन अस लहयो सुवादा ।। नहि पायो कबहूं अस आदा ।।
कछु जल पीयो अंग अलसाई ।। निस आराम हूं परे लखाई ।।
गयो सूर असताचल पारा ।। पूरन ससि ऊत ऊगयो निहारा ।। १०३।।

~~चौपई:~~
दोहरा: हरे हरे वहु चांदनी हरी ~~ब~~ हरी हरी बनपाति ।।
नौतन बिरवा खिर रहे ठौर ~~ठ~~ ठौर भलि भाति ।। १०४ ।।

चौपई: दुहू भ्रातन यहि मतो मतायो ।। आज निसा हित प्रात करायो ।।
लखह चांदनी की छबि नीकी ।। सुंदर सुखद सुहावन जीकी ।।
पै बियोग की निस ऊजियारी ।। काल निसा सम है अंधियारी ।।
सच है जब ससिमुखी न अंका ।। हुवै न दिस्टि महि जोति असंका ।।
सब समान हैं तम ऊजियारे ।। यथा किसू कवि प्रगट ऊचारो ।।
बिह चादनी ते बर घामा ।। है न चादनी ताको नामा ।।
यथा तूर रंग परयो नूर प्रभ ।। जर बर तूरन भयो धूर सभ ।।
या बिधि जल पई कतर तरे ।। सरिता तटछाया लख ऊतरे ।। १०५ ।।

दोहरा: नहि सतरंजी चादनी जीनिपो स्तर डार ।।
वहँ चांदनी कर लगै निरखन जौन बहार ।। १०६ ।।
चौपई: बाग डोर सो अस अटकाइ ।। बैठ रहे दोऊ सुखु पाइे ।।
वहि लघुभ्रात इक प्रस्न ऊठायो ।।चहित आज तव मति पति यायो ।।
देहु ऊत्र इम प्रस्न जु करहँ ।। तब जानहि बिदया तव बर हँ ।।
इक तो कहु वहि नगर हमारो ।। कितू दूरु इत ते निरधारो ।।
औ पुन कवन दिसा महि आही ।। कहहु निरख निज बुधि द्रिगमाही ।।
त्रितिय आज अभिख रस दायक ।। बिन मारन ही स्वादु सुभायक ।।
कवन हेत अस प्रिय मन भायो ।। इनको ऊत्र ऊचित सम ल्यायो ।। १०७ ।।
दोहरा: यहि सुन बिहस कह्यो ऊनहि कवन कठिनाई आहि ।।
इन को तो ऊतर सुगम प्रगट खर्यो निवाहि ।। १०८ ।।
चौपई: इकसत कोस नगर इत ते हम ।। या महि युकति प्रगट है यहि सम ।।
मेरो अस्व इकु दिन माही ।। जात कौस सत चाल सु याही ।।
कई बार पतियावन कियो ।। या महि कछु संसय नहि बियो ।।
औपुन दिसा ऊत्र लख साची ।। परत निछत्र निरख मन जाची ।।
अभिख स्वाद बन्यो बिन मारन ।। या महि छुधा दिवस की कारन ।।
बिना छुद छुधा पकवान न भाना ।। अवसर छुधा जनक पकवाना ।।
यहि सब सुगम बात है भाई ।। नौतन सुनहु यादरुह जाई ।।
प्रात हौत अस बनय बनावा ।। दारिद जनम दूर हुवै जावा ।। १०६ ।।
दोहरा: प्रभू राहै कछू ऐस ही अदभुत बनहि समान ।।
ऐस आऊ अनिद महि बित है अस अनुमान ।। ११० ।।
चौपई: बडे भ्रात कहि कारनि कवना ।। साच लगै जाते यहि मना ।।
तब तिनि कही हेतु यहि भ्राता ।। सकल दिवस बन फिरे भ्रमाता ।।
छुधा पिआसा स्रम कर छाइे ।। तदपि हौत मन अनंद सवाइे ।।
गहवर बरबन भयदायक ठौरा ।। ऊचित मलन मन लख अनुतोरा ।।
नहि चिंता चितवन कछु याकी ।। सुख की ऊठत तरंग सुबाकी ।।
यहि लछन सुखु आगम भाई ।। सुनी बडन ते बेद बताई ।।
होय मलन मन तनि अलिसाना ।। चिंता ग्रस्त असगुन प्रमाना ।।
यहि दुखु आगम की सब रेखा ।। स्रुति सास्त्र महि लेख सु देखा ।।१११ ।।

दोहरा: असदुखु मति ऊतसाह मन ऊमग परत आनंद ।।
याते निसु चैहोत अस चढहि चाऊ को चंद ।। ११२ ।।

चौपई: यहि सुन वहि चुप रहौ सिआनो ।। प्रात होत तब मम परहि बखानो ।।
बतरावत निस पहर बिताईं ।। तब सलाहि कीनी दुहु भाईं ।।
यहि गरबर कानन सुंनसाना ।। सिंघ बयाघ्र पसु बिचरत नाना ।।
ब्रिसचिक सरप कोल गज गैंडा ।। स्रिंगीन खीर पसुन को पैंडा ।।
असन होय हम सोय रहैं पर ।। सोवन मूरछन मरन बराबर ।।
प्रभ जानय कस बनय बनावा ।। बिती बात लख रहि पछुतावा ।।
याते यहै ऊचित सविधाना ।। तीन जाम कट करहि बिहाना ।।
डेढ पहर इक रहि सविधाना ।। पुन हुवै दुतिय धनुख धरबाना ।। ११३ ।।

दोहरा: याबिधि मतो मताय तब सोय रह्यो बभ्रात ।।
धनखु बान धर लघु तब हि भाँरी देत सुहात ।। ११४ ।।

चौपई: जबु कछु अलिक निसा की ढरी ।। सहज सुहावन कटि पर परी ।।
तब तात रुवर पर दुवै खंखी ।। बैठे हुते न लखियत अंखी ।।
भावी बस निज महि बतराहे ।। निज निज आमिख के गुन गाहे ।।
यहि लघु भ्रात परम मति माना ।। खग बानी की लखत पछाना ।।
बतरावत सुन स्रवन लगाहे ।। देखहु कहि बोलहि खग जाहे ।।
इक बोल्यो मम आमिख खाहे ।। इकु लाल मुखु से ऊगलाहे ।।
दोय जाम पाछे फल पावै ।। ताको दारिद + सकल परावै ।।
पुन इक मास बिते पसचाता ।। ऊगल्यो कर लाल बिखयाता ।। ११५ ।।

दोहरा: जब लग जीव हि जगत महि मास मास महि इक ।।
मुख सो निकरै अब सही अस मम मास बिबेक ।। ११६ ।।

चौपई: दुतिय कह्यो रे सुन खग राईं ।। कहा करत निज मास बडाईं ।।
जो मुहि मास खाहि बड भागी ।। दुवै घटिका महि वहि अनुरागी ।।
बनय बड छत्रपति राजकमावै ।। जनम रंकता तुरतु मिटावै ।।
यहि मति मान समझ तिन बानी ।। भाग आपने जगे पछानी ।।
धनख बान करि हुते तयारा ।। सबद भेदि सर तूण निकारा ।।
गुन सो जोड़ सरा धनक रख्यो ।। स्रवन प्रयंत आन लछप रख्यो ।।
गौ से मिल कमान कर काईं ।। मनहु काल तिन खबर सुनाईं ।।

ले प्रभ नाम बान तज दीनो ।। निस्को समय न कछु पर चीनो ।। ११७ ।।

दोहरा: पै म्रितु ऊठ पाछे परी परी बिधे तिस बान ।।
दुहुन फोर ऊहु दिस भयो परे ऊलट घर आन ।। ११८ ।।

चौपई: झटको कीयो दौर बिन देरी ।। ऊड्यो प्रान पंछी तिन केरौ ।।
कासट हुतौ जु दिन इकठायो ।। पावक लायक बाब बनायो ।।
जा महि समझी राज बडाईं ।। वहि खायो तिन मास अघाईं ।।
दुतिय भ्रात ह्वि धरयो सवारी ।। जागत रह्यो अनंद मन धारी ।।
राज लहिन ऊतसाह मनों की ।। आपहि सब निस दईं सु चौकी ।।
बडे भ्रात को नहि स्रम दीनो ।। भ्रमित जान तिहि खरो न कीनो ।।
पै भावी के पर बस नर है ।। याके बस नहि अबरन बर है ।।
हान लाभ या करि न कदा चित ।। हरिमाया वहि करत अनाचित ।।११६ ।।

दोहरा: चित्यो न काहू करत है यहि कुदरति को ख्याल ।।
रुकमनि बयाही क्रिसन जूं कंगना करि सिसपाल ।। १२० ।।

चौपई: यतन करत नर मति करि गाढी ।। माया हस्त सीस पर ठाढी ।।
वहि जो बिधना लिख्यो लिलाचा ।। वहै होत आवत निरधारा ।।
जौ नहि तिहि आदर कर लेवय ।। बरबस परारबध वहि देवय ।।
जब बाय स्रिस अंड ऊड गगन ।। नीड़ अवाची राखु गुपत धन ।।
पुन प्रभात पारधी धाइहै ।। रस मिलि कंघ जारु घर लिआइहै ।।
कन कबरन खग अरुन परन छबि ।। लजत लाल लख रह्ति दूर दबि ।।
प्राची पिंजरा ते कढ आयो ।। भयो प्रात निस राज परायो ।।
ऊठयो भ्रात बड हरि सुमरत मुख ।। प्राति क्रिया बस करी हरन दुख ।।
तब तिन वहि आमिख जो राख्यो ।। अग्र धरयो बड प्रेम पराख्यो ।।
बडे भ्रात वहि तत छिन खायो ।। और प्रसंग न कछू सुनायो ।। १२१ ।।

दोहरा: घरी दुवेक दिन चढे जबि लघु मुख ऊगलयो लाल ।।
तब तिन मन जानी भयो औरै कछु खियाल ।। १२२ ।।

चौपई: ाहो यतन मै कीयो घनेरे ।। हुतो बडे को भाग अंगेरो ।।
राज सिंघासन इिन के लेखा ।। हमहु भुलायो पुरख अलेखा ।।
तब वहि लाल ले भेट घर आगे ।। बिनति करी अति ही अनरागे ।।
निस की सकल कथा कही दीनी ।। प्रभू क्रिपा बड तुम पर कीनी ।।

सीघ्र सिंघासनि अब हरि देवहु ।। भेट दास की प्रथम हि लेवहु ।।
बड प्रसंन हुवे तब बड भ्राता ।। कंठ लगायो लहि कुसलाता ।।
सनमुख नगर द्रिसिटि यहि आवति।बहोपार नीकी मह लावत ।।
जाय तहा बिक्रय करि याको ।। दास लियावहि मिलहि जु ताको ।।१२३ ।।

दोहरा: रहो असुकन पास तुम करहु घरीक अवसेर ।।
नगर आपने ऊचित नही ले जावन यहि हेर ।। १२४ ।।

चौपई: वहा लोक लख चरचा कर है ।। राज दंड को अधिके डर है ।।
अस कहि बडो भ्रात चल गयो ।। लघ असुन पहि ठाढो रह्यो ।।
पहुचो नगर दुवार पर जाई ।। भीर बहुत जन की लखु पाई ।।
रीति हुती ता नगर मझारा ।। जात न्रिपति जब धरम दुवारा ।।
बैठत जाय प्रलोक सिंघासन ।। तब पाछे सब नगर निवासनि ।।
क्रित प्रलोकु पाछे सिंघासन ।। लै कर राज प्रधान प्रजासन ।।
ऊठ प्रभात सब जात दुवार पर ।। जेक कोऊ प्रथ आव तिहि अवसर ।।
तिहि न्रिप छाथ सिंघासन देते ।। आयत ताहि सीस धर लेते ।। १२५ ।।

दोहरा: भावी बस ता दिनु होतो यही समागम बान ।।
वहि अवसेरत दुवार पर यहि पहुच्यो छित आन ।। १२६ ।।

चौपई: राजसिंघासन लयो बिठाई ।। भेट दीन बड बजी बधाई ।।
सल के भई बजे पंचतूरा ।। धूमधाम मंगल बड पूरा ।।
राजभवन महि गयो आनंदित ।। भयो प्रजा सिव छिनकरि बिदित ।।
डोंडी नगर नगर बजाई ।। देस देस महि फिरी दुहाई ।।
अति आनंद मन सुख छायोहि ।। सुमरन भयो न भ्रात सकलदिन ।।
नाच गान बड अनद बधाई ।। रजनी हूं इहि भांत बिहाई ।।
प्रात सिंघासन पर जब बैठयो ।। सुमरन भ्रात परयो हिय बैठयो ।।
तत छिन पठे छरीदार नगन ।। सब समझाय ब्रिछ के लछन ।। १२७ ।।

दोहरा: या सरूपा को पुरख इक दुवेत रंगया रंग ।।
सीघ्र लियावहु पास तिन आय सजान अभंग ।। १२८ ।।

चौपई: यहि सुनि वहि दसु बीसु सिधाहे ।। दोय जाम लग बनहि फिराहे ।।
ढूंढ भाल थक बियाकुल गिरे ।। धूल छान कानन ते फिरे ।।

बिनति करी सब बन लखु आछे ।। पात पात कर सकल ढूढाहे ।।
सारा दिनि मग महि पग तोरे ।। पुरख मिल्यो न कहूं दुवे घोरे ।।
यहि सुन कछु हवे चिंता बस ।। लग्यो राज काज के पुन रस ।।
भूल गयो पुन भ्रात पिआरे ।। राज काज के लग बिवहारे ।।
वे वहि लालु जु बेचन आयो ।। जाप्रतापु सिंघासन पायो ।।
सुखदायक ताको पहिचानी ।। वे निसान पन भ्रात निसानी ।। १२६ ।।

दोहरा: त्याक्त समा मफरानित दिखरावति सम हाथ ।।
या प्रसंनता हेत लख सबे सेराहत साथ ।। १३० ।।

कबित: सब की सराह सुन मन उत्साहमाह चाह आह कर भूप की सी छाह मनही रहै।।
कह्यो क्यो गजाते लहनो परै न भेद सह्यो बियोग खेद भ्रात को मने सहै ।।
दहै देह दुखु सो वो सुख को समाज बनो अटपटो खेल सुनै कौन कौन सो कहै ।।
हार कर मार राखी डीठ करतार ओर जाने बिछार्यो है मिलाय है घुमू वहै।
। १३१ ।।

दोहरा: दुतिय प्रभात की क्रिया अबसुनये कथा प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयो चौदस चखल तरंग ।। १३२ ।।

इति श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति निरूपति प्रीति प्रकी कवि साहिब सिंघ बिरचिते जहाज को फटनो कुवर को बिपति क्रिया मै घटनो सिंघपुरख मिलाप ताको कता अलाप कथनं नाम चतुर दसो तरंग ।। १४ ।।

0-0-0

0-0

कबितु: कबहूं बिछोह कहूं मोह सो मिलत बनै कहूं म्रित्र द्रोह कहूं लोह परै द्रोही सौ।।
कहूं चढनाव जल सैर को बनाव कहूं बूड बहजावनो बचावनो यौ छोही सौ ।।
वाहिगुरु गोबिंदसिंघ रावरी मयाके रंग साध संग देखै दुखु दंग से बटोही सौ।।
तोही सो सरै जूझोही साज तरबेझी योही सिंधु जग मोही सौ बचायो मंद मोही सो ।।१।।

दोहरा: प्रेमपयोनिधि अंग महि ऊछरत अनिक तरंग ।। अबि
अबि प्रसंग लघु भ्रात को सुनो भयो कस रंगु ।। २ ।।

चौपई: बधक जे खग छिपे बचन के ।। बढ मति के पति बचन रचन के ।।
फंधिया कलित कंठ को किल कै ।। ग्रह स्निघ अनुरागी दिल कै ।।
वा अवसेरत तरे तरोवर ।। लिखत कथा लघु भ्रात जु दूसर ।।
रोम रोम अखिया कर तन मै ।। बडे भ्रात मग जोवत बन मैं ।।
औं चक परयो आन तहि इक खग ।। चरन चाप लौं ऊडयो गगन मग ।।
तिहि अघात भय डोर तुराई ।। बन मग लीनो बाज पराई ।।
लखहु अपरमित प्रभु की माया ।। इक ऊदर दुहु वन भव पाया ।।
इक लगन इकु छिन के जनमै ।। इक न्रिपति इक भ्रमत गगन मे ।। ३।।

दोहरा: प्रम जानय वहि तहाते ~~उलह~~ ऊडयो किती खग दूर ।।
कहूं इक तर पर ऊतर बैठो थक चक चूरु ।। ४ ।।

चौपई: तहा बैठ खग आप संभारी ।। भछन हेत करी मन त्यारी ।।
खिसर परयो छुट ताके कर ते ।। गयो धरन पर तातर वर ते ।।
कूप हुतो भावी बस तहा ।। नीर गंभीर पुरातन महा ।।
ता महि परयो दुखित बड बिआकुल ।। खग निरास ऊड गयो लखा कुला ।।
अहो रुदन बड काल कु फेरा ।। घटी जंत्र लख जत घनेरा ।।
हिय प्रकास ससि समि जिनि रूपा ।। डारत तिनहि बिपति कै कूपा ।।
पै गुन आयु बंधी द्रिढ जाकी ।। नहि नख घात लगी कछु ताकी ।।
नहि पंखन की परी झपेटा ।। नहि न चुभी कछु चौच चपेटा ।।५ ।।

दोहरा: हते परम तम रूप वहि कूप भयानक भाय ।।
अहि तामहि फनि मनि मनहु दमक ऊठयो तम छाय ।। ६ ।।

चौपई: वहि परिंद पर कर ऊडमर गयो ।। यह बेपरता महि पर रह्यो ।।
भावी बस कोऊ सैंनप भारी ।। भुल परयो वा बन महि मझारी ।।
कूप निरख कोऊ जल हित गयो ।। गुन सो बाध पात्र तहि दयो ।।
ऊन वहि गुनि गहि लीन निरख कर ।। मनहु आयु निज गुनहि परख कर।।
तबहि तिनहु कोऊ मानव जानी ।। बाहर कियो दया मन आनी ।।
निरख लगे भई जन भीरा ।। चकित रहे लख तिहि तसवीरा ।।
लेहु बधाई अहो चमू पति ।। दयो दास अनमोल जगत पति ।।
अति बचित्र गति यहि संसारा ।। अनिक रंग याको बिसथारा ।।७ ।।

दोहरा: इक दिवस तौं वहि हुतो सुक समान मम प्रान ।।
अधर मधुर तट भ्रात कै करत गंध रस प्रान ।। ८ ।।

चौपई: पूछन लगे गोल मिल सारे ।। इन कछु कह्यो समय अनुसारे ।।
अपनो भेव रंच नहि दीनो ।। हुतो नीति बित परम प्रवीनो ।।
तब तिन सैंनप निज ढिग राख्यो ।। दास कीयो सेवा अभिलाख्यो ।।
समय सबल लख सिर धर लीनौं ।। कछुक काल सेवा तिहि कीनी ।।
या महि वहि पहुचे निज थाना ।। इत याको जब मास बिहाना ।।
ऊगल परयो मुखते इकु लाला ।। लख सैनप तिहि भयो बिहाला ।।
ऊगलन की तिहि सार न पाई ।। लख्यो लाल इन राखु छपाई ।।
लोभ म लहर महि बह्यो अभागी ।। निस दिन द्रिस्टि लाल पर लागी ।।९।।

दोहरा: बडो अमोलक बस्त यहि याते लेहू छिनाय ।।
पै कछु सुगमनजानीये ऊचित करहु इकु दाय ।। १० ।।

चौपई: यौ नहि जानत मंद अधरमी ।। लैंपट लालच बस अप करमी ।।
नहि धन पावत को अकरम कर ।। लख्यो न साह भयो जग तस कर ।।
आग लहूं ऊड जाय तु जावय ।। नहि अधरम फल धन कर आवस्य ।।
लोभ प्रातापु बूझ नहि आई ।। लयो लाल वहि पकर छिनाई ।।
याको पकर जकर कर तसकर ।। न्यावक पास पठयो बड बसकर ।।
तासन कह्यो दास यहि मेरो ।। क्रय कित लयो सदा को चेरो ।।
कर अधरम इन लाल चुरायो ।। लालच बस अस करम कमायो ।।
याते ऊचित दंड लख करिये ।। जनम कलंक भाल यहि धरिये ।।११।।

दोहरा: जहि निरख सम आन हूं धरहि दंड की आन ।।
अस अकरम नहि करम कहि राज चक्र भय मान ।। १२ ।।

चौपई: न्यावक्र यहै कथन लख साची ।। ता सन प्रसन न किय कछु जाची ।।
पंडित बोल बिवसथा भाखी ।। कहहु बिवसथा सिंम्रितु साखी ।।
तिनहू ऊग्र लख्यो अपकारा ।। ऊग्र दंड हित कीन ऊचारा ।।
ऊतम सम साहस को अधिकारी ।। हस्त छेद मनु राज ऊचारी ।।
नहि निरणीत प्रसन कछु कीनो ।। हसत छेद लिख गयो कमीनो ।।
भावी बस तहि को नरपाला ।। सुत बिहीन तिह भवन कसाला ।।
इेक सुता ही हुती तक्न घर ।। नीतनिपुन गुन बिद्या सागर ।।
अरथी प्रत्यरथी तिहि देसा ।। जो काहू ते लह्त कलेसा ।।
सुमुखु जात तिहि राज दुलारी ।। न्यावका दि मिलि सभ दरबारी ।।
प्रगट करत तहि सकल बिवसता ।। पुन जो पंडितु लिखी बिवसथा ।।१३ ।।

दोहरा: राज सुता सुन समझ सबदु तिय बार निरधार ।।
पुनि निज मति अनुसार लख कहती दंड प्रकार ।। १४ ।।

तब वहि आयस हुवै परि पाका ।। ऊचित मुगावति करम बिधाका ।।
हरे हरे पुन वहि न्रिप कंन्या ।। जिहि समान जग जनी न अंन्या ।।
रूपु अपूरब कों बिरताता ।। भक्त चतुरु दस महि बिख्याता ।।
सुरी असुरी नागु कुमारी ।। सहस प्रान करि हुवै बलिहारी ।।
इेक द्रिस्टि वासिस बदनी पर ।। बलि बलि जात चकित चित हुवै कर ।।
अदभुत रूप पदमनी कामनि ।। पुन बिद्या महि सुघर सुभामनि ।।
धीरज मति पूरनि बुधु वंती ।। सूछम सारु ग्रह तगुन वंती ।।
राज दंड प्रवर तिन महि बल ।। ऊचित सिंघासन मति बड अवचल ।। १५ ।।

दोहरा: सुमन कली वासुमन तन चंपक बरन सरीर ।।
नहि अविलोकत मुदित मुखु स्त्री रितु राज समीरि ।। १६ ।।

चौपई: बांछित स्वाति बूंदि मुखु सुक्ता ।। मुक्ता भयोनप्रापति मुकता ।।
नारि धरम कौ मार बीथि माहि ।। वा अविध बार जसा द्रिस महि ।।
रछित राज भवन जम जूस की ।। काहू न्रिप मन साज सूस की ।।
भईं नगति अबलौ न निहारी ।। पाणि ग्रहणि नहि भयो कुमारी ।।
तासनमुख दोऊ वहि आने ।। अरथी प्रत्यरथी क्रित थाने ।।

प्रथम प्रसन सैनप प्रति कीनो ।। प्ररबोकति ऊन सब कहि दीनो ।।
जो न्याकक प्रति प्रथमु सुनायो ।। वहै यथावत पुन तहि गायो ।।
सुन समझी वहि राज दुलारी ।। इन जु कही सब बूर ऊचारी ।। १७ ।।

दोहरा: पुन ता दिस मुखु फेर करि प्रेर्यो ऊत्र बताय ।।
कवन हेतु निज ख्वास को लीनो लालु चुराय ।। १८ ।।

चौपई:– यहि प्रानन ते हुतो निरासा ।। नहि न हुतो जीवन भरवासा ।।
बिन बिचार ही ऊत्र सुनायो ।। रंच मात्र मन नहि संकाया ।।
त्वं न्रिप सुता प्रकासित मति है ।। हम न्रिदोख बंध हते बिपति है ।।
जो यहि कहत साच सिर मेरे ।। करहु राजयस जस मन तेरे ।।
यहि सुन वहि मति वंत सियानी ।। संसय अधिक परी मन जानी ।।
आज दिवस लख लखे जु तस कर ।। सनमुखु आइ बैधे कस बस कर ।।
नटन बिना नहि अंगीकारा ।। कियो कबहु हम द्रिगन निहारा ।।
इन आवत भाख्यो यहि साचो ।। यहि साचो हमरे मन राचो ।। १९ ।।

दोहरा: लख्यो परत है साह यहि कबहु न हुवै है चोर ।।
प्रभु जाने या क्रिय महि है कछु छपी मरोर ।। २० ।।

चौपई: सैनप प्रति कह्यो राज दुलारी ।। प्रात आईयो सभा मझारी ।।
ताहि पुरख को अपनि पौर पर ।। राख्यो नजरबंद धीरज धर ।।
राज क्रित्य कछु आन कमायो ।। पै मन महि वहि कारज छायो ।।
यहि जो बन कत परम रसीलो ।। हुतो सुधाकर सुध छबीलो ।।
रहत प्रभाकर निरख प्रभा दबि ।। लोचन कमल खिरत जन लख छबि ।।
भयो प्रकासत भाग नखित बर ।। राज सुता हिय चुभी द्रिस्टि वर ।।
निस के समय छिपंत बुलायो। धीरज दे बिरतंतु पुछायो ।।
साच कहहु भय संक बिहाई ।। मन महि चिंत करहु जिन राई ।। २१ ।।

दोहरा: यहि सुन ऊरध ऊसास भर बर्न्यो सकल बिरतंतु ।।
वा न्रिदोखु निज मोखु हित कह्यो आदि ते अंत ।। २२ ।।

चौपई: सुनत बिथा वहि राज दुलारी ।। ~~भयो-दूर-भ्रमतस-कर-तक~~ भई चक्रित पुनि आनंद भारी ।।
भयो दूर भ्रमत सकर ताको ।। द्रिढ हित प्रम मन तस कर ताको ।।
प्रात भई निज तात सभा महि ।। गई कुवरि पुनि संग लीइ तिहि ।।
बिनति करी दोऊ कर जोरे ।। चिरंजीव जू प्रभ पित मोरे ।।

जगत प्रन पूज ज्य गन जीवन नाथा ।। घस हि छिती सु दुवार झिसु माथा ।।
नगर नियाक जो परधाना ।। पुन पंडित जो घरम बखाना ।।
बिन नीरणीत न्यांव तत सारा ।। करत प्रजा पर दंड करारा ।।
यहि सभ हरि के जीव अमानत ।। दंड अनुचित परम यहि स्यानत ।। २३ ।।

दोहरा: अंत ऊत्र कस देहु गे चढ प्रम के दरबार ।।
डरत न पुन का भाख है करहि जु त्रि त्रिधारु ।। २४ ।।

चौपईं: अति अनुरथ की सुनहु कहानी ।। अदमुत ब्रिथ दु काल बिहानी ।।
उल ऊचित वंड अधिकारि जु दुखित ।। मिल्यो लाल ताको बिनु दुखित ।।
बिन दुखित को दूखित कीनो ।। हस्त छेद आयस लिखु दीनो ।।
अस कहि दोऊ समुखि दिखुराइ ।। तिन मुख सो पुन हाल पुछाइ ।।
सुनत सं त्रिप रह्यो सभासन ।। ऊगल लाल नर नहि आवत मन ।।
ब्रिघ अवस्था हुतो मु आला ।। पुस्ट हुतो कछु मति तिहि काला ।।
नहि बिचारु महि यहि कछु लागी ।। ऊगलत लाल पुरखु अनुरागी ।।
सभा सहित मिलि सोच बिचारा ।। करत रहे जब बरिबारा ।।२५ ।।

दोहरा: राजसुता पुन बिनति किय तात सुगम यहि बात ।।
ऐक मास भर राखिये याहि बंद बिखयात ।। २६ ।।

चौपईं: जौ पुनि लाल ऊटल मुख डारौ ।। तौ साचौ है परम बिचारो ।।
सुकति सचाईं को बर मुकता ।। कत बिन आब करिय अनयुक्ता ।।
नातर जब हि मात बितावैं ।। निज क्रिति के तुल को फल पावें ।।
हसत छेद काहसत परय अब ।। जस जानहु तस दंड करहु तब ।।
त्रिप यहि सुनत सुता की बानी ।। भयो आनंदित नीकी मानी ।।
सकल सभा जन हरखत भइे ।। सदसा बास ताहि मति दइे ।।
त्रिप ताको निज द्रिस्टि अगारी ।। द्रिस्ट बंद करि राख संभारी ।।
सैनप को रह राज दुलारी ।। पठयो भाक सी बंघन डारी ।। २७ ।।

दोहरा: कथा संक्षिप सुमास वहि बिरयो झिसी बिधि ताही ।।
प्रेम अधिक ह्यि अगनि वत मड़क ऊठी मन चाहि ।। २८ ।।

चौपईं: तरफरात मन राज सुता को ।। साचो करय क्रिसन अब याको ।।
यामहि बिनति करी त्रिप सो तिन ।। काल दिवस है लेहु सकल गिन ।।
प्रभु माया के रंग बिचारो ।। लाल बदन ते परै निहारो ।।

[illegible]

भयो प्रात न्रिप सभा बनाईं ।। भई समाजन सभु समुदाईं ।।
सभ के लखत मजू सबदन ते ।। ऊगल्यो लालु सुभाग सदन ते ।।
लखन हार बिसमित सब ठाढे ।। रहे चकित जनु चित्रन काढे ।।
अति आनंद मन राज दुलारी ।। जाकी प्रभ सम बात सवारी ।।
सैनप कूर निरख न्रिप रिस भर ।। तत छिन ● ताको सरब स्वहर कर ।।२६ ।।

दोहरा: दयो ताहि साचो निरख लालुन सम सम मान ।।
नगर निकारयो ताहि को लोभी लंपट जान ।। ३० ।।

चौपई: पुन वाकी सुंदरता अर गुन ।। ऊच नीच मन हरन निरख सुन ।।
राज सुता की रमज पछानी ।। बिनति करी न्रिप निकट प्रमानी ।।
महाराज सेवा अधिकारी ।। लाय कहै यहि नर अवतारी ।।
सेव करन की मनसा राखत ।। चरन पखारन मन अभिलाखत ।।
न्रिप हूं याके सत भाखन पर ।। हुतो प्रसंन करम मन बच कर ।।
यथा किसू कवि को यहि बचना ।। प्रभू प्रसंन ताहित सत बचना ।।
सूधे बच ते प्रभु हि प्रबूधे ।। मूलत लखयो न मग पर सूधे ।।
हुवै क्रिपल न्रिप राखौ तीरा ।। खान पान पोखन कर बीरा ।।
कछु काल महि लही बडाईं ।। सभा ठौर अधिकारित पाईं ।।
क्रिपा पात्र नित प्रति न्रिपाल को ।। भयो जग्यो जब भाग भाल को ।। ३१ ।।

दोहरा: मास मासु प्रति लाल इक ऊगल न्रिपति को देत ।।
दिन दिन मुख पर अरुनता सभा जनो महि लेत ।। ३२ ।।

चौपई: पावन लग्यो अधिक अधिकारा ।। सभा सहित न्रिप को अति प्यारा ।।
इक दिन मिल सब राज प्रधाना ।। मंत्री मुख सेवक सु पुराना ।।
न्रिप समेत मिल मंत्र बिचारी ।। प्राणि ग्रहण की कही तयारी ।।
वहि अबिध मुकता बरनी को ।। छत्र धारिता राज लरीको ।।
लाल अमोलक वा गुन साथा ।। राज सुता संग भयो बिवाहा ।।
।। प्रभ क्रिपा तबड लहि ऊतसाहा ।।
यहि दोनहु प्रेमी रस पूरन ।। बति त्रिसंस आनंद लहि तूरन ।।
काल बितीत करन अस लागे ।। सुखद समे जस लहि अनुरागे ।। ३३ ।।

दोहरा: पै यहि राज सभा सदा रह्त निरंतर भाय ।।
समय पवाय बड भ्रात को पुरखु पहूच्यों आय ।। ३४ ।।

चौपई: कछु कराज बिवहार मझारा ।। पठ्यो हुतो या न्रिप दरबारा ।।
कर प्रणाम दै भेट बहोरी ।। बैठ्यो लहि अधिकारित ठौरी ।।
कुसल प्रस्न आदिक के पाछे ।। चले प्रसंग आन बहु आछे ।।
मनि मानिक को चलो प्रसंगा ।। लाल लरी को कथन सु रंगा ।।
ता महि तिन कर जोरि उचारी ।। महाराज इक बिनति हमारी ।।
हमरे प्रभ न्रिप कोस लाल इक ।। परम अमोलक धरनि माहि इक ।।
अदभुत है बसरु वहु अस सुरंग को ।। और दुतिय कहूं ताहि ढंग को ।।
आज दिवस लग काल जौंहरी ।। सूर ससी अैनक द्रिग करी ।। ३५ ।।

दोहरा: फिरत रात दिन मास पख बरख बिते बहु रंग ।।
ताहि संग को तो कहा लख्यो न तिहि पासंग ।। ३६ ।।

चौपई: या सुनि पोत दारु बुलवाई ।। न्रिपति कोस ते लाल मंगाई ।।
दस कु किधौं द्वादस तिन आनी ।। आगे धरे द्रिस्ट निकटानी ।।
वहि देखत चक्रित हुवै रह्यो ।। मूक भयो कछु बहुर न कह्यो ।।
हुतो परी रव्यक वहि मति माना ।। बहुत काल लख रह्यो हराना ।।
बहुर बिनति कर जोर सुनाई ।। हमाराज अदभुत लख पाई ।।
रंग रूप तुल मुल इकु सारा ।। भेद रंच नहि परत बिचारा ।।
है परंतु यहि भेद जु इक हि ।। वहां इक यहा इक ते इक हि ।।
अदभुत है इक ते इक सुंदर ।। परम सुहावन सुनिधि समुंदर ।। ३७ ।।

दोहरा: यहि बचन सुन न्रिप बरत बहि कह्यो किय हिम मतात ।।
इक मास महि लाल इक उगलत मुख बिख्यात ।। ३८ ।।

चौपई: जहि चक्रित चित या दिस देख्यौ ।। आपन भूप के रूप परेख्यौ ।।
प्रभु माया बिअंत टहिराई ।। मति बितरक ते दूर बताई ।।
बंदा भयो निज न्रिप ढिग आयो ।। समाचार तहि को सु सुनायो ।।
इन को तौ यहि नेम सदाको ।। हुतो लाल महि प्रेम अथा को ।।
जब जब आय सिंघासन बैठन ।। वहै लाल कर राख अमैटत ।।
याको लख सुमरन वहि आयी ।। तबु प्रसंग तिन वहै चलायो ।।

हे प्रभु तुम हि लाल यहि प्यारो ।। इक छिन करत न इत उत नियारो ।।
या बिन धरौ न म चरन सिंघासन ।। बिनति करहु प्रभ लहि अनु सासन ।। ३९।।

दोहरा: जाहि न्रिपति ढिग मैं पठ्यौ गयौ हुतो इहि काल ।।
दास तहा औरय कछू लख आयौ इकि थाल ।। ४० ।।

चौपई: खानु जवहार लल रतन निधि ।। सकति नही वहि काज करै सिधि ।।
नख सिख लाल लरी की मूरति ।। राखत है ढिग नर की सूरति ।।
यहि सुनि न्रिप पूछौ बिरतांता ।। कहु बिस्तार सकल सिधांता ।।
तिन तब सकल कथा बिस्थारी ।। कही आदि ते अंति निहारी ।।
ता न्रिप पाक्न मनि के धामा ।। इक जमात ताको अभिरामा ।।
इक मास महि इक लाल अस ।। मुख सौ ऊगलत किहूं भागु बस ।।
दस दुवादस मुहि लाल दिखाइ ।। इकते इक अदभुत लख पाइ ।।
पुरखु सिरौमनि हूं जबु देखयौ ।। मनहु आपु की मूरति पेख्यौ ।। ४१ ।।

दोहरा: किधौं सहोदरि अनूज तुम कै रावर अवतारु ।।
कौतुक निरखत जगत कौं दुवै सरूप धरपार ।। ४२ ।।

चौपई: सुनत पते की बात जु पाईं ।। निसचय जान लयो मम भाईं ।।
तत छिन लिख्यौ पत्र ता न्रिप प्रति ।। प्रेम पंथ बहु प्रगट कीयो अति ।।
सुनी कथा रावर जमात की ।। छुधा सैन गई दिवस रात की ।।
कछुक दिन नहि ता इत निज ताता ।। बड भागी जो जग बिख्याता ।।
पटहु दरस हित हमरट तूरन ।। प्रीति पुरातन ते हुवै दूरन ।।
हमहिं दरसोको चाऊ घनेरे ।। लिखन कथन महि परतन धेरे ।।
अस लिख गुपत पत्र इक आना ।। लिख्यो भ्रांत प्रति करि सनमाना ।।
तव बियोग महि आज दिवस लग ।। राज समाज सिंघासन या जग ।।
फटी चटाई जनम रंकता ।। मानत ताते बड कलंकता ।।
आज सुनत सुख की तव सारा ।। द्रिगु प्रकास मन आनंद धारा ।। ४३ ।।

दोहरा: ऊचित यहे अब लखत ही पत्र परहु पथ बीर ।।
औ र पते कछु प्रिथम केलिखे रचित तदबीर ।। ४४ ।।

चौपई: दोऊ पत्र प्रतिहार हाथ दै ।। बहुर पठ्यो सब सोज साथ दै ।।
यहि इक न्रिप बरीस प्रति दीजै ।। दुतिय गुपति तान रहित लीजै ।।
जाहु सीघ्र मग बिल मन करी यहु ।। यैक बार मुहि आन दिखरी यहु ।।

पवन बेग प्रति हार सिधायो ।। शीघ्र नगर महि पुन वहि आयो ।।
दयो पत्र न्रिप सार दूल प्रति ।। गुप्त दयो ता प्रति सु बिसद मति ।।
प्रेम पत्र वहि निरख भ्रात को ।। ऊमगयो निधि ससि प्रस्न रात को ।।
तत छिन बिदा न्रिपति सो पाई ।। राजसुता हूं संग सिधाई ।।
चढ जहाज जल मग हुवै धायो ।। सीघ्र हेतु भूमि तजायो ।। ४५ ।।

दोहरा: फतो ल्यौं प्रति हार सो देस नगर को नाम ।।
निसि दिन धावत बेग बड करत न छिनिक मुकाम ।। ४६ ।।

चौपई: काल चक्र के नौतन रंगा ।। जनम कुटिल याके भ्रबभंगा ।।
अनिक चाल पर भ्रमत सदा यहि ।। पलटि जात पल इेक फरक महि ।।
कहा कहो सुन राज कुमारा ।। जब तट रह्यो कोस दस बारा ।। फुटा
फुटौ जहाज पर्यो घुमरा महि ।। जिहि जिहि काल हुतो पुन ता महि ।।
गयो रसातल नीर गंभीरा ।। पर्यो न पार आयु निज तीरा ।।
जाकी आयु हुती कछु ऐसा ।। बहत बहत बहु सहत कलेसा ।।
नाव डाँड की कछु कर आई ।। लगे तीर बहते कहूं जाई ।।
फैल परी यहि दुह कर सारा ।। नगर नगर घर बगर बजारा ।। ४७ ।।

दोहरा: बडे भ्रात हूं बात यहि सुनी दुखित अकुलाय ।।
सहसा सहस सवार बर पठे सीघ्र अतुराय ।। ४८ ।।

चौपई: नवका अनिक पठी मघ सागर ।। बूडत बहत मिल्यों कोऊ जाकर ।।
गहहु बेग सहकत म्रितु जीवत ।। ल्यावहु मम हजूर दुख पीवत ।।
दाहि दिसि दौर परे बलवाना ।। फकरन हेत यतन कर नाना ।।
बड पाँरख कर भाल कराई ।। राज सुता तिनि के करि आई ।।
पै वाको कछु खोज न पायो ।। हुवै निरास नर झुंड फिरायो ।।
वहि तौ कर चंडोल सवारा ।। ले अइे निज प्रभु दरबारा ।।
वहि नहि मिलो माल बहु कीनी ।। बूडो बह्यो परो नहि चीनी ।।
न्रिप बियोग निधि ~~क~~ घूमर माही ।। फस्यो न परै पार जा माँही ।।४६।।

दोहरा: राज सुता बैठी दुखी साथर सोक बिछाय ।।
बिहु सिंधु दुखु लहर मैं ऊरफ परी मुरफाय ।। ५० ।।

चौपई: ताको पुन ब्रितातु यहि भयो ।। इक तखते पर बहत सु गयो ।।
कई दिवस लग बहत बहत वहि ।। छुधा पिपासा सहति सहति बहि ।।
रहे प्रान भावी बस सेसा ।। सहे अनिक तन कसट कलेसा ।।
लग्यौ इक तट जाय कहूं तब ।। ऊतर परयो जल तजि निकरयौ जब ।।
कहूं रह्यो कछु सुरत संभारी ।। मग पुछाय पुन चल्यो अगारी ।।
प्रापति भयो नगर महि जाईं ।। नगर इंद्र तट सार कराईं ।।
तत छिन सुन सनमुख बुलवायो ।। बियाकुल बिथित हाल वहि आयो ।।
बहुत काल जो गयो बिताईं ।। पुन तन की दुरदसा लखाईं ।। ५१ ।।

दोहरा: ~~सम्प्रत्र~~
यथा ।।
इती देर महि मुहि मिलौ दगा दिखाकर मीत ।।
वा लंगर की जब कि मुहि रही न सूरति चीत ।। ५२ ।।

चौपई: पलट परे सब बंद बनावा ।। बिपति परी बड कस्ट उठावा ।।
यहि बन बिपति बियोग बिचरतौ ।। छुधा पिपासा बस दिन मर तौ ।।
वहि सुख संपति राज सिंघासन ।। भेद रात दिन गगन धरासन ।।
बोल पठी तब राज दुलारी ।। भली बुरी निज कछु न ऊचारी ।।
वहि हूं चितवन महि लख ताको ।। रही चकित थक चीनन साको ।।
तब तिन कही दसा यहि मेरी ।। करी बिपति जल बहन घनेरी ।।
इक जाम महि ऊगल हुलाला ।। तबु तुम सभ कौ परय संभाला ।।
न्रिपतो सुन निसचय मन आनी ।। सही भ्रात मम परयो पछानी ।। ५३ ।।

दोहरा: कूर हुतो इक जाम को कबहु न करत सकेत ।।
राज सभा महि सकति नहि कूर कथय अस हेत ।। ५४ ।।

चौपई: तब बोली वहि राज दुलारी ।। मति तीछुन अति प्रगट तिहारी ।।
इक बुझारत पूछहु तोही ।। देहु सीघ्र जब ऊत्र सु मोही ।।
तब संसय सब दूर परावे ।। राज सभा महि सुघर कहावैं ।।
कहुहु भला वहि कवन पदारथ ।। सभै खात मानव सुनि जारथ ।।
आश्रम बरन यवन सभ खावत ।। भेद न मानत नहि संकावत ।।
पुन ताकौ जब काटिय सीसा ।। कोऊ छियतनहि हम द्रिग दीसा ।।
तिन मुसकाय कह्यो न्रिप जाईं ।। तव सुगंद यहि काक ठिनाईं ।।

वहि अकुलाय ऊठी सुन बानी ।। संक पंक पर बाह बहानी ।। ५५ ।।

दोहरा: चिलवन चक्र मुखु दीप की बन पतंग बलिहार ।।
बार बार पग बंद कर कीनी बहुत जुहार ।। ५६ ।।

चौपई: रह्यो चकित चित भ्रप निहारी ।। कहा समझ यहि राज दुलारी ।।
पट तज याके सनमुख आई ।। कवन बूझ हम समझ न पाई ।।
यहि सुन मुसक कह्यो लघु भ्राता ।। आप न समझे प्रभि यहि बाता ।।
वहि सुगंद है सुभग पदारथ ।। सभहि खात है जाहि निजारथ ।।
प्रथम सुबरन ताहि कोसीसा ।। ता बिन गंद सु बिस्वे बीसा ।।
छिय तन कोऊ गिलान जनि कहै ।। या प्रकार सु बूझहु बनि श कहै ।।
यहि सुन न्रिप तात छिन ऊठ धायो ।। आनुज पकर निज गरे लगायो ।।
या महि जाम सु गयो बिहाई ।। ऊगलो लाल तु बजी बधाई ।। ५७ ।।

दोहरा: मिले बियोगी परस पर परमा नंद लहि सार ।।
याही बिधि बिछुरे सकल मिलहु क्रिपा प्रभु धार ।। ५८ ।।

चौपई: जो जाके हुवे बिथित बियोगी ।। प्रभु चाहै वहि बनय संयोगी ।।
यहै महातम या कहानि को ।। पढै सुनै जो इस बखान को ।।
हमरो तुमरो यहि संबादा ।। प्रबा सहित सुनय करि यादा ।।
ता प्रति हमरो यहि बरदाना ।। प्रभु किरपात निसचय मन माना ।।
मीत बंधु सुत पिता मात को ।। पिय पियारी सेवक सु भ्रात को ।।
बिरह जनित दुख निकट न आवै ।। प्रथम होय तब तुरत परावै ।।
जो गी कथा समापति कीनी ।। कह्यो कुवर प्रति तुम मन चीनी ।।
कस कस बिपति बियोग ऊठाइ ।। क्रिपा करी प्रभु बहुर मिलाइ ।। ५९ ।।

दोहरा: रे बाबा अस कठिन नहि सुगम नहै छिन माहि ।।
पुरख प्रयतनी नाह्यि धीर भीरु हुवै नाहि ।। ६० ।।

~~चौपई:~~ यथा कबीर जी ।।
झंझा निग्रह सनेहु करि न्रिवारो संदेहु ।।
नाही देखन भाजी गेपर मसि आन पइह ।। ६१ ।।

चौपई: जंनि ढूंढो तिनि तत छिन पायो ।। स्रुति सिंम्रिति संतन मत गायो ।।
छित ते निकटि ठौर तव मीता ।। लख्यो परख सु बसुनरे मीता ।।
पै अनीत है प्रगट भाखनो ।। भेद गुरू को गुपत राखनो ।।

मूक रहन को जग असथाना ।। बहुर बुरो है करन बखाना ।।
इतो काल तुमु मम ढिग रहौ ।। पूरन काज हुवै चुको लहौ ।।
प्रान पात्र पूरन अब मेरो ।। इेक पलक महि परत निबेरो ।।
यहि तन धर समाधि महि बीरा ।। जाहु ऊत्र दिस को तबधीरा ।।
अस कहि कछु सुभ सीख सुनाईं ।। जगत प्रभाकर द्रिग झरलाईं ।।६२ ।।

दोहरा: परम कस्ट यहि दुखु प्रभू किहि बिधि सकौं सहार ।।
हिय पखान कब बन सकय तव बियोग दुख भार ।। ६३ ।।

चौपईं: मो पर क्रिपा अैस तुम कीनी ।। जान छीन जम ते रख लीनी ।।
मीत मिलन की आस बंधाईं ।। परम भीर महि भइे सहाईं ।।
निज जीवत तातन बड निधि को ।। धरहु धरनि कस जीवन सिधि को ।।
ता बियोग दुख ताप अगनि महि ।। तोख बसन करि छार लगनि महि ।।
अस कहि ऊमग ह्रिदय अस रोयो ।। नख सिख बसन बरस द्रिग धोयो ।।
वहि जोगी लख अस ऊद योगी ।। भयो तवन को प्रेम बयोगी ।।
कह्यो कठिन अवसर भयो पूरन ।। रहे कंठ आस्वास सपूरन ।।
नातर बनत तिहारो संगी ।। दुख सुख महि मिल चलत प्रसंगी ।। ६४ ।।

दोहरा: भला अंत इिक संत कोलटकालेहु मतंत ।।
अटका रहय न काज कछु जो प्रभु चहें अनंत ।। ६५ ।।

चौपईं: ~~ए~~ अस कहि इिक अस मंत्र सिखायो ।। जो सरीर निज चहि पलटायो ।।
ध्यान कियो पढ वहि हुवै जावै ।। देव दानुज नर खग म्रिग भावैं ।।
यहि सिखायहरि हरि मुख भाख्यो ।। मन ले श्री गुरु चरण राखयो ।।
राम राम कहते रम गयो ।। श्री बिकुंठ पंथी वहि भयो ।।
जगत प्रभाकर रोय पुकारयो ।। बार बार चरनन सिर मारयो ।।
बियाकुल रुदित सुनत सब धाइे ।। यहि गति निरख सकल बिसमाइे ।।
गुरू गुरू जी कहि ~~कर~~ बहु रोइे ।। प्रापति रंच ऊत्र नहि होइे ।।
तन समाधि इिस थित सब देखहि ।। कथन सुनन ते पार परेखहि ।। ६६ ।।

दोहरा: अबस जान मन धीर धर राज कवर मन माहि ।।
हरि माया बलवान लख चिंतनीय कछु नाहि ।। ६७ ।।

यथा ।। स्री गुर मुख वाकु ।।

चिंता ताकी कीजिऐ जो अनहोनी होइ ।।

यहि मारग संसार को नानक थिर नही कोइ ।। ६८ ।।

दोहरा: जाबिधि ऊन जोगी सिख दीनी ।। ता अनुसार क्रितया सभ कीनी ।।

सीचि सुगंध सिनान करायो ।। सुकल बसत्र ऊपरि इक पायौ ।।

सब समाधि की करी त्यारी ।। यथा सनातन रीति निहारी ।।

पधरावनहित जब कर पायो ।। बिना बसन कछु हाथ न आयौ ।।

चक्रित ह्वै बड सिध पछानी ।। धर्यो बसन ही तब तहि आनी ।।

रच समाध ता पर नीकी ।। पूजन करी यथा रुचि जीकी ।।

पुन पाछे सेवक अधिकारी ।। जा परु हुती क्रिपा तिहि भारी ।।

वहि मुंद्रा कफनी पुन सेली ।। थाप महंत ताहि गर मेली ।। ६९ ।।

दोहरा: औरु जिते चेला हुते ताके कर पकराय ।।

सेवा महि ठाढे कीइे ताके चरन लगाय ।। ७० ।।

चौपई: वहि बी परम पुरखु अवतारी ।। ह्यि ते ऊमग प्रेम बड भारी ।।

ऊन सब सौ नाँतन ऊपदेसा ।। दीयौ दया कर नाथ निदेसा ।।

सुनहु तात यदपि गुरू पूरन ।। प्रगट द्रिस्टि सौ गुपत सरूरन ।।

तदपि प्रकास सकल घट माही ।। वहिसति गुरू पूरन सभ ठाही ।।

पत्र पुसप तरुन फल दल कारन ।। पुन मसीत मठ ठाकुर द्वारन ।।

पूर रह्यो परगट सभ जाईं ।। झीना द्रिस्टि करि परत लखाईं ।।

यथा बचन यहि ग्यान वान को ।। हरि तपरन सभ ऊत मु जान को ।।

पत्रे सभ बिदांत ग्रंथन के ।। करन हारु की रति संबनके ।। ७१ ।।

दोहरा: दिस्टि हेत द्रिग चाहीये स्रवन स्रवन की टेक ।।

सब सिकता कन महि चमक दमकत दिन मनि इेक ।। ७२ ।।

यथा स्री गुरू मुख वाक ।।

जल थल मही अल पूरिआ स्वामी सिरजन हारु ।।

अनिक भातु ह्वै पसरिओ नानक इेकंकारु ।। ७३ ।।

चौपई: माया रचित चित्र संसारा ।। इेकु पुरखु को सकल पसारा ।। आप आप मै

आप आप मै खेल बनायो ।। आप अलख सब ठौर समायो ।।

कोकिल कंठ बैठकहूं कुहकत ।। कुहू कुहू कमरी कहुं दुहकत ।।

ताही के बिचार महि रोवत ।। बिरह बिथित प्रान कहू खोवत ।।
जाके चिंहु बदन पुन तन मैं ।। पुन जड़ जीव भारतरबन मैं ।।
जो बोलत हैं नाना बानी ।। सब हरि को सुमरत प्रम जानी ।।
तरु समाधि कर सम हरि ध्यावत ।। सिला पखान ध्यान हरि लावत ।।
या पर श्री गुरु ऊकति प्रमाना ।। कह्यो प्रेम रसु रंग रसाना ।। ७४ ।।

यथा: जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरू सो बिन हरि जापत है नही होरु ।।

स्वैया: अब काहू को बंद कै मंदर मै हरि मंदर को नहि भेव दियो ।।
पुन काहू दिवाले ह्यिाले बुलाय दिखाय प्रकासित देव दियो ।।
भटकायो कोउ: हज काबे मसीत को गंगबानर सिं सेव कियो ।।
मन टोह नीकै जिन टोह करी घर बैठे ही बोहथ खेव लियो ।। ७५ ।।

यथा ।। अमीर खुसरो ।।

दोहरा: जिन ढूढा तिन पाइिया गहरे पानी पैठ ।।
मै बौरी बूडन डरी रही किनारे बैठ ।। ७६ ।।

चौपई?: या जुग महि निज मत मग झगरे ।। झक झक मरन न हरि मग डगरे ।।
यहि आछो यहि बुरो न आछो ।। परम हान निसफल सब बाछो ।।
वहि सति गुरु प दातार गुसांई ।। है असंस पूरन सब ठाई ।।
परे कस्ट मन को थिर राखन ।। दूख दरद महि अनंद पराखन ।।
इक अनूपम वहि निरंकारा ।। करय मूढ मति जो अहंकारा ।।
संत भगत जगतार कमानो ।। परम मीत निज रक्षक जानो ।।
सति पुरखु सति गुर हरि मूरति ।। सुमरन रख सब रंग न पूरति ।।
भवतु न भवतु प्रभुवता जग की ।। चिंतन बिभव पराभव ठगकी ।। ७७ ।।

दोहरा: प्रेमी संतन को ह्रिदय म्रिदु बुंद बुद ते जान ।।
हरि निवास आवास वहि क्षुभित न कीजिय मान ।। ७८ ।।

चौपई: इक सुमरन सांई को सच है ।। और सकल त्रिस्ना कपच है ।।
अस कहि कथा समापति कीनी ।। वे सुरतों को सुरति सु दीनी ।।
जब या संगति ते अवसर लहि ।। भयो कुवर तब त्यार चलन कहि ।।
पुन महंत ने कछु अटकायो ।। कछु काल तहि और बितायो ।।
पुन जिहि ओर कह गयो योगी ।। चल्यो कुवरि तिहि ओर बियोगी ।।
गिर सो ऊतर तरे पग धारा ।। कछूक दूर पुन चलयो कुमारा ।।

मग महि मिलौ इक नद भारी ।। सेतु तरी नव कान निहारी ।।
खोज करी मग खोज न पाईं ।। थल घर नाक्न तुमुरि लखाईं ।। ७६ ।।

दोहरा: पै इक देख्यौ लालु तहि दमक्त ऊपर नीर ।।
आक्त बहुत प्रबाह मैं वा नदी नीर गंभीर ।। ८० ।।

चौपईं: यहि देखत मन महि बिसमायौ ।। कौतुकु तरख पखान लखायौ ।।
बहि बहि गयो औंर इक आयो ।। ता पाछे इक औंर लखायो ।।
कछु कछु अंतराय महि यौंही ।। आक्त लखे अनंत सुति यौही ।।
अति बिसमाद भयो मन याके ।। नइ रंग माया के ताके ।।
हे प्रभ क्यो कर मिलय भेद यहि ।। तब मुहि मन को मिटय खेद यहि ।।
बस संसय कर तौ निज घट महि ।। चल्यौ लखत कौतुक तट तट महि ।।
दोय कोस मग नाख गयौ जब ।। लख्यो इक परकार ऊच तब ।।
वहि प्रवाह ताके अंतर ते ।। निसरत लाल युकति यंतरते ।। ८१ ।।

दोहरा: मग प्रवेस पाक्त नही फिर निरख्यो चहु ओर ।।
नगन जटित बड कोट वहि इवार चह्लि बड घोर ।। ८२ ।।

चौपईं: तब वहि मंत्र सिध जो दीनो ।। पढ कोकिल तन ध्यान जु कीनो ।।
बन्यो छिनक महि लईं ऊडारी ।। सिखर कोटि चढ द्रिस्टि पसारी ।।
अति बिसाल बड ठौंरु सुहावन ।। बाग सघन सुंदर घन सावन ।।
पै भियान सुंनसान परयो वहि ।। जीव मात्र की गंध न ता महि ।।
मध इक बंगला बचित्र बड ।। चित्रत चामी करमानक जड ।।
वहि प्रवाह निसरत तर ताके ।। जा महि लाल बह्लित बड बाके ।।
चहुं ओर सब सूंन सथाना ।। मारुत त्रिबिधि बहत मन माना ।।
ऊतरयो जाय तहा चिंता तुर ।। पलट रूप अपनो सह सातुर ।। ८३ ।।

दोहरा: बरयौ बंगले महि हठी लखन हेत तिहि भेव ।।
मंत्र जंत्र जिंन परी कै भूत प्रेत कै देव ।। ८४ ।।

चौपईं: जगमागात मनि मानक जरे ।। कंचन रचित चित्र रस भरे ।।
इक अदभुत तहि लख्यो तमासा ।। कनक मंच बिछुरह्यौ सुखासा ।।
हरित मनी के चारिहु पाइे ।। आज लगे सुर राज न पाइे ।।
तापर कोऊ सैनकर रहयो ।। पस मं बर ताने पर रह्यौ ।।
निकट तिपाईं लाल जराऊ ।। जाहि निरख लोभय सुर राऊ ।।

ता पर सुमन गुछ दुवै बरुने ।। फुल्ति सेत कछु कछु बड अरुने ।।
यहि निरभय पग दुवँक बुढाईं ।। मरन जीयन की संक मिटाईं ।।
निकट जाय वहि बसन ऊठायो ।। अति अदभुत कौतुक निरखायो ।। ८५ ।।

दोहरा: परी तिया इक परी सी सुमन छरी सी दीस ।।
अंगु सुहावन सगल सब पै तन हैं बिन सीस ।। ८६ ।।

चौपई: लख बिसमाद भयो ह्यि धरकत ।। अंग अंग कापत मन भरकत ।।
करत बिचार अहो अन्याईं ।। कवन अनरथ कु क्रिया कमाईं ।।
किन यहि कीयो निरखईं अस क्रित ।। अबधि नारि स्रुति सिम्रिति माखित ।।
पुन यहि अस तिय राज सिरोमन ।। आदि बरन सुचि रस की पदमनि ।।
प्रेम अवधि पर परम मनोहर ।। कटौ सीस कनि अहो दुस्ट तर ।।
चकित चहूं दिस तब बिसमित अति ।। बहरावत तन मन ह्यि कांपित ।।
छत की ओर द्रिस्ट जब परी ।। छीको बंधो संग इक करी ।।
ता पर धरयो सीस हूं देख्यो ।। तले प्रवाह नीर को पेख्यौ ।।
रकत बिंदु ताते जो परत ।। जल महि लाल बनत पुन तरत ।।
यदपि पखान सु तरन असंभव ।। प्रभ माया महि सभु कुछ संभव ।। ८७ ।।

दोहरा: यहि अदभुत लखि कर कहयो धंन प्रभू करतारु ।।
अघटन घटन पाटीय सीमा यों सिरजनहार ।। ८८ ।।

चौपई: निसचय यहि अभिचार रचित सब ।। जंत्र मंत्र को परयो अब ।।
फस्यो आन फिर अस कु ठौर महि ।। मंत्र सकति की सिंधु भौर महि ।।
निकट जाय जब सीस निहारयो ।। सभा ससि कला को निरधारयो ।।
तब तौ बिकल परयो ऊलटाईं ।। सीस पाव की सुरति गवाईं ।।
फटन लग्यौ हठ कर हीयरौ ।। छुटन लग्यो तन ते ज तब जीयरौ ।।
कह्यो जीवन अब कवन काज को ।। चह्यो मरो भल मरन आज को ।।
पुन बिचार मनि महि असि आईं ।। यहि है प्रगत मंत्र की जाईं ।।
मैं बहु बार खोटखा देख्यौं ।। प्रान गइे पुन कवन परखौं ।। ८९ ।।

दोहरा: प्रथम बिचारहु सार को कवन भेद या माहि ।।
परयो ताल महि निरख जस अस चरित्र हुवै नाहि ।। ९० ।।

चौपई: मरनो तौ पुन हाथ मझारा ।। जब चाहो तन करहु प्रहारा ।।
लगो बिचारन अनिक प्रकारा ।। किया चरित्र है हे करतारा ।।

मै निज प्रिया सिंधि महि डारी ।। छिहा कवन बिधि आवत प्यारी ।।
सीस काट नौ कवन प्रयोजन ।। तन पौढाय सेज की सौजन ।।
मति मरजी वांको बहु बारा ।। टुबकी दीनी सिंधि बिचारा ।।
बांछित सुक ताते सिघांत को ।। मुकता मिल्यो न निज म तात को ।।
कछु बिचार मन महि आयो ।। सायं समय निकटि निरखायो ।।
आधी बही सबद भयो घोरा ।। परम भयंकर धुनि चहु ओरा ।। ६१ ।।

दोहरा: तब जान्यो आगम किसहि देव परी अभिचारि ।।
छप्यो भ्रमर बपु धरत बहि तिनही सुमन मकार ।। ६२ ।।

चौपई: तत छिन छिकि पिसाच तहि आयो ।। महा भयंकर प्रबल लखायो ।।
पैं चक्रित कित दहि दिस देखत ।। गंध लेत मानव की लेखत ।।
पुन छिक सुमन सुकल तिन तोर्यो ।। सीस निकट नासा संगु जोर्यो ।।
तत छिन ऊछर सीस तब धायो ।। तन सो जुर्यो प्रान सर सायो ।।
ऊठ बैठी तब वहि प्रयंक पर ।। जनु सोवत कोऊ परत जाग कर ।।
सुघ कसरस मेवा बहु भाती ।। धरे अगारी फल बहु जाती ।।
पैं चक्रित चित दिस ताकत ।। चौंक परत कबहूं फिर फाकत ।।
रानी कह्यो कवन यहि कारन ।। चित चंचल तव कवन बिचारन ।। ६३ ।।

दोहरा: कही पिसाच सुगंध मुहि मानव की लहि जात ।।
द्रिस्टि परत नही कहा है याते हिया संकात ।। ६४ ।।

चौपई: तब बोली वहि राजकुमारी ।। जब की हम छित आय ऊतारी ।।
द्रिस्ट परी नहि खग परछाही ।। तु अमानव हि कीथला हाही ।।
अदभुत असवार ता पेखी ।। निपट चित भ्रमी तुमु महि देखी ।।
यहि सुन वहि कछु मन सरमाई ।। आन प्रसंग कथा सु चलाई ।।
देस देस की कथित कहानी ।। अदभुत माया रंग बखानी ।।
प्रात होत ज अरुन सुमन वर ।। तोर्यो तिहि गुछ ते दुह कर ।।
दयो सुंघाय दुस्ट दुराचारी ।। गयो सीस पुन तही सवारी ।।
तब प्रयंक पर तत छिन सोयो ।। बसन ढाप वहि पंथी होयो ।। ६५ ।।

दोहरा: चार घरी यहि भवर तन रह्यो तौसु मन धार ।।
पुन अपनो तन बदल मुख सुमरन कर करतार ।। ६६ ।।

चौपई: सुकल सुमन तोर्यो ततकाला ।। लायो जाय नासिका बाला ।।
जुर्यो सीस आ तब ऊठि बैठी ।। द्रिसट कुवर की दिसि जबु पैठी ।।
लख्यो कंत निज सनमुखु ठाढो ।। अति अकुलाय प्रेमु अति बाढो ।।
वहि लपटाय रुदित बिकराला ।। रोइ ऊठी वहि परम बिहाला ।।
लपट लपट दोऊ अस रोइ ।। बसन सकल तर बर तर होइ ।।
कांप ऊठयो वहि बाग असथानो ।। धरनि गगनि सब ही थहरानो ।।
पुन न्रिप सकल बिथा निज माखी ।। छित प्रापति लग सगल सु साखी ।।
अजहु समापति करन न पायो ।। दुख बियोग जो कस्ट लखायो ।। ६७ ।।

दोहरा: समासिकला निज ब्रथा कथन लगी दुखु रोय ।।
जाहि सुनत हीय रो बिदत छेदि छातियन होय ।। ६८ ।।

सवैया: पिय प्यारे तिहारे बिना जु हमारे पे बीती बिथा सौ सुनौ कहहौ ।।
वहि प्रानन अंतनितंत सुनो दुखु ताते अनंत गुनौ लख लह हौ ।।
अब तंतो बिथा अपनी मुझ सो जु कही यौ सही सु सही सह हौ ।।
कहहौ कहु कासौ सही न परै टैनही रे नही ह्यि रौद हहौ ।। ६६ ।।

स्वैया: अस माख दोऊ लपटे बहुरौ बहुरोय पुकारे हहारे हहा ।।
तज मोहि कहा यौं भिरौ तू बहा निज हाथो कलेस सहाये सहा ।।
जग आहि अचंभे को ठौर बडौ अति काहू की थाह लहा न लहा ।।
छिन में पल मै दस सा छित मे पलटे रंग देखो कहा को कहा ।। १०० ।।

स्वैया: इकु रंग पै रंग नही जग कौ दिन रात के रंग ते जानौ करै ।।
नहि आन कंठ न बनै नरकौन रयौ ही तंन कौ ठानौ करै ।।
जब कोऊ बहानौ न बनौ बनै तब भावी को भाव बखान करै ।।
मति टूटय तंत निखूट परै बिसमाद को दौर ठिकानौ करै ।। १०१ ।।

स्वैया: अपने अपने दुख रे कहि दोऊ दुहाई दै कूक दई कहरी ।।
धुनि रौदनि की सुन कै सुनु ह्वै थरथल परै धरनी थहरी ।।
मुरछाय परे लपटे तिहि सेज मे प्रेमु की बूडे नदी गहरी ।।
न रही सुधि संक समार ककू अरे हाय ये प्रेम बडौ लहरी ।। १०२ ।।

स्वैया: हरि प्रेरित तौन समय इक देव अकास मै जात चल्यौ मग मे ।।
रंग सेत है सेत मनो बल कौ नहि औंर बराबर जाजग मै ।।
हनवंत कै भीम समान कहौं धुनि प्रोन परी सु अनादग मै ।।

ठट कौ डग मै मन की लग मै गज मत के सांक रच्यो पग मैं ।। १०३ ।।
ऊपकारी दयालु सुभाव हुतो दुखिया को सदा ऊठ संगी बने ।।
बिरलापु कलाप की कूक सुनी अकुलाय चड्यो हम रंगी बनें ।।
समझो यहि मानस की धुनि है परयो रौक्त है दुख दंगी बनें ।।
अस कंटक कानन आप दखान मैं आदमी कैसे प्रसंगी बनें ।। १०४ ।।
सवैया: यहि प्रेत पिसाच को बन है बन है नही मानव होवै यहा ।।
पुन है तौ फस्यौ दुख बंद परयो तरफाय पुकारत रोवें महा ।।
यहि सोच तही ऊतरयो वहि बाग मी तीर मै जाय कै जोवै कहा ।।
ससि सुरि बिसरूरित काल करूर परे हरे रास मै सोवै लहा ।। १०५ ।।
सवैया: मुख रंग बिरंग भड़े दुहु के मुरझाने परे लपटाने दौऊ ।।
मुख आयिनौ प्यारे कै सौं है कीये परे प्रेम मरे ऊरझाने दोऊ ।।
ऊतकाल प्रत गया के पीछे परयो बिछराड़े बियोगी पिछाने दोऊ ।।
बहु दयो सके दाह ऊमाह भरे मिले चाह भरे पहचाने दोऊ ।। १०६ ।।
सवैया: इन प्रेम की पीर पिराने लखे सिरहाने सनेहु सो जाय तबै ।।
छिरक्यो मुख नीर प्रवाह तैं लै सुधि आई तौ नैन खलाय जबै ।।
सिरहाने लखो इक देव खरो ऊन देखौं न मै कछु खाय कबै ।।
परनाम कियो निज नाम कह्यो समझाय कै धीर धराय सबै ।। १०७ ।।
सवैया: कछू भैना करो जीय मै महाराज मैं मीत हौ जू बलि हार गयो ।।
गर लायो तबै ऊठ राज कुमार ने मान कियो सदकार कयो ।।
पुनि बैठ बिथा ऊन पूछी जबै त्रिपु स्वास भरो बिसथार दयो ।।
निज राम कहानी बखानी सबै सुनते वहि तौ सुनसार भयो ।। १०८ ।।
सवैया: अति रोयो बिहाल जो हाल सु सुन्यो बड काल बली बहुरंगी अहो ।।
पूभू माया को भेव न पाय किछू सह माया सु देव भुजंगीकहौ ।।
अब चिंत न रंच करो मन मं सद संगी तिहारौ त्रिभंगी लहौ ।।
वहि कूर जु अहै लह क्रित को फल आग की औट न अनंगी दहो ।। १०९ ।।
सवैया: यहि राजकुमारि रखीलौ बडौ रस बातन सो बहिराय लियो ।।
लखि नीनि की रीति प्रतीनि रची निज मीत कै भ्रात बनाय लियो ।।
वहि दास भयो मन ते तन ते बिनदाम जयों दाम चुकाय लियो ।।
ऊठ बाग की बहार निहारे लगै रस की चरचा परचाय लियो ।। ११० ।।

सवैया: या मैं पिसच हूं आयो वहैं बिसमायो लख्यो यहा औंर ही रंग है ।।
राजकुमारी कुमार कोऊ कर सो कर लीने हैं देव हूं संग है ।।
देखत ही झरसो रिस सोझ पट्यो चहैं राज कुमार के अंग है ।।
बीच ही वाज छराज गह्यो झझरायो कह्यो हमसो करि जंग हैं ।। १११ ।।

कहि
सवैया: वहि नीच पिसाचु ऊसे चिमट्यौ चट चौथ चपेट की होवैं चली ।।
अस जुधु बिरुधुम चौं दुहु मैं कर क्रुध अबुधु इवैं लोंटैं बली ।।
थरथल भयौ जर जल हिसीं बन बाग धरा सह कां टैं हली ।।
प्रभ ओट तैं बाजी निफोट लईं गरफोट कियो लोट पोटैं दली ।। ११२ ।।

सवैया: जक्ष राज लख्यौ निबलायो ऊसै गह जंघिते सीस ऊचाय लियो ।।
झझका झट दैं पटकाय धरा छतीया चढ बेठोदबाय लियो ।।
लख राजकुमारु सराह करी निज काय लख्यौ अकुलाय लियौ ।।
प्रभ कीनी दया तुझ दीन दयाल पैं क्रूर बडौ अरि घाय लियो ।। ११३ ।।

सवैया: बड पाईं बिजै पल मैं बलि कैं बल रावरौ कौलौं सराह करौं ।।
कछु मानौ बुरौं नहि जौ मन मै बलि हौं हूं कछू ऊतसाह करौं ।।
तिन भाखी भलें हरिखामु लिजै बन आवै सो चित की चाँह करौं ।।
सुन राजकुमार संभार झै रिस धार प्रहार ऊमाह करौं ।। ११४ ।।

सवैया: करि इक स्किंध पैं दै दुतियै गहि नीच की घूचु मरोरि लईं ।।
घर ते सिर तोर कैं गेंद कीयो घर पै फटकारु स जोर कईं ।।
लख सेत सुदेव हूं सेत भयौ बल रासि पैसाबस क्रोर दईं ।।
त्रिपु कौ मुखु लाल पिसाच कौ पीत अनीति किये गति घोर भईं ।। ११५ ।।

दोहरा: या महि वा जक्षराज के सेवक आइे अपार ।।
पहुनाई निज भ्रात हित मार्‌यो भई त्यार ।। ११६ ।।

चौपई: सात दिवस निसरंग गर रागा ।। भयौ सुहावन वहि सब बागा ।।
खान पान सभ सभा बनाईं ।। त्रित्य गान निस दिन झरलाईं ।।
पुनि सखि पूरन सभा सखिला ।। कह्यौ बिनीति बचन अस भला ।।
मान प्रभा के बिथित बियोगा ।। पुनि बियौग निज सैन लमापलोगा ।।
अवसेरत है समुद किनारे ।। बरनन करि अस बचन ऊचारे ।।
वा पयारी के बिरह मझारी ।। कुधा पिपासा सैन हमारी ।।

परम अधरम हेतु भव माही ।। दुख साधन सुख साधन नाही ।।
तुम ऊपकार सीस हम भारी ।। रसी रसी दब तांहि निहारी ।। ११७ ।।

दोहरा: मद प्यालो रक्तापनो हिय के टूक कबाबु ।।
बरमासम बेधक हुते बजत मिदंगर बाबु ।। ११८ ।।

चौपई: तुम प्रसंनि ता हित यहि कैवल ।। हुतो बिलास हास बस प्राकल ।।
बिदा करहु अब होय दयाला ।। कछु तिन की हम करहि संभाला ।।
तिन तब कह्यो पठहु निज सेवक ।। सार सकल संसार हि देवक ।।
जब तिन कौ कछु पता लगावहि ।। तब ह्वै बिदा आप चल जावहि ।।
सभा ससिकला पुन कहि बचना ।। सरस बिनीति म्रिदुल सम रचना ।।
निज ढूंढत महि अधिक सुवावादा ।। यही प्रेम की सद म्रिजादा ।।
आप काज ही महां काज है ।। या महि सकल अकाज लाज है ।।
जिनि ढूंढो तिन ही प्रभु पायो ।। सी बसिस्ट हुं पुरखारथ गायो ।। ११९ ।।

दोहरा: रघुबर ढूंढी जानकी क्रिस्न सुता ब्रिखुभान ।।
भरत भ्रात को आप ही ढूंढ लह्यो बन थान ।। १२० ।।

चौपई: यहि सुनि देव अवसक जानी ।। बिदा कीहे मन धीर धरानी ।।
आवनि जान मिलत बहुबारा ।। करे आप महि कवल करारा ।।
चले तहाते दोऊ बियोगी ।। भान प्रभा के हि ऊदयोगी ।।
पग पग प्रम्रिति करत पियारी ।। परम चिंता बसि प्यि पियारी ।।
प्रभु जानै वहु डूबी तरी ।। हम समान कहूं फसी ऊबरी ।।
या चिंता महि दुचित सो दोऊ ।। कोस दु कोस चलत मिल सोऊ ।।
योजन चलत कबहूं जौ धावत ।। सोज पता कुहूं रंच न पावति ।।
दिन द्वै चारि क्रमहि पग फालक ।। परे थकित कछु सुधि न संभालकि ।। १२१ ।।

दोहरा: यहि कोमल पग पथिक द्वै वहि मग बिखम कठोर ।।
काली कोस अनंत जनु अंतर दुस्ट सठोरु ।। १२२ ।।

~~चौपई:~~ सवैया: झंझलाय सभा की सु चंद्र कला पढ प्रेम कौ यौं ऊपलंभ दियो ।।
कबही अस रोनो पुकारनो यौं जबु प्रेम न तेरो बरंम लियो ।।
यहि ल्यिो हमारौं हुतो न हुतो अब सोक के धाम को संभ कियो ।।
यहि तेरो प्रतापु है पाय नही बन गौन अरंभ अचंभ जियो ।। १२३ ।।

[illegible]

सवैया: छिक प्यारे बिछोह की जोह रहै निस द्योस बियोग की टोह रहै ।।
निज मात पिता ते छुडा लिये कहूं जात यहै दुख दोह रहै ।।
सुन राजकुमार हस्यो चुप ह्वै रह्यो ज्यु कोऊ बापै बिमोह रहै ।।
पुन याको बिचारु यतंन कियो गिरि खोह न पंथ की पोह रहै ।। १२४ ।।

सवैया: वहि मंत्र जु सिधि को निघ हुतो नवनिधि को साधक सों गुनों सो ।।
सिखरायो प्रिया को पियारे बडो फल पायो चवाय सौ चौ गुनो सो ।।
घर कीर सरीर ऊडारी लई बल बीर मनाय मनों गुनो सो ।।
बन बेहर ग्राम कुटी गिर मैं फिरे आठौ दिसा ह्वै बठौ गुनौ सो ।।१२५ ।।

सवैया: ऊठ प्रात ह्वै जामलौ काम यही ऊडनौ पुन काहू तरोवर पै ।।
बिन डेरा सराय चे डेरा करै घन छाया निहार सरोवर पै ।।
छिस रूपु मै पंथी भये बिचरे नर छाड समीपी सगो वर पै ।।
नित चोग नई नयो नीर अचै नयो नीड़ रचै को गिरोवर पै ।।१२६।।

कबितु: अैसी भांति जात दिनु रात बसै चित गात कोऊ सुखी देख दुखी ह्वै के दुखुरोकनो।।
याद कर प्यारी दोऊ लेतयौ ऊडारी ये कबित बहुबारी पढकरे प्रान सोकनो।।
येरे प्रेमी प्रीत समीप की निसा को नीको मान सुख जी की जान फीकी नही
बोकनो।।
काहू जग जोयो है न गोयो है प्रिगिंदु कछु रात सुख सोयो है प्रभात कहा
होकनो ।।१२७।।

दोहरा: अबि आगे रवि प्रभा को बरनोहु बिथा प्रसंग ।।
या अवसर प्ररन भयो पंच दसम सु तरंग ।। १२८ ।।

छिती श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रंथे नेह नीति नीरूपित प्रीति प्रसंगे कवि साहिब प्रिगिंदिन बिचरते राजकुमार को सिंघ महि रेल सिय पुरख को मेल जकराज की सहाय ते प्रिय की मस पाय पंथ परनो बरनंन नाम पंच दसमो तरंग ।। १५ ।।

कबितु: मौनिधि मर्यक्र मवारन मै मान गुन ग्यान को गुमान तौ निदान के राफटगो।।
बिमौ बाद मान औं कुसंग लोह लंगरि बिचारि छिन मंगर बघूलामैं लपट गो।।
कुलाचार की करी याकी कुबै को भ्रिगिंदु जहा भ्रिंद ऊपचारन को कील कील बटगो ।।
स्री गुरू गोबिंद सिंघ राज के जहाज चढ बहुतो बच्यौ छौतौ सबै केलेस कटगो।।१।।

दोहरा: प्रेम पयौनिधि सुधा निधि मुक्ता भाव वनिंद ।।
स्रोता स्रवन स्रिंगारि हित ल्यावति खोज भ्रिगिंद ।। २ ।।

सवैया: अरे आवरे प्रेम के रंग रंगी हिये प्रेम रंगीले को रंगी बनो ।।
कथो आन बिथा बा बियोगनि की अब ताके प्रसंग मै संगी बनो ।।
नही प्रेम पिरानों को चैन कहू दिन रैन दुनी मैं जु अंगी बनो ।।
नित नौतन दुख दिखावत काल निमानो को मान को भंगी बनो ।।३।।

सवैया: दुखु भारु बियोग भरों जो कहू वहि प्रेमी हिये घरजावै अहो ।।
नसह्यो परै तापै बिचारो तरे दब जीवत ही मर जावै अहो ।।
कछु जीवन को फल हू न रहै कर भारु बिथा ही बितावै अहो ।।
कहौ कैसे कहानी निमानी की राकी की भाखे गरो भर आवै अहो ।।४।।

दोहरा: लिखन हार वा ब्रिथा को बही जु सिंधि बियोगु ।।
फट जहाज बूडी ऊछरनेह नीर ऊद्ययोगु ।। ५ ।।

चौपई: बरद बान जिहि जीवन आसा ।। बिरह पवन बहु ऊड्यो बयासा ।।
टूट मनोरथु लंगर परयो ।। बिरह समुंद्र लहर पर हरयो ।।
प्रलै काल की भफट परी वहि ।। छिन मिल्यो निजारथ तट नहि जा करि।।
मान प्रभा की या बिधि कथा ।। लेखन हिय बिदरिथ लिखयथा ।।
जब वहि फट जहाज बह गयो ।। तखतो छिकु ता तर रह गयो ।।
आयु सेस ते बूडन गई ।। तिहि आस्रित हुवै बहत सु भई ।।
काठ खंड पर खंड संय हिय ।। बूडत तरत प्रबाह बहन लिय ।।
भावी बस कोऊ इक नरेसा ।। चढ जहाज बिचरत किहु देसा ।। ६ ।।

दोहरा: जल बिहार करतौ प्रबल खेलत जार सिकारु ।।
ऊत ते आवत हो चलो लख्यो जु द्रिस्टि पसार ।। ७ ।।

चौपई: तरक्ती बहुत द्रिस्टि महि आयी ।। या महि छित ते परहि निकटायी ।।
लख्यो ऐक मानस तिहि माही ।। दया परी बूडत लख ताँही ।।
तातकाल करी या दौराई ।। फकर जहाज माहि ले आई ।।
यहि बिह्वल करि लहर समुंदरि ।। पुन बियोग बिआकुल क्रित सुंदरि ।।
सभा ससिकला जगत प्रभाकर ।। तिन ते बिछुरि परी मुरछित हर ।।
पै सुंदरि तन सहज सलौना ।। मुख पूरन ससि को जनु टौना ।।
रंग ढंग बिगरोहु तो नतन कौ ।। बारह बानी कनक बरन कौ ।।
निरखत ही न्रिप तन मन दीनो ।। प्रेम तवन के रंग अंग भीनो ।। ८ ।।

दोहरा: हरबराय छिर को अतर बाँधु तुरतु भुज मूल ।।
अनिक और ऊपचारु कि यतन लपेट पट तूल ।। ९ ।।

चौपई: द्वै की तीन घटिका के पाछे ।। मूरछा छुटी खुले द्रिग आछे ।।
लख्यो जु काल ब्याल के मुख ते ।। बची लहर बीची के दुख ते ।।
कस्ट समुद ते परी पार हौ ।। छिक जहाज पर अब सवार हौ ।।
पै कोऊ आप पुरखु के सनमुखु ।। नारि धरम महि परम यहै दुख ।।
तब लाजाय सिर लयो झुकाई ।। सकल सरीर सुवेद सरसाई ।।
तब न्रिप कही नाम कहु सुंदरि ।। कवन हेतु कहु बही समुंदरि ।।
यदपि नमित लाज बड आवन ।। पर पुरखन प्रति तिय बतरावन ।।
तदपि ऊत्र बिन आन ऊपावा ।। रह्यो न कछु बस बन्यो बनावा ।। १० ।।

दोहरा: सने सने संकोच बस अबस जान करि बैन ।।
हिय धरकत अंसू आढरत सुमर कमल दल नैन ।। ११ ।।

चौपई: अफल मनोरथ यतन निरारथ ।। बिपति बिदीरित बिगति निजारथ ।।
काल दुखद ह्वै पाछे परयौ ।। नख सिख सकल कद सो भरयौ ।।
ह्रिदय बिदीरन रकत प्रवाहा ।। फटो जहाज समुंद अथाहा ।।
पंथ बिसरजित सिंधि गहर महि ।। करनधार बिन बहत लहर महि ।।
नाम नाम यहि है सब मेरौ ।। अबन पूछ जस जस दुख हेरौ ।।
यहि सुनि वहि न्रिप भयो हराना ।। जान गयो निज मति अनुमाना ।।
बोल चाल बैनन सघुराई ।। बदन दमक छबि ते लख पाई ।।
यहि सुंदर कोऊ राजदुलारी ।। नीति निपुनि गुन वति ऊजियारी ।।१२ ।।

दोहरा: बूडौ कहूं जहाज छिन बिछुर परी परवार ।।
बह्त बची जनु रची यहि रची आप करतार ।। १३ ।।

चौपई: दरद भरे हर छे म्रिदु बैना ।। ता त्रिप को मन कीन अचैना ।।
तोख बसन तत छिन तिहि फाट्यौ ।। बल पाक्रम धीरज मन घट्यौ ।।
अत बिहबल ह्वै रोय पुकारा ।। हे प्रभ तव गति अगम अपारा ।।
कछु को कछु छिन करह बनवा ।। राव रंकु रंक करि रावा ।।
बहुरु थाल तत छिन भर वायो ।। कछु खावहु कर बिनति सुनायो ।।
भान प्रभा भरु ऊरघ ऊसासा ।। नाहि बचन बहु बारु प्रकासा ।।
त्रिप बहु म्रिदुल ऊचित कहि बयना ।। नाहि ऊचित नहि सुंदरि नयना ।।
प्रान धरन हित भोजन करिये ।। आन बिचार बहुरु पुन करिये ।। १४ ।।

दोहरा: करन हार की क्रित्य पर चलत नही बस चारु ।।
राव रंक छिक सार सब देखहु द्रिस्टि पसारि ।। १५ ।।

चौपई: जो ह्वै बिती हाथ नहि पर है ।। जीवन मरन सकल तिहि करहे ।।
धरहु धीर हरि धर भर वासु ।। जीवत को सभ कछु है आसू ।।
जिनि तेरे प्रभ प्रान बचाहे ।। निधि अथाह कस बयोत बनाहे ।।
अदभुत नहि ताको कछु भामनि ।। करय पलक महि पूरन कामनि ।।
अंन पान करि प्रान बचावहु ।। देस नगर को मम पता बतावहु ।।
तन सविधान होय जब तेरौ ।। पहुचावौ तहि यहि प्रन मेरौ ।।
भान प्रभा तब रोय सुनाई ।। मै जाके प्रभु अंचल प्रभु लाई ।।
वहि तौ भार धूर सम मग की ।। कियो भार कंटक जनु पग की ।।१६ ।।

दोहरा: या अपार निधि धार महि परयौ सुकरि छिटकाय ।।
प्रभ जानय कागति भई ब्रड्यो बच्यौ बहाय ।। १७ ।।

चौपई: पति बिन गति तिय नहि कछु जीवनि ।। निसि दिनि बिरहु बिथा बिख पीवनि।।
देस नगर अब मोहि परलोका ।। तहि पहुचाय कहहु मम सोका ।।
दुखु कलेस ते क छूट परहु गी ।। तुम ऊपकार सु सीस धरहु गी ।।
यह सुनि त्रिप हरि सुमरन कीनो ।। धीरज दै तह स्वास सु लीनो ।।
कह्यौ अनुचित करन निज घाता ।। बहुर न कहहु बदन अस बाता ।।
f चिरंजीव रहु जग महि माननि ।। परम अयुकति घात निज प्राननि ।।
प्रभु जानय वहि कंतु तुमारा ।। जियत बच्यौ ह्वै जलय मझारा ।।
जिनि तुहि राख लयौ अस ठौरा ।। का दुरलभ ता ढिग अस औरा।। १८।।

दोहरा: तव बियोग वहि किम बचहु सुनय मरन तव कान ।।
आतम घात करहि प्रगट बहु कंत निज प्रान ।। १६ ।।

चौपई: ताते यहि सिख मान हमारी ।। प्रान तजहु मति देख बिचारी ।।
जीवत कौ जग महि सभि आसा ।। ऊचित न प्रम ते होय निरासा ।।
या प्रकार जब बहु समझायौ ।। अबस जान कछु तहि तब खायौ ।।
दिन द्वै चार बिते तन प्राना ।। कछूक पाय बल ह्वै सविधाना ।।
या महि वहि पहुच्यो निज देसा ।। दयौ रहिन चित महल सुवेसा ।।
दासी बिबिधि सुघर अधिकारनि ।। सकल सौज जस राज दुलारिनि ।।
राज सुता तिहि भांति रहत है ।। रहन लगी सम सौज सहत है ।।
कछु काल छिहि भांति बितायौ ।। ह्क दिवस न्रिपति हि चल आयौ ।।२०।।

दोहरा: कहियौ कि तुम निज देस कौ पिता मात कौ नाम ।।
प्रगट करत नहि सुंदरी पहुचावत तव धाम ।। २१ ।।

चौपई: पै हम निज मति किय अनुमाना ।। राज सुता हौ परम प्रधाना ।।
रखु राखी ही सिरजन हारा ।। हम तुमरी अस मेट प्रकारा ।।
जौ रावरु रुचि महि अस आवय ।। परहु मनोरथ मुहि मन भावय ।।
करहु सेवकन महि मुहि दासा ।। पूरन होय सकल मन आसा ।।
यहि रावर है सब रजुधानी ।। रहहु सिरोमनि ह्वै पटरानी ।।
हाथ ऊठाय असन मुहि दयावहु ।। निज आयस सब राज चलावहु ।।
यहि सुनि भान प्रभा तब बोली ।। परम नेम पति ब्रति चित अलि होली ।।
अहो न्रिपति यहि भ्रम हिय तेरे ।। राज भाग परयौ प्रकन न मेरे ।। २२ ।।

दोहरा: पै तुम को प्रभु न्रिप कियौ नयाव नीति धर चीति ।।
मन के अनिक तरंग है करिय न तिस हि प्रतीति ।। २३ ।।

चौपई: बिपति ~~सतानई~~ सताई अति अकुलाई ।। काल चक्र महि भ्रमत भुमाई ।।
प्रभु जानय हौ कवन निमानी ।। कवन भांत छिल आनि करानी ।।
यथा किसू कवि को यहि बचना ।। लागत है मुझ पर बड रचना ।।
देखत देखत द्रिगन अगारी ।। कस कस लोक गहे कुफारी ।।
अधर दंत धरही हह रानी ।। देख जगत की रंग पलटानी ।।
जौ ब्रिदोखु मुझारि दुखित कौ ।। परयौ चहत सिर अघ सुप्रित कौ ।।

तौ न चलत मुहि कछु बस चारा ।। कर्यो चहित सो करिय बिकारा ।।
पुन जो मम भावत मनि धरिये ।। संमत सर सुप्रति छा करिये ।। २४ ।।

दोहरा: जौ या महि डूबत तरत मम माल्क पगटाइि ।।
तौ ताही को भाग हौं समझ देख करि न्याय ।। २५ ।।

चौपई: जीवत मरत कोऊ फिर आवय ।। संमत अंतरि लौ मुहि पावैं ।।
संमतु बिते बहुर तव पासा ।। कहि जै हौं तब भईं निरासा ।।
बल करि ग्रहन पाप पर नारा ।। कवन हेत हरिये सिर भारा ।।
न्याव नीति ते दूरि बिचारहु ।। धरम राज को मन भय धारहु ।।
बरस बितै मैं भईं निरासी ।। कहा जाय हौ तज तुहि बासी ।।
ता त्रिपु मन महि कीन बिचारा ।। कही साच सुघराबर नारा ।।
अस सागर पर ऊबरत कवना ।। तहां गइे इित फिरन सु नवना ।।
संबत सरदी जय अवकासा ।। पुन आपहि इवै मिलय निरासा ।। २६ ।।

दोहरा: बलि करि ऊचित न नारि पर परय हाथ अघ होय ।।
पुन तिय हठ जग प्रगट हैं प्रान डार हैं खोय ।। २७ ।।

चौपई: मुंदित नैन बितय संबत सर ।। बहुरन सकहै कछू फोर कर ।।
यहि मनि समझ कह्यो भल भाखी ।। हम हु ऊचित मानी सिर राखी ।।
पैं इिक बिनति करहु करि जोरी ।। बुरो न मानहु कहुहु निहोरी ।।
चित चाहत रावर दरसन को ।। कबहु कबहु ऊतर परसंन को ।।
जौ याकौं कछु बिलग न मानहु ।। तब आयस असमुखहु बखान हु ।।
भान प्रभा यहि बिनति सु मानी ।। कह्यो आप की यहि रजधानी ।।
या महि मेरों कवन बिगारा ।। आवहु बैठहु भवन तुमारा ।।
तब यहि नेम पर्यो सु हमेसा ।। पचइ सतइे दिवस नरेसा ।। २८ ।।

दोहरा: प्रथम सार महली सखी करत पठावत राव ।।
बहुर आपु पग धरत तहि लखन चाव सह न्याव ।। २६ ।।

चौपई: घटि का द्वै किचार परयंत ।। बैठत कथित प्रसंग बितत ।।
देस देस की नौतन सारा ।। ब कथित सुनति ऊठि जात सिधारा ।।
यहि तौं इित ही रह्यो प्रसंगा ।। ऊत अब सुनहु प्रभू के रंगा ।।
जु कुछु मेल प्रभु चहि मिलायो ।। वहै बनत जो चहत बनायो ।।

प्रभु चरित्र को लखहु प्रभावा ।। अचित अमित कस रचित बनावा ।।
भावी बस जहि राज दुलारी ।। रहित रवि प्रभा जागऊ ऊजियारी ।।
तहि इक बाग सु लघु सु घाटिका ।। अंतह पुर की सुमन बाटिका ।।
रहो बहुत रमणीक सुहावन ।। भांत भांत के बिटप सु भावन ।। ३० ।।
दोहरा: नमित तरोवर धर लगत सफल सफल डार ।।
मनहु सुघर नर नम्र बर लहि सुखु संमति भार ।। ३१ ।।
चौपई: अति नीकी बड बाग बहारा ।। पात पात तरुवर इक सारा ।।
नौतन रंग ढंग के बूटे ।। सिसरिन प्रत झर कबहूं न टूटे ।।
फल संकलप करते मुखु आवत ।। कर बढावनो हूं नहि पावत ।।
पटरी रवस सुहावन सूधी ।। प्रभू माया क्रित परत प्रबू धी।।
सूरति की मूरति इक सारा ।। नीर प्रवाहु अमल बह न्यारा ।।
नहर रचित निर दोख निहारी ।। जनु साचे महि ढार सवारी ।।
सुघट फुहारे सुखुमु अंगा ।। रचित किदारी सुघट सुरंगा ।।
जव प्रवाह पाखान रचित बर ।। फुलवारी युत सब कियारी तर ।।३२ ।।
दोहरा: रचना युत फूलत सुमन चमनु रचे चहु कोर ।।
ठौर ठौर पर चांतरे रचित खचित बिलौर ।। ३३ ।।
चौपईं: लघु दीरघु कर कुसुम बहारा ।। मनहु सैन पैदल असवारा ।।
जित की लंबाईं तिति चवुराईं ।। चहूं कोन इक सार बनाईं ।।
सहज सुहावनि बर बन वारिनि ।। खौड़ सब रस जु बन मत वारिनि ।।
कनक कुरपीया रजत बेलचे ।। रतन जराऊ रेत रेलचे ।।
करि महि पुन कटाछु पग गति महि ।। सत्र देख भाल अस भावन रतिमहि ।।
बतरस महि लग जावन मन की ।। कहूं कूप तट डोल फबन की ।।
कीली वाले रे कहूं लाला ।। तज कीली भज राज संभाला ।।
मटक मजाखन बात बात में ।। हसी खुसी की सकल भात महि ।। ३४ ।।
दोहरा: कोऊ कछु कहूं ऊखारती कोऊ बोवत फुलवारि ।।
चुनि चुनि कोऊ चगेर महि कलीयां धरत सवारि ।। ३५ ।।
चौपईं: बीन बीन कोऊ फल इकठावत ।। त्रिण छीलत कोऊ स्वछ बनावत ।।
टूटो झरो परो कंटक दल ।। चीन निकारत गरो परो फल ।।

कोकिल कुहि कफर हरी डारिन ।। सुमन पुंज पर भमर गुंजारिन ।।
भूमत मोर भर हरे रसाला ।। सरू जु बन घर खरो निराला ।।
कील कंठ कलि कंठ पुकाररति ।। निरत करत बर पुंछ खिलारत ।।
गिरद बाग के भील सुहावन ।। फुलित सरोज अमल जल पावन ।।
प्रात गुलाब कली चटका हुट ।। मनहु कूच दुंदभि की आहुट ।।
कहूं गुलाल लिहे कर प्याला ।। कहूं नगर गस द्रिग मस्त ह्वाला ।। ३६।।

दोहरा: भूमत गुछ अगूर के मनहु मत मद पूर ।। सुमन परागन बाग को
सुमन परागन बाग को अजरंगध भर पूर ।। ३७ ।।

सवैया: वहि भान प्रभा कबहूंकबहूं तहि साभ सवेरे सजायो करे ।।
जुब दुखु बाढी बिथा सिर पीर पिरानी घटाय बे को घवरायो करे ।।
फुलवारी खिरी लख कोकिल कूर सुने ते दुनेदुखु पायो करे ।।
अकुलायो करे भरलायो करे द्रिग असे कछू पढ गायो करे ।। ३७ ।।

सवैया: प्रभु वे दिन हूं तूं करे कबहूं जह तूं न ह्वै अस गूढ जगे ।।
इक मैं हूं तिया इक प्रान प्रिया त्रि तिया न तहां कोऊ बीच पगे ।।
वहि फूल खिरयो ह्यि हो फुलवारि हो फूली हसी मुखु ते यों लगे ।।
वहि धीमी सी सीरी बियारी हूं हवे बनवारी न हवे तो सबे सरगे ।। ३८ ।।

सवैया: फुलवारी हो हो इक प्यारी तहा पिय प्यारो हो प्रेम हमारे पगों ।।
अपनी ही बिथा की कथा हुवै तहा नहि और कथा के पधारे जगों ।।
तब हौं हूं कहां औ सुने पिय प्यारो न स्रोन कोऊ पिछवारे लगों ।।
ह्यि फार धरो पिय आगे अरे मन देरे हमारो जु प्यारे ठगो ।। ४० ।।

सवैया: इहि भांति प्रलापु करे कबहूं अरभी अलि के पर पेच रहे ।।
गरि सुंबिल सो दिखरावै कबी लख रे अरभो असु तूं हूं तहे ।।
ह्यि दाग बियोग के कारे कबी गुल लाले सो तेल स तुलाई चहे ।।
कलि का लख जो कहूं धीर धर हस्यो फूल लखयो तब रोय कहे ।। ४१ ।।

सवैया: मनरे मन मान तूं मेरी कही वहि काम करो बदनामन को ।।
पगटन हि प्रेम के पाक की भल यो धंधो धुवो धामन हो ।।
अरे हाय दई निरलाज के मैनद डूबी असी कोऊ बाम न हो ।।
डरती हों कहूं ह्यि ताल की पाल ये छूट बहे फिर खान हो ।। ४२ ।।

सवैया : इस फूल रह्यो खिरयो आनंद मैं मरे केली कलोल तूं फूल रही ।।
डर फूली कहूं फुलवार मे री बनें कैसरी बानो क्या फूल रही ।।
अरे भागो यहा सों भया दुखिया दिल की धुनि आह की खूल रही ।।
बह्को मति घंटा नही कारवान को तार बंधीयाते मूल रही ।। ४३ ।।

सवैया : जीवन मेरो वा म्रित मुकाम ते मोसो कुरंग की इक फलग ह्वै ।।
पें अलि कै घुघगरी प्यारे की पाय जंजीर परे तूं न तंग ह्वै ।।
लीजे समाधि पें नाम मेरी प्रम नाम के ठौर हूं पियारे सो रंग ह्वै ।।
चिंतय है तन छूटे हूं पें ह्यि प्रेम रंगो न-हि प्यारे को भंग हुवै ।। ४४ ।।

सवैया : चल्यो ऊट तौ लैली को हुवै बे मुहार पहारन जद की राह लई ।।
मजनू की बनेगी ये जानी परी कारबान नहीं जो पें आह दई ।।
इन चालों ते काल की मेरो म्रिगिंद यंत-न यही है ऊमाह भई ।।
तहि जावों जहा यहि काल के चक्र की गह नही दुखु दाह मई ।। ४५ ।।

सवैया : कबहूं जौ उरू के तरोवर के तट जाती तौ याद पिया करकै ।।
कुमरी वत कू कू करे ह्यि को तरफाय कैं लोहू ह्यिा कर कै ।।
अब देखो बिचार कै या जग मै गहे कौन सी बात जिया करके ।।
सबनासी समाज प्रासि यहै याके तरंग ज्यो नीर निया करकै ।। ४६ ।।

सवैया : कबहूं तो प्रभात प्रकार करें कबहूं पुन रात अंधारी वही ।।
घटि यंत्र की ज्यों यहि जंत्र रवौं अध ऊरध की इतवारी नही ।।
फुलवारि मे जो है बसंत बहारि तबै पतझारि पिछारी रही ।।
~~कल्न~~ चह चान हजारो है कोकल को बाग बान की सौंफ सवारी रही ।।४७ ।।

सवैया : इक माली औं जाली ली-इे फंधिया परे गोह नहाय कहा कह्यिे ।।
मदपान कै संग ही सूल है बान की कोन गुमान हिये करिये ।।
मन काहू को मोद बिनोद हूं मै कोऊ घायल घूमै निगा करिये ।।
वहि प्रेमु पिरानो तौ पीर ही कौ पुतलौ है परे सोयु हा करिये ।। ४८ ।।

सवैया : प्रथमे तो प्रसिघ है प्रीतिम की न पतीत कछू बिफलाई करें ।।
जु मिले कहूं भाग बली को भले पलटे बिफलाई भलाई करें ।।
तब काल बहानो बनाय कोऊ ये जुदाई पसंद जु-दाई करें ।।
इस आस पें प्रेमी मरे है अहो जीय बाटे ये रोग लियाई करें ।। ४६।।

सवैया : यहि जानै नही जर जाकी नही वहि थोरी ही होत है क्यो ठहरै ।।
घन छाया ज्यो माया को मंदर ह्वै मोती ओस की माला कोऊ पहरै ।।
फकरयो परै पारद प्यारे कहूं न समेटी समुंद कीले लहरै ।।
इह रे हिय हेर तहारु परै पै परै करि क्यो हूं छटा छहरै ।। ५० ।।
सवैया : इहि भांति बियोग भरी वहि बाग मै जायो करै दुख रोवन को ।।
इक दयोस जो दयोस फिरे सुख के गई बाग मै काल बिगोवन को ।।
नित जैसे सुभावक जायो करै बिन संगी दुखी जिय खोवन को ।।
निज प्यारे के याद परी जो प्रसंग सभा ससि जोन की जोवन को ।। ५१।।
सवैया : तिन के दुखु दोह बियोग संदोह दसा जिज जोह मै मोह पगी ।।
यहि छंद म्रिगिंद को आपै पढो बिरहानल की तप पोह लगी।।
अरे हाय रे है अरमान बडो फिर काल गयो कस छोह जगी ।।
नहि मैलो रहो नहि मेली रहे वहि बातै गई बहु कोह लगी ।। ५२।।
सवैया : यहि भाखते ही भर असी रोईं भर की हिफकी सो हियों भरगो ।।
वहि सांय समै हो बसेरे को काल बिहंग बसेरविहूं घरगो ।।
तरु जाके तरे यहि ठाढी हुती ब्रिथा बाढी ही बान सबै ढरगो ।।
इक की रव सेरो लियै कोऊ आन तिही तरु बैठो सुने डरगो ।।५३।।
यहि रोनो बियोग भरयो सुन कै बिन चैन भयो अकुलायो परी ।।
कहयो राजकुमारी ये काग तिहै अस तो पै बिपति कहायो परी ।।
कहु काके बियोग भरी है अरी किन बैरी तुफै तरफायो परी ।।
द्रिग लागी फरी हिफकी न टरी कहु साची हहा हम पायो परी ।।५४।।
सवैया : सुन भानप्रभा कही धंन प्रभू भयो भाग ते हाल हमारो अहो ।।
खगहूं रह मायो पुछाये लगे अकुलाये बिथा लख साची कहो ।।
अति बयाकुल ह्वै मुरभाय गई अनुवान की तो बंधी धार लहो ।।
यहि रीति है धीर जु दे दुख मै ऊमडै दिल दूनौ संभार नहो ।।५५।।
सवैया : भर स्वास उनदास हुवे मान प्रभा पढै बैन यो रोहि किसी कबि के ।।
जबि दुवै मिल बैठे किसी को लखौ लखौ मै नभ और इसी दबिके ।।
खग माधुर बैन भरे सुघराई कै हुवे ह दयाल जिसी ढबिके ।।
तुमु पूछी बिथा मै कहा कहो रे नहि देखी सुनी जो खिसी अबिके।। ५६।।

सवैया : ग्रह देस ते दूर दसा दुखु पूरन मेरो कोऊ अकुलावती हो ।।
हह रानी सी आयने लाँ रही चाह रे आह करे करलावती हौं ।।
अरझी अलकैं कलखी भरी भाग की बांसुरी सी बिललावती हौं ।।
दुखिया हौं दुहेलीहाँ दीनी अधीनी हौं सैंकरौं सोक मैं पावती हौं ।।५७।।

सवैया : पर कै परसंग मैं संगी हूं मैं मिलै मेरौं प्रसंगी ये चाह रही ।।
हर स्वास रटो मै घटौ निज मैं निज हूं घट अंतर दाह रही ।।
निसकारी मैं भागन की अंधियारी मैं बयाकुलता अब गाह रही ।।
पुन प्रात प्रलै की जियुतें पट पार करे लौऊघारी हुवै आह रही ।।५८।।

सवैया : अब का को है रे बल बयोम तरे बदनाम हुवै ऊधी ऊघाय रहो ।।
फटजाय कहूं जौं जग धरनी अब दौरत ही मैं समाय रहो ।।
दुखु कंट कही गडे गहरे परी जाल परौ कै मैं हाय रहौं ।।
अति ही दुखियारी लिचारी बनी न जियो न मरौं सझाय रहो ।।५९।।

सवैया : खग रंग ऊडयो तन कौं झिकि होये हजारो कलेस परे गहरे ।।
मग कोऊ न नीड़ को देखु परे अंधियारी बियोगनि साम हेरे ।।
नहि सूझ खरो है ऊपाय कोऊ द्रिग प्रोण की धार सही न हरे ।।
करे सैत सबेर ते धाम मे-रो निस बयोग की कारो करे लहरे ।। ६० ।।

सवैया : तब कीर कही सुनियौ जू मुझे कछू प्रेम की गंध सी आवती क्यो ।।
बतिया ते चली फट मो छतिया प्रभु वासते भेद दुरावती क्यो ।।
कछु मोहू मया कर भेदी किजै हरि आन तुमै जु चुरावत क्यो ।।
अब तावरी खोल बतावरी तूं नही प्रान तजौं तरफावती क्यो ।।६१।।

सवैया : तब भानप्रभा बिसमै मन मैं कही ये हूं कोऊ दुखिया है परी ।।
सुन मो दुखुरु तरफाय गयो सुनबे को हिया की ऊमाहे करी ।।
नहि योग है यदपि भेद कहौं परया सो दुरावन चाहै धरी ।।
दुखिया को मिलौ दुखिया अस कौन कहे बिनु क्यो हू न जाहै टरी ।।६२ ।।

सवैया : भर स्वास कही सुन कीर सु जान तै पूछो बिथा दुखिया जियकी ।।
न्रिप भागु प्रभाकर को सुत कीरते प्रोण सुनी छबिवा तिय की ।।
न्रिप जाइं सभा की सु चंद्र कला जग्यो प्रेम सु लाग लगी हिय की ।।
बन धायो बियोगी बनै भटका पै लही वहि हौं सम री पियको ।।६३ ।।

सवैया: पुन मोहू बिवाह लै राह परौ मिलौ तात बजीर कौ राह ही मैं ।।
तिन कीनी खुटाई सजाई लही परे म्रंत्र के बुंद की दाह ही मैं ।।
हठ ते बरयो सिंधु जहाज फटौ लखौ बूड तौ जातौ प्रवाह ही मे ।।
परी फंध मैं याकी नवा की कहूं सुधि यो तरफौ रे कराह ही मैं ।।६४।।

सवैया: यहि मेरी बिथा रे मैं जाऊ कहा वहि प्यारौ यौ हाथु छुडाइ गयो ।।
वहि राजकुमारुर तज्यो मझधार मैं बेरायो पार लंघाइ लयो ।।
मुखु मोड़ मे पापुनि छोड़ अई प्रभु जाने जु वासो कहा इ भयो ।।
अबु मै हौं के संगी बियोगु है रे दुखु दाह कराह सहाइ दयो ।। ६५ ।।

सवैया: बिकलीहीइकेली सहेली मेरी घर बूडनौ ही अब संगी बनौ ।।
गमनागम स्वास करौ तकौ चीर कै नाबक तीर निखंगी गनौ ।।
सुन कीतौ टी टी पुकार अधीर परयो घर घूर प्रसंगी सना ।।
लगी चोट हिये लोट पोट भयो घर लोटै यौ भंगी मलंगी न मनो ।।६६ ।।
लखु भानप्रभा बिसमानी मनै अरे हाय रे हाय ये कौने भई।।
दुखिया मुहि देख पखेरु दयार तयार भयौ मरने को दई ।।
दुख कौ बंडवार ये मेरौ यहा समझाय वे को गयौ बैठ दई ।।
न मरे रे भई हमो नाहि नई मै करौ रु बडी बलिहार गई ।। ६७ ।।

सवैया: तरफौ खग पंख ऊखेर घरी कपरौ मूर छानो मनो मरगौ ।।
पुन नैन ऊघारु संभार कछू अस रोयो किआं सुन मे तरगौ ।।
सुन राजसुता मै वहै सुक हौं निरभागु जु वाते जु दा परगौ ।।
जिह ते सुन रूपु कथा वहि चंद हुवै प्रेम को बंद बिथा भरगौ ।। ६८।।

सवैया: तिय चंद्र प्रभा के गुमान लख्यों मुख ते निकरी है मै जानी नही ।।
पुन मे समझावन को समझौती न है जग मैं जो बखानी नही ।।
चलही निकरयो म्रिग पाछे परयो मे पुकार रह्यो सुनी मानी नही ।।
बिल गाय मुझे बिपता मे परे गौ यौं हाय मे यो पहिचानी नही ।। ६९ ।।

सवैया: सुन भानप्रभा तब तौ ऊठ दौर ऊठाय कै गोद मे झार लियो ।।
अस रोई गरे लपटाय ऊसे छुट छाती जुने हुवै दरार हियो ।।
करे कीरने काना सुने ना परे नयो सिंधु असुवांकी धार कियो ।।
नभ घूम अजा भयौ बावरो सौ थिरु हुवै गी थिरा मन हार दियो ।।७०।।

सवैया : सुन दौरी तबै बनवारि नियां पुन दासी हूं दौरी दसो दिस तै ।।
हह रानी दिवानी सी यौं बतरानी री रानी बिथा ये लही किस तै ।।
यहि दोऊ दुखी मुरछाने परे नहि जागे बियोग बडी निस तै ।।
सुधि पाई सूझे समझाई तबै नहि प्रान बिदीरन ह्वै जिस तै ।। ७१ ।।
सवैया : अब धीर धरौ जू भई सो भई न मरो मम बैन ये प्रान धरौ ।।
वहि राजकुमारि औ राजसुता सुखु सो हं सही मुख मौन धरौ ।।
मुहि जोय सी औंर नजूमी यौं ते निरधार करी तुम भौन धरौ ।।
दुखु रंज बियोग हजारो सहे पै रहे सुखु सो सिरु गौन धरौ ।। ७२ ।।
सवैया : मुहि दीजे बिदा लगौ भाल मै जा प्रभु जानै कब तुमु प्रात जगौ ।।
सुन भान प्रभा कही वाहि रे भाग मले करम्हारु कै पीछे लगौ ।।
बहु दयो स्म माँहिंय मेदी मिलो सो-ऊ जात चलो बड बेग बगौ ।।
कुठिलाई पै हौ अजौ काल बली धिक जीवनौ है बिफलाई पगौ ।। ७३ ।।
सवैया : अब देखो दिहारे फिरे कब ये भर स्वासु पढे कवि बैन कई ।।
जग को हम झार पछोर लखो जु लख्यौं बे बफाई न फाना दई ।।
दुखु संगी बने दुनीया मे न बंधु न मीत हूं देखौ दगा ही दई ।।
मन क्यो रे तुझे मे कही ना हुती जिय लायौ मजा कछू पायौ लई ।।७४।।
सवैया : स्व है ये संसार महा दुखु को घर देखो दुखी सुखी कोयो नही ।।
मद मे ये भ्रिंगिंद है मौज कहा मद प्रेम सौ मादक जौ यो नही ।।
वहि कौन है मौन हुवै बैठ रहे मन लायो कहूं फिर रोयो नही ।।
यहि प्रेम पंथ अनोखो बडी किन पायौ जिनै कछु खोयो नही ।। ७५ ।।
दोहरा : अंत कीर तहि रात की रात रह्यौ धर धीर ।।
भानप्रभा के हेत करि मति यहि होय अधीर ।। ७६ ।।
चौपई : भई प्रभात बिदा तब पाई ।। राजकुमार अधिक समझाई ।।
भान प्रभा लख कीर सिधारत ।। पाती लिखी अंकु कुकु आरत ।।
गरे बाघ कह्यौ लेहु निसानी ।। जहि कहु मिल्यो तौहि वहि जानी ।।
देहु ताहि सभ पता प्रमाना ।। देख चल्यो सो करिहु बखाना ।।
पतीया प्रेमु भरी वहि ले करि ।। भयो गगन गामी वहि खेचर ।।
नगर नगर ढूढत हिय बयाकुल।।फिरतरफत जल थल बन आकुल ।।

भावी बस इकु दिनु वहि कीरा ।। सायं समय सु थकित अधीरा ।।
भटकत भ्रमत भई दिन मासा ।। ऊरघ ऊसासत बिथित निरासा ।। ७७ ।।

दोहरा: इक सरिता तट सघन तरु तिहि बैठ्यो दुख पाय ।।
इक सरिता निज द्रिगन ते नौतन रह्यो बहाय ।। ७८ ।।

चौपई: ता दिनु जगते प्रभाकर सुकतन ।। सभा ससिकला सहित बिथित मन ।।
ताही तरु परु ऊतरे आई ।। यहि सजाति लख रहि निर खाई ।।
वहि दोऊ इक साख अधारिति ।। बैठ रहे बयाकुल दुखियारित ।।
कीर निरख समझयौ मन माही ।। मो समानि दुखिया कोऊ आही ।।
चोंच बंद बोलत न कोल तु ।। बिथित बियोगी सेजवु डोलत ।।
यहि बिचारमन जो ऊमगायो ।। लगौ रोन पुन द्रिग झरलायो ।।
यहि लखि सभाससि कला बोली ।। बिकल भई चितु ते अति डोली ।।
लखहु कंत यहि कीर बिचारा ।। रुदन करत कस बिथित बिचारा ।।७९ ।।

दोहरा: प्रभु जान्य कोऊ हम हु सम बिपति लखी दुखियार ।।
सुकत न धर बयाकुल फिरत पात पात लख डार ।। ८० ।।

चौपई: समझत हुतो सकल यहि बानी ।। सुनत सारु धुनि सकल पछानी ।।
आंसु न पोछ ऊतहि मुखु फेरा ।। बोल ऊठयो मनु दुखित घनेरा ।।
रे भाई प्रभ वहि करि पाला।। तुम हि न देव हि सुपन कसाला ।।
जो तुमार सत्रू दुखु दाई ।। तिनहु न प्रभ अस बिपति दिखाई ।।
जो मुहि दर दहि ये नटसाला ।। निसि दिन कहुहु किवहु प्रभु दयाला ।।
जो अरि ते अरि बरी अपनो ।। अस दुखु दुसह न लहि वहि सपनो ।।
प्रान घटहि अस दुख अटपट है ।। काल चक्र की पलट निपट हू ।।
जौ कछु कहु हुतो फट है छाती ।। बाके दिनु औं अति बड राती ।। ८१ ।।

कबितु: येरे बीर कीरन पुछावो कछु पीर भैया स्वास भरौ हिया की जरावे जिया आगरे।।
मौन हुवै रहौ तौ मै बतावौ बिथा कौन मेरौ अंतर ही जीवन कौ जैवजात जागरे।।
जौ कछु कहौ तौ श्रोता रोवत रहम खायना कहौ तो छाती पै पहार दुखु दागरे।।
जावौ टरबन तौ दवागन ते दाह होत गाव बरौ भूलत अगार हू को भागरे ।।८२।।

कबितु: जावौ जौ प्रहारन मै कहूं सिरमारन मै छार हुवै अकूत छित छाड ऊडजात वे ।।
नद के निकटि निकटावौ जौं मिटावौ तापु आपै मोहि ताफत पै आपुजरे जातवे ।।
इते कछू दु कै दर ददरीयाव बूडो बारबार बौरौ सराबोर बह्यौ जातवे ।।
इक मेरो प्यारो मोहि छाड कै नियारो परौं छाड घरबार ते बतावौ कहा बातवे।। ।।८३।।

कबितु: इक तौ कलेस प्रलैकाल ते बिसेस यहि बाही को बियोग मैं फिरौ हो बन बन मैं ।।
दूजे और नौतन बिथा मैथा बियोगनिकी देख आयो आखिन लगी हो लाग मन मैं।।
साची प्रेम पंथिनि लिखी जौर संग्रथिन मैं प्रेमी तैं परौखे परी बृद औरं जन मै ।।
~~कांकनि~~ वांकी आरती रतैं सरीर रोम रोम चीर ल्यिाते दूसारं पार नट सार तन मै।
।। ८४ ।।

कबितु: जौपै बाके रोवन की आसू ऊरधोवन की खोवन की प्रान की बखान कछू मैं करौ ।।
बहेंगे पखान पानी पानी ह्वै प्रमानी परैं पारद की छाती हूं बिदर परहैं डरौं।।
अनजान पथिक सुनै तौरहामाय रोवै खोवै जान याही तेन तुम सोक हौं टरौं ।।
ऐसी सुन कीर फिर बैठो तरफाय इति कहु तो सही रे कछू प्यारे प्रान मैं धरौं।।८५।।
कबितु: कौन वहि प्यारो तेरो तोहि बिलगाय बरौ बन बदनामि के मं छोर धन धाम कौ।।
दूजे वहि कौन परयो पठ जन की बृद जोज नाके मुखु मौन ह्वै दुरायो दुखु नाम को ।।
ऐसे सुन कीर तौ कहानी प्रगटानी सबै सीस पै बिहानी जो इनो के दाम दाम कौ।।
दूजे भानप्रभा की बडाई बिथा पाई जैसें रोय के सुनाई कीनो पौन पूत काम कौ ।।८६।।
कबितु: भानप्रभा नाम सुन समासस्किला फुली मूली मति दुहुन को लोट पोट ह्वै गई ।।
तरु ते ऊलट धर पर कै पलट तनु मूरछा छुटी ते ह्वै सुचेत घरी दुवै गई ।।
कीर लख कौतुक पखान परयो पायन पै ये रे हाय हाय कै पनारे नैन च्वै गई ।।
गरे लपटाय रोय रोय पछुताय दोऊ पाय केत वारु परे बेसुधि ह्वै स्वै गई ।।८७।।
कबितु: सुधि कौ संभार लै कुमार कीर अंक धारु नैन जलधारु मैं धराधर बहा दिये ।।
अहो प्यारे प्रान मै निदान ह्वै जुदा जुतो सौं कैसो कैसो बिपति बतावौ जो मै
पा लियो ।।
बन गिरकारन बिकल इवारौ इवारन मं फिरौं तूं फिरो रे अब मरतें बचालियो।।
कहो रे बियोगिनि की बिथा मै बियोगी जाको कीर सुनपतीया दई लै औ पतादियौ
।।८८।।

कबितु: पतीया प्रथम लैवा राज की दुलारी द्रिगधारी लाय हिया सौं जिया को सिर रालियौ।।
बयाकुलताही की वा बियोगिनि के जी की नीके मंगलाचरन ही के अंकुत ते पालियौ।।
प्रीतम की ठौर तौ लिखौ है निज नाम निज ठौर पिय औरते ऊपालंभ लिखालियो ।।
ऐसी बिलखाई लेख ठूलट लिखाई देखु बे सुधि कुमार ह्वै पुकार स्वासु हा लियौ ।।८९।।

कबितु: नेह कौ नसा कीवा निपट कै लपेट मैं जो लिखकै लपेटौं ताकी प्रगट निसानी यौं ।।
ज्यो ज्यो कर खोलै त्यो त्यो कर सो लपट जात मिलन की ऊमग जनात परै जानीयौ।।
इक इक कर टकौ पल्ट सौ सौ बार लिखौ आमिलौ जू आमिलौ जू आमिलो प्रमानीयौ।।
प्रीतम कौ पाती लिखौ प्रेम मदमाती मोरी साची है जूबानी यौ जूमानी यौ जूमानी यौ।।६०।।

कबितु: आसुन की बूंदै जो गिरी ही मन रूंदहीय खूंदै खरी आंखन की अवसेर भाखती ।।
अंक अक ऊपर ऊपट लाल मंडल की रोवन रक्त की कौ गोवन नराखती ।।
स्रोनते ह्यिा के सो लिखौ मैं पाती प्रीतम कौ तौ बिरह पियारे जग प्रलै सो पराखती।।
आखिन की कारख घसाय लिखो पाती तोहि पढन समै तो मुख देखै अभिलाखती।। ६१।।

कबितु: ये हो प्योरे मह पीय साचे हीय साचे बच तोरे साचो प्रभु तोहि दुखु आंच तें बचावौ जू।।
मन अभिलाखा दुखु बिपति की साखा दोऊ अमित अनंत कई ग्रंथना लिखावौ जू ।।
जीवनौ है थोरो याते कागद है कोरो लोरो जीवनो जु मेरो आय दरस दिखावौ जू।।
देर जोग होगे ढेर धूर कौल होंगे फर रोय कर धोय करमी जौ पछुतावौं जू ।।६२।।

कबितु: मुख दिखरावौ जू जियावौ बिन प्रानन कौ प्रभु जू के हेत कहूं आवौ जू खरे खरे ।।
केहूं केहूं स्वासु कोऊ अटक रही है ह्यिें पाहुनो हु प्रान परे जात है ठरे ठरे ।।
समै कौ समाईं नाह मारीयौ सौंह ताईं बिना बिपताईं चैन न्याईं कौ परे परे ।।
रातौं दिन खोवौं प्रान असी नही सीही कथी जसी निसा बयोगनी मैं रोवौं मैं हरे हरे।
।।६३।।

कबितु: बिपति ब्रिथा की कथा कौन कौ सुनावौइ जू आखैं सराबोर ये दिखावौं आगे कौनकै।।
रावरी वे बतीया जो छती मैं छलकत है बलकत हौ आठौं जाम खयाल परी तान कै।।
जाती जौ पावती नब तरस की बान परयो पहरौ प्रलाप मैं करौं हौं मुखु मौन कै।
मेरी यातरपते परोसी परे तंग मेरौ भौन हूं अंधारो खरो भाकसी के भौन तें ।।६४।।

कबितु: जौ पै अनुलावन रहै गी यह भावनजू जान यै तौ हु चुकै गौ जीवनौ हमारौ तौ।।
चार्यौ ओर बांवरत घेरो है बियोग भरी घरी है महीनौ जाम संबित बिचरौ तौ।।
हीय रो तौ स्रोन हुवै बहैगो छिन पल ही मे आज कल ही मे बनौ बावरी निहारौंतो।।
गवरी सबीह बसी आखन मै बस जहादेखौ तूही तू है नही औरिनिरधारौ तौ ।। ६५।।

कबितु: आखै तो बियोगी होगी पावस प्रचंड कै घा निफर अखंड हुवै ही द्रिग हीन ही रहे।।
लोयन जो जोयन सकौं थेगी ले कोयन के स्रोनत प्रवाह हुवै अथाह बह ही रहे ।।
सार हूं न लीनी रे ह्मारी तैं पियारी पियाह्यिा कयो पखान किया जिया जरहीरहे।।
प्रेमु ही नही वोकिधौ ने महीन ही रहौ जू तुमही नही हौ किधौह महीन ही रहे।।६६

कबितु: रावरी समीपी निस दयोस की समाल परै सयाल परै चट दै ऊचट नीद ना परै।।
बयाकुली की रात काटी जात क्यों पहार भई खाटी काटै खातीं कलकेहूं बिंदनापरै।।
सोवन मैं सोवन को सापनौन पै खपरै खान पान ख्याल मैं अमछ चींदनापरै ।।
सीस जो पिया को अंक पावत होताको सिरहाने पै फटाकों यौ फटा कौ गींदना परै ।। ६७ ।।

कबितु: जाही गरे प्रीता की बांही हरा हुवै रही ही ताही गरे सांकर सिहहन की सहीये।।
मेरे निस जागन के ऊडग ऊगाह प्यारे साह दहै साधु जन जागत जे लहीये ।।
आपनी अचैनी ताम्र चूड़ कौंचौंकावती हो नीद ऊचटावती हो सिंधन की अहीये ।।
प्रोवन नदे ते ज्यो संयोग की निसा मैं येहूं त्यो हूं इनै सोवनो क्यों देनो हमे चहीये।। ६८।।

कबितु: लीने मन मान ते ही बदले निकाल हाल हाल कर रातौं तरफाइ मैं तरफ के ।।
हीयो घरी यार ते घनेरो घरी घरी रोयो खोयो यो जियजाम पै गजर ज्यो भरफ कै।
हेर हेर हाल हरानो सौंहमारो आखें नखित खुली ही रही हहर डरफ कै ।।
अैसो कालचक्र कौ कुफेर मेरो हेरनभ चक्र सो भयो है घूमैं चार हूं तरफ कै।। ६६ ।।

कबितु: कीजै बिखपान लै निदान अैसे जीवनै सो हम कहूं आवा परे तुम कहूं आन ही ।।
कौन फल जीवन को आंसू जल पीवन कौ हम रसातल प्यारे आपै आसमान ही।।
याको जो बखान हेत आप को गिलान सुखु सत्रुन को मीत को निपट दुखु दान ही।।
मन मेरो जानत है जानत है मैंही फेर मेरो मन जानत नु जानै कोऊ आन ही ।।१००।।

कबितु: जीवत पै आय हौ पिआरे मिल जाय हौ सुनाय होतो दुखरे बियोग के बखान कर।।
नौन मनजूर यहि काल को जरूरतब कौन कौ कसूर यौंही चलहै पियान कर ।।
चित के ये चोचले चिता ही मैं लेजाहिगे जूयहैं हौं सरही अबधूर ही निदान कर ।।
पाती को प्रमान कर पीर कौ पिछान कर आवौं जू पियान कर आज जी को जानकर। ।१०१।।

कबितु: प्रभु सो प्रभात ऊठ मघवो प्रदोस समै जाम निसब ते औंर हे ते जाम जामनी ।।
यनत्य नेम पूजन प्रकार कै पुकार यही गर मैं बसन डार मागो इकै भामनी ।।
कारन करन हौ तौं दासी हौं सरन तेरी काटो मेरी बेरी प्रभु पूरौ मन भामनी।।
मेल मेरो प्यारो बिथा बिरहा बिदारौ इे जूतपत निवारौ दीजै सीत सुखु कामनी ।। १०२।।

दोहरा: अधिक प्रेमु है मिलन कौं कागद मैंन समाय ।।
बिरह बिथा बड कठिन पिय अब यहि सही न जाय ।। १०३ ।।

सवैया: प्यारे तिहारे निहारवे कौं ह्यि धारवे कौं बडो प्रेम है प्रेम है ।।
बाडी बिथा बिरहानल की तन छार कियो नहि क्षेम है क्षेम है ।।
लेखि कहै न कोऊ कबि है जु बियोग बिथा लिखै नेम है नेम है ।।
खेमन हुवै है न जौ लौ मिलौं मिलौं खेम सौं आवौ तौ खेम है खेम है ।।१०४।।

सवैया: यहि पाती ज देखी पढी दूहु वौ द्रिग तै दरीयाव बहाय दियौ ।।
जुभि गाईं हुती असवाकी इिनै फिरि कैसरा बोग भिगाय दियो ।।
वहि राज अबब बसंत रुपै ऊठि प्रात सरीर छुपाय लियै ।।
बन कीर लै कीर को आगे कियो मग गैन के गौन कौ जाय लियो ।।१०५।।

दोहरा: अब आगे सब बरन हौ इिन कौ मिलन प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयौ खोड़स तरत तरंग ।। १०६ ।।
प्रेम पयोनिधि रस कथा बढहु सुनह करि प्रीति ।।
बनय बियोगन मीत को बिछरो मिल है मीत ।। १०७ ।।

इिती स्री प्रेम पयोनिधि ग्रिंथि नेह नीति निरूपि प्रीति प्रसगे कवि साहब म्रिगिंदेन बिरचिते सूरज प्रभाकर को बिरह सुक मिलाप पाती पहुचनौ बरननं नाम खोड़समो तरंग।।१६।।

0-0

0ऋ

कबितु: प्रेमपयोनिधि के परयो हो पार पैरत में पार को किनारौ वो निहारो परैनेरौही।।
हवै परी रे बार बडी बारही मैं प्यारे संग अंगअंग आखैं के पराखै अवसेरौ हो ।।
श्रीगुरू गोबिंदसिंघ ईठमो म्रिगिंद नीठुकीनी हैं बसी ठी लह्यो आनंद घनेरो हो।।
पायो सुखु खेरौ लै ऊखेरौ दुखुदारन बिदारन बिपति के प्रतापु प्रभू तेरो ही ।।१।।

सवैया: अब दीजै पियाय क्रिपा करकै मद लाल जु लोयन लाली चढै ।।
भयो चाहे कहानी समापति ये ह्यि चौगुनी चौप बहाली चढै ।।
वहि दीजै सुधा दुखु दूर करै ह्यि सौगुनी साल खुसाली चढै ।।
वहि नेही सनेही मिले ही चहे न सैनेह की हाली निराली चढै ।।२।।

सवैया: चुकै बीत बियोग के बासर वे बिथा रैनी अचैनी मैं रोय किये ।।
अब तौ चहचान मचाऊ भला दुखु बयोग बतेरे ही जोया किये ।।
जग जाहर है रे सुजान भैया दुखु पाछे सही सुखु होया किये ।।
बिन आपु गवायौ न पायो किसू सिर दीने सुहाग संजाया किये ।।३ ।।

दोहरा: लिखन हारं या मीत को प्रीतम मिलन प्रसंग ।। कथनहार
कथनहार या कथा के या बिध कथिति सुरंग ।। ४ ।।

चौपई: वहु खेचर मग मारत गामी ।। प्रेम पवन महि गवन मिरामी ।।
राजकुवर पुन राज दुलारी ।। सुकतन धरु सुक किये अगारी ।।
अस्ट दिवस मह पहुचे तवहा ।। सूरज प्रभा हुती ग्रह जहवा ।।
हित याको यहि नेम सदाईं ।। जा दिन ते सुक गयो सिधाईं ।।
भान प्रभा नित साझ प्रभाती ।। तात रु तरे निरंतर जाती ।।
जहा बैठ सुक लीन ऊडारी ।। रीती सीस डुलावत डारी ।।
ताहि लखत सुक सम तन प्रमाना ।। फरकत पिंजर चहत तजाना ।।
तिहि जोवति आंसुन मुखु धोवत ।। कर प्रलापु अस बचन बिगोवत ।।५ ।।

दोहरा: तुलित घंटिका घट फटौ रटत रटत दिन रात ।।
कोऊ न पहुचौं पथिक सो सुनौ न मुहि करलात ।। ६ ।।

चौपई: वा दिनु हूं जस नेम नीत कौं ।। आईं हुती मग लखन मीत को ।।
अति बयाकुल कछु दिन रहि सेसा ।। तातर वरतर कलित कलेसा ।।
खरी रुदितताकत मग कीरा ।। तिहि डारी दिस ~~लखन~~ लखत अधीरा ।।
द्रिग रत नागर सेत जल भरीया ।। जनु बिद्रमु मुकता की सरीया ।।

परीयां गरे ह्यिं पर छलकत ।। ढलकत परत प्रिथी पर झलकत ।।
जब ह्यि उमहत बिरह बझरी ।। उगल परत झर अधर मझरां ।।
जिय बहिरावन ह्यित इक दुवै अस ।। कबित म्रिगिंद पढत कर बर बस ।।
झार झार सह्यि प्रगट दिखावत ।। बिथित होय रोवत अर गावत ।।७ ।।

सवैया : ह्यि राज बतै बिरहानल तें तयो तेज तंदूर की तावन सों ।।
तब तै भुंज कै भयो टूक हजारो अगारे चिगारे उडावन सो ।।
बिकलाईं सही में सबे सिर ले बदनामी के बीज छुपावन सो ।।
वर कौन अचै नी है गैन तरे मुझे पै न बिती भर फाकन सो ।। ८ ।।

सवैया : अब अंत के स्वास प्रयंत तों प्यार वा कंत की मैं ~~तजब~~ अवसेरी करी ।।
वहि आयो नही इक गरही आ इक आयु समापति मेरी करी ।।
डर पावे कहा रे सुनावे ह्मे सिव जागे प्रजा की निवेरी करी ।।
यहां रैन बियोग की हूं न प्रलै दिन को दुख दीनो न देरी करी ।। ९ ।।

सवैया : अब जौ हस हौ हसते हूं अहो असुवान ही की झरी लागती है ।।
नित रोवत रोवत रोवन ही की ये बान परी दुखु दागती है ।।
रचवे की प्रबंध ब्रिथा दुख दोह की जोह कहो किहूं जागती है ।।
जब आपनो ही हीय रो फट कै बिखरां परां कागती है ।। १० ।।

दोहरा : यहि या बिधित हि आप ही करत बिलापु अकामु ।।
तिहि अवसर झुक कीर तब अंचक कीन प्रणाम ।। ११ ।।

सवैया :

स चौपई : अति बिसमित मनुराज दुलारी ।।लखौं सुखद सुक खरौं अगारी ।।
कहि प्रणाम उत्र सु मुदन मन ।। सै तुख किधो अरी यहि सापनि ।।
भलै होहु पूछन उमगानी ।। कहु हु कीर रे सुघर सु जानी ।।
लही कहूं सुधु भूप रूप गुन ।। प्रेम अवध मम मित्यो कहूं पुन ।।
भेव खोज कहूं परो परेखो ।। सीघ्र भाख कहूं सुनो कि देखो ।।
कीर कही सुन राज दुलारी ।। प्रति हारिन प्रति कर मनुहारी ।।
भूखन बसन बान दिजि तुहै ।। तब प्रीतम की सुधि लिजिय तुहै ।।
आपनि पुन मति नीति निधाना ।। सब जग कीरति तिनी बिताना ।।१२ ।।

दोहरा: पुन अस सुख दायक खबर परम अमोलक रूप ।।
प्रथम कहो जो माखु हौं देहों कहा अनुपु ।। १३ ।।

चौपई
सवैया: समझ बयंग यहि कीर सुघर को ।। चलत प्रान कछु पलटे घर को ।।
नहें चै भईं सार यहि लायो ।। जाते या बिधि बैन अलायो ।।
ऊमग परी छतीया इकि बारा ।। जनु सरवर की बिखरी पारा ।।
ऊछर ऊछर असुवन भर लाईं ।। बिलख बदन बोली अकुलाईं ।।
प्रीतम को संदस जस लहरे ।। कह रे कासद कहरे कहरे ।।
सीघ्र संदेसा देहु सुनाईं ।। तरफरात अति हौ अकुलाईं ।।
असन होय तन प्रान सरीरा ।। कीर बनय रे बीरन कीरा ।।
यहि लख कीर धीर बहु दीनी ।। संभल रहो जू बिनतिसुकीनी ।। १४ ।।

दोहरा: बचन रावरे साच सब पै अस आनंद सार ।।
झट पट भाखन मूढता ऊचित न कर निरघार ।। १५ ।।

सवैया: इक बार ही असे बियोगीनि को नहि योग संयोग की सार कहे ।।
यहि आछी नही स्रुति साछी सबै सुधि आछी अचानक चोक लहे ।।
बतरंक ज्यो पाय महानिधि को सिधि कौन लहे पिर प्रान दहे ।।
सुघराहो बिचारो संभारो अजू सहजे ही पकै मधु स्वाद रहे ।। १६ ।।

चौपई: याबिधि कीर धीर धरवावत ।। कबहु सुखद कब दुखु दिखरावत ।।
~~तन~~ जाते वहि अकुलाय अचानक ।। फोर फटक नहि दोमन मानक ।।
मान प्रभा अकुलावत जाती ।। सभा सस्किला ऊत तरफाती ।।
रहि न सके तब वहि दो कीरा ।। पलट सरूप सु सपद अधीरा ।।
मान प्रभा गहि कंठ लगाईं ।। सभा सस्किला हिय लपटाईं ।।
प्रेमी प्रीतिम प्रीतमु प्रेमी ।। मिले परसपर अति द्रिढ नेमी ।।
लप्ट परसपर अस बड रोइे ।। दाग बियोग ह्रिदय के धोइे ।।
बिरह खरग के घाय पुरातन ।। लगे मरम महि खुले चिरातन ।। १७ ।।

दोहरा: खोल खोल ह्यि बिथित जिय रोवत मिलत अधीर ।।
रोय धोय ह्यि सोध करि सीचे सकल सरीर ।। १८ ।।

चौपई: रोवन धुन सुन सुन सभ दौरी ।। दासी अधिकारिनि जनु बौरी ।।
ताकी द्रिस्टि दोऊ पर परी ।। राजकुवर पुन सुंदरि परी ।।
परी पतंग दीप अनहारा ।। लाख लाख बरु हुवै बलिहारा ।।

करि प्रणाम सभ चरन लगानी ।। दासी सकल मोल जनु आनी ।।
सब है सुंदरता सम जग महि ।। नहि मनह्नन कोऊ अस मग महि ।।
होतमीत तौ मीत सदाईं ।। लखै अमीत परत मुरझाईं ।।
बाल बिधनह नारि सुघर खल ।। सुचि सुरूपु पर परत सकल ढल ।।
महा मोहनी तन हरि धार्यो ।। देव अदेव बिकल कर मार्यो ।।१६ ।।

दोहरा: कहा बात है बस्तु की सुन अबस्तु की बात ।।
कीमति परत करोर की आब मरोर बिकात ।। २० ।।

चौपई: जदपि तंतु की निजा इक आटी ।। मरी मरोर घरी रच टाटी ।।
गाहक मन नाहक लखु अरभत ।। लखु सुडौलु करमोल सु बिरभत ।।
अरभ परभ वहि परी जो होवत ।। खरीदार तिहि निकट न जोवत ।।
प्रानहु कहा जु प्रिय तरभाईं ।। कवन बस्तु है बिभव बडाईं ।।
सेवक की लखु सेव सुघरता ।। स्वामी तिहि बरघन बर करता ।।
नौतन मनहु लहत वहि जीवन ।। मगन मनै मन रहत सजीवन ।।
कोऊ कहत यहि करत हेत है ।। मनहु सुता पर प्रान देत है ।।
यहि बियरथ सब बचन बिलासा ।। नहि नप्रसंसित बच ऊपिहासा ।। २१ ।।

दोहरा: सभी चीन जो बसतु है तीन लोम महि कोहि ।।
ता पर रुचि सब जग प्रगट अबस सबन की होहि ।। २२ ।।

चौपई: याबिधि मिल मिलाय वहि मीता ।। गहे भवन महि मगन पुनीता ।।
सभा सखिकला प्रति लग कहनी ।। बचन बिथा निज कहुरी बहनी ।।
तिन तब कहयो बहत मै जावत ।। गही पिसाच ऊडयो कहूं आवत ।।
पुन इक बाग बिखय लै जावन ।। सीस रहितपलका पर पावन ।।
राजकवर को तहि आ जानो ।। जछराज सो मेल बनानो ।।
व पिसाच को तहि आ भपटनक ।। जछराज गह भप भटपट दपटन ।।
कठिन बिपति ते ताहि छुडाइे ।। पुन तहि खोज लखत दुखु पाइे ।।
ताती पवन पगन के फालक ।। सिध मंत्र देवनि निज मालक ।। २३ ।।

दोहरा: अति अधीर ढूंढत फिरत घर कर कीर सरीर ।।
कीर मिलन आवत इहां ब्रिथा सुनहु यहि बीर ।। २४ ।।

चौपई: बहुर कुवर की व्रिथा पुछाईं ।। पुन अपनी सब बिपति सुनाईं ।।
बिती बिथा को सुमर सकल तब ।। रोवन लगे बहुरि निज मिल सब ।।
यहि लखु कीर भयो दिलिगीरा ।। अनिक भात करि दीन सु धीरा ।।
अब यहि उचित न छमा कीजिये ।। यहि प्रसंग सब जान दीजिये ।।
रलिमिल कीजय हास बिलासा ।। प्रभ माया के अमितु तमासा ।।
यादि राखियो यहि बच मेरों ।। बिती बात कस सोच घनेरों ।।
यथा किसू कवि के यहि बचना ।। बिती बात पर कहि बड रचना ।।
कछू न परय करि बिनु पछुतावनि ।। कबहु न उचित बिती सुमरावन।। २५ ।।

दोहरा: भान प्रभा कहि कीर प्रति सुन खग मधुरी बानि ।।
सुभ आगम सुभावक तुमु नीति निपुनि मतिवानि ।। २६ ।।

चौपई: राज कवर सो मति कोरि पुनरु ।। देखो सुनों न ह्म हु स्रवन धर ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। है या पर बरसार प्रमानी ।।
जान परी मन की कुटिलाईं ।। लगन लगा जस दसा दिखाईं ।।
निपट कुमति है मीत कहावत ।। वहै प्रान को सत्र दिखावत ।।
अहो कीर छिन राज कुमारा ।। जितो बिपति को सह्यो सु भारा ।।
केवल अपजी सुमति प्रसादा ।। लही सजा निज तज मिरजादा ।।
भले आपु इकाकी बिचरति ।। सही सु सही बिपति निज मति गति ।।
ह्महु संग लै द्वै त्रै बारा ।। हठ करि डारी बिपति मझारा ।। २७ ।।

दोहरा: बरा जोरि बर जतन टतह ट कत हठ यहि ठान ।।
हाथ दीप लै कूप महि डारी पकर निदान ।। २८ ।।

चौपई: ह्महु दुखी करि निज दुखु पायो ।। कुमति कहाय बहुर पछतायो ।।
नहि जानिय यहि भाग कवन ते ।। फिरे प्रान जमराज भवन ते ।।
किति बार खा चुकों खुटाईं ।। अजहुं समझ नहि परत लखाईं ।।
अब देखिय कस बनय बनावा ।। भावी पर न चलत किहु दावा ।।
ह्वै है वहै जु बिधि रच राखा ।। को करतरक बढावय साखा ।।
अस कहि दुरज द्वार बंद कर ।। मिले मीत निज महि अनंद कर ।।
मद मगवाय दरदु गम दारन ।। पान प्रात्र भर स्रम मग हारन ।।
गगन चक्र वत चक्र सुता कहु ।। फिरयो आप महि कट बिपता कहु ।। २९ ।।

दोहरा: गाय निसा-ज असाज के स्रवन मरोर सु धारु ।।
तान तरंग ऊठाय कर गावत मंगल चारु ।। ३० ।।

चौपई: पूरत भयो भुवन वहि धुनि करि ।। भूमति सुघर सुमति धुनि करि ।।
यहि सब सार त्रिपति पहि आईं ।। भान प्रभा जाके घर पाईं ।।
इक पुरख संदरि बपु धारी ।। मनहु अतन धरन रतन धारी ।।
दुतिय वन संगितिया दुति दामनि ।। रति अनहारु किंनरी कामनि ।।
भान प्रभा तट नौतन आइे ।। रागु रंग ~~कह~~ करही मन भाइे ।।
यहि सुनि निपति मनहि टहिराईं ।। भलो कीन प्रभु दुतिय पठाईं ।।
दोऊ इकठी बरहु प्रभाता ।। पुरखु पकर बघहों बिख्याता ।।
दोय सहस अवसार पठाइे ।। कईं बार रन छित पतियाइे ।। ३१ ।।

दोहरा: द्वै सैनप समभाय संगि चौंकी रहु सविधान ।।
बिना आयस खगहं ऊडत गगन न पावय जान ।। ३२ ।।

चौपई: जगत प्रभाकर ह सुधि पाईं ।।
कह्यो भलो करहि रघुराईं ।। बहुतु काल महि मिले पियारे ।।
।। सुखद सभा के अनद निहारे ।।
बनहि सु पात्र परेखी परहं ।। प्रभु बियंत कस कौतक करहे ।।
सैन चहूं दिस परि वारि परि ।। यहि निज सहज अनंद रहे करि ।।
जब त्रिप प्राची सैन भवन ते ।। ऊठयो प्रकासित नीद रवनिते ।।
सबज सिंघासन गगन बिराजौ ।। दुतिय चमूंपति दुति लख लाजौ ।।
ऊडग सैन सब संगि मिलाईं ।। बरयो अवाची गिरि सु पराईं ।। ३३ ।।

दोहरा: जगत प्रभाकर ऊटत बहि क्रित असौच पसचात ।।
कर सिनान नित क्रित करी सुमर हरी जग तात ।। ३४ ।।

चौपई: ब्रिधु पुरखु की वहि बिरपाटी ।। सरब काज सिधि की ऊदघाटी ।।
तिं हि ते बिजय मंत्र पढनीको ।। बिजय त्रिभुवन देत सुख जीको ।।
~~क~~ द्वार बाग के निसर सु ठाढो ।। प्रभ प्रतापु बल धीरज गाढो ।।
जा जा की तहि द्रिस्टि परयो ।। मोहत ह्वै चरन न लपटायो ।।
मंत्र सकति बल सकल अधीने ।। चरनन परे भेट सभ दीने ।।
दोऊ सहस बर बाज सवारा ।। सैनप सहत इवै रहि परिचारा ।।
तब तौ द्वार खौल मन खोला ।। यहि सुनत त्रिपति मनिहि अत डोल्यो ।।
औंर सैन दे पटी नगारा ।। पकरहुलर सह सैन सिदारा ।। ३५ ।।

दोहरा: वहि हूं जब सनमुख गईं भईं दासि बिन दाम ।।
सुमरन हूं रन नार ह्यो भयो औंर ही काम ।। ३६ ।।

चौपई: तब तौ प्रगट भई यहि चरचा ।। यहि कोऊ सिध पुरखु को परचा ।।
कथा संछेप न्रिपति सब सैना ।। परी प्रिथक कर बिथित अचैना ।।
जो आवत इन की बस जावत ।। सकति न सनमुखु द्रिस्ट ऊठावत ।।
छुभित न्रिपति आप हि चढ धायो ।। भ्रम भाया को भेवन पायो ।।
कहा कछुक सैंना न्रिप संगा ।। कहा सकल ऊत सैन ऊतंगा ।।
काढ खरग को पयो नर राईं ।। करी आप महि आप लराईं ।।
घायल भइे पांच दस सूरे ।। कछुक प्रान तज परे स पूरे ।।
लयो पकरि न्रिप को निज सैना ।। पकरि जकर पासन कछु भैना ।। ३७ ।।

दोहरा: बच्यो न अपन नरेंस लख ल्याइे बंद कराय ।।
जगत प्रभाकर के समुखु ठाढो कीयो बनाय ।। ३८ ।।

चौपई: जगत प्रभाकर ऊदित प्रभाकर ।। परम दयावल मन भय साकर ।।
पुन लख कठिन दिनन को फेरा ।। कुटिल समय को पलट जु हेरा ।।
चलि दलि सम हिय थहरायो ।। बिसमित मनु अस बचन अलायो ।।
हे प्रभु अैसु कुफेर मनु काल को ।। किस हूं दिखाहु न दुसह चाल को ।।
मित्रहु बनय सत्रु छिन माँही ।। बारिहु बिगर क्रिसी कहु साँही ।।
अस कहि ऊठ न्रिप कंठ लगायो ।। तत छिन बंधन सकल छुरायो ।।
अति सदकार बिठाय बराबर ।। अभय दीयो तज रौस सराबर ।।
वहि लज्जत अति मन पछुतावति ।। चकित सभी तन सीस ऊठावत ।। ३६ ।।

दोहरा: जुग जानू मध सीस धर चिंतातर मुखु मूकि ।।
बैठौ बिथत ऊदास अति अधर ऊसासत सूक ।। ४० ।।

चौपई: राजकुवर कहि बचन बिनीता ।। नीति निपुनि न्रिप कहु सुन मीता ।।
पाहुन पर अस धावन करनी ।। कहहु कवन सिंम्रिति मग बरनी ।।
न्याय रीति ते दूर बिचारहु ।। कर बिबेक निज हिय निर धारहु ।।
हम तौ हुते पाहुते थारे ।। पहुनाईं के ऊचित बिचारे ।।
करन हुतौ आदरस सदकारा ।। तुम तिहि पलट ऊठाली रारा ।।
प्रभु को प्रिय यहि परी न रीति ।। जग स्वामी सह सकन अनीती ।।
याते तुम हि सु भय दिखरायो ।। तुम हिस जिय तरहहु टकु

याते तुमहि सु भय दिखरायो ।। तज्यो नीति मग असफल पायो ।।
तुमहिस जिय तरहहु ठकुराईं ।। हमहु नया-की कछू परवाईं ।। ४१ ।।

दोहरा: कटि बाधे हम तौ लखहु अहें चलन कहु त्यार ।।
कथा रहें इसरार की सदा बिदित संसारु ।। ४२ ।।

चौपईं: आजु काल यहि पाहुन चलईं ।। बिधना बिधि बिधि किये न टलईं ।।
वहि न्रिप लख याकी ऊदारत ।। नीति निपुनिता धरम चारत ।।
गुन निधानता धापित डीठी ।। भयो चकित चित लख अस ईठी ।।
करी सव्रता मुहि अस गाढी ।। पकरयो गयो सपरधा बाढी ।।
बध बंधन लायक मम दोखा ।। करयो मोखु मुहि तज ह्यि रोखा ।।
पुन अस राज भाग करि आयो ।। दयो दानु मुहि कछु न जनायो ।।
यहि कोऊ परम पुरखु अवतारी ।। सेवक बनत स्रिस्ट लख सारी ।।
अस बिचारु कर बिनति सुनाईं ।। जस हम करी तें सिय हि पाईं ।। ४३ ।।

दोहरा: प्रभ बिअंत बड तुमहु पर करी क्रिपा या भाय ।।
राज भाग लायक सुभग रावर मति दरसाय ।। ४४ ।।

चौपईं: अस प्रातपु अदभुत जिहि भारी ।। देव पुरखु हौ नरु अवतारी ।।
सेवक सकलु स्रिस्ट यहि तेरी ।। तुमहु न्रिपति हम निज द्रिग हेरी ।।
करी अनीति मैं सैन पठाईं ।। पलट बंद मोहू करि ल्याईं ।।
अब यहि राज भागु सब तेरो ।। सेवा करहु जान मुहि चेरो ।।
निज ऊदारता ओर लखाईं ।। छमा करहु प्रभि मुहि कुटिलाईं ।।
याबिधि बिनती करि घिघियानो ।। गरब छाड चरनन लपटानो ।।
राजकवर गह लीन ऊठाईं ।। धीर धराय कंठ लपटाईं ।।
लोचन ऊमग प्रेम जल छाइे ।। कर समोध अस बचन अलाइे ।। ४५ ।।

दोहरा: करहु बडाईं आपनी जिती कहहु प्रगटाय ।।
जस हम हैं जानत हमहु कैं जानत रघुराय ।। ४६ ।।

चौपईं: जैसहि इछा ह्वै घन स्यामा ।। तैसहि आय जुरत सब सामा ।।
सैना को कसूर नहि राईं ।। जसु प्रभु भाईं तिमहि नचाईं ।।
अब इन पर कर क्रिपा निहारहु ।। प्ररब वत सब को प्रति पारहु ।।
जाह भवन निज संक मिटाईं ।। हमहि आनंद इस हि महि भाईं ।।

हम पाहुन है बिथित बिहाला ।। ठहरहि इहा कछुकअब काला ।।
निज समाज सुधि लै इहि ठाईं ।। पुन हम गवन करहि सुख पाईं ।।
अब या मै तुम फेर न करियहु ।। हमरो हिति यहि माहि निहरि यहु।।
याबिधि आयस पाय नरेसा ।। गयो भवन निज मान निदेसा ।। ४७।।

दोहरा: सैना हूं सब संग भईं लहि करि संधि बिधान ।।
गइे आनंदित सैनपति सब निजि निजि असथान ।। ४८ ।।

चौपईं: त्रिपति जाय ग्रहि अति सुख पायो ।। मनहु बहुरि छिति राज हि पायो ।।
अनिक भांति की साज बनाईं ।। पठी कर वहि तरच पहुनाईं ।।
फैल परी यहि नगर जु चरचा ।। ऊमडि परे जन दरसन परचा ।।
इवार बाग के निस दिन मेला ।। कबहु न कुवरन हित इकेला ।।
पुनता त्रिप पठइे परिवारा ।। त्यावहि जाइ सैन की सारा ।।
तहि ते चालिस दिन के मग पर ।। मिल्यो परयो सागर तट लसकरि ।।
म लिखे पत्र जातिनहु दिखाइे ।। कुसल संदेह कुवर के पाइे ।।
मुद्रा अंकित अंक पछाने ।। कुवर बिरहि महि हे अकलाने ।।
प्रान कहा हे काहु के तन महि ।। मुंद्रा निरख नइे धर जन महि ।।
मुद्रा सहित नैन धर पाती ।। लह्यो नीर मछुरी तरफाती ।। ४६ ।।

दोहरा: निस दिन धावति पंथ महि बीसक दिन पचीस ।।
मग उलंघ ऊड प्रेम बस मिले आन निज ईस ।। ५० ।।

चौपईं: भयो आंन कुवर लख सैना ।। सोगति कही परत रही बैना ।।
मिले प्रधान भेट धर सारे ।। बिरह सिंधु जनु बहत उबारे ।।
कुवर कियो सब को सनमाना ।। बसन रतन अधिकित दिया दाना ।।
और नगर जन बनिक बजारी ।। सबहन दयो यथा अधिकारी ।।
पुन सैन-प प्रदार सन मानै ।। बसन अभूखन दे त्रिपताने ।।
रतन जटित बर ससत्र सुहावन ।। दइे सैन प्रति रुचि उपजावनि ।।
दोय मास की-व जहु इनामा ।। दईं सैन नौतन रचिसामा ।।
बहुर मिल्यो सबही रणवासा ।। दासी अधिकारिन सुख रासा ।।
सखी सहेली सुता प्रधाना ।। कही जु पूरब सकल बखाना ।।
सभा ससिकला भान प्रभा की ।। प्रान पियारी अभा समा की ।। ५१ ।।

दोहरा: रोय म रोय इक इक के मिली कंठ दुवै रानि ।।
घूम परी रणुवास महि कही परत नहि बानि ।। ५२ ।।
चौपई: पुन धर धीर दुहूं रानी बर ।। सबन समोधि कियो बड हित कर ।।
यथा ऊचित सब ही सदकारी ।। दान मान दिय अगनि अपारी ।।
अंतरंग जे सखी सयानी ।। तिन प्रति निज निज बिथा बखानी ।।
सुन सुन सुंन भईं वहि सारी ।। बारबार सुमरत गिरधारी ।।
धंनु प्रभू हरि अंतरजामी ।। बडी लाज राखी जग स्वामी ।।
नौतन बनम सभन कहु दीने ।। लहे ऊबारु पखान अधीने ।।
रल मिल सबहन कीन बधाई ।। मंनत कि निछावर कोटि कराई ।।
कछुक काल तहि लहि सनमाना ।। कीयो तहाते बहुरु पियाना ।। ५३ ।।
दोहरा: मग महि करत अनंद बहु मिले परसपर मीत ।।
कथा कहानी तिन नई कीर कबित कर प्रीति ।। ५४ ।।
चौपई: हास बिलास करत मन भावत ।। कीर सबन के मन पर चावत ।।
नित प्रात ऊठ करत पियाना ।। जनु फुलवारि फुलित चलु नाना ।।
निसि आगम ऊतरत जह डेरा ।। जनु बसंत रितु ऊपबन हेरा ।।
साझ भोर नितु अनद समेता ।। चलत पंथु सविधानु सचेता ।।
चलत चलत इकु दिवस अचानक ।। संपति बिभवन खित सुभ बानक ।।
बड प्रभाव युत जगत प्रभाकर ।। चलत घरन जनु दुतिय दिवाकर ।।
इक बन जन ऊपबन छबि पावत ।। सुमन प्रफुलत भ्रमर गुंजावत ।।
सुखद ठाँउ लखु किय तहि डेरा ।। ऊतर परयो लसकर चहु फेरा ।।५५ ।।
दोहरा: बिसथ्रित बन अति रंम्य धरु लखि वे लायक लौन ।।
रचना तरु फुलवारि की कबि न योग सुखु भौन ।। ५६ ।।
चौपई: सरस सुगंध सुमन फल दल की ।। लजित करत म्रिग मद मद हलकी ।।
हरयो भरयो मैदान सघनतर ।। कर राखौ जन छिरक अतर तर ।।
अमल बहत जल मधुरस पावन ।। मुकता पानि पयरस सुहावनि ।।
हिम रितु को प्रवेस अस सीत हि ।। जम्यो गगन पर इक पुनीतहि ।।
खग म्रिग निज निज जमे भवन महि ।। छुधा त्रिखा सहित ज्यो गवन महि ।।
तापन तप भछन हित बाहरि ।। आवति नहि कांपति हिय थरहर ।।
हियरो जरत सीत कठि सबको ।। बोलत धूम धार मुखु मस कौ ।।

सबद प्रवन तक जात त काको ।। मुखु सौ निसरज मत ठर ताकों ।।५७ ।।

दोहरा: ओस बिंद चाटन सु हित बाहर होतु न ब्याल ।।
घस्त दौर बां बीत्रस्त कुंडल करत-तकाल ।। ५८ ।।

चौपई: जग बिवहारु बद तिहि अवसर ।। बैठे बगल दया ठरतकर ।।
पिय प्यारी प्रयंक इक सोवत ।। द्रिढ आलिंगन निज अंगन रोवति ।।
तऊ सिकुर जुग जानु ऊदरसों ।। बिछुरत नहि जन दर बछु दरसौं ।।
अस्रुपात बाती सो ढलकत ।। मग महि जम कर का ह्वं झलकत ।।
टोल पतंग प्रेमु कर लपटत ।। बल बल जात चहूं दिस झपटत ।।
दीप सीत कर सीसु ढुलावत ।। डर फनूस महि बदन छिपावत ।।
बाती को तन बरफु बनो हौ ।। पंघरन कौं नहि अंक गनौं हों ।।
अऊर पखान पावक ~~चिनगारे~~ चिनगारे ।। झरत यदपि चहि सीत निवारे ।। ५६।।

दोहरा: तदपि परत पालौ प्रबलता प्रभाव अस पाय ।।
जमी सिला की सिला ही कठिन अयो मयदाय ।। ६० ।।

चौपई: चतुरथ गगन तनू रत पति अति ।। सीतल परयो बरफवत अदमुति ।।
माठी मार सरदया बिधिकै ।। जनु कसमीर बरफ की निधि के ।।
पंगुन पकर बटेर बटोरे ।। लुंज न किते कप कर मरोरे ।।
इक पाद लिय पकर कुरंगा ।। अस कौतुक लख परत सुरंगा ।।
म्रितिक चितामहि जरत दुखारे ।। जीवति के कर पद ठर ठारे ।।
पावक दमक सुमन मुखु लाली ।। ओस बिंद सीतल कर डाली ।।
ऊपबन हूं महि सीत दुहाई ।। प्रभु माया क्रित फल दल त्याई ।।
लख्यो परत बन जटित जड़ावा ।। ओस बिंदु मुकता छबि पावा ।। ६१ ।।

दोहरा: सब तरुवरु की लता महि पात पात पुन डारि ।।
मुकता हीरन की मनहु जटि राखी रचलारि ।। ६२ ।।

चौपई: सुमन हजारे कोसु लाल मुखु ।। लजित करत कुंकम को हिय दुख ।।
पीत डारि बर परन कपूरी ।। हिम सम भिक्ति सिसिर क्रित चूरी ।।
कवन ओर अस सीतल ताको ।। तपत धा मुख समवन सु बाको ।।
पावक परसबु जन बलिहारा ।। जनु पावक पूजक जगु सारा ।।
ता अवसर अस सीत अधिकता ।। आज दिवस लग है जनु बयकता ।।
मन प्रियान के सरद परे हैं ।। गवंहूं धन के अंकु दुरयो ड

मन प्रियान के सरद परे हैं ।। प्रीति तपत ते रहत ठरे हैं ।।
रवि हूं घन के अंकु दुरयो डर ।। पावक पूजन कौ प्रतापु वर ।।
सुमुंद कीट जिम जीवन सब की ।। पावक जनु हैं जान सरब की ।। ६३ ।।

दोहरा: सरद स्वासु प्रीतम भरत प्रेमी कवनि कहानि ।।
बिरह तपत हूं अतप हुवै थकित परी बह रानि ।। ६४ ।।

चौपई: दसनन दसन बजत झकझोरत ।। रीभि अधर को मान मरोरत ।।
जमी जात पानन की लाली ।। मनहु ससी कौ डली जमाली ।।
प्रिय पियारी सोवत इकु अंका ।। तऊ न पावत उसन प्रयंका ।।
सीतल सुरा करमत सकल जन ।। पावक पूजक प्रिस्ट सकल जनु ।।
वा बन महि अस परम जु डाईं ।। सकल सैन कंपत थहराईं ।।
बाके टेडे अंग अकरावत ।। ठौंर ढारु असि दसन बजावत ।।
तुपकत मचे मनहु लस्टका ।। चकमक झरत न अनल अस्टका ।।
तोरा दग तन जगत जगाइे ।। ब्यरथ भूबे बंदूकै बोझ उठाइे ।। ६५ ।।

दोहरा: कंपति मति सब जम कल दिम्रिति कामिलत गुड़क ।।
फूक फूक पावक भ्रम महि स्वासु चढत मुखु सूक ।। ६६ ।।

चौपई: मिदुल नर नमत अस जम गईं ।। जुगनू दमक लखत भ्रम गईं ।।
गहत दौंर समझत चिन-गारी ।। वहि उडजात रहत कर झारी ।।
सीतलता की चलन नियोरा ।। इकु दुतिय को चलत संयोगा ।।
सीतलता अस छईं सकल जग ।। पावक चक्र जमयौ जनह्मि लग ।।
राजकुवर तहि आयस दीनी ।। ऊतर हु इतहि सु ठौंर नवीनी ।।
लग सराय चे बड समियाने ।। रंग रंग की तनी बिताने ।।
उतर तहां हिय उमग अनंदा ।। सब समाज संग मं सुखु कंदा ।।
भान प्रभा पुनि समासस्किला ।। त्रिभुवन त्रिय मनि मुकटि सु अबला ।। ६७ ।।

दोहरा: अस प्यारी संग कीर पुनि परम प्रसंगी मीत ।।
अस प्रीत मनहि औंर कौ साचौ सुखद पुनीत ।। ६८ ।।

चौपई: उमग उठी लख सरद बहारा ।। मिल बैठे प्रीत-मतिहि बारा ।।
मद मगाय कर पान रवायो ।। रचक बाब आमिख बनवायो ।।
पै सराबु सीसे महि ह्मि करि ।। बनत बरफ हही तुल इक जमकरि ।।
पावक तपत करत करत कई बारा ।। तऊ सिय रावत जात असारा ।।

परत कौल महि मद जम जावत ।। कुलफी बरफ लखत सरमावत ।।
रसनार हत सुराही मुख पर ।। तूल दई सरदी के दुख करि ।।
कै बैठ रह्यो तिहि गरो सीत कर ।। जो कछु बोलत सिर भुकाय कर ।।
कुल कुल करत बर थरी बानी ।। मनहु सीत महि कंपति बखानी ।। ६६ ।।

दोहरा: अधर सुस्क प्यालो परयो सेद सहित सब अंग ।।
नीर पात्र जम बरफ कों फटक मुकर के ढंग ।। ७० ।।

चौपई: परी सीत की सैन अवाई ।। सद दिस कंपति पुकार कराई ।।
सब बजारु सौदा त्रिपुल की ।। लैन दैन इक रही तूल की ।।
जब रवि पान पात्र जग मग कर ।। फिरयो चंदु बदनन महि दग कर ।।
मद मत वारित जगत प्रभाकर ।। ऊठे तरंग अनेक ऊमग करि ।।
तिन महि इकि संकलप असारा ।। फुरयो बिबरथ आन तिह बारा ।।
इते दिवस हम सो बिछरानी ।। रही आन के ग्रह दोऊ रानी ।।
तिय को कहुहु कवन भरवासु ।। सदा बिफल ता करत प्रकासु ।।
मन यापर किसहि कवि कही बानी ।। नारि नाम की कबित निसानी ।।७१।।

दोहरा: नारि अपावनि जो कहूं पान परय परीख ।।
तिहि लख नाहि सराह जिनि वहि न नारि सुन सीख ।। ७२ ।।

चौपई: याबिधि की बहू ऊच निचाई ।। मति महि फुरी बुरी मनि आई ।।
मद के लो रहि लोरैं चढी ।। जरी कटी कछु मुख ते कढी ।।
कुटिल ब्रयंग बढ लग्यो बिबादा ।। बिरस सभा ह्वै चलि बरबादा ।।
यहि लख हरि तब सन वहि कीरा ।। ग्रहि सिबंध सद मनहु फकीरा ।।
देस काल बेता गुन माना ।। सद सुभाव की करत पछाना ।।
तप तिहि ये जानत सम मानू ।। रसना बिन रस कबितस हंसा ।।
।। अंतरंगु मित मम योग प्रसंसा ।।
ऊडत गगन खग की गति जानत ।। बान गयो लख बोल बखानत ।। ७३ ।।

दोहरा: मति बिरमाई ब मद बिबस चढी बिपर जयो लौर ।।
बिगरयो चाहित स्वाब सब जनु रस महि बिस घोरु ।। ७४ ।।

चौपई: यहि मान समझि सुघर मन ठाटी ।। निज पर बीच बात वहि काटि ।।
चित ऊचाटाय वहा ते फेरो ।। कह्यो कुवर इकु बच सुन मेरो ।।
इसी हेत जग सकल सियाने ।। मद मदग की निंद बखाने ।।

याके बढत होत मति नासा ।। बयरथ कलपना करत प्रकासा ।।
क्रित ऊपकारु बिसरजित सारे ।। फुरत कुटिल संकलप असारे ।।
बिसरजात सेवकि सिवकाईं ।। मद कर परत सुमति बवराईं ।।
जात रुखाईं छाय बदन पर ।। बिगर म बैठनो ह्यि बिस दन पर ।।
मानवता ते दूर पछानहु ।। तनक ध्यान मो दिस निज आनहु ।। ७५ ।।

दोहरा: इसु बियोग की दसा महि अनिक निहारे रंग ।।
सुमरन आयो प्रकन दै सुनहु-त क्थहु प्रसंग ।। ७६ ।।

चौपई: प्रभि चाहत्य तिहि सुनत कुमारा ।। तजहि कलपना निपट असारा ।।
जगत प्रभाकर कह्यो ऊचित है ।। अस प्रसंग अस समय सुचित है ।।
बटत कहो जा बिधि लह मरम ।। सकल बिलाय जाय यहि भरम ।।
तबु सुक कही सुनहु मम स्वामी ।। छिक न्रिपहु तो कहू बरनामी ।।
परम सुघर धरम ग्य ऊदारा ।। सूर सबल बड जग ऊजियारा ।।
बिसन भगत पावन मन धरमी ।। राज धरम बित परम सुकरमी ।।
ताके नगर हुते इवै पंडित ।। दोऊ सहोदर बड गुन मंडित ।।
न्यायनी तिवादे समफारा ।। करत बिवसथा परम प्रचारा ।।
न न्रिपु अधिकारित धरन न्यांव ह्ति ।। आग्या देस चलत ऊन की नित ।।
इकु भ्रात न्रिपु आयस पाईं ।। गयो अनत कहूं क्रित बस धाईं ।। ७७ ।।

दोहरा: गवन समय निज नारि की रादन ह्त संभार ।।
कही भ्रात सन निज समफ जस कछु जग बिवहारु ।। ७८ ।।

चौपई: वहि कामनि ही अति सुंदरी ।। सुरी किंनरी अस नहि परी ।।
कबहू कबहु वहि जान सु लागै ।। सुधि समार ह्ति करि अनुरागै ।।
लखी जु वहि त्रिय राज कामनी ।। दबक रहत जिहि लखत दामिनी ।।
मदन अधीन भयो पंडित खल ।। धरम पंथ ते कु तुरत गयो टल ।।
इसी हेतु यहि नर मति माना ।। गुपत रहन तिय करत बिधाना ।।
लखन प्रकन ते ही भव माही ।। ऊठत ऊपद्रव क्षपी सुनाही ।।
वाकी द्रिसटि जु तिय पर परी ।। पलन परी सुधि बुधि सब ~~हरी~~ हरी ।।
अस बिरले ही हो बती नर ।। जिहि ह्यि बिधतन जु वती द्रिग सर ।। ७९ ।।

दोहरा: बिरह बिथा छिन छिन बढत मति गति गी बवराय ।।
कछुक दिनन महि अधिक हो जगी ~~लन~~ लगन की लाय ।। ८० ।।

चौपईं: पै वहि तिय जस रूपु सुहावनि ।। ताते अधिकु पतिब्रत पावनि ।।
असगुन क्यो हूं बनत सुभायक ।। सोनो पुन सुगंध सुख दायकि ।।
वहि मति मंद मदन करि पीरत ।। तज प्रलोक भय जग अपकीरति ।।
कह्यो मिलन हित ताहि निसंगा ।। जिम दीपकि लख पचत पतंगा ।।
धरम चारनी वहि गुनखानी ।। ताकी कही रंच नहि मानी ।।
तब याको चिंता अति बाढी ।। यहि न मान है हठ तिय गाढी ।।
प्रगट करै जो निज पति आगै ।। बढै सपरधा हिय दुखु लागै ।।
अप्रापति को दुखु इक गूनो ।। भेद प्रगट है यहि दुखु दूना ।। ८१ ।।

दोहरा: अति अकुलावत दुस्ट मति गयो न्रिपति पहि धाइ ।।
बिनति कीन रच कपट छल दोख न्रिदोख हिलाइ ।। ८२ ।।

चौपईं: गमन समय मम भ्रात सु जाना ।। निज तिय रछा मुझ हि बखाना ।।
तिन दुस्टा बिभचार कमायो ।। अवस पाय मोहि लख पायो ।।
दंडनीय लख कुमति धरम मग ।। तज म्रिजाद कत अनत धरयो पग ।।
न्रिपति हि जान धरम मग बेता ।। नीति निपुन न्याव कहु सचेता ।।
आग्या दीन यथा तूहि भावै ।। न्याव रीति जस दंड बतावै ।।
देहु बिवस्था लख तिहि सासन ।। यथा उचित लहि स्रुति अनुसासन ।।
तिन खल जाइ इकांत बहुर तिहि ।। बहु समझायो तजय धरम जिहि ।।
अबि लग कुसल न तुहि कछु हानी ।। प्रान राख कहनो मम मानी ।। ८३ ।।

दोहरा: नात रहन तप दान ही बिसर परहि तन प्रान ।।
दंड हमारे हाथ है आयस दीन रजान ।। ८४ ।।

चौपईं: तिय सरदूल हुती वहि तियबर ।। स्याल भब कियान ते नहि किय डर ।।
कह्यो प्रान जी वहि तब जावहु ।। तजो न धरम कुकरम कमावहु ।।
यहि सुन वहि पापात मकामी ।। लखयो न प्रभु सभ अंतरियामी ।।
बाहरि नगर लिजाय तियाको ।। द्रिढ ब्रत जाकै हिया पियाको ।।
कर अधरम बहु हतन पुपाना ।। तन ताको तिन तरयद बाना ।।
परे पखान पुंज तिहि ऊपर ।। परी रही तिय तहि तब भूपर ।।
लखत लोग कंपत भूयमाना ।। फिरे समल निज निज असथाना ।।

ऊतरछ कह रविहि तिय राखी ।। परे पखान मनहु गज माखी ।। ८५ ।।

दोहरा : प्रान मुकर अनयाय के ऊपलन ते हरि आप ।।
लयो बचाय पतिब्रता करन प्रगट परतापु ।। ८६ ।।

चौपई: रंच न सकतिहि लगन न पाईं ।। भयो धरम तिहि आन सहाईं ।।
ताम दाध मति परे पखाना ।। हाथ दीप लै कूप पराना ।।
निस को वहि पखान सरकाईं ।। चली इक दिस सुमरि कनाईं ।।
बन महि इकि तप सी को आस्रम ।। पावन हुतो निवारि कसब स्रम ।।
वहि हरि भक्त छाडनगरा सन ।। त्याग जगत लिय कानन बासन ।।
ताहि पहुची प्रभात हुवै आई ।। आस्रम लखत धीर मन धाई ।।
कर प्रवेसि मुनि कु दरसन पायो ।। चरनन निकटि प्रनामक करायो ।।
तिन लख आदर बचन ऊचारा ।। बैठहु पुत्री कुसल तुमारा ।। ८७ ।।

दोहरा : इक त्रिया ताकी हुती इक बाल ससि भाल ।।
तिहि बालक की पाल हित-तवह्यो कि करहु संभाल ।। ८८ ।।

चौपई: हरि सुमरन करि काल बितावहु ।। अंन बसन जस बनय सु पावहु ।।
हित बच सुनत बिनीत सुहावन ।। पुन तिह नारि लखी बर पावन ।।
रहित भई वहि तहि कछु काला ।। निसि दिनि लाड लडावत बाला ।।
ताके ग्रिहि इकि दास दुस्ट मति ।। यथा निपटि निलज सठनीच अघी मति ।।
यथा ऊकति है प्रगट प्रवीना ।। कुसल न करहै कुमति कमीना ।।
नु बन वंत तिय लख ससि बदना ।। पीड़त भयो बिकल बस मदना ।।
साम दाम बहु रचे ऊपावा ।। वहि पतिब्रता परयो न दावा ।।
तब वहि दुसट मनहि झंझलाईं ।। सुवामी धरम की मूल ऊठाईं ।। ८९।।

दोहरा : अंतराय लहि लाल के कीये तुरतु बध प्रान ।।
दुखनता तिय सीस धर कीनो कूर बखान ।। ९० ।।

चौपई: सुत सनेह जग अति बलवाना ।। राव रंकु प्रति सम दुखदाना ।।
वा मुनि को मनि तप तपाय दुखु ।। पै द्रिढ ब्रती न प्रगट करयो मुखु ।।
भावी अमिटि जगत पति केरी ।। जाकी सगल द्रिसटि यहि चेरी ।।
हरि आयस पर राजी रहनो ।। यहै धरम हमरो निर बहनो ।।
ता तिय प्रति कछु औंर न भाखी ।। पै निज भवन पुन वहि राखी ।।

बीस तिमासी कन कटि वाईं ।। आदर युत वहि बिदा कराईं ।।
ह्वै निरास वहि चली बिचारी ।। कछ्छ जानिईकु गिरधारी ।।
बिपति समय लखु हरि सुमरावति ।। वहै भली प्रभि जो तुहि भावति ।। ६१ ।।

दोहरा: ईकु नगर प्रापति भईं गईं जु ताके द्वार ।।
लखी भीरु बहु जनन की आवत जुरी अपारु ।। ६२ ।।

चौपईं: तिय दया वलीकिधो बावली ।। पूछत-भी लोगन ऊतावली ।।
याते बनयो कौन कुकरमा ।। जाते याको बधही धरमा ।।
लोगन कह्यो सुनहु री सुंदरि ।। जाबिधि बूडो दु सहस मुंदरि ।।
बीस तिमासी कनक करज की ।। देणदारु है बिथा मरज की ।।
यहि दारिद बस परम दुखारी ।। नही सकति जो देय ऊतारी ।।
त्रिपति नयाव कर दंडु लगायो ।। फासी हित अबु बंधु चलायो ।।
यहि सुन याको दया परी मन ।। कवन काज आवहि मुहि यहि धन ।।
बडो मुंन जग पर ऊपकारा ।। मानव तन यहि बचय बिचारा ।। ६४।।(६३)

दोहरा: बीस तिमासी कनक की दईं जुही मुनि राय ।।
दईं दईं हित समझ मन दईं बंद मुकताय ।। ६५ ।।

चौपईं: वहि पापातम दुस्ट कुचारी ।। तिय ससि बदनी द्रिगन निहारी ।।
परयो पगन मन राखु लुटाईं ।। लयो दास मै मोल चुकाईं ।।
जब लगि जिय हु सेव तव करहौ ।। क्रित ऊपक्रित न धरम ते टरहौ ।।
यहि चख्रि रचि तिहि बिरमाईं ।। संग रहन की आयस पाईं ।।
गइे नगर ते कछु अगारी ।। मग महि मिलौ येकु नद भारी ।।
यहि बहु दिन बिपता बस आवत ।। करत इस्नानु कहूं जल आवत ।।
बसन हु हुते मलीन सुतन पर ।। धोवन हित अभिलाख सु मन पर ।।
इसहि बिठाइहि इकंत गईं चल ।। नाईं बसन पखारु अमल जल ।। ६६ ।।

दोहरा: भावी बस ता महि कहूं नव का परी निहारु ।।
कोऊ सुदागरु जा तो तुर कर बसत अपारु ।। ६७ ।।

चौपईं: वाकी द्रिस्टि जु तिय पर परी ।। ईक द्रिस्ट महि सुधि बुधि हरी ।।
ताहि दुस्ट सो पूछो आईं ।। वहि को है जो अब तहि नाईं ।।
ता क्रितिघन छल बचन सुनाइे ।। बयकिति दासी है हम लाइे ।।
तिनिहु किह्यो कहु मोल सुनाईं ।। नो बिक्रय तिहि चहित कराईं ।।

ताहि दुस्ट कहि मोल सुनायो ।। मुखु मागो सो ततु छिन पायो ।।
छल कर नव का महि सु चढाई ।। पार ऊतरवे छित समझाई ।।
आपु तहाते टर मग लीनो ।। बेच तिया को तिहि करि दीनो ।।
वहि दो भ्रात हुते सौदागर ।। आपस महि बिबाद तिन को पर ।। ९८ ।।

दोहरा: इक कहै यहि मोहि तिय दुतीयु ~~कहि~~ कहै मो तीय ।।
यो नहि जानति मंद मति रछक त्रिभवणु पीय ।। ९९ ।।

चौपई: तबि आपस महि मता मतायो ।। ऊचित नही अबि बाद रचायो ।।
बेच बसतु जब फिर घर आवहि ।। निज निज बांछित ताहि सुनावहि ।।
जापर वहि प्रसंन ह्वै बरहैं ।। ताकी तिय यहि मंत्र सु बरहै ।।
यहि मनि ठान दुती नव का परु ।। जा महि राखी हुती बसतु भर ।।
ता पर यहि तिय राज चढाईं ।। ~~त~~ चले तहातेपवन सहाई ।।
भावी बस बहि पवन प्रचंडा ।। बूड गयो बेरासत खंडा ।।
जापर हुते सुदागर दोऊ ।। फट जहाज बूडो जलु सोऊ ।।
या पतिब्रता धरम प्रतापा ।। बच्यो जहाज सबतु अमापा ।। १०० ।।

दोहरा: बहुत बहत बेराह हैं हरि प्रेरित कछु कालु ।।
तही नगर तट जा लगो इछा सो नंदु लाल ।। १०१ ।।

चौपई: जहि त्रिदोख प्रति दोख लगाई ।। दुसहि दंड दीनो दुख दाई ।।
भावी बस वहि चोरु कुचारी ।। जिनि छल कर ब्रिक्रय कर डारी ।।
इोहा त्रिपति के लहि अधिकारा ।। सैनप बन्यो बडो सरदारा ।।
पुन वहि ~~[illegible]~~ नीच दासत पसीको ।। किया निदोखु सह दोख इसीको ।।
वहि या त्रिप को भयो प्रधाना ।। अदभुत नहि समयो बलवाना ।।
पुन याको पति हूं तहि आयो ।। तिय बियोग नाछि तन तायो ।।
जा दिन बेरालगो किनारे ।। हरि माया करि निसा मझारे ।।
ता त्रिपु को गुरु सिध पुरखु बर ।। मानत आन सकल जिहि घर घर ।। १०२ ।।

दोहरा: बानी भई अकास ते ताके स्रवन मझारु ।।
इकु भगत पूरन सु मुहि आयो तिय अवतारु ।। १०३ ।।

चौपई: जालमाररि करि बैठ जहाजा ।। निसि दिन मे रछक जिहिलाजा ।।
यहि को त्रिप अरु राज प्रधाना ।। पुन सैनप न्यावक जु प्रमाना ।।

पुनि तिहि पंडत कोलघु भ्राता ।। ऊठहि प्रात सब जोर जमाता ।।
ता पहि जाय करहि परणामा ।। निज निज प्रथक साख निज नामा ।।
पुन जो जोय सिबत सरमहि ।। करी खुटाईं लखह्यि धरमैं ।।
जान बूझ कै खाय भुलाईं ।। पाप करम कर की कुटिलाईं ।।
करहि निवेदन सब तिहि आगे ।। बिना कपट छल सच अनुरागे ।।
सो वहि सुनत दया कछु पालय ।। करय माफ मा निज छोम सु टालय ।।१०४।।

दोहरा: तौह्महूं करहैं छमा दोख द्रिस्टि छमवाय ।।
नातर जानहु सबन कौं काल पहूचौ आय ।। १०५ ।।

यथा श्री नाम देव जी:
मेरी बांधी भगत छुडावैं बाधै भगत न छुटैं मोहि ।।
इेकु समैं मो को गहि बाधै तौ फुनि मैं पंजबा कुन होहि ।। १०६ ।।

चौपई: धरमवान को मैं सद संगी ।। धरम रहत कौं सदा प्रभंगी ।।
जौं ताते नहि छमा करावहु ।। ग्रह बैठे आप नगर बावहु ।।
अस अकास ते बिपति गिरावौं ।। देस सहित सब मूल उठावौं ।।
मेरो नाम गरब को गंजन ।। धरम अचल की बिपति बिभंजन ।।
यहि अकास बानी जब सुनी ।। सिध पुरखु हो वहि बडमुनी ।।
ऊठ प्रभात दौरयो भय मानी ।। त्रिप सन जाय सु सकल बखानी ।।
त्रिपु भयभीत कंप ऊठ दौरयो ।। सकल साधु निज साथ बटोरयो ।।
जाय सबन तहि कीन प्रणामा ।। पिता सहित निज निज कहि नामा ।।१०७।।

दोहरा: कहि अकास बानी बचन प्रभु आयस या भाय ।।
धरम वती तूं हरि भगति छमा करहु सतभाय ।। १०८ ।।

चौपई: जो कछु हम ते अघ बनि आयो ।। जान किधौं अनजान कमायो ।।
स्रवन करहु सब दास जान करि ।। प्रभि अपने को बचन मान करि ।।
यहि सुन वहि तिय धरम चारनी ।। जीव मात्र पर दया धारनी ।।
परदा डार गुपत करि अंगनि ।। बैठी स्रवन हेत बर अंगनि ।।
सभा लाय त्रिप ह्विते बाहर ।। करत भइे निज निज क्रित जाहरि ।।
प्रथम भूप कर जोर सुनाईं ।। सुनहु प्रथम क्रित मोर कमाईं ।।

यहि जो राज काज की क्रित है ।। कलुख कारनख सिख यहि नित है ।।
राज धरम असधारन ठिन मग ।। कहि लग कोऊ सविधान रहैं जग ।। १०६ ।।

दोहरा: चूक परैं पर परैं ही पुत्र लौ हो सभ दोखु ।।
छमा करहि प्रभु भगत तौ कछु होयत मोख ।। ११० ।।

चौपई: या संब ति महि नौतन निज मति ।। कियो इेक अघनीति रह्त सति ।।
पंडित को लघु भ्रात बिदेसा ।। गयो हुतो कहूं मोहि निदेसा ।।
ता पाछे ताकी तिय घर महि ।। प्रभ जानय तिहि धरम अधरमें ।।
पंडित मो सन आय जताई ।। दुस्टा ह्वै बिभचारु कमाई ।।
मैं ताको नहि किय निरधारा ।। पंडित बच पर निह्चै धारा ।।
आयस दीन दंड ह्ति ताके ।। बड अधरम बिन औगुन ताके ।।
बिन निरणीत जु आगिया दीनी ।। परम अनीति प्रगट मैं कीनी ।।
यदपि हुती वहि तिय बिभचारिनि ।। त्रिपको ऊचित नीक निरधारिनि ।।१११।।

दोहरा: हुवै अदंड महि दंड जौ त्रिपति अनीति प्रताप ।।
जा तरसातल कुटंब सहि अस अधरम कै पापु ।। ११२ ।।

चौपई: यहि मैं अति अपकार कमायो ।। तब ते ह्यि मम को सुभायो ।।
वहि अंतरिजामी सभ जानति ।। कूर साच को प्रगट पछानत ।।
यहि सुन वहि तिय बचन सुनायो ।। छमा करहु प्रभि भूल कमायो ।।
पाप करम कर तिहि पछुतावन ।। मोखु हेतु स्रुति सिंम्रिति गावनि ।।
त्रिप कोऊ चित न्याव निरधारैं ।। तब ता प्रति मुखि दंडि ऊचारैं ।।
बिन निरणीति निरय को कारनि ।। अबस होत हैं दंड ऊचारन ।।
छमा नामु सुनि त्रिपु सिरनायो ।। मुदित भयो मनि आनंदि पायो ।।
बोल ऊठयो तिय कंत सु या महि ।। मुहि करचार मन संक तिया महि ।।११३।।

दोहरा: नारि कही चुप बैठु लख मिट है संक कलंक ।।
परहि निबेरौं छिनक महि कहा राव कहि रंक ।। ११४ ।।

चौपई: यहि सुन वहि बैठी सिरनाई ।। अब पंडित की बरीया आई ।।
पंडिति कही कंपतन बानी ।। मैं बड अघ कीनों निज जानी ।।
भ्रात बधू लघु बधू समाना ।। कियो भ्रात पर देसु पियाना ।।
ताको रूप देखु ललचायो ।। कामु तुरु निज धरम गवायो ।।
तासन कहि बिभिचार कहानी ।। वहि प्रतिब्रता धरम सु जानी ।।

बाहि मानी तबु त्रिपु सन जाईं ।। कहि सदोखु छल आयस पाईं ।।
किय अदंड महि दंड कठोरा ।। तिय अबध किया अघघोरा ।।
हनत पखान जे तिन प्राना ।। निस्चै ममु हुवै नर कपियाना ।। ११५ ।।

दोहरा: यहि अघ मो सन है बन्यौ कंपति है ह्यि मोर ।।
छमा करहि तौ बचत हौ सरन परयौ तिय तोरु ।। ११६ ।।

चौपई: सुन ति तीय करि दया अपारा ।। यदपि कुकरम बडो बिभचारा ।।
साच कथन पर क्रिपा जु आई ।। छमा कीन बच दीन सुनाईं ।।
बहुरि न असि अप करम कमावहु ।। अंतरयामी निकटि लखावहु ।।
साचु कथन ते छमा करहि प्रभि ।। प्रभि प्यारौ है साच कहत सभ ।।
यहि सुन तिन प्रणाम बहु कीने ।। बैठ गयो मन आनंद भीने ।।
वहि तपु सी को दास जु आयो ।। भावी बस प्रधान पद पायो ।।
अति लाजाय सिर लीन झुकाईं ।। बिनति करी निज रदित छुटाईं ।।
देवी मैं इक तपसी पासा ।। रहत हुतो बन मैं तिहि दासा ।। ११७ ।।

दोहरा: हरि प्रेरित इकि सुंदरि बिपति बिदीरन गात ।।
आय रही आस्रम तवन सेव करत दिन रात ।। ११८ ।।

चौपई: मैं तिहि रूपु निरख बिसमायो ।। निज बाछित कहि ताहि सुनायो ।।
वहि पतिब्रता धरम चारिनी ।। नहि मानी मम अघि ऊचारिनी ।।
मैं दुस्टात-ममदन अधीना ।। छोभित हुवै मन कुमति कमीना ।।
निज स्वामी को इक हि ताता ।। बालबटि क्रम गह किय घाता ।।
ता तिय के सिर दोख लगायो ।। कर अनरथ तिहि तुरत कढायो ।।
ता अघते नित ह्यि कंपावों ।। निस्चय रौरु नरक सिधावौं ।।
तुम हरि भगति छमा की मूरति ।। करहु बनय मोख अघ पूरति ।।
यहि सुन वहि तिय परम क्रिपाला ।। कह्यो छमा कर हे प्रभि दियाला ।।११९।।

दोहरा: भ्रिस्ट बुधि हरि भगत सो किती करी कुटलाइ ।।
अंत कै सरन पर भगत ते लीनी छमा कराइ ।। १२० ।।

यथा स्री फरीद जी ः—
बेरे दा भला करि गुसा मन नह ढाहि ।।
देही रोगु न लगई पले सभ कुछु पाइ ।। १२१ ।।

चौपई:

चौंपईं: पाप करै पुन करि पछुताकन ।। छमा करहि प्रभि रीति सुहावन ।।
यहि सुसुन वहि बैठी सिरनाईं ।। पुन सैनिप की बरीया आईं ।।
कह्यो कि मै इकि नगर मझारा ।। पुरयौ बंद धन सीस ऊधारा ।।
देण सकति नहि न्रिप रिस भीनो ।। फांसी हित आयस मुहि दीनौ ।।
मग महि मिली कोऊ बर नारी ।। दिइे दाम निज दया बिचारी ।।
प्रान दान फल लै छुडवायो ।। मै सरूपु लखु दुस्ट लभायो ।।
छल बच करि मै क्रय क्रित लीनो ।। सेवक रहु नित कपट सु कीनो ।।
कछुक दूरि नद मिल्यो ज भारी ।। बसन पखारन हेत सिधारी ।।१२२ ।।
दोहरा: भाईं बसनव कातहा दुवैं आईं धनवानु ।।
निखु बिबस दोऊ भइे बिधे पंच सर बानु ।। १२३ ।।
चौंपईं: मो सन पूछो नारि कवन है ।। रूपु रासि छबि पुंज भवन है ।।
तब मैं दुस्ट करी भटलाईं ।। दासी भाखु मोल क्रिति लाईं ।।
छल कर वहि नवका महि डारी ।। मैं धन लैन हि लखी पिछारी ।।
यहि अघ मो सन बन्यो अपारा ।। सुनत सभा जन अति संघकारा ।।
धिक रे धिक क्रिति घन बड पापी ।। बड अनरथ किय अतुल अमापी ।।
जिन तो पर अस किय ऊपकारा ।। तै ताको अस किय अपकारा ।।
तब तिय कही न प्रभ तुहि छम है ।। क्रितिघन नर्क निरय अवस कर गम है।।
या अधरम को नहि ऊपचारा ।। क्रितघनता सम अघ सिरुदारा ।। १२४ ।।
दोहरा: छमा न कर है आप प्रभ क्रित घन के अपकारु ।।
अस कहि न्रिप धिक्कारु तिहि दीनौं देस निकार ।। १२५ ।।
चौंपईं: तब वहि तिय ऊठ बाहर आईं ।। निज पति के चरनन लपटाईं ।।
कह्यो कि प्रभु पहिचानो मोही ।। बिपति बिथा सुन लीनो तोही ।।
यहि सब मो पर बिथा बिहानी ।। चार जुगन इहि चलहि कहानी ।।
वहि प्रभि करनहारु जदुराईं ।। जिनि द्रुपदा की लाज बचाईं ।।
आज दिवस लग मुहि तिन राखा ।। प्रान सहित पुन धरम परारवा ।।
बूड गयौ दुस्टन को बेरा ।। क्रिपा करी प्रभ कीन निबेरा ।।
अब यहि मनसा है मन माही ।। जिनि प्रभ बहत रखी गह बाही ।।
ताके भजन सेवि सिमरन महि ।। निस दिनि रह हौं प्रभ चरनन महि ।।१२६।।

दोहरा : रहे आयु के दिन जु कछु या महि करहु बितीत ।।
खरचि बतेरो प्रभि दयो जगते बनहु अतीत ।। १२७ ।।

चौपई : यहि कौतकु लखि सुन नरपाला ।। सभा सहित गहि चरन सु बाला ।।
जा बिधि कह्यो ठौर रच दीनो ।। वहि सब द्रबत-हासच दीनो ।।
औंर करी निज घरते सेवा ।। देवी रुपु लखी नर देवा ।।
आयस लहि निजि भवन सिधारे ।। चहूं ओर राखे रखुवारे ।।
दरसन हित कोऊ चल आवै ।। दुस्टातम कोऊ बरनन पावै ।।
हुवै इकंत हरि सुमरन कीनों ।। चार पदारथु साधु सु लीनो ।।
कीर कथा यहि पूरन कीनी ।। कह्यो कुवर प्रति तुमु सुनि लीनी ।।
जेहैं धरम चारुनी नारी ।। निस दिनि तिन रक्छक गिरधारी ।।
सब नद अगह सु घूमन घेरा ।। पार करत प्रभि तिन को बेरा ।।१२८ ।।

सवैया : नहि नारी सबै इक सारी कहूं इकु सारी लहै सो अनारी वहै ।।
नरहूं न बराबर देख परै बिभचारी कहूं जतधारी लहै ।।
कर की अंगुरी इकसारु रची नही ता प्रभु की क्रिकारी यहै ।।
घर अंबर मै नस तंब कहूं सत ही के सहारे पै धारी रहै ।। १२९ ।।

सवैया : निज तौ पतियाय चुकै हो भले गहे भूल फिरे जब कीस बने ।।
इन ही के सही सत कै बल ते तन पायौ पिखौं परमीस बने ।।
सहपाल सो कीनो बिहाल बली सत ही के प्रतापु बरीस बने ।।
बहे बूडे बचे हो बिलोको न क्यों इन ही के कीये किसे बीस बने ।।१३० ।।

सवैया : अबलौं तौ बिथा बिपताही सही जब हूं ते ये रावरी संगी बनी ।।
बिग गई खुटाईं यें खाइं तुमो फल पाईं इनै जो प्रसंगी बनी ।।
गुन मेट कै औंगुन ता पलटै मन ठानौ कहा मति भंगी बनी ।।
बडे नेह निबाह कवाह जू वाह ये गाह्क ता कस चंगी बनी ।। १३१ ।।

सवैया : बडहान है औख मखान बडी गुन कीनो किसू कौ जु खोवनों ह ।।
तब अैहै जवाबु कहौ जु कहा हरि आगे तौं जाय खरोवनौं है।।
यहि प्रेम की पंथ अनोखो बडी मग खाये की धारु पै जोवनौं है ।।
बिनु देखै सुने गुन औंगुन काहू के औंगुन है हिय पोवनौ है ।। १३२ ।।

सवैया : यहि बाते तु कीर कहानी कही सुन राज कुमार तों दंग भयो ।।
मद को मद जैतो हुतो सो म्रिगिंद के आगे मनो वो कुरंग भयो ।।
परी याद ऊनों की ब्रिथा सह्नी तन कांप्यो मनो जुवर अंग भयो ।।
खिसियानों लजानों छमा करवाई औं पाय परयो मन भंग भयो ।। १३३ ।।

कबितु : बात मत वारे कीन मानत प्रमान गुनी कुनी ह्वैं हैं तुमहूं दुनी मैं मसाहू रहैं।।
मद के हिलोर मैं करोर फकमारी बकनिज ओरतक छमा कीजियै कसूर है ।।
ऐसे ~~ज~~ मनूहारु करि आपस मैं प्यार कर निसा कौ गुजारु चले ऊगवत सूर है।।
आनंद सो पूर भर पूर सुखु संपति सो आगौ नियरायौ औंपिछायौ रह्यो दूर है।
।।१३४ ।।

दोहरा : अब आगे सब बरन हौ निज ग्रह गवन प्रसंग ।।
या अवसर पूरन भयौ सपत दस्त सु तरंग ।। १३५ ।।

इति श्रीमत प्रेम पयोनिधि ग्रिंथे नेह नीति निरूपित प्रीत प्रसंगे कवि साहब सिंघन बिरचिते राज कवर को सूरज प्रभा सो ~~उमि~~ मेलि बिजय पाय अदभुत खेल मग महि माननी कर मनाय मग बरनो बरननं नाम सपत दसमो तरंग ।। १७ ।।

कबितु: प्रेमपयोनिधि की आगह ताव गाहत हौ चाहत हौ पार पर्यौ आलगौं किनारे मैं।।
लाखो ही हिलोरे के तरंग झकझोरे कोरु बूडत बहत बहुतेरे ही निहारे मै ।।
गुरुगोबिंदसिंघ जू यासिंध को म्रिगिंद अबिलंबित तर्यो है अबिलंबित तिहारे है।।
ऊरताके नानी मोद मुकता लै जानहैवे जैसे सोधसुकुता ते मुक्ता निकारे मे।।१।।

सवैया: चल रे अब कानी के कुदकि कान तूं आनम कन छिकाने लगौं ।।
पहुचै यहि प्रेम के पंथ को पंखी लै अंब पथैं फल पाने लगौं ।।
राह कौ समुहायौ सु राजकुमारु धुजा पटयौ फहराने लगौं ।।
धूमधाम बडी [redacted] धरधात धरा लखु दिगज दांत लगाने लगौं ।। २ ।।

सवैया: अस आबन बाकी बनी ग्रह को जिनु बसंत बरे बन ब्रातन मैं ।।
बडि चिंत हुती दिन रात कथा भई पूरीकृपा प्रभ बातन मे ।।
बिछुरे बरि तौं मिल गे हमहूं बिलगे निजि कित्य कितातन मै ।।
गति काल की कूर अपूरी म्रिगिंद रुकौ अस कानी कथा तन मैं ।।३।।

दोहरा: याबिधि राजकुमार तब चलत चलत सुखु [redacted] संगि ।।
मग ऊलंघ निज नगर के निज कानौ बड रंग ।। ४ ।।

चौपई: योजन अरध नगर के इहि दिसि ।। डेरा लगे सीम मधि प्राबिस ।।
बिजय बनाव सैन चतरंगनि ।। ऊतरी ऊमगत मनहु तरंगनि ।।
यहि समसार सैनि की सारी ।। भुवन बिसाल परी सु मझारी ।।
फैल परी धर दगर बजारा ।। प्रबल न्रिपत कोऊ लै दल भारा ।।
ऊत्रर्यौ है बड सौज समाना ।। प्रभु जानय कित करहि पियाना ।।
नागर सब बियौग बस आकुल ।। राजकुवर को ब्रिह बियाकुल ।।
परी ऊजारु मनहुं सुंनसाना ।। जनु अंधेर दिन नाथु छपाना ।।
न्रिपति तात के दुखु बियोग मह ।। बसम फारु तन छार सोग मह।। ५।।

दोहरा: सार सिंघासन की न कछु राज काज न संभारु ।।
प्रजा परेखन सभा सुधि मति वारिन की ढारु ।। ६।।

चौपई: धर्यो रहत ग्रिह महि मन बयाकुल ।। कुवर मात ऊर परम ब्रिथाकुल ।।
दुखित अचैन चैन दिन रोवन ।। करना कर खप खप जिय खोवन ।।
भाग निंद निस दिनु अधरन पर ।। आह कराह पुकारन दुखु भर ।।
सुत बियोग हिय सूल चुभावत ।। छिक छिन कल न परत तरफावत ।।

अस बियोग दुख भर दोऊ रोइे ।। सुत बिछोह अति मोह बिगोइे ।।
द्रिग दुहून के द्रिसटि बिहीना ।। भइे तरफते बिनु जल मीना ।।
जसु यूसफ के मात पिता द्वै ।। रहे तात सन बिछर अंध हुवै ।।
यथा कह्यो ऊन सेत नैन मुहि ।। भयो अंधु सुत ब्रिह दुखित तुहि ।।७।।

दोहरा: साच सबै सुत साचु होत द्रिगन की जोत ।।
जोत बिरह ते कब रह्त द्रिगन जोत ऊ दोत ।। ८ ।।

चौपई: निस दिनि द्रिगन बह्त जलधारा ।। बयाकुल बिथित परे बिसंभारा ।।
पैं प्रधान ब्रत अचल धरम के ।। लौंन लाज सद सेव मरम के ।।
सावधान निज सांझ सकारा ।। राजकाज सब करत संभारा ।।
सुनी सैंन ऊतरी चतुरंगनि ।। यथा बावसी ऊमग तरंगनि ।।
बड प्रधान इक सब मति पाईं ।। गयो सैंन महि लखिन अवाईं ।।
जगत प्रभाकर सभा प्रभा बड ।। निरखी जाटैं भेटि ऊचित बड ।।
सभ
लख बिभूति बड राज समाजा ।। सैंन कोस मंत्री साजा ।।
बिसमित निरखत भयो अधीरा ।। यदपि हुतो मति मावन जीरा ।। ६।।(-)

दोहरा: इक तौ बीतौ काल बहु बदल गइे सब अंग ।।
नहि पहिचानो राज सुतु मंत्री मति हुवै भंग ।। ६।।

चौपई: पुनि वहि इकाकी तजि देसा ।।गयो अभेस रुपु दरवेसा ।।
यहि समाज बड बिभव प्रतापा ।। बड दिमाक धर सैंन अमापा ।।
राजभक्त बड सजे समाना ।। कोस अपारन परत बखाना ।।
याते मंत्री कलमल आयो ।। निज न्रिप सुत को धियान न आयो ।।
बिनति करी दोऊ करि जोरे ।। काहू प्रबल न्रिपति के मोरे ।।
महाराज जग पति जगदीसा ।। काल चक्र बड चपल महीसा ।।
नित नौतन है याको फेरा ।। कटिल कठोरु दया बिनुहेरा ।।
ऊलट भाग जो परे हमारे ।। दुसह दुखु निज नैन निहारे ।।१०।।

दोहरा: राज मंच ऊदयाचल हि राज कुवर बर सूर ।।
छप्यो कहूं प्रात हु समय सह्यो न परत बिसूर ।। ११ ।।

चौपई: ता बियोग बस न्रिपति हमारो ।। रवि प्रतापु सब जग ऊजियारो ।।
हियो टूक वहि जुदो परयो जब ।। टूक टूक हुवै हियो परयो तबु ।।
पटसंतोख गर धीरज ते पट ।। लीर लीर हुवै परयो गयो घट ।।

द्रिगन दीठहूं वा अपने सुत ।। द्रिगन दीठ के बिरह बिकल ऊत ।।
रुदन करत बल द्रिसटि लुगाईं ।। मनहु भेट दै चुकों ऊठाईं ।।
अब लग वा द्रिगस्टि दान की ।। पग राज अंजन जोति खान की ।।
द्रिगु पैमन के महि नहि परी ।। परी बंद नहि द्रिसटि ऊघरी ।।
नैनां म्रित अंजन सम अब लग ।। अवसेरित द्रिग परी नर जषग ।। १२ ।।

दोहरा: ताते न्रिपति प्रणाम करि या बिधि दीन सँदेस ।।
राज सिंघासन छत्र की कछु ह्वै बांछ बिसेख ।। १३ ।।

चौपईं: ले हरि नाकु काल नहि आजहि ।। लेहु सकल यहि राज समाजहि ।।
पैरण रंगु भूमि गहि आयुधि ।। लरहि भिरहि जस मग है सायुध ।।
रक्त प्रवाह करन बिनकामा ।। प्रभि के जीव बधहि रनधामा ।।
ऊचित न लखहु सु बिना प्रयोजन ।। कत बिअरथ स्रम करिय नियोजन ।।
मोहि तखत यहि राज समाना ।। चित अनुचित ते चिता समाना ।।
या पर हूं जोरावर मनसा ।।प्रभि माया बस है कछु ससा ।।
भावी पुरु नहि चल पुरखारथ ।। परत न रनके यतन निरारथ ।।
जीवन सो जी मरयो हमारो ।। पैन मरन को हैं निज चारो ।। १४ ।।

सवैया: मरने को तो आनद मानत मैं आईं म्रित्यु को म्रित्य कहा करियैं ।।
परयो जीवनों हाय हमारे गरे अब याको ऊपाय कहा करिये ।।
बिसतारुथो याको बडो दुखु हेत हो याते बखान कहा करिये ।।
यहि स्रौन हों साचु सनेही सदा सच जानों संखेप कहा करिये ।। १५ ।।

दोहरा: या बिधि बचन बिलापु सुन पाय पिता की पीरु ।।
द्रिग दरीयाव मझे दोऊ राज कवर तज धीरु ।। १६ ।।

चौंपईं: ऊठि प्रधान को कंठ लगायो ।। अभरन बसन अमोल पनायो ।।
बहुरु कह्यो हे सुमति प्रधाना ।। तव बच सुन हों भयो हराना ।।
मैं बहु दिन तव लीइ ऊछंगा ।। दुलरायो बहु दिवस ऊमंगा ।।
कछु काल बिछुरे ते बीरा ।। कस भूलाय दीनो तज धीरा ।।
जाहु न्रिपति सन कहु प्रणामु मुहि ।। बिनति करहु पुनु कहहु यथा तुहि ।।
क्रिपा आप के प्रेम अखंडत ।। पिता पुत्र के नेह सुमंत ।।
पुन असीसता सीर दिवस निस ।। दास मनोरथु पूर सरब दिस ।।
प्रान सहित सुखु अनद समेता ।। पहुच्यो आज रावरे निकेता ।।१७।।

दोहरा: द्वार देहरी सीस धर ऊभय लोक जस पाऊ ।।
क्षमा करहि प्रभ भुल मुहि समझ आपनो नाऊ ।। १८ ।।

चौपई: यहि सुन वहि प्रधान बिधि मानौं ।। तब ततकाल कुवर पहिचानौं ।।
अति आनंदि इकु बार जु छायो ।। गिरयो चरन पर तन मुरुछायो ।।
कछु सुधि लह्त बिदा बिन धायो ।। अति आतुरु निज न्रिपु ढिग आयो ।।
कह्यो पुकारु सु लेहु बधाईं ।। लेहु बधाईं लेहे बधाईं ।।
अहो न्रिपत बड भाग प्रभाकर ।। ऊदयो रावरो भाग प्रभाकर ।।
प्रभु क्रिपात सब पूर मनोरथ ।। बिछुरे ~~चि~~ मेलि हारु सामरथ ।।
तव सनेह की पर पक ताते ।। नित बियोग महि पारथु ताते ।।
वहिरवि राज मंच ऊद गिरको ।। ऊडगिस गगन राज के घरको ।।१६ ।।

दोहरा: सह्त कुसल आनंद कर संग बड सैन समाज ।।
जगत प्रभाकर कुवर बर आयो तव सुत आज ।। २० ।।

चौपई: ऊजर नगर यहि बहुरि बसायो ।। बिथित बियोगिन को सुबचयो ।।
करनहारु बड किय ऊपकारा ।। बार बार बंदन तिहि द्वारा ।।
निस को रुदन करन यहि रावर ।। हुतौ सफल बड सकति धरन वरि ।।
न्रिप तौ हुतौं निरास निपट अति ।। कह्यो स्वास भर यहि बच कलपति ।।
कोऊ आन हुवै हेरे बीरा ।। जिहि रौवनि महि असता सीरा ।।
मुहि न्रिभागु की नहि कलपन ~~जजजज~~ असता सीरा।।
मुहि न्रिभागु की नहि कलपन अस ।। परहि सुनी प्रभ द्वार कहूं बस ।।
पुन प्रधान कर सपथ सुनायो ।। मै प्रभि निज आसन लख आयो ।।
निस अंध्यारि ह्मारी दुखु की ।। पग प्रतापु वादी पति मुख की ।।
सभा सिंगारु राजधानी कं ।। भई प्रकासित सुखुदानी कं ।।
याबिधि थोनि चमहि प्रसन्न ।। इकु लोचढ वहि राज सपुत्र ।। २१।।

दोहरा: आयो पित पग पर सहित परी महल महि धूम ।।
सुन सुन दौरी सब त्रिया धेन सबत सा घूम ।। २२ ।।

चौपई: कोई रुदित सब सुधि बिसराईं ।। कोऊ देत रानी यहि बधाईं ।।
परयौ दंडुवति राजकुमारा ।। मात पिता के चरन मझारा ।।
सुत को सबदि प्रणाम करि त कौ ।। परयो स्रवण अंम्रिति सुमरत कौ ।।
ऊठ अकुलाय दोऊ इकि बारा ।। गर लपटे सम पैम तिवारा ।।

जो सुत ता अवसर तिन पायो ।। रसना कोटि परत नही गायो ।।
अति आनंद ऊमगे ह्यि दोई ।। द्रिग जल तरत फिर अस रोई ।।
करनहारु प्रभि क्रिपा जु कीनी ।। द्रिसटि चहूं की खुली नवीनी ।।
अदभुत तहि अति नेह मभ्फारा ।। साचु प्रेम के यहि प्रकारा ।। २३ ।।

दोहरा: बिछरे बिछरी द्रिसटि जो मिले मिलै छिन सोहि ।।
जानति जे मिल बीछरे बिछरे मिले जु होहि ।। २४ ।।

चौपई: मात पिता दरसन सुत पाई ।। रहे मगन आनंदि छाई ।।
कोटि कोटि धन कीन निछावरु ।। भूखन बसन माल मुकतावर ।।
पुनि प्रधान सेवक रजधानी ।। जनु जल लह्यो मीन मुरझानी ।।
हर बरात दौरे सब आवत ।। करत निछावर मेटिया वति ।।
भई भीर अति राज भवन महि ।। रही छिनक नहीं सन मन महि ।।
भयो कुलाहल नगर मभ्फारा ।। मंगल गान करत बर नारा ।।
नौतन रचे समाज बिधाना ।। तोरन बंधे तनाय बिताना ।।
चढयो त्रिपति तब बजे नगारा ।। सकल सैन सज भई त्यारा ।। २५ ।।

दोहरा: मंगल साज सजे सबन बजात हे पंचतूरु ।।
बात कही सुनई इन कछु धरन गगन धुनि पूरि ।। २६ ।।

चौपई: दुती ओर जा जगत प्रभाकर ।। सावधानु किय सैन सजा कर ।।
पांत जोरु बिसब्रित अस सैना ।। बानिक कही परत नही बैना ।।
सलक सलामी तोपै भबकी ।। कलमल कोल कमठ मिठ दबकी ।।
अनिक भांति दुंदभि घहराने ।। बजत बजंत्र कोटिस दीयाने ।।
सभा ससिकला राज दुलारी ।। भान प्रभा बड प्रभा ऊदारी ।।
त्रिपति चरन ~~किकि~~ तिनि कीन प्रणामा ।। सदकारित किय त्रिप बुधि धामा।।
सुता समान बधू दुलराईं ।। करी निछावर बड मन भाईं ।।
पुन सुख पाल चढा हि प्रेम कर ।। चले भवन को तिन आगे धर ।।२७ ।।

दोहरा: दोऊ सैन छिक ठौर मिल चली त्रिपति के संग ।।
धन की बरखा करत अस मनहु सुरेस ऊमंग ।। २८ ।।

चौपईं: दुहूं ओर दुहु हाथ नरेसा ।। रजत कनक मुद्रका बिसेसा ।।
डारत धरा पीत सित कीनी ।। हौ साभ छुक न रहन दीनी ।।
याबिधि राज भवन के द्वारा ।। सने सने पहुचे जिहि बारा ।।
कई सहंस सखी संग स्यानी ।। आय पौर प्रापति भीरानी ।।

निज करि धरे आरती थारा ।। गावत मंगल बिबिध प्रकारा ।।
सभा ससि कला भान प्रभा पुन ।। ऊतरी तहां आन आकर गुन ।।
सासु चरन पर कीन प्रणामा ।। परम सुघर सुंदरि दोउू बामा ।।
ब्रिधि सास आरती ऊतारी ।। अतिस प्रेम जल पीयो वारी ।।
पुन दोऊ भर अंक गर लाईं ।। जानक रंक नवौं निधि पाईं ।।
करी निछावर मनि गन मोती ।। बार बार बलिहार सुहोती ।। २६ ।।

यथा बिहारी ।। दोहरा।।
मानहु मुहु दिखरावनी नवल बधू अनुराग ।।
प्रीतम मन सरबस ससुर सौं तन दइे सुहाग ।। ३० ।।

चौपईं: छाय रही धुनि लेहु बधाईं ।। सोमिन होहि बधू रमाईं ।।
रानी ऊमग प्रेम जल छाईं ।। बार बार मिल कंठ लगाईं ।।
लोगी लोग दान अस पायो ।। आज दिवस लग सकन ऊठायो ।।
मंगल गान करत मिल गोरी ।। जीवहु री जुग जुग यहि जोरी ।।
नवल अनूठी बधू जु पाईं ।। साच ससिकला भान प्रभाईं ।।
सकुन समेत भवन महि आनी ।। कुलाचार किय बेद बिधानी ।।
इिस्ट देव कुल देव मनाइे ।। पूज जिठेरे सब त्रिप ताइे ।।
कनक मंच पुन आन बिठाईं ।। जनु ससि रवि इिकठे छबि पाईं ।। ३१ ।।

दोहरा: बहुर सहेली दुहुन की दासी अधिक्रित कि नारि ।।
इेक इेक की सुरति कर रानी किय सदकार ।। ३२ ।।

चौपईं: परम प्रेम युत अस सदकारी ।। तन मन युत रंजित कर डारी ।।
देख निपुनता कुवर मात की ।। मईं मगन जनु स्वांत चातकी ।।
बार बार मन करत सराहा ।। धन रानी सुभाव ऊतसाहा ।।
क्यो न होइि री कवर मात है ।। हंसनि को वहि हंस तात है ।।
या बिधि आदर पाय सहेली ।। निज ग्रह सुख बिसरी अलबेली ।।
भांत भांत रस करत बिलासा ।। ऊचित ठौंर सब कीन निवासा ।।
ऊत न्रिप सकल सैन सदकारी ।। यथा योग लख ठौंर ऊतारी ।।
राज प्रधान जि बड सरदारा ।। ऊचित कीयो सब को सदकारा ।। ३३ ।।

दोहरा : इेक इेक की सार लह दान मान कर पूर ।।
मन बाछित सुख दैं सबन मग श्रम कीने दूर ।। ३४ ।।

चौपई : दुतिय दिवस सभा सस्किला ।। नीति बिनय मग निपुन सु अबला ।।
चंद्र प्रभा के महल जान हित ।। आयस चाही राजकुवर चित ।।
बडी सपतनिक निज पहचानी ।। आदरनीय हमहु हिय जानी ।।
पुन ताके देखन कहु चावा ।। लखन हेत गुन रूप सुभावा ।।
राजकवर तब कह्यो सुनाईं ।। वहि दुरभगा समझ नहि राईं ।।
कठिन सुभाव नारि बड बोली ।। ब्रिथा लजावन कत हिय छोली ।।
ता सन मिल कवन फल पावन ।। कछु बक उठत ब्रिथा तन तावन ।।
कीर कही नहि न्रिप जगदीसा ।। मेल गेल अपणत मगदीसा ।। ३५ ।।

दोहरा : लाज दैन बिन काज की बात कवन महाराज ।।
उचित मलिन ही जाय तिहि कत रोकत बिन काज ।। ३६ ।।

चौपई : राजकुवर सुन सुक के बचना ।। अस्ट रह्यो लख ताकी रचना ।।
रमज पाय तब राज दुलारी ।। लईं मंगाय तुरत असवारी ।।
दासी दसक पठी अगवाईं ।। चंद्र प्रभा सुन सार जनाईं ।।
वहि दब गईं लजा की मारी ।। सिर झुकाय रहि बैंठ बिचारी ।।
या महि आप हुवे चंडाला ।। भांत भात कईं सहस हिडोला ।।
अवस जान तब उठी दिवानी ।। बड दिमाक लख रही हरानी ।।
अग मन आय कियो सदकारा ।। उतर मिली गल वहि तिहि बारा ।।
परम प्रीति युत रीति कराईं ।। सुखद सेज पर आन बिठाईं ।। ३७ ।।

दोहरा : कुसल प्रसन निज महि कीइे यथा योग करि प्रेम ।।
भान प्रभा बड चतुर तिय बोली बचन सखेम ।। ३८ ।।

चौपई : चंद्र प्रभा सुन सुघर सयानी ।। तूं हम महि जेठी पटरानी ।।
हम हूं तोहि कंत लर लागी ।। दरसन परस भईं बड भागी ।।
तुम निज मन कछु बिलग न मानहु ।। दासी हमहु आपनी जानहु ।।
सुख सुख दुख सदा रावरी संगनि ।। रह हि सदा समता के रंगनि ।।
परारथ बध रच कियो संयागा ।। कहा देस कित के हम लोगा ।।
रचन हार के रंग अपारा ।। चलत न काहू को बस चारा ।।

समता बडी बसतु है पियारी ।। स्रुत सिंम्रिति मग किय निरधारी ।।
चार दिवस जीवन जग सजनी ।। यथा सपन लखियत बिच रजनी ।। ३९ ।।

दोहरा: मूढ मंद मति करत हैं निज महि बाद बिरोध ।।
समता सम जग सुख नही लखहु ह्रिदय निज सोध ।। ४० ।।

चौपई: याबिधि के अंम्रित सम बचना ।। कहे रवि प्रभा सुंदरि रचना ।।
सीतल भई ह्रिदय सुन रानी ।। बडी सुघर निज मन अनुमानी ।।
या महि सुक सन मुख चल आयो ।। चंद्र प्रभा सन बचन सुनायो ।।
न्यावरीति करि कहि अब रानी ।। सभा ससिकला द्रिगन लखानी ।।
कहु साचो अब कवन यहा है ।। कूर कथित के मुख हि कहा है ।।
तूं जु कही तब रूप दिवानी ।। दुतिय न मो सम जग निज पानी ।।
जापर यहि सब उठी बखेरा ।। सह्यो न बचन गह्यो यहि तेरा ।।
रावर कुटिल भाग के फेरन ।। निकस परी मो मुख सन टेरन ।। ४१ ।।

दोहरा: जगत प्रभा कर प्रेम के परन पंथ ततकाल ।।
अनिक कस्ट सहि भाग ते लहे लाल यहि भाल ।। ४२ ।।

चौपई: रच राख्यौ प्रभ हुतो बनावा ।। या महि चलत न काहू दावा ।।
वाको ना मग रब पर हारी ।। लाख भांत करि बात सवारी ।।
अब तूं निरख धियान करि आनन ।। है तुहि ते गुन कोटिक बानन ।।
मो समान हैं जग तै जानी ।। अधिक अधिक ते हैं पहिचनी ।।
होड जीत मुहि लही क्रिपा हरि ।। घ्रित मिसरी मुख करन के धारि ।।
बहुरन या बिधि करिय गुमाना ।। दुतिय नही जग मौहि समाना ।।
प्रभ को नाम गुमान बिभंजन ।।
अदभुत माया रची निरंजन ।। इक ते इक अधिक है रचना ।।
।। प्रभु अंत स्रुति सिंम्रिति बचना ।। ४३ ।।

दोहरा: याबिधि कहे जु कीर बच लाज सिंधु की वार ।।
भई निमगन उदास अति चंद्र प्रभा बर नारि ।। ४४ ।।

चौपई: सभा ससिकला मनहि लजानी ।। कीर कही सब नीक न मानी ।।
सहज सुभा सूधी बड भागनि ।। बोली बिनय बैन अनुरागनि ।।
कहा कीर करईं बकबादा ।। बचन अलीक रहत मिरजादा ।।
चंद्र प्रभा सुन प्रानपियारी ।। यहि खग कुमति सु राज दुलारी ।।

कहा भयो जु पठित पसजाती ।। बुधि मान ता निकट न जाती ।।
यहि जग है इक ठौर कहानी ।। इंद्र जाल की रचन रचानी ।।
सुंदरता अरु समीचीनता ।। पुन कुरूपता अर कमीनता ।।
यहि हूं इक रुज रुजी भाव है ।। या पर गरब सु ब्रिथा चाव है ।। ४६ ।।

दोहरा: रचेन चित्र सु इक सेरचन हार करतार ।।
मूल सबन को इक है ता महि कवन बिचार ।। ४६ ।।(४७)

यथा श्री कबीर जी ।। प्रभाती ।।
अवलि अल ह नूर ऊपाइि आ कुदरति के सभ बंदे ।।
इक नूर ते सभ जग ऊपजि आक ऊन भले को मंदे ।।१।।
लोगा मरमिन भूल हु भाई ।।
खालि कुखल कखल महि खाल कपूर रहि आम्र बटाई ।। १ ।। रहाऊ ।।
माटी इक अनेक भांति करि साजी साजन हारै ।।
नाक-कुपों-चमाटी के भाडि ना कछु पोच कुमारै ।। २ ।।
सभ महि साचा इको सोई तिस काकी आसभ कछु होई ।।
हुकमु पछानै सु इको जानै बंदा कही अैसोई ।। ३ ।।
अलहु अलख न जाई लखि आगुरि गुड़ दीना मीठा ।।
कहि कबीर मेरी संका ना सीस रब निरंजन डीठ ।। ४ ।। ।।४७ ।।

चौपई: यहि जोबन अर रूप नवीना ।। चार दिवस मिह-मान कमीना ।।
याको कहु हु कवन भरवासू ।। छिटक जात छिन बिन बिसवासू ।।
यहि जग सुमन सुहावन रंगा ।। इक पलक महि होत कुढंगा ।।
कवन आहि अस बाग बहारा ।। जा महि सिसर न किय पतझारा ।।
रूप गरब अति जान ज ब्रिथा है ।। कहित कोऊ कवि बचन यथा है ।।
रूप जुबन नद बहता पानी ।। धोय हाथ ले अरी दिवानी ।।
कत असार हुवै अंग अमैंठी ।। अरी बावरी तट पर बैठी ।।
यथा किसू कवि की यहि बानी ।। हिसी भाव पर परत प्रमानी ।। ४८ ।।

यथा ।। स्वैया ।।
चार हूं ओर दै मुख चंद की चांदनी चारु निहार लैरी ।।
धन जोबन चार दिन मिह्मान यि तौ कि बिचार बिचार लै री ।।

कवि ठाकुर भूल गयौवहि लाल बतूं बिगरी कौ सुधार लै री ।।
समयो फिर ऐसो रहै न रहै बह्ती नदी पान पखार लै री ।। ४६ ।।

दोहरा: यथा कह्यो प्रभ सकल यहि नासवंत वह्चिान ।।
सेस इेक हौ अचल सद सम ते बडो प्रमान ।। ५० ।।

स्वैया: जग बाग मै जो हमे देखौ परयो अस ठौर नही जो सदा ही रही ।।
दिन द्वै क गइे पतझार लखी परी कोयल कू कू कला ही रही ।।
मति मंद नवा सो म्रिगिंद कोऊ हम आपने जाने लहा ही नही ।।
निज रूप दिना द्वैक पाहुन पै कमला है तिसोस मलाही नही ।। ५१ ।।

स्वैया: छिन भंगर रंग की है फुलवारि बहार है दिन चार नारी ।।
पुन अंतन ऐसी लखी गुलजार कोऊ जिहि की पतझार नारी ।।
अब याको गुमान निसानी सखी हैग मारताकी सिर मार नारी ।।
यहि ठौर भया नीह रानी की है ग्रह फानी कोनी कौ निहार नारी ।।५२।।

दोहरा: तापर प्रभ की क्रिपा से दोख द्रिस्टि कर दूर ।।
सुख सौंनख सिख सुंदरी लखियत कवन कसूर ।। ५३ ।।

चौपई: चंद्र प्रभा सुंदरि असनारी ।। नारि मुकटि मनि कोटि मझारी ।।
राजकवर सम सुंदरि जोरी ।। मिलय नही मलि लाख करोरी ।।
राज भवन की सुघर सु जाई ।। राज भवन बड भागनि आई ।।
जो बन बंत रस भरी कामनि ।। भाल दमक लख दबकत दामनि ।।
कहु रे कीर कीर मति वारे ।। निंद योग कस अंग निहारे ।।
रूप गरब की बात जु कीनी ।। बालपन ते कहि हम चीनी ।।
कही होय गी अदभुत नाही ।। भेद अवसथा को यहि आही ।।
बय अनुरूप होत मन सब कौ ।। पंथ सनातन नहि कछु अब कौ ।। ५४ ।।

दोहरा: ऊचित नही तुहि किसू कौ मान भंग करि योग ।।
चित ऊचटाय कुमार कौं दीनौं दुसह बियोग ।। ५५ ।।

चौपई: नहि चहीयत ही राजकुमारा ।। कीर कही पर कर इितबारा ।।
मान भंग करि ऐसी माननि ।। फिरयो भटकतो गिरवर काननि ।।
मात पिता को दुख अस दीनो ।। कवत हेतु कछु परत न चीनो ।।
हम हूं तौ इिक नारि सरीरा ।। असथि मास रख कच की भीरा ।।

करयो प्रेम अस कवन बडाई ।। इक तिय तजी दुतिय मन लाई ।।
यहि न लोह की हम नक नक की ।। यहि न सेर की हमन मनक की ।।
ब्रिथा खपत है हमरे जाने ।। कवन हेतु अस कसट सहाने ।।
परम पुरख महि कर अस प्रेमा ।। जाते लहिह अचल बड खेमा ।। ५६ ।।

दोहरा: दिवस चार कौं पेख नौं रूप जुबन नर नारि ।।
प्रेम कहा अस बसत को कर हि सुनि पट गवार ।। ५७ ।।

दोहरा: जै सो कुवर अमीर हो मिल गौं कीर वजीर ।।
अपने जाने तौ ब्रिथा खपे बिरौं कककक लत नीर ।। ५८ ।।

चौपई: या बिधि सभा ससिकला रानी ।। सुधार सरस कहि रस भर बानी ।।
चंद्र प्रभा प्रति दै अधि धीरा ।। करयो कीर को निपट जहीरा ।।
चंद्र प्रभा मन मोद प्रमानी ।। बडी सुघरता खान पछानी ।।
जैसो रूप सी लगुन तै सो ।। दयो क्रिपा करि प्रभु निज वैसो ।।
हसी खुसी कै चले प्रसंगा ।। रचे आप महि राग रु रंगा ।।
सभा ससिकला भान प्रभा गुन ।। चंद्र प्रभा को मान दियो पुन ।।
अपनी मधुर कथिन प्रगटाई ।। मन प्रफुल्लित करि संग मिलाई ।।
द्वैक चार घटि कामन आनद ।। करत रही चरचा बड मानद ।। ५९ ।।

दोहरा: छेर छार कछु कीर हूं करत रह्यो बिच बीच ।।
पै कछु भयो न हान रस रही अधिक रस सीच ।। ६० ।।

चौपई: बहुर बिदा हुवै भवन पधारी ।। याको मन लै संग सिधारी ।।
निज आवन को बंदो कीता ।। चंद्र प्रभा मन उमग सचेता ।।
सच है जिन हि अनूप सरूपा ।। देत क्रिपा करि हरि जग भूपा ।।
सील धरम गुन निपुन बडाई ।। देत अतुलत सकल प्रभु ताई ।।
उलन ऊन को अंतर अंतर यामी ।। रचत सुध बड सौखित स्वामी ।।
रज गुमान मन सर असूयते ।। राखत अमल सु दुतीय दूयते ।।
ह्रिदय मुकर मत सर की छाई ।। परन देत नहि दुख दुस्टाई ।।
आन कुवर प्रति सकल जानाई ।। चंद्र प्रभा की कीन बडाई ।। ६१ ।।

सोरठा: रच निज महि संतोख बनी बरा बर ती-नहूं ।।
लही कामना मोख धरम अरथ निज साध कर ।। ६२ ।।

चौपई: याबिधि रच तीन हु अफेता ।। इक इक निस को रच सकेता ।।
रहत भई मन आनद पाई ।। निस अनंद हस प्रात कराई ।।
सुख संपति युत सुघर सुभागनि ।। प्रीतम के सुख की अनुरागनि ।।
नौतन रचना प्रजा बसाई ।। कंटक दुस्ट न मूल ऊठाई ।।
न्याव नीति की रीति सवारी ।। दुगुन प्रजा बहु बसी सुखारी ।।
सिसर बाग तज दूर परानी ।। रितु बसंत कोकिल कुह कानी ।।
इक प्रभत ऊठ जगत प्रभाकर ।। नगर इवार सब लोग बुलाकर ।।
अजा बाल वहि सभन दिखायौ ।। तिहि कुकरम कहि सब प्रगटायौ ।। ६३ ।।
दोहरा: दंड हेत आयस दियौ अंग अंग सब तोर ।।
बायस चील्न को अबहि देहु खवाय मरोर ।। ६४ ।।
चौपई: याको रक्त प्रवाह बहाई ।। स्वान सिंगालन देहु चटाई ।।
तत छिन सीस दुस्ट को तन ते ।। कीयो भिंन अस परिहारन ते ।।
लोगन वाकी सुनी कहानी ।। सुत प्रधान अस क्रिया कमानी ।।
दसन आगुरी दै सब कांपति ।। करत धिकार ब्रवन निज ढांपति ।।
निज स्वामी पुन मीत द्रोह अस ।। करयौ घोर अघ दुस्ट याहौ अस ।।
निंदित तिहि सब डेरन आइे ।। कुवर गयो निज भवन सुहाइे ।।
ता दिन भाग प्रभा कर भूपति ।। लख्यौ तात गुन निज अनुरूपति ।।
राज भिखेक कियौ सुत भाला ।। आप भयौ तज जगत निराला ।। ६५ ।।
दोहरा: निस दिन हरि के भजन महि लगौ छोड जंजाल ।।
प्रगट भयौ सभ जगत महि हरि को भगत भूपाल ।। ६६ ।।
चौपई: जगत प्रभा कर ऊदित प्रभाकर ।। बैठ सिंघासन कर न्याव बर ।।
राज काज सब दिवस संभारत ।। निस रानिन महि सुखद बिहारत ।।
न्याव रीति महि यहि अस भयो ।। भवन चतुर दस महि जस छयो ।।
नाम दुहु को प्रलय प्रयंता ।। जग पुसतक पर लिख्यौ अनंता ।।
निस दिन के प्रश्न परि यहि जस ।। अपन बिगाने की रसना बस ।।
रही सेस यहि जगत कहानी ।। औरन पै यत कछू निसानी ।।
घटी यंत्र यहि काल कु फेरा ।। भयो न ह्वै है यहि किस केरा ।।
जाबिधि इन के पूर मनोरथ ।। करे क्रिपा करि हरि का मोरथ ।। ६७ ।।

दोहरा: करहि सभन मन कामना पूरन स्री गोबिंद ।।
निस दिन यहि मन कामना मांगत सु कवि म्रिगिंद ।। ६८ ।।

चौपई: पुन जे सुनहि स प्रेम कहानी ।। प्रेम सुधार सरस रस सानी ।।
पढहि प्रेम युत सुन सुनावहि ।। लिखहि प्रेम करि किस हि पढावहि ।।
दोख दुराय प्रगट गुन करही ।। देहि सवार जु बुधि बल धरही ।।
मधुकर रूप बन हि गुन ग्राही ।। चूक चितव चित धरहि छिमाही ।।
प्रेम पयोनिधि कै बरमीना ।। अगन सदा रस प्रेम प्रवीना ।।
स्वारथ परमारथ सम तूला ।। प्रेम सदा सोभिन सुख मूला ।।
भोग जोग निज रुचि अनुसारा ।। प्रेम देहुन को पोखन हारा ।।
जानत है गति यहि मति माना ।। सार ग्रहन मति परम सु जाना ।। ६९ ।।

दोहरा: इन सब की मन कामना पूरन कर करतार ।।
मोख काम धर मारथ सन लह हि पदारथ चार ।। ७० ।।
पुन जे कूर कुटिल करि गियानी ।।
कुमति कु कबित्त कृत सित मन बानी ।। (७१)

यथा स्री कबीर जी को बचन प्रमाना ।।
आपन देहि चुल्लू भर पानी ।। तिहि निंदहि जिह गंगा आनी ।।
छाड कु चरचा आनन जानहि ।। ब्रह्मा हूं को कह्यो न मानहि ।।
आग लगाय मंदर महि सोवहि ।। यथा किसू कवि बचन प्रमानहि ।।
आखर को रस का खर जानहि ।। बिन गुन गरब भरे नित डोलहि ।।
।। ब्रिथा खपहि नित नीर बिरोलहि ।।
पाठ करन को पंथ न पावहि ।। अरथ करत अनरथ किन गावहि ।।
आवत मंत्रन तुच्छ बीछन को ।। छियो चहत तक्षक तीछन को ।। ७१ ।। (७२)

दोहरा: तिन को नहि अधिकार कछु ब्रिथा बनत बाचाल ।।
मंत्री सुत गति पाय है किधौं सुता सह पाल ।। ७३ ।।

स्वैया: यहि प्रेम को पंथ नछानी कछू तिनो जानि जिवे चल जानते है ।।
बड प्रेम पयोनिधि मै धस कै सुधापान कियो ते प्रमान ते है ।।
नहि बांझ प्रसु दुख क्यो हूं लखै गज पै तो म्रिगिंद पलान ते है ।।
सरसैल को झेल बो सूर लखै ब्रिथा कायर कूर बखानते हैं ।। ७३।। (७४)

स्वैया:

स्वैया : सु अपूरब प्रेम पयोनिधि येहिय प्रेम रंगे सो म्रिगिंद कह्यो ।।
जिन देख्यो सुन्यो मति प्रेम पगी मतवारो भयो मन चिंद लह्यो ।।
जहां है फुलवारी को या महि बखान तो और सुगंध मलिंद लह्यो ।।
पतझार की बयार जहां बरनी तहा कया क्या न कंटक ब्रिंद लह्यो ।। ७४ ।।

स्वैया : जहा की-यो बियोग हीयो सब प्रीन तों साफ सी फूली लखा परी है ।।
कहूं दाग ह्यिे को जो फूलों लह्यो गुल लाल के छावनी छा परी है ।।
बन ताल की जो बरनी है ब्रिथा कथा अेसी कछूतहा आपरी है ।।
पढी देखी सुनी तिनों आखिन तै सरिता सराबोर हा परी है ।। ७५ ।।

स्वैया : जहा सिंधु की मौंज कोच जोचलों मन नाव बियार की भेट कई ।।
गिर आन ऊठायो जहा सिर तों गिरजान पखानो में लेट गई ।।
जहा जंत्र के जार की औं अभिचार की मंत्र की लोट लपेट लई ।।
प्रभू माया के नौतन रंग तहा गढ कोट रचे अलसेट नई ।। ७६ ।।

स्वैया : परी बिंद पिसाच की फासी परी कोऊ ता मै जो आन बखान करी ।।
करी अेसी क्रिपा करी बेर हूं जा जैसी छूटने की तहा सों जै धरी ।।
धरी सिध के आस्रम की जु प्रसिध कथा तहा अेसी लगी है झरी ।।
झरी छानते छानते छार तहां बिना छार मुरी ना निहार परी ।। ७७ ।।

स्वैया : कहूं आपन की पिय की अवसेर मै सार की जो है चली जब चरचा ।।
तहा देखन हीरों बिचारों की आखैं लगी अवसेर ही की अरचा ।।
जु संयोग निसा को बखान परयो कछु जान परयो ह्यि को सरचा ।।
परचा दिन बयोग भरों जो लिखों दिल पाटों परों परचा परचा ।। ७८ ।।

स्वैया : जहि बात सभा की प्रभा की चली ज सभा सभ लोक लुटाई लही ।।
चली जुध बिरुध की सुध कथा तहा भीम की बुध भुलाई लही ।।
भ्रिकुटी की सरोही खिची जो कहूं ह्यि के कर टूक सफाई बही ।।
सर तीखी चितों न कोंछूटों कहूं परयो पार पै पैल कुहाई नही ।। ७९ ।।

स्वैया : कहूं प्रेमी की आह कराह लिखी लख बयोम कराह ऊठै कहरी ।।
जहां प्रीतम की सुंदराई लही लहयो कंच न देस लों जाल हरी ।।
मति पूछोया प्रेम कहानी को रंगा क्या ढंग भरी रस की गहरी ।।
लख्यो रूप तो नैम अनूप ताको लख्यो प्रेम तो छाती परी थहरी ।। ८० ।।

सवैया : प्रेम पयोनिधि तौ अगाह कछू गाह न कै चाह न कै चित की ऊमाह पूरी कीनीमैं।।
बीनबर मुक्ता प्रसंग सुक्ता ते चीन मोटी ऊकता के गुन मान लयो दीनी मै ।।
राखतप सिंद मुकतान की म्रिगिंद गुनी कौन गुन गुन की मुटाई औ महीनी है ।।
कंट क्ति डारि कौं निहार बो प्रबीनी मैन चीन बो तौ सुमन सुगंध रस मीनी मै ।।
।। ८१।।

कबित : प्रेम की प्रबल ते सबल प्रम सीस राख राखी कुलकान हूं न धनधान जानकी ।।
बाचौं जंत्र जारते न राचौं त्रिप सुता संग भंग अभिचार प्यारी प्रेम कौं प्रमानकी।।
प्रेम भान प्रभा के पकर पति कीनो आन कपिते निकार सुता सहपाल हान की ।।
बूडत बचायो सिध पायो जक्ष को मिलायो प्रेमीन को पायो प्रेम पूरौ प्रन प्रान की।
। ८२।।

कबित : प्रेम परमेस जू कौ पल मै पकर लवै पावतन क्यौं हूं जो अपार गति जाकी है ।।
जोग जग जपते अनेक ब्रत तपते करोर ख्याल खपते न खोल नहै ताकी है ।।
स्रुति चार रटते न सास्त्र के खटते अनंत ठाट ठटते बिअंत बाट बाकी है ।।
प्रेम जू की झाकी जौ म्रिगिंद खोल झाकी इक पल कीझ बाकी मै झमक वाकी
झाकी है ।। ८३ ।।

यथा स्री गुरु मुख वाक ।। सवैया ।।
कहा भयो जो दोऊ लोचन मूद कै बैठ रहिओ बक ध्यान लगायो ।।
नात फिरयो लीइे सात समुंद्रन लोक गयो परलोक गवायो ।।
बास कियो बिखियान सो बैठ कै वैसे ही हैसे सु बैस बितायो ।।
साच कहां सुन लेहु सबै जिन प्रेम कीयो तिन ही प्रम पायो ।। ८४ ।।

कबित : पार परयो प्रेमपयोनिधि के प्रकट आज चढ कै जहाज निज लाज के रखै याकी ।।
प्रेम आज चढ कैजहाज निज लाज के रखै या पाइे परी पूरन मनोरथ जाकी ।।
पाइे परी पूरन मनोरथ जा प्रेम जू सौ नेम करयोग खेम कीनो करनै याकी ।।
स्री गुरु गुबिंद सिंघ मालक म्रिगिंद मेरे मन चिंद दायक सहाय कस है याकी ।।
असि कै धरै यां असिकेत के जपै यां असकाल के बचै यादिऊ पासी असि मै याकी।।८५।।

कबित : गुन के अगार कवि पुंगव ऊदार ते निहार प्रेम सार को बिचार प्रेम ढरहैं ।।
प्रेम के प्रवाह पर प्रेम को निवह लख प्रेम के पयोनिधि मै प्रेमी भइे तरहैं ।।
प्रेम रस सानी यहि प्रेम की कहानी प्रेम ऊमग म्रिगिंद जो बखानी प्रेम भरहैं ।।
राखो ऊतसाह चित चाह सौ सुनै गे प्रेमी प्रेम सो ऊमाह है तौवाह वाही करहैं।।
।।८६।।

कबित: पूरन कै पावन प्रबंध प्रमपयोनिधि निधि सिधि दायक बिनायक मनायो मै ।।
त्रिपति नरिंद्र सिंघ इंद्रबर के द्रबार ग्रिंथ कौ सुधार प्रेम पूरबक लियायौ मै।।
सुनी कथा काम रीझे परम सुजान नीके प्रेम कौ बखान प्रेम पूरन सुनायो मै ।।
परयो है पसिंद तौ म्रिगिंद मन चिंद पायो ताके जस ब्रिंद को ये कबित बनायो मै।
।।८७।।

दान बीर कौ सिंघावलोकन ।।

कबित: बस बस सुबस सदा ही बसुधा पै बीर बिकस बिकस देत बकस सह सहसा ।।
हस हस परत ग्रिछिति बीर बिक्रम को पावत तलासी इक गूनों गूनों दस दसा।।
दस दस दिस्स मै त्रिपति नरेंद्र सिंघ स्रौनन मै रावरौ समायो हैसु जस जसा ।।
जस जस इंद्र बस बस कै कहावै बसत सतै म्रिगिंद दान दै कहाई बस बस ।।८८।।

दया बीर कौ ।।

कबित: दरद मै दंती लैकै बारज बिंनती की समेट बै जयंती धाइ बंधन निवारदी ।।
द्रुपदा की दीनता सुनत लाज राखी दौर तंदुल लै बिप्र हूं की बिपता बिदारदी।।
स्री मत नरेंद्र सिंघ त्रिपति म्रिगिंद कबि मागत बिना ही दया दीह प्रति पारदी।।
दुखी दीन दार दीजु दैवयोग दीठ परयो दीठ ना परयो है फेर दुखी दीन दारदी।
।।८९।।

धर्म बीर कौ कबित:

हरी चंद राख्यो तन धन तीय तनै नाख्यों भाखयों जस जाको सब सिम्रिति पुरान मै।।
राख्यो जो दधीच मीच मूंड पै मुकट धांध सिवी सीस साटै लौंजु पाल्यो धनप्रान दै।।
भूपति नरेंद्रसिंघ धरम धुरंधर तै पोख कै म्रिगिंद बांकी बांटी इक आन मै ।।
तीर बासी नीर बासी पुरग्राम देस बासी खंड दीप बासी कौ धांस गरे जहाब मै।।
९०।।

युध बीर कौ।। कबित:

लीनौ चंद्रहास पन बैरिन बिनास कीनौं त्रासनम वासन कौं सीनौ तौ बिदरगौं।।
लथर पथर रंग भूमि परै इक दिस साबन की तार लौं अनेक मै निसरगौं ।।
त्रिपति नरेंद्र सिंघ रनमै म्रिगिंद बीर कौतक कौ आयो सैनासिवासौ बिछरगौ ।।
बैलतौ बिडरगौ बघंबर घिसरगौ त्यो तू बाडौरू गिर गांवौं आपही फिसरगौ।।९१।।

असीरबाद को ।। कबित:

माथे मुंड मथनी सिकंध पै सिकंद माता अग्रभाग गौरा परबत जा पछाहने ।।
कटमै क्रिपानी जुग जंघ न जयंती ज्वाल चंडी का चरन की अडोलता निबाहने ।।
बाहन को राखई म्रिगिंद बाहनी तिहारे अंग संग गौरजा अघूर घस माहने ।।
छत्र सीस छत्रपती बाम राखे बरदाती देवी द्याल दुरगा सदा ही रहौ दाहने।।६२।।

कबित: संमत चरन चंद निधि चंद बिक्रम को फागुन असेत साते गुरू अंग संग मै ।।
प्रेम रस पूरन संपूरन भयो है सिंधु जान है रस ग्यरस भाव धुनि बयंग मै ।।
नौ हू रस रुचिर म्रिगिंद ठौर ठौर राखे रतन पराखे परे याके अंग अंग मै ।।
ऊथित ऊमंग नाना भाव के प्रसंग सो अपार हूं तरंग हैं अठार हूं तरंग मै ।।६३।।

दोहरा: स्री गुर चरन सरोज रज अंजन कर द्रिग अंज ।।
प्रेम पयोनिधि रस कथा पूरन कीन सु मंज ।। ६४ ।।

दोहरा: प्रेम खेम दायक सदा बडो प्रेम को नेम ।।
प्रेम भगति दीजै प्रभू मांगत हौ कर प्रेम ।। ६५ ।।
प्रेमी पढहि जु पैम करि लहि हि प्रेम रस सार ।।
निरख लखहि रि सभर ब्रिथा फक फक करहि गवार ।। ६६।।
अच्छर मोटे पात रे पढहैं गुनी संभार ।।
चूकहु लख छम है सु कबि लीजहु समझ सुधार ।। ६७।।

इती स्रीमत प्रेमपयोनिधि ग्रिंथे नेह नीति निरूपित प्रीति प्रसंगे कवि साहब म्रिगिंदेन बिरचिते राज कुवर को पूर मनोरथ ग्रह प्रवेस मात पिता को ऊतसाह बिसेस मंत्री सुत छेक राज अभिखेक पाय सुख पूरबक राज रमाय प्रेम को फल पूरन पायबो बरनंन नाम असटादसो तरंग ।। १८ ।।

सुभ मसतु सुभंभूयात सुमंगलंददातु ।। स्री गोबिंदायनम: ।।

समाप्त